मंछुआरे

अकादेमी के अन्य हिन्दी-प्रकाशन

(मूल भाषाओं के नाम कोष्ठक में अंकित हैं)

क्र०	पुस्तक	लेखक	मूल्य
१.	भारतीय कविता १९५३	(भारत की १४ भाषाओं की कविताओं का लिप्यंतर और अनुवाद)	५.००
२.	केरल सिंह (मलयालम)	का० मा० पणिक्कर	३.००
३.	भगवान् बुद्ध (मराठी)	धर्मानन्द कोसम्बी	५.००
४.	दो सेर धान (मलयालम)	तकषी शिवशंकर पिल्लै	२.००
५.	कादीद् (फ्रेंच)	वाल्तेयर	२.००
६.	मिट्टी का पुतला (उडिया)	कालिन्दीचरण पाणिग्राही	२.००
७.	आरण्यक (बंगला)	विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय	४.००
८	गेंजी की कहानी (जापानी)	मुरासाकी शिकिबू	४.५०
९.	आरोग्य निकेतन (बंगला)	ताराशंकर बंद्योपाध्याय	६.००
१०.	अमृत सन्तान (उडिया)	गोपीनाथ महान्ती	१२.००
११.	आदमखोर (पंजाबी)	नानकसिंह	५.००
१२.	वैदिक संस्कृति का विकास (मराठी)	लक्ष्मण शास्त्री जोशी	५.५०
१३	क्या यही सभ्यता है? (बंगला)	माइकेल मधुसूदन दत्त	१.५०
१४.	नारायण राव (तेलुगु)	अडवि बापिराजू	६.००
१५.	आज का भारतीय साहित्य	(भारत की १६ भाषाओं के साहित्य का परिचय)	७.००
१६.	जीवी (गुजराती)	पन्नालाल पटेल	४.५०
१७.	भग्नमूर्ति (मराठी काव्य)	अनिल	१.००
१८.	एकोत्तर शती (बंगला)	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	८.००
१९.	चिलिका (उडिया काव्य)	राधानाथ राय	१.५०
२०.	मिरातुल अरूस (उर्दू)	नज़ीर अहमद	५.००
२१.	छै बीघा ज़मीन (उडिया)	फ़क़ीर मोहन सेनापति	३.००
२२.	मीरी बिटिया (असमिया)	रजनीकान्त बरदलै	२.००
२३.	आन्ध्र का सामाजिक इतिहास (तेलुगु)	सुरवरम् प्रताप रेड्डी	६.००

(मलयालम भाषा का एक उपन्यास)

मूल लेखक

तकषी शिवशंकर पिल्लै

अनुवादिका

श्रीमती भारती विद्यार्थी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

Machhuare Translation in Hindi of the Malayalam novel
Chemmeen, by Thakazhi Sivasankara Pillai
Sahitya Akademi, New Delhi (1959). Price : Rs. 3 50 nP.

प्रकाशक :

एकाधिकारी वितरक .
राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०,

मुद्रक :
सुरेन्द्र प्रिंटर्स प्रा० लिमिटेड, दिल्ली

मूल्य : तीन रुपये पचास नये पैसे

पहला खण्ड

१

"बप्पा नाव और जाल खरीदने जा रहे है।"

"तुम्हारा भाग्य।"

करुत्तम्मा से कोई जवाब देते नही बना। लेकिन उसने तुरन्त परि-स्थिति पर काबू पा लिया। उसने कहा ,"रुपये काफी नही है । क्या उधार दे सकते हो ?"

हाथ खोलकर दिखाते हुए परी ने कहा, "मेरे पास रुपये कहाँ है ?"

करुत्तम्मा हँस पडी और कहा, "तब अपने को छोटा मोतलाली क्यो कहते फिरते हो ?"

"तुम मुझे छोटा मोतलाली कहकर क्यो पुकारती हो ?"

"नही तो और क्या कहकर पुकारूँ ?"

"सीधे परीकुट्टी कहकर पुकारा करो !"

करुत्तम्मा ने 'परी' तक कहा और खिलखिलाकर हँस पडी। परी ने पूरा नाम कहने का अनुरोध किया। करुत्तम्मा ने हँसी को रोका और गम्भीर भाव से असहमति प्रकट करने के लिए सिर हिला दिया। उसने कहा, "ऊँ हूँ, मै नाम लेकर नही पुकारूँगी।"

"तो मै भी तुम्हे करुत्तम्मा कहकर नही पुकारूँगा ?"

"तो फिर क्या कहकर पुकारोगे ?"

"मै तुम्हे बडी मल्लाहिन कहकर पुकारूँगा।"

करुत्तम्मा हँस पडी । परीकुट्टी ने भी ठहाका मारा, खूब हँसा। क्यो ? दोनो इस तरह क्यो हँसे ? कौन जाने ! दोनो मानो दिल खोलकर हँसे।

"अच्छा, नाव और जाल खरीदने के बाद नाव मे जो मछली आयगी उसे व्यापार के लिए मुझे देने को अपने बप्पा से कहोगी ?"

"अच्छा दाम दोगे तो मछली क्यो न मिलेगी ?"

फिर जोरो की हँसी हुई। भला इसमे इतना हँसने की क्या बात थी! कोई मजाक था क्या! कोई भी बात हो, आदमी इस तरह कही हँसता है! हँसते-हँसते करुत्तम्मा की आँखे भर आई थी। हाँफते-हाँफते उसने कहा, "ओह, मुझे इस तरह न हँसाओ, मोतलाली!"

"मुझे भी न हँसाओ, बडी मल्लाहिन जी" –परीकुट्टी ने कहा।

"बाप रे, कैसा आदमी है यह छोटा मोतलाली!"

दोनो फिर ऐसे हँस पडे मानो एक ने दूसरे को गुदगुदा दिया हो। हँसी भी कैसी चीज है! यह आदमी को कभी गम्भीर बना देती है, तो कभी रुलाकर छोडती है। करुत्तम्मा का चेहरा लाल हो गया था। उसने शिकायत के तौर पर नही, गुस्से मे कहा, "मेरी तरफ इस तरह मत ताको!" उसकी हँसी खत्म हो चुकी थी। भाव बदल गया था। ऐसा लगा, मानो परीकुट्टी ने अनजाने मे कोई गलती कर दी हो।

"करुत्तम्मा, तुम्हीने मुझे हँसाया और तुम्ही . "

"धत्त", करुत्तम्मा के मुँह से निकला। वह अपनी छाती को हाथों से ढकती हुई घूमकर खडी हो गई। वह एकाएक सकुचा गई। उसकी कमर मे सिर्फ एक लुंगी थी।

"ओह, यह क्या है ? छोटे मोतलाली!"

इतने मे घर से करुत्तम्मा को बुलाने की आवाज सुनाई पडी। चक्की, उसकी माँ, जो मछली बेचने के लिए पूरब गई थी, लौट आई थी। करुत्तम्मा घर की ओर दौड गई। परीकुट्टी को लगा कि करुत्तम्मा नाराज होकर चली गई है। वह दुखी हुआ। उधर करुत्तम्मा को भी लगा कि वह परीकुट्टी के ही सामने क्यो, कही भी इस तरह नही हँसी थी। वह एक अजीब तरह का अनुभव था। कैसी थी वह हँसी! दम घुटाने वाली, छाती फाड डालने वाली। करुत्तम्मा को लगा था कि वह नग्न रूप मे

खडी है और एकदम अदृश्य हो जाना चाहती है। ऐसा अनुभव इसके पहले उसे कभी नही हुआ था। उस अनुभूति की तीव्रता मे दिल को चुभने वाले कुछ कडे शब्द उसके मुँह से निकल गए थे।

करुत्तम्मा का यौवन मानो जाग उठा था और प्रतिक्षण पूर्णत्व की ओर बढ रहा था। परी की नजर अचानक जब करुत्तम्मा की छाती पर जा टिकी थी तब उसे लगा कि उसका सारा शरीर सिहर उठा है। क्या इसीसे हँसी की शुरूआत हुई थी ? करुत्तम्मा एक ही कपड़ा पहने हुए थी, और वह भी पतला !

परीकुट्टी को लगा कि करुत्तम्मा नाराज होकर चली गई, उसके अशिष्ट व्यवहार से रुष्ट होकर चली गई। उसे यह भी डर लगा कि करुत्तम्मा फिर उसके पास नही आयगी।

परी ने सोचा कि वह करुत्तम्मा से माफी माँग ले और उससे कह दे कि फिर ऐसी गलती नही होगी।

दोनो को एक-दूसरे से क्षमा माँगने की जरूरत महसूस हुई। करुत्तम्मा जब समुद्र-तट पर सीप बटोरकर खेलने वाली चार-पाँच साल की एक छोटी बच्ची थी तब उसे जो एक छोटा साथी मिला था वह साथी परीकुट्टी ही था। पाजामे के ऊपर पीला कुर्ता पहने गले मे एक रेशमी रूमाल बाँधे और सिर पर तुर्की टोपी लगाये परीकुट्टी को अपने बाप का हाथ पकडे समुद्र-तट पर पहले-पहल जैसा उसने देखा था, वह उसे खूब याद था। उसके घर के दक्खिन की तरफ उन लोगो ने डेरा डाला था। अब भी वह डेरा वही पर था। पर अब परीकुट्टी ही वहाँ का व्यापार चलाता था।

समुद्र के किनारे पडोस मे रहते हुए दोनो बडे हुए थे।

रसोईघर मे बैठी चूल्हा जलाती हुई करुत्तम्मा को एक-एक बात याद हो आई। आग चूल्हे के बाहर जलने लगी। उसी समय माँ वहाँ आई और करुत्तम्मा की अन्यमनस्कता और बाहर जलने वाली लकडी—दोनो को थोडी देर तक देखती रही।

तब चक्की ने करुत्तम्मा को एक लात लगा दी। करुत्तम्मा मानो सपने मे से चौक उठी। नाराजगी के साथ चक्की ने पूछा,"किसके बारे मे बैठी-बैठी सोच रही है री ?"

करुत्तम्मा का भाव देखकर कोई भी उससे ऐसा ही सवाल करता। चक्की का इसमे कोई दोष नही था। करुत्तम्मा दूसरी ही दुनिया मे थी।

"अम्मा, समुद्र-तट पर रखी हुई उस बडी नाव की आड मे दिदिया खडी-खडी छोटे मोतलाली के साथ हँस रही थी"—उसकी छोटी बहन पचमी ने कहा। उसकी बात सुनकर करुत्तम्मा एकदम चौक गई। वह दोषपूर्ण भेद—जो किसी को नही मालूम था, खुल गया। पचमी नही रुकी। उसने आगे कहा, "ओहो, कैसी हँसी थी अम्मा कुछ कहा नही जा सकता।" इतना कहकर वह करुत्तम्मा को इशारे से जताती हुई कि उसके पीछे पडने का यही नतीजा है, वहाँ से भाग गई।

करुत्तम्मा पचमी को घर पर छोडकर नाव की तरफ गई थी। इस कारण पचमी पडोस के बच्चो के साथ खेलने के लिए नही जा सकी थी। चेम्पन (बाप) का आदेश था कि कभी ऐसा न हो कि घर मे एक आदमी भी न रहे। नाव और जाल खरीदने के लिए वह कुछ रुपये बचाकर घर मे रखे हुए था। इस कारण पचमी को घर पर रहना पडा था। उसीका उसने करुत्तम्मा से गुस्सा उतारा।

इस तरह की बात सुनकर क्या कोई माँ चुप रह सकती है ! चक्की ने करुत्तम्मा से पूछा, "अरी, मै क्या सुन रही हूँ ?"

करुत्तम्मा ने कोई उत्तर नही दिया।

"तू क्या करने पर तुली हुई है री ?"

करुत्तम्मा के लिए जवाब देना जरूरी हो गया। एक जवाब उसे सूझ गया, "यो ही समुद्र-तट पर जब गई – –"

"समुद्र-तट पर जब गई – –"?

"छोटे मोतलाली नाव पर बैठे थे।"

"उसमे तेरे हँसने की क्या बात थी ?"

करुत्तम्मा को एक और जवाब सूझा, "नाव और जाल खरीदने के लिए रुपया जो कम है वह मैं मोतलाली से पैसा माँग रही थी।"

"अरी उससे रुपये माँगने का तेरा क्या काम था ?"

"उस दिन बप्पा और तुम आपस में बातें नहीं कर रहे थे कि मोतलाली से रुपया माँगना है ?"

वह सब तर्क व्यर्थ था। वह जवाब में कुछ-न-कुछ कहने की करुत्तम्मा की कोशिश-मात्र थी। चक्की ने बेटी को एड़ी से चोटी तक ध्यान से देखा।

चक्की भी उस उम्र से होकर गुजर चुकी थी। यह भी हो सकता है कि जब चक्की करुत्तम्मा की उम्र की थी तब तट पर डेरा डाले कुछ मोतलाली लोग भी रहते होंगे। उन्होंने भी किनारे पर रखी नाव की आड में चक्की के मन को गुदगुदाकर उसे हँसाया होगा। लेकिन चक्की एक ऐसी मल्लाहिन थी, जो उसी समुद्र-तट पर जन्म लेकर बडी हुई थी। इसलिए वह वहाँ के परम्परागत तत्त्व-ज्ञान की अधिकारिणी थी।

प्रथम मल्लाह जब पहले-पहल लकडी के एक टुकडे पर चढकर समुद्र की लहरों और ज्वार-भाटे का अतिक्रमण करके क्षितिज के उस पार गया तब उसकी पत्नी ने तट पर व्रत-निष्ठा के साथ पश्चिम की ओर देखकर खडे-खडे तपस्या की। समुद्र में तूफान उठा, शार्क मुँह बाये नाव के पास पहुँचे, ह्वेल ने नाव को पूँछ से मारा और जल की अन्तर-धारा ने नाव को एक भँवर में खीच लिया। लेकिन आश्चर्यजनक रीति से वह मल्लाह सब संकटों से बचकर एक बडी मछली के साथ किनारे पर लौट आया। उस तूफान के खतरों से वह कैसे बचा ? शार्क उसे क्यों नहीं निगल गया ? ह्वेल की मार से उसकी नाव क्यों नहीं डूब गई। भँवर से उसकी नाव कैसे निकल आई ? यह सब कैसे हुआ ? समुद्र-तट पर खडी उस पतिव्रता नारी की तपस्या का ही वह फल था !

समुद्र-माता की पुत्रियों ने इस तपश्चर्या का पाठ पढा। चक्की को भी इस तत्त्व-ज्ञान की सीख मिली थी। यह भी सम्भव है कि जब चक्की एक नवयुवती थी तब एक मोतलाली ने उसे भी आँख गड़ाकर देखा होगा

और चक्की की माँ ने उस समय उसको भी समुद्र-माता की पुत्रियो की तपश्चर्या की कहानी और जीवन का तत्त्व-ज्ञान समझाया होगा।

चक्की ने करुत्तम्मा की गलती समझी हो या नही उसने आगे कहा, "बिटिया, अब तू छोटी बच्ची नही है। एक मल्लाहिन हो गई है। परीकुट्टी के शब्द 'बडी मल्लाहिन' करुत्तम्मा के कानो मे गूँज गये।

चक्की ने आगे कहा, "इस महासागर मे सब-कुछ है बिटिया, सब-कुछ। इसमे जाने वाले लोग कैसे लौटकर आते है यह तुझे क्या मालूम! तट पर उनकी स्त्रियो के पवित्रता से रहने से ही यह होता है। वे पवित्रता का पालन न करे तो मल्लाह नाव सहित भँवर मे पडकर खत्म हो जाय। मछुआरो का जीवन वास्तव मे तट पर रहने वाली उनकी स्त्रियो के हाथ मे ही है।"

यह पहला अवसर नही था जब कि करुत्तम्मा ने उपर्युक्त आशय की बात सुनी हो। जहाँ चार मल्लाहिन इकट्ठी होती वहाँ इन शब्दो को दुहराना एक मामूली बात थी।

फिर भी परीकुट्टी के साथ हँसने मे क्या गलती हुई थी? किसी मछुआरे का जीवन उसे सौंपा तो गया नही था। जब सौंपा जायगा तब उसकी रक्षा वह जरूर करेगी। कैसे करना है यह भी उसे मालूम था। मल्लाहिनो को यह किसी से सीखने की जरूरत नही है।

चक्की ने आगे कहा, "क्या तुझे मालूम है कि यह समुद्र कभी-कभी क्यो रंग बदलता है? समुद्र-माता क्रोध आ जाने पर एक साथ सब नष्ट कर डालती है। नही तो अपनी सन्तान के लिए सब-कुछ देती है। इसम सोने की खान है बेटी, सोने की खान।"

चक्की ने बेटी को फिर एक बडा उपदेश दिया, "पवित्रता ही सबसे बडी चीज है, बेटी! मल्लाह की असली सम्पत्ति मल्लाहिन की पवित्रता ही है। कभी-कभी छोटे मोतलाली लोग समुद्र-तट को अपवित्र कर देते है। पूर्व से स्त्रियाँ झिगी पीटने और सूखी मछली को बोरो मे भरने के लिए आया करती है और वह तट को अपवित्र कर देती है। समुद्र-तट की

पवित्रता का महत्त्व उन्हे क्या मालूम ! वे समुद्र-माता की सन्तान तो है नही । लेकिन उसका फल भोगना पडता है मछुआरो को । . . . . तट पर रखी हुई बडी नावो की आड और यहाँ की झाडियाँ बहुत खतरनाक जगह हैं । वहाँ सतर्क रहने की जरूरत है ।"

इतना कहकर चक्की ने बेटी को गम्भीरता पूर्वक सावधान किया, "तेरी अब उम्र हो गई है। छाती भर आई है। चेहरा-मोहरा सब हृष्ट-पुष्ट हो गया है । हो सकता है छोटे मोतलाली लोग और दूसरे नासमझ जवान लडके तेरी ओर नजर गडाकर देखे ।"

यह सुनकर करुत्तम्मा चौक गई । नाव की आड मे ठीक वही बात हुई थी। उसके मन मे उस समय विरोध की जो भावना उठी थी, वह शायद परम्परा से प्राप्त भावना थी । यदि कोई छाती की ओर या नितम्बो की ओर आँख गडाकर देखे तो वह बात समुद्र-माता की सन्तान की मर्यादा के विरुद्ध होगी ही ।

"बिटिया मेरी, तू समुद्र मे तूफान उठाकर मछुआरो की जीविका नष्ट न कर !"

करुत्तम्मा डर गई। चक्की ने आगे कहा, "वह तो विधर्मी है। उसे इन बातो की क्या परवाह होगी !"

चक्की इस तरह बोल रही थी मानो वह सारी बाते समझ गई हो। उस रात को करुत्तम्मा को नीद नही आई। पचमी पर, जिसने उसका भेद खोल दिया था, उसे कोई गुस्सा नही आया । उसने यह भी नही सोचा कि पचमी ने क्यो कह दिया। क्योकि उसने अपनी गलती महसूस की। समाज मे सदियो से अविच्छिन्न रूप से चला आने वाला तत्त्व-ज्ञान उसमे भी अवश्य था। शायद वह निश्चित रूप धारण कर रहा था । वह शायद डरती भी होगी कि वह पथ-भ्रष्ट हो जायगी। जब यह डर था तब तो पचमी से नाराज होने का कोई कारण ही नही रहा। करुत्तम्मा जहाँ थी वहाँ से मानो उसे उखाड फेकने की नीयत से एक गीत की कुछ कडियाँ समुद्र-तट की ओर से आकर उसके कानो मे समा गईं ।

करुत्तम्मा ने ध्यान से सुना।

गाना परीकुट्टी गा रहा था। वह कोई गायक नही था। फिर भी नाव के एक तख्ते पर बैठा वह गा रहा था। अपने वहाँ बैठने की जो खबर देना चाहता था वह और किसी जरिये दे सकता था। जिसके लिए खबर थी, उसे खबर मिल गई। तीर निशाने पर जा लगा। करुत्तम्मा का मन विचलित हो उठा। 'चुपके से उठकर चली जाय तो! . . . परीकुट्टी फिर नजर गडाकर उसकी छाती और नितम्बो की ओर देखेगा! जाना भी उसे नाव की आड मे होगा! और वह खतरनाक जगह है! परीकुट्टी विधर्मी भी तो है!'

गाने की वे कडियाँ मल्लाहो के एक गीत की कडियाँ थी। थोडी देर और सुनती रहे तो वह जरूर निकलकर चली जायगी; ऐसा करुत्तम्मा को लगा। हृदय के भीतर घुस जाने वाली उन पैनी नजरो का प्रहार सहन करने म भी एक आनन्द था। . . वह पट लेट गई और कानो मे उँगलियाँ डालकर उन्हे बन्द कर दिया। फिर भी वह गाना भीतर घुसता रहा।

करुत्तम्मा रो पडी।

उस कोठरी का कमजोर दरवाजा खोला जा सकता था। वह टूट-कर गिर भी सकता था। लेकिन करुत्तम्मा थी एक ऐसे घेरे के भीतर, जिसकी दीवार किसी भी तरह तोडी नही जा सकती थी। वह घेरा था समुद्र-माता की सन्तान के तत्त्व-ज्ञान की ऊँची और मोटी दीवार का घेरा। उसमे न खिडकियाँ थी, न दरवाजे।

लेकिन क्या शरीर का गर्म खून उसे तोड नही देगा? इस तरह का घेरा कभी टूटा नही है?

परीकुट्टी का गाना उस निर्जन समुद्र-तट पर फैल गया। वह एक मल्लाहिन को, रात के समय दरवाजा खुलवाकर बाहर निकालने के लिए तैयार किया हुआ गाना नही था। उसमे न लय थी, न ताल। गाने वाले की आवाज़ भी अच्छी नही थी, फिर भी उसमे एक विशेष आकर्षण

था। परीकुट्टी का इरादा सिर्फ यह जता देना था कि वह वहाँ बैठा है। उसे तो करुत्तम्मा से माफी माँगनी थी। गाते-गाते उसका गला दुखने लगा।

करुत्तम्मा ने कानो से उँगलियाँ निकाल ली। बगल की कोठरी में उसके माँ-बाप आपस मे बात कर रहे थे, नही झगड रहे थे। करुत्तम्मा के कान खडे हो गए। वे उसीके बारे मे बाते कर रहे थे।

चेम्पन ने कहा, "मै सब-कुछ जानता हूँ। तेरे कुछ कहने की जरूरत नही है, मै भी तो आदमी हूँ।"

चक्की गुर्राई—"ओ, आदमी हो! जान लेना ही काफी नही है! बिटिया कलकित हो जायगी तब?"

"जा, जा उसके पहले ही मै उसे भेज दूँगा।"

"सो कैसे? बिना रुपये लिये कौन ले जाने के लिए आयगा?"

"सुन!" कहकर चेम्पन ने अपनी सारी योजना सुनानी शुरू की। करुत्तम्मा वह विवरण सौ बार पहले भी सुन चुकी थी।

चक्की ने दुख और रोष से कहा, "अच्छा तो नाव और जाल खरीदते रहो!"

चेम्पन ने अपना निश्चय दुहराया—"कुछ भी हो, मै उन रुपयो मे से चार पैसे भी नही निकालूँगा, तुम उन पर आँख मत लगाओ!"

चक्की ने यह कहकर अपना गुस्सा उतारा, "बिटिया को कोई विधर्मी कुमार्ग पर ले जायगा। अब यह होने जा रहा है।"

चेम्पन ने कोई जवाब नही दिया। चक्की के डर की गुरुता उसके दिमाग मे कैसे नही घुसती! थोडी देर बाद उसने कहा, "मै एक लडका लाऊँगा।"

"बिना पैसे के ही?"

चेम्पन ने हुकारी भर दी।

चक्की ने कहा, "कोई ऐरा-गैरा होगा!"

"तू देखती रहना!"

सन्तुष्ट न होकर चक्की ने आगे कहा, "ऐसा ही है तो लडकी को बाँधकर समुद्र मे फेक देना अच्छा होगा।"

चेम्पन ने फटकारा, "धत् तेरे की।"

"यह नाव और जाल सब किसके लिए है?"

चेम्पन ने जवाब नही दिया।

चक्की ने सुझाया, "उस वेल्लमणली वेलायुधन् के बारे मे क्यो नही सोचते?"

"नही, वह नही चाहिए।"

"क्यो, उसमे क्या कमी है?"

"वह सिर्फ एक मल्लाह है, मामूली मल्लाह।"

"तब बिटिया के लिए मल्लाह नही तो और किसे लाने जा रहे हो?"

इसका कोई जवाब नही था।

माँ की यह बात कि कोई विधर्मी बेटी को कुमार्ग मे ले जायगा, करुत्तम्मा के कानो मे गूज गई। लेकिन उसके बाप को उसका पूरा मतलब समझ मे नही आया। करुत्तम्मा का कलेजा धक्-धक् करने लगा, मानो फट जायगा। विधर्मी ने क्या उस समय भी उसे कुमार्ग की ओर खोच नही लिया था!

२

दूसरे दिन करुत्तम्मा घर से बाहर नही निकली। परीकुट्टी के डेरे मे उस दिन काम की भीड थी। ढेर लगाकर रखी हुई मछलियो को बोरो मे भरने के लिए पूरब से औरते आई हुई थी।

जब करुत्तम्मा अकेली बिना काम के बैठी तब उसके मन मे एक विचार बिजली की तरह कौंध गया। क्या परीकुट्टी उन औरतो की छाती की ओर भी नजर गडाकर देखता होगा!

दोपहर को, समुद्र मे गई हुई सब नावे लौटकर किनारे पर लग गईं। चक्की टोकरी लेकर समुद्र-तट की ओर चली गई। चलते समय उसने करुत्तम्मा को फिर सावधान किया, "बिटिया, मैंने जो-जो कहा है सब याद रखना!"

करुत्तम्मा को मालूम था कि क्या-क्या याद रखना है।

थोडी देर के बाद चेम्पन घर आया। करुत्तम्मा ने भात परोस दिया। आज चेम्पन ने बेटी को जरा गोर से देखा, जैसा इसके पहले कभी नही किया था। वह तो रोज ही उसे देखता था, लेकिन आज उस तरह देखने का क्या मतलब था? करुत्तम्मा डर गई कि बाप को भी कही उसका रहस्य मालूम तो नही हो गया है! लेकिन यदि मालूम हो भी गया होता तो वह जरूर गुस्सा दिखाता। उसके भाव मे गुस्सा नही था।

चक्की ने पिछली ही रात को उसे याद दिलाया था कि घर मे बेटी ब्याही जाने लायक बडी हो गई है। चेम्पन ने जब से होश सँभाला था तब से अपनी नाव और जाल खरीदने की ही कोशिश मे रहा है। अब एक और मुख्य बात की ओर उसका ध्यान खीचा गया है। बेटी अब युवती

हो गई है। चक्की ने कहा था कि कोई विधर्मी उसे पथभ्रष्ट कर सकता है। यही सब याद करके चेम्पन ने बेटी को ध्यान से देखा था।

वह आज भी दूसरे की नाव मे काम करके अपना हिस्सा कमा लाता था। शुरू मे वह नाव मे डॉड चलाने का काम करता था। अब वह पतवार-चालक का काम करता है। उसके जीवन का एक निश्चित उद्देश्य था। अपनी कमाई का एक पैसा भी वह फिजूल खर्च नही करता था। अब तक उसने कुछ जमा भी कर लिया था। लेकिन नाव और जाल खरीदने के लिए वह काफी नही था।

लडकी युवती हो गई है। उससे गलती भी हो सकती है। चक्की ने जो कहा है, सो ठीक ही कहा है। उसका डर विना कारण नही था। नाव और जाल खरीदना चाहिए या बेटी की शादी कर देनी चाहिए, यह अब सोचने का विषय हो गया। चेम्पन ने भी बेटी से कुछ कहना जरूरी समझा—"बिटिया, तुझे अपनी मर्यादा की रक्षा करनी है।" बाप ने भी कह ही दिया।

करुत्तम्मा ने कोई जवाब नही दिया। चेम्पन ने भी जवाब की प्रतीक्षा नही की।

शाम को मजदूरो को भेज देने के बाद परीकुट्टी नाव के तख्ते पर जा बैठा था। आज भी शायद वह करुत्तम्मा की राह देखता होगा।

चेम्पन परीकुट्टी के पास पहुँचा। करुत्तम्मा ने दोनो को बहुत देर तक बाते करते देखा। वे किस विषय पर बाते करते होगे, इसका उसने अन्दाज लगाया। उसको लगा कि उसका बाप परी से कर्ज मॉगता होगा।

उस रात को पति-पत्नी ने बहुत देर तक आपस मे गुप्त रूप से बाते की। वे क्या बाते कर रहे थे यह जानने की करुत्तम्मा की बड़ी इच्छा हुई।

परी ने उस दिन भी गाना गाया। अपनी टूटी झोपडी के अन्दर चुप-चाप लेटी हुई करुत्तम्मा ने उसे सुना। उसे परी से अव तक एक ही बात कहनी थी कि वह उसकी छाती की ओर नज़र गड़ाकर न देखे।

अब उसे एक और बात कहनी है कि वह गाना भी न गावे।

दो दिन पहले तक वह एक तितली की भाँति सोल्लास दौड़ती फिरती थी। लेकिन दो ही दिन मे उसमे कैसा परिवर्तन हो गया। बैठकर सोचने के लिए कोई बात मिल गई। वह अब अपने को पहचानने लगी है। क्या वह जीवन को गम्भीर बनाने वाली बात नही थी ? वह अपने को जॉचने लगी। एक-एक कदम सोच-विचारकर आगे रखना था। पहले की तरह स्वच्छन्दता पूर्वक दौडती फिरना अब सम्भव नही था। एक मर्द ने उसकी छाती की ओर देखा है और वह बच्ची से अब एक स्त्री हो गई है।

तीसरे दिन परीकुट्टी का गाना नही सुनाई पडा। उस दिन भी चॉदनी फैलकर मन को लुभा रही थी। समुद्र का एक रहस्यपूर्ण गीत नारियल के पत्तो मे हिलोरे लेता हुआ पूरब की ओर फैल रहा था। अब जब परीकुट्टी गा नही रहा था, करुत्तम्मा के कान उसका गाना सुनने के लिए व्यग्र हो उठे। क्या वह आगे गायगा ही नही ?

रात का खाना खाने के बाद चेम्पन कही बाहर चला गया। चक्की सोई नही। करुत्तम्मा ने कारण पूछा। मॉ ने बेटी से सो जाने को कहा। लेटे-लेटे करुत्तम्मा की ऑखे लग गई।

एकाएक वह जाग उठी। कोई पूछ रहा था, "करुत्तम्मा अभी सोई नही है ?"

आवाज मे सिर्फ उसीकी पहचान मे आने वाला जो कम्पन था उससे करुत्तम्मा ने आदमी को पहचान लिया। वह परीकुट्टी था।

चक्की ने जवाब दिया—"वह सो गई है।"

चक्की की आवाज मे जो एक सकोच था सो भी करुत्तम्मा ने समझ लिया। उसका सारा शरीर पसीने से तर हो गया। उसने उठकर टूटी दीवार की दरार से बाहर झॉका। परीकुट्टी और चेम्पन दोनो मिल-कर एक भारी बोझ उठाकर भीतर रख रहे थे। एक नही, दो नही, छह-सात भरे हुए बोरे थे। सबमे सूखी मछलियॉ थी।

करुत्तम्मा का कलेजा धक्-धक् करने लगा, मानो फट जायगा। बाहर आँगन मे चक्की, परीकुट्टी और चेम्पन तीनो आपस मे धीरे-धीरे बाते कर रहे थे।

दूसरे दिन करुत्तम्मा ने माँ से उन बोरो के बारे मे पूछा। चक्की ने जरा छल के साथ जवाब दिया, "छोटे मोतलाली ने लाकर रखे है।"

करुत्तम्मा ने पूछा, "अपने यहाँ क्या वह नही रख सकता था ?"

"इधर रखन मे तुझे क्या एतराज है ?" चक्की ने पूछा। कुछ क्षण के बाद उसने कडककर आगे कहा, "इस तरह पूछ-ताछ करने के लिए वह तेरा कौन है री ? तू अपने को सँभालकर रख। समझी !"

करुत्तम्मा का बहुत-कुछ पूछने का मन था। परीकुट्टी उसका कोई नही था। लेकिन क्या वह चोरी नही थी ? उसका मतलब था परीकुट्टी का कर्जदार बन जाना ! बाप ने मर्यादा की रक्षा करने की चेतावनी दी है। लेकिन इस तरह के काम से उसका कर्जदार बन जाय तो ! . . . पर करुत्तम्मा ने कुछ कहा नही।

दूसरे दिन उन सूखी मछलियो की बिक्री हो गई। उसके बाद के दिन समुद्र मे मछुआरो को बडी आमदनी हुई। चेम्पन की नाव किनारे पर एक बार ढेर लगाकर, दुबारा गई। चक्की माल बेचने के लिए पूरब गई थी। पचमी भी घर पर नही थी। करुत्तम्मा अकेली थी।

परीकुट्टी आया।

करुत्तम्मा दौड़कर भीतर चली गई। परीकुट्टी बिना कुछ बोले ही थोडी देर बाहर खडा रहा। उसे भी सकोच हो रहा था। उसका मुह और कण्ठ सूख गया था। उसने इतना ही कहा, "नाव और जाल खरीदने के लिए रुपये दे दिए है।"

कोई जवाब नही। रफी ने आगे कहा, "अब मुझे व्यापार के लिए मछली मिलेगी न ? दाम दूँगा।"

'अच्छा दाम दोगे तो ले सकोगे', यही जवाब मिलना चाहिए था।

यही जवाब करुत्तम्मा ने पहली बार दिया था। पर इस बार उसने कोई जवाब नही दिया। उस दिन इस तरह की बातचीत के सिलसिले मे दोनो खूब जोर से हँसे थे। परी ने सोचा भी होगा कि वह हँसी फिर दुहराई जायगी, लेकिन आज ऐसा नही हुआ। करुत्तम्मा एकदम चुप थी।

परी ने पूछा, "करुत्तम्मा, तुम बोलती क्यो नही हो? क्या मुझसे कुट्टी कर ली है?" परी को लगा कि वह भीतर-ही-भीतर रो रही है। उसने पूछा, "रो रही हो करुत्तम्मा?" उसने आगे कहा, "मेरा आना पसन्द नही है तो मै जाता हूँ।"

इसका भी कोई जवाब नही मिला। तब रुँधे हुए कण्ठ से परीकुट्टी ने पूछा, "क्या मै जाऊँ करुत्तम्मा?"

"मोतलाली! तुम एक विधर्मी हो", करुत्तम्मा ने जवाब दिया मानो परी का आखिरी सवाल उसके हृदय मे कही लग गया हो।

परीकुट्टी की समझ मे बात नही आई। उसने पूछा, "इससे क्या?"

इसका कोई जवाब नही था। करुत्तम्मा के मन मे भी यह सवाल उठा, 'विधर्मी है तो क्या?' झट से उसके मुँह से एक वाक्य निकला, "डेरे पर काम के लिए आने वाली मजदूरिनो की छाती की ओर जाकर नजर गडाओ!"

परी को लगा कि करुत्तम्मा ने उस पर भारी आरोप लगाया है। उसको लगा कि करुत्तम्मा सोचती है कि काम के लिए आने वाली मज-दूरिनो के साथ उसका अनुचित सम्बन्ध है और इसीलिए वह नाराज है। उसकी समझ मे नही आया कि वह कैसे अपनी निर्दोषिता का प्रमाण दे। उसने किसी को भी उस नजर से नही देखा था। उसने सचाई से कहा, "अल्लाह की कसम, मैने किसी को भी उस नजर से नही देखा है।"

परीकुट्टी अच्छा आदमी है, यह साबित हो जाता तो करुत्तम्मा को बडी खुशी होती, इसमे कोई सन्देह नही था। लेकिन वह अपने लिए परीकुट्टी से यह नही चाहती थी कि वह दूसरी औरतो को न देखे। वह

क्या चाहती थी यह वह उसे कैसे कहे, यह वह खुद नही जानती थी। उसे कैसा जीवन बिताना है, यह भारी तत्त्व-ज्ञान, सारा-का-सारा सुनाना पडेगा और यह काम उससे नही होगा। इतनी हिम्मत उसमे नही थी।

निःशब्दता मे काफी समय बीत गया, किसी ने कुछ नही कहा। उस चुप्पी की अवधि बढ जायगी मानो इसी डर से करुत्तम्मा ने कहा, "अम्मा अब आयगी।"

"इससे क्या ?"

डरकर उसने कहा, "बाप रे बाप, यह गलत है, यह अपराध है।"

"तुम भीतर हो, मै बाहर हूँ। फिर क्या ?"

यह भी उसे समझाना होगा! कैसे? कहना शुरू करती तो कितना कहना पडता!

परी ने पूछा, "करुत्तम्मा! तुम मुझसे प्रेम नही करती ?"

करुत्तम्मा ने झट से जवाब दिया, "करती हूँ।"

परीकुट्टी ने आवेश के साथ पूछा, "तब तुम बाहर क्यो नही आती ?"

"मै नही आती।"

"हँसाऊँगा नही। जरा देखकर चला जाऊँगा।"

निस्सहाय भाव से करुत्तम्मा ने इतना ही कहा, "नही, नही। बाप रे बाप!"

"तो मै जाता हूँ।"

जवाब के तौर पर भीतर से आवाज आई, "मै सदा-सर्वदा प्रेम करती रहूँगी।"

इससे बढकर कौन-सी प्रतिज्ञा चाहिए थी? परी वहाँ से चला गया। उसके चले जाने पर करुत्तम्मा को लगा कि जो कहना चाहिए था सो तो कहा नही और जो नही कहना चाहिए वही कह दिया।

उस रात को करुत्तम्मा ने माँ-बाप दोनो को रोशनी जलाकर रुपया गिनकर रखते देखा। अब भी रुपया कम था। तो भी चेम्पन को तसल्ली थी। उसने कहा, "औसेप्प या किसी और गला काटने वाले के पल्ले

पड़े बिना ही इतना तो हो गया।

चक्की ने भी सहमति प्रकट की—"मछुआरो को धोखा देने के लिए जेब मे रुपये डालकर घूमने वालो से रुपया लिया होता तो – – –"

"तब तो न नाव रहेगी, न जाल; न लगाया हुआ रुपया ही मिलेगा।"

औसेप्प और गोविन्दन् हाल मे भी पूछ रहे थे कि कर्जा चाहिए क्या। चेम्पन ने जवाब मे 'ना' कह दिया था। उनसे लेने पर कर्जा कभी चुकता ही नही। इतना ही नही, नाव और जाल भी जल्दी ही उन्हीका हो जाता। गरीब मछुआरो के साथ ऐसा ही होता आया है। अभी रुपया कम है तो उसका क्या उपाय है ?

चेम्पन ने कहा, "छोटा मोतलाली ही बाकी रुपया क्यो नही दे देता?"

जीवन से पहली बार करुत्तम्मा के मन मे माँ-बाप के प्रति घृणा उत्पन्न हुई। माँ ने इस प्रस्ताव का विरोध क्यो नही किया ? इस विचार ने उसे और भी परेशान कर दिया।

परी के घर मे, इसके बाद, मछली सुखा-सुखाकर बोरो मे भरने का काम बडी तेजी से होने लगा। इसका रहस्य करुत्तम्मा को मालूम था। थोडे ही दिनो मे वह काफी होशियार हो गई थी।

जीवन मे अभिवृद्धि लाने वाले परिवर्तन की खुशी मे चक्की ने करुत्तम्मा से कहा,"बेटी, हमारी नाव और जाल के आने का समय आ गया।"

करुत्तम्मा ने कुछ नही कहा। उस खुशी मे वह भागीदार नही हो सकी। उसकी ऐसी ही प्रतिक्रिया थी।

चक्की ने कहा, "समुद्र-माता ने कृपा की है।"

करुत्तम्मा के मन मे जो गुस्सा भरा था वह प्रकट हो गया, उसने कहा, "लोगो को धोखा देने से समुद्र-माता नाराज नही होगी क्या ?"

चक्की ने करुत्तम्मा की ओर गौर से देखा। करुत्तम्मा विचलित नही हुई। उसे और भी पूछना था, "उस बेचारे को धोखा देकर नाव और जाल नही लाना चाहिए अम्मा? यह तो अन्याय है।"

"क्या कह रही है री ? कि धोखा दिया है ?"

करुत्तम्मा ने हिम्मत के साथ कहा, "हाँ।"

"किसने ?"

करुत्तम्मा की चुप्पी ही इसका जवाब था। चक्की ने कहा, "औसेप्प से कर्जा लिया जाता तो नाव और जाल उसीके हो जाते।"

"नही अम्मा, औसेप्प को सिर्फ सूद के साथ उसका रुपया लौटा देना पडता।"

"यह नही लौटाना है क्या ?"

करुत्तम्मा ने चक्की से सीधे ढग से पूछा, "यह, यह—लोटाने के लिए लिया गया है क्या ?"

चक्की ने कहा कि परी से सूखी मछली लेने मे कोई धोखेबाजी नही थी। चेम्पन ने तो सिर्फ पूछा था, जोर नही दिया था। झूठ भी नही बोला था। न धोखा ही दिया था। उसका रुपया जरूर लौटाया जायगा।

करुत्तम्मा ने पूछा,"आधी रात के समय बोरे उठवाकर रखे जाते है। यह लौटा देने के लिए है ? ऐसा है तो दिन के समय लाने मे क्या हर्ज था ? ऐसे ही कामो से समुद्र मे तूफान उठता है।"

करुत्तम्मा की अन्तिम बात जरा ज्यादा हो गई। चक्की को गुस्सा आ गया। उसने पूछा, "तू क्या कहती है री ? तेरे बाप ने चोरी की है ?"

करुत्तम्मा चुप रही। माँ के अधिकारपूर्ण स्वर मे चक्की ने आगे कहा, "वह विधर्मी छोकरा तेरा कौन है री ? तुझे क्यो इतना दर्द हो रहा है ?"

करुत्तम्मा कहना चाहती थी कि 'वह उसका कोई नही है।' लेकिन उसके मुँह से कोई शब्द नही निकला। उसे लगा कि वह क्यो कहे कि परी उसका कोई नही है। क्या सचमुच वह उसका कोई नही है ? ..... उस समय उसे लगा कि परी वास्तव मे उसका सब-कुछ है।

चक्की ने अपना सवाल दुहराते हुए कहा, "बाप रे बाप ! लगता है कि लड़की समुद्र-तट का सर्वनाश कर बैठेगी।"

करुत्तम्मा ने दृढता के साथ माँ का विरोध किया—"मै अपनी

मर्यादा छोडने वाली नही हूँ।"

"फिर तुझे उसके लिए क्यो इतना दर्द होता है ?"

"इस हिसाब से तो उसे यहाँ से अपना डेरा-डण्डा सब उठाकर चल देना होगा।"

चक्की ने बेटी को फटकारकर खूब डाटा। करुत्तम्मा चुपचाप सुनती रही। उसे जरा भी नही अखरा। चक्की उसी तरह बोलती गई। जब उसकी डाट-फटकार सीमा पार करने लगी तब करुत्तम्मा ने माँ से पूछा, "क्या उसने बप्पा पर विश्वास करके ही पैसा दिया है ?"

"नही तो फिर किस पर ?"

एकाएक चक्की को याद आया कि करुत्तम्मा ने उससे रुपया माँगा था और शायद वही बात याद करके वह पूछ रही है। उसने झल्लाकर कहा, "क्या तेरे माँगने से दिया है ?"

करुत्तम्मा यह नही कह सकती थी कि उसीके माँगने से परी ने रुपया दिया है। लेकिन वह जानती थी कि परी उसे प्यार करता है। उसने कहा, "मुझसे कुछ मत कहलवाओ अम्मा !"

"हूँ ऊँ ! ! क्या कहलवाना है परी ?" जरा रुककर चक्की ने फिर कहा, "तू यही कहना चाहती है कि मै ही उसके पास नाचती हुई दौडी गई रुपया माँगने के लिए ?"

"अम्मा, मुझे इतना उपदेश देकर उससे रुपया क्यो लिया ? . . . अब उसका कर्जदार होकर . . . ।"

आगे कुछ कहने मे वह असमर्थ हो गई। उसका गला रुँध गया। चक्की का भी दिमाग जरा ठिकाने आ गया। करुत्तम्मा के कथन मे तथ्य था। थोड़ी देर के लिए चक्की को भी बुरा लगा। उसे लगा कि कुछ गलती हो गई है और खतरे की ओर कदम बढा दिया गया है। उसने पूछा, "क्या है बेटी, क्या हो गया ?"

करुत्तम्मा रोती रही।

"क्या वह यहाँ आया था बिटिया ?"

करुत्तम्मा ने एक भारी झूठ बोल दिया, "नही।"

"तब क्या है बिटिया ?"

"अगर आवे तो मुझे क्या करना चाहिए अम्मा ?"

चक्की ने अपने को निरपराध साबित करना चाहा ! उसका तर्क था कि यह नहीं सोचा गया था। परी से सहायता माँगी और उसने सहायता दी। लौटाने के खयाल से ही उससे रुपया लिया गया है। तो भी करुत्तम्मा का डर ठीक था। परी बदचलन नही था, इसका चक्की को पूरा भरोसा था। फिर भी उसकी उम्र तो कम ही थी। चक्की का मन एकाएक अशान्त हो गया। उस समय उसे लगा कि परी से रुपया नही लिया गया होता तो अच्छा होता। लेकिन चेम्पन को यह सब कहाँ मालूम था।

उस दिन भी करुत्तम्मा की शादी की बात को लेकर चक्की ने पति को तग किया। उसने ज़ोर देकर कहा कि वेलायुधन् से बाते करके देखना चाहिए। पहले यही काम होना चाहिए। नाव और जाल लेने के बारे मे बाद मे सोचना ठीक होगा। लेकिन चेम्पन इसके लिए तैयार नही था।

उससे सब-कुछ खोलकर कैसे कहे ! उसने गुस्सा प्रकट करते हुए कहा, "अब तक तुम्हारे जाल और नाव के लिए पैसा इकट्ठा करने के विचार से मैं टोकरियाँ भर-भरकर बेचने जाया करती थी। आगे इस आमदनी की आशा मत रखना !"

चेम्पन ने अलक्ष्य भाव से चक्की की ओर देखकर कहा, "बिना सोचे-विचारे ही तू क्या बोल रही है ?"

चक्की ने चिढ़कर कहा, "मै ठीक ही बोल रही हूँ।"

"क्या ?"

"मुझे अपनी बेटी की रक्षा करनी है।"

"माने ?"

"उसकी अब उम्र हो गई है। उसे घर पर अकेली छोडकर कही जाने का मेरा मन नही है। नही तो बेटी की शादी करा दो !"

चेम्पन चुप रहा; मानो उसकी समझ मे बात आ गई। चक्की बेचने जाने का काम नही करेगी तो बडा घाटा होगा, यह निश्चित था। उसने पूछा, "क्यो री, कोई गडबडी हो गई है ?"

"नही, लेकिन हो जाय तो ?"

सावधान रहने की जरूरत तो थी ही। लेकिन चेम्पन का पूरा विश्वास था कि करुत्तम्मा सुशील है, उच्छृ खल नही है, अकेली रह जाने पर भी वह कोई गलती नही करेगी।"

चक्की ने पूछा, "गलती करने के लिए कितना समय चाहिए ?"

चेम्पन ने जवाब नही दिया। अगले दिन चक्की पूरब नही गई। चेम्पन ने भी जोर नही दिया।

उस रात को भी सूखी मछलियाँ लाने को बात थी। लेकिन इस बार चक्की ने विरोध किया, "हमे वह नही चाहिए।"

चेम्पन ने पूछा, "क्यो ?"

"उस लडके को क्यो धोखा दे रहे हो ?"

"किसने कहा है कि धोखा दे रहा हूँ ?"

"नही तो क्या उसका रुपया लौटा दोगे ?"

चेम्पन ने 'हाँ' कह दिया।

करुत्तम्मा को लगा कि परी को बता देना चाहिए कि रुपया वापिस नही मिलेगा। वह गुप्त रूप से यह बात उसे बता देने के मौके की ताक में रही। लेकिन मौका नही मिला।

रात को परी कुछ बोरे ढोकर लाया और बिना किसी सकोच के चेम्पन ने सब उठाकर घर मे रख लिए। परी से यह भी नही कहा कि कब उसका रुपया लौटा देगा। करुत्तम्मा को लगा कि उसमे बाप के सामने भी बोलने की हिम्मत है। उसने माँ को ही इसमे ज्यादा कसूर-वार समझा।

करुत्तम्मा को लगा कि सब दिन के लिए झुका देने वाला भार उठा लिया गया है।

३

चेम्पन के पास पूरे रुपये जमा हो गए। वह रुपया लेकर नाव और जाल खरीदने चला गया।

समुद्र-तट पर यह एक चर्चा का विषय हो गया। किसी ने कहा कि चेम्पन को कोई निधि मिल गई है। एक दिन जब वह समुद्र-तट पर गया तो उसे पत्थर के टुकडे-जैसी कोई चीज मिली थी, जो वास्तव मे सोने का एक ढेला था। दूसरो ने असली बात का समर्थन किया कि उसने बडी होशियारी से बचा-बचाकर रुपया जमा किया है। लेकिन यह बात सबो के विश्वास करने योग्य नही थी। उनका कहना था कि सब लोग चेम्पन की तरह ही कमाने वाले हैं। जब उन्हे खर्च के बाद कुछ बचत नही होती, तब सिर्फ चेम्पन ही कैसे इतना बचा सकता था।

अच्चन चेम्पन की उम्र का था। चेम्पन के घर से सटा हुआ ही उत्तर मे उसका घर था। दोनो बचपन के साथी थे। सब लोग अच्चन से सवाल करने लगे कि चेम्पन कितना रुपया लेकर गया है, कहाँ से इतना रुपया आया है, नाव और जाल आयगा तब कौन-कौन नई नाव मे काम करेंगे इत्यादि।

अच्चन को कुछ मालूम नही था। तब भी उसने जानकार होने का भाव प्रक्‍ट किया। चेम्पन का महत्त्व बढ रहा था, तब उसके दिली दोस्त का भी महत्त्व बढना ही चाहिए। अच्चन ने अपनी समझ के अनुसार सब सवालो का जवाब दिया और अपना महत्त्व प्रकट किया।

कोच्चू वेलु ने एक सवाल पूछा, "भाई सुनने मे आया है कि तुम्हारा भी इसमे हिस्सा है। क्या यह बात ठीक है?"

यह सवाल अच्चन को पशोपेश मे डालने वाला था। फिर भी वह चुप नही रहा। उसने कहा, "'है', यह भी नही कह सकता और 'नही है'—यह भी नही कह सकता।"

अच्चन का भाव देखकर उसे बनाने के खयाल से ही वेलू ने वह सवाल किया था। उसका जवाब सुनकर सब ठठाकर हँस पड़े। अच्चन शरमा गया।

एक होशियार आदमी ने पूछा, "तुम लोग हँस क्यो रहे हो जी ? अच्चन चाहे तो अपने लिए नाव और जाल नही खरीद सकता ? फिर हिस्सेदार क्यों बने ?"

अच्चन को अपनी झेप से ही एक जवाब सूझ गया—"सब लोग नाव और जाल खरीदेगे तो काम कौन करेगा ?"

अपनी हँसी को रोकते हुए कोच्चूवेलु ने कहा, "ठीक ही है। इसीलिए अच्चन भय्या नाव और जाल नही खरीदता !"

अच्चन की समझ मे अब बात आ गई कि साथी सब जान-बूझकर उसका मजाक उडा रहे हैं। उसके वाद जब कोई उससे चेम्पन की नाव और जाल के बारे मे पूछता तब वह उसे खूब फटकार देता। लोग, उससे तैश मे आकर डाट-फटकार सुनाते देखने के लिए, कुछ-न-कुछ पूछ लिया करते।

एक दिन मछुआरो की आमदनी कम हुई। अच्चन को तीन ही रुपये मिले। चाय वाले अहमद का पुराना कर्जा उस पर चला आता था। उस दिन अहमद ने उसे रोककर अपना पैसा वसूल कर लिया। इस तरह उस दिन उसे खाली हाथ घर लौटना पडा।

घर मे उस दिन रात को खाना बनाने का उपाय न देखकर नल्लम्मा उसकी राह देखती बैठी थी। पति-पत्नी मे खूब झगड़ा हुआ। नल्लम्मा की शिकायत थी कि पति जो भी कमाता है सो चाय या शराब में खर्च कर देता है। अच्चन की सचाई पर उसे विश्वास नही था। शराब नही पी है यह प्रमाणित करने के लिए अच्चन ने पत्नी की नाक के पास जाकर अपना

मुँह खोलकर सुँघाया। फिर भी नल्लम्मा को विश्वास नही हुआ। उसने कहा, "जो कमाता है सो पूरा पीने मे ही खर्च हो जाता है। तुम्हे होश-हवास नही है। कैसे जिन्दगी कटेगी ?"

"अरी आज मैने नही पी है ? झूठ बोलती है ?"

"आज नहीं पी तो क्या हुआ ? जब कमाते हो तब पी ही लेते हो न !"

घर वाली ने घर-खर्च के लिए पैसा न होने के कारण शिकायत की थी। लेकिन अच्चन ने अधिकार पूर्वक डाट के साथ कहा "अरी, इस तरह बेअदबी से बोलती रहेगी ?"

"बेअदबी ? बचपन के साथी के पास अब अपनी नाव और जाल हो गए और तुम यहाँ खाने का खर्च भी नही जुटा पाते। इतना कहना बेअदबी की बात हो गई ?"

इसका जवाब अच्चन ने बोलकर नही, बल्कि पत्नी की पीठ पर कस-कर दो थप्पड लगाकर दिया। उसकी कैसी दुर्गति हो रही थी ! चेम्पन ने नाव और जाल खरीदा तो उसके लिए तट पर सबोने उसकी हँसी उडाई। घर पर भी उसकी बात को लेकर उसको परेशानी ! !

"अरी, कोई नाव और जाल खरीदे तो उसके लिए मै क्या करूँ ? कौन-सा प्रायश्चित्त करूँ ? चेम्पन ने पेट काटकर पैसा जमा किया है। उस तरह मुझ ही से क्या, यहाँ किसी और से भी नही हो सकता।"

चक्की और करुत्तम्मा अपने घर से यह झगडा सुन रही थी। चक्की ने पुकारकर कहा, "अच्चन भाई ! हम लोग भूखे रहते थे तो एक जून भी तुम्हारे यहाँ माँगने नही गये ?"

अच्चन चक्की की ओर घूमा—"बस, बस। चेम्पन को मै अच्छी तरह जानता हूँ। बचपन से ही जानता हूँ।"

"तुम क्या जानोगे ! आज तुम्हारे यहाँ आग तक नही जलाई गई है न ! यह तुम्हारे और तुम्हारी औरत के मन की बुराई का फल है।"

"औरत ने क्या किया है री ? औरत के बारे मे कुछ कहोगी तो . . . . . हाँ आ . . . ,"—नल्लम्मा ने कहा।

"अरी कौन-सी बुराई है ?"—अच्चन ने चक्की से पूछा।

"ईर्ष्या।"

"किससे ? तुम्हारे मल्लाह से ?"

अपनी गहरी अवज्ञा प्रकट करने के लिए अच्चन ने खखारकर थूक दिया और कहा, "अरी उस घृणित आदमी से मर्दों को ईर्ष्या हो सकती है ?"

चक्की को गुस्सा भी चढा, "अगर अट-शट बोलोगे तो—हाँ !"

अच्चन ने पूछा, "क्या करोगी ?"

"पूछते हो, क्या करूँगी !"

"अरी, चार पैसे पास मे हो गए तो इसीसे इतना घमण्ड !"

झगडा बढता देखकर करुत्तम्मा घबराई। उसने माँ का मुँह अपने हाथ से बन्द किया। अच्चन रुकता नही था। चक्की का भी दम फूल रहा था। करुत्तम्मा माँ को घर के भीतर खीच ले गई।

जब गुस्सा जरा ठण्डा हुआ तब अच्चन ने ध्यान से एक-एक बात पर विचार किया। उस दिन घर मे खाना नही बना था। इससे भी उस झगडे ने उसे अधिक दुखी बना दिया। औरते कभी-कभी आपस मे भिड जाती थी; लेकिन वह खुद उस दिन तक न तो चेम्पन से झगडा था, न चक्की से, आज वह भी हो गया, उसे रात को नीद नही आई।

दूसरे दिन सवेरे समुद्र मे जाने के पहले उसने नाव वाले से दो रुपया उधार लेकर घर दे दिया। दोपहर को कमाई का अपना हिस्सा पूरा-का-पूरा लाकर नल्लम्मा के हाथ मे देते हुए कहा कि आगे से उसने ऐसा ही करने का निश्चय किया है।

"अरी, सुन, जो कमाऊँगा सब लाकर दे दिया करूँगा। हिफाजत से रखा करना ! हम भी जरा देखे कि चार पैसा बचा सकते है कि नही।"

यह विचार नल्लम्मा को बहुत पसन्द आया। उसने कहा, "तब तो अगर नाव और जाल न भी ले सके, शाम को भूखे तो नही रहना पडेगा।"

"कौन कहता है कि नाव और जाल नही ले सकेंगे ? यह निश्चय

से कहने की जरूरत नही है। हो सकता है कि हम भी ले लें।"

नल्लम्मा को लगा कि अच्चन ठीक कहता है। कोशिश करने का उसका भी मन था। उसने कहा, "कल तक एक समान रहने वालो को देखा नही ? अब वे बात भी नही करेंगे।"

अच्चन को यह अच्छा नही लगा। उसने कहा, "तुम क्यो दूसरो के बारे मे बोला करती हो ? हमारे लिए अपना ही काम देखना काफी है।"

"नही, मै तो यो ही कह रही थी। मालूम होता है कि चक्की अब बहुत घमण्डी हो गई है।"

अच्चन ने उपदेश दिया, "तुम अपना मुँह बन्द रखा करो तो बहुत अच्छा होगा।"

"मै कुछ भी बोलने नही जाती।"

"हाँ वही अच्छा होगा, हम भी जरा देखे।"

नल्लम्मा को एक ही पछतावा रहा कि अच्चन को ऐसा पहले क्यो नही सूझा !

अच्चन ने हामी भरी। नल्लम्मा ने ठीक ही कहा था। फिर भी मानो अपनी तसल्ली के लिए अच्चन ने कहा था, "अरी, मल्लाह को क्यो बचाकर रखना चाहिए ? उसकी सम्पत्ति पश्चिम मे फैली हुई पडी है न ! बाप-दादो का कहना था कि नाव और जाल घाट के सामूहिक काम के लिए है। लेकिन अब तो यह बात नही रही। कोशिश करने पर नाव और जाल कौन मल्लाह नही रख सकता ?"

"फिर भी बचपन के साथी के पास अब नाव और जाल हो गया ना," अच्चन ने कहा, "चेम्पन होशियार है। उसका यही लक्ष्य रहा है।"

फिर उसने हुकारी भरते हुए कहा, "देखूँगा।"

यह उसका निश्चय था।

शाम को जाल की मरम्मत करने के लिए उसे समुद्र पर जाना था। जाल के फटे रहने से उस दिन बहुत-सी मछलियाँ बाहर निकल गई थी।

जब अच्चन तट पर पहुँचा तब बाकी सब पहुँच चुके थे और काम में हाथ भी लगा चुके थे। वहाँ पर भी चेम्पन ही बातचीत का विषय था।

अच्चन ने कहा, "साथियो, तुम लोगो को और कोई काम नही है? दूसरो के बारे मे कुछ बोलने की क्या जरूरत है? नही तो बोलते जाओ! उसका पाप कटने दो।"

अच्चन ने पूछा, "तुम्हे इतना दुःख क्यो होता है?"

अच्चन ने शान्त भाव से कहा, "कहो, मेरा कहना गलत है?"

रामन् मूप्पन ने न्याय की एक बात उठाई: "चेम्पन के बारे मे कुछ कहने का हमे अधिकार नही है?"

"कैसा अधिकार?"

रामन् मूप्पन को आश्चर्य हुआ। उसने कहा, "सुनो भाई, कोई नौजवान इस तरह का सवाल करता तो समझ मे आ सकता था। तुम तो एक पुराने मल्लाह हो न।"

अच्चन की समझ मे बात नही आई। उसने सिर्फ दूसरों की बुराई न करने की बात कही थी। वह अच्छी ही बात तो थी। उसने पूछा, "क्यो, ऐसा तुमने क्यो कहा मूप्पन?"

डोरा नीचे रखते हुए मूप्पन ने कहा, "समुद्र-तट के कुछ कायदे-कानून भी है कि नही?"

अच्चन ने हामी भरी, "क्या चेम्पन पर वे लागू नही होते?"

अच्चन ने ठीक समझा नही कि किस बात को लेकर वे सब व्यग कर रहे है। रामन् मूप्पन ने सवाल खोल दिया, "इस घाट पर पुराने जमाने मे क्यो, हाल तक भी क्या बडी उमर हो जाने पर लडकियाँ घर मे अविवाहित रहा करती थी?"

अच्चन ने बात पूरी की, "घाट पर उन दिनों घटवार रहता था।"

मूप्पन ने आगे सवाल उठाया, "वयस्क लडकी जब घर मे है तब कौन नाव और जाल खरीदने की बात सोच सकता है?"

पुराने जमाने मे घटवार लड़कियों को ऐसे अविवाहित नही रहने

देता था। घाट के नियमो का कोई भी उल्लघन नही कर सकता था। घटवार इस सम्बन्ध मे हमेशा सावधान रहा करता था। उन नियमों का विशेष उद्देश्य था। वे मल्लाहो के कल्याण के लिए बने थे।

अच्चन ने पूछा, "नियम के अनुसार किस उम्र मे लडकी की शादी होनी चाहिए ?"

बूढे मूप्पन ने कहा, "दस साल की उम्र मे।"

वेल्लमणली वेलायुधन् ने पूछा, "दस साल की उम्र मे शादी नही हुई तो ?"

जानकारी के लिए यह सवाल नही पूछा गया था। उसकी ध्वनि मे नियम के खिलाफ आवाज उठाने का भाव स्पष्ट था।

रामन् मूप्पन ने ही उसे जवाब दिया, "पूछते हो 'नही हुई तो ?' ऐसा तो होने नही दिया जाता था।"

वेलायुधन् ने आगे पूछा, "घटवार क्या करेगा ?"

"हुक्का-तम्बाकू बन्द कर देगा और फिर घटवार पर रहना भी नही हो सकेगा।"

एक-दूसरे नौजवान पुण्यन् ने कहा, "ये सब पुराने जमाने की बाते है।"

अच्चन ने गुस्से से कहा, "नही रे, आज भी वैसा ही होगा। तुम देखोगे। हाँ, दिखा देगे। अब चेम्पन को परेशान होकर इधर-उधर दौडते दिखा देगे।"

रामन् मूप्पन ने इसका समर्थन किया और आगे पूछा, "सबोको नाव और जाल रखने का अधिकार है क्या ? अच्चन ?"

अच्चन ने जवाब दिया कि सब को अधिकार नही है। मूप्पन ने उस सवाल के जवाब को और भी स्पष्ट किया। समुद्र-माता की सन्तान तो अनमोल सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी है। उनका हाथ भरा-पूरा रहना साधारण-सी बात है। तब सबमे नाव और जाल रखने की शक्ति है ही। लेकिन घाट पर जितने भी लोग है यदि वे सब नाव और जाल रखने लगे

तो काम पर कौन जायगा ! उसने पूछा, "इस घाट पर कौन ऐसा है जो चाहे तो नाव ओर जाल नही खरीद सकता ?"

बात तो ठीक थी । पर अच्चन ने एक भारी सवाल पेश किया, "तब सबके पास नाव और जाल क्यों नही है ।"

इसका भी कारण था । मछुआरे पाँच जाति के है , अरयन, 'जालवाला', मछुआ, मरक्कान और एक पचम जाति । इन सबके ऊपर पूरब के वालन है । इनमे 'जालवाले' को ही नाव और जाल रखने का अधिकार है । पुराने जमाने मे घटवार 'जालवाले' को ही नाव और जाल खरीदने की अनुमति देता था । वह तब भी, जब कि 'जालवाला' नजराना देता था ।

वेलायुधन् ने पूछा, "चेम्पन काका इनमे किस जाति के है ?"

पुण्यन् ने मुस्करा दिया ।

मूप्पन ने जवाब दिया, "मछुआरे ।"

पुण्यन् ने मुस्कराते हुए कहा, "हॉ, चेम्पन काका की जाति-पॉति तो अब यह पूछेगा ही ।"

अच्चन ने कारण पूछा । पुण्यन् ने कहा, "उस लडकी से शादी की बात उठी है । इसीसे ।"

अच्चन ने कहा, "अच्छा है । लडकी बडी अच्छी है ।"

अच्चन को अच्छा नही लगा । उसने कहा, "अच्चन को तो ऐसे भी चेम्पन का सब-कुछ अच्छा ही लगता है ।"

फिर उसने वेलायुधन् को एक चेतावनी दी, "उस कजूस से तो तुम्हे एक दमड़ी भी नही मिलेगी । यह याद रखना ! वह लडकी भी कम नही है ।"

अच्चन को गुस्सा आया । उसने कहा, "तुम क्या कह रहे हो जी ? लडकी की शादी तय होती है तो उसे तोड़ना चाहिए ? यही मछुआरे का काम है ?"

अच्चन ने कहा, "मै सच्ची बात बता रहा था ।"

आण्टी ने, जो अब तक चुप था, एक सवाल पूछा और उससे बातचीत

का विषय बदल गया। उसने जानना चाहा कि 'जालवाले' के अलावा और भी किसी व्यक्ति ने नाव और जाल खरीदा था। उसे जवाब मिला कि ऐसा हुआ है, लेकिन खरीददार उसका बहुत दिन तक उपभोग नहीं कर सका। अच्चन ने पूछा कि प्रत्येक घाट पर 'जालवाला' के कौन-कौन परिवार हैं।

इसका जवाब रामन् मूप्पन ने दिया, "चेर्तला में पल्लिक्कुन्नम 'जालवाला', आलप्पुषा मे परुत्तिक्कवल 'जालवाला' और यहाँ कुन्नल रामन् का परिवार। यह क्रम है।"

पुण्यन् ने सवाल किया कि जाल खरीदने के लिए घटवार को नजराने के तौर पर क्या दिया जाता है। उसका जवाब था, "तम्बाकू के चार पत्ते और पन्द्रह रुपये।"

इसके बाद घटवार के अधिकार और हक के बारे मे बातें शुरू हुईं। घटवारो का अधिकार बहुत बड़ा था। उसका विरोध करने के भाव से वेलायुधन् ने पूछा, "अपना पैसा लगाकर जब आदमी नाव और जाल खरीदे तब भी घटवार को कुछ देना ही चाहिए ?"

पुण्यन् ने जोडा, "देखो, देखो, यह चेम्पन काका का दामाद बन चुका है।"

अच्चन ने समर्थन करते हुए कहा, "घटवार को नजराना नही देगा तो नाव और जाल आने पर ससुर-दामाद दोनो मिलकर घटवार का सामना भी तो करेगे। उस समय देखा जायगा।"

यह एक चुनौती थी। चेम्पन जब नाव और जाल लायगा तब बिना घटवार की अनुमति के नाव कैसे समुद्र मे जायगी, यह तो देखने ही लायक होगा। अच्चन ने स्पष्ट कह दिया कि यह नही हो सकता। वेलायुधन् ने उस चुनौती को स्वीकार करना चाहा। लेकिन किस अधिकार से करता। फिर भी उसने विरोध मे कहा, "तुम लोगो को ईर्ष्या हो गई है ?"

"मछुआरे को ईर्ष्या!"

"नही तो और क्या है ?"

ऐसा लगने लगा कि यह बातचीत एक झगडे का रूप धारण कर लेगी। अच्चन ने बीच मे पडकर वेलायुधन् को चुप कराया।

थोडी देर तक किसी ने कुछ नहीं कहा।

घाट पर जब इस तरह की अप्रत्याशित बाते हो रही थी तब चक्की घर मे दिवा-स्वप्न देख रही थी। जल्दी ही वह एक नाव के मालिक की स्त्री कहलायगी। जीवन की एक बडी इच्छा पूरी होने जा रही थी। इसके लिए पति-पत्नी ने काफी परिश्रम किया था। पडोस की किसी भी स्त्री से वह देखने मे अच्छी थी, नाव का मालिक होने के बाद, करुत्तम्मा के लिए अभी जैसा लडका मिल सकता था, उससे भी अच्छा लडका मिल सकता है।

माँ ने बेटी से कहा, "तेरे बाप की बडी-बडी अभिलाषाएँ हैं। इस साल की आमदनी से जमीन और घर की व्यवस्था करेगे। तब तेरी शादी करेगे।"

करुत्तम्मा को कुछ कहना नही था। चक्की ने अपने-आप ही आगे कहा, "समुद्र-माता की कृपा से किसी का कोई कर्जा नही है। आमदनी कम हो जाय तो भी यह तसल्ली रहेगी कि कोई तग करने वाला नही है।"

चक्की का बोलना खत्म होने के पहले ही करुत्तम्मा न पूछा, "अम्मा, तुम्ही कहती हो कि कोई कर्जा नही है!"

चक्की समझ गई कि परी के रुपयो का खयाल करके ही करुत्तम्मा ने सवाल उठाया है। वह जरा झेप गई। फिर किसी तरह एक जवाब दिया, "नहीं, उसे एक कर्जे के रूप मे मानने की जरूरत नही है।"

करुत्तम्मा ने जरा कडी आवाज मे पूछा, "जरूरत क्यो नही है?"

"अरी, नही-नही, ऐसा नही। उसे तुरन्त नही भी चुकाये तो भी नाव और जाल कोई हडप नही सकता!"

"ऐसा इसीलिए कहती हो न कि वह मोतलाली बडा सीधा-सादा आदमी है?"

चक्की ने गुस्सा दिखाते हुए कहा, "इसका क्या मतलब है री?

जब भी तू छोटे मोतलाली का नाम लेती है, तेरी आवाज इतनी मोटी क्यो हो जाती है ?"

करुत्तम्मा ने कुछ नही कहा, माँ के प्रश्न से उसमे कोई भाव-परिवर्तन भी नही हुआ। चक्की ने आगे कहा, "अपनी मर्यादा के भीतर ही रह ! तभी तो कोई अच्छा लडका मिलेगा। नही तो तेरा भाग्य जैसा है वैसा ही होगा।"

करुत्तम्मा जरा भी विचलित नही हुई। दृढ स्वर मे उसने पूछा, "अम्मा, मुझ ही मे मर्यादा की कमी है ?"

चक्की ने सवाल किया मानो उसने सुना ही नहीं "छोटा मोत-लाली तेरा कौन है री ?"

करुत्तम्मा ने यह नही कहा कि वह उसका कोई नही है। फिर भी उसकी आँखे भर आईं ।

करुत्तम्मा ने क्या गलती की थी ? कुछ भी तो नहीं। यह चक्की को भी मालूम है। आज तक उसने कोई गलती नही की। वह एक बहुत सुशील और सहनशील लडकी रही है। परी का कर्जदार बनना ठीक नही था। उसका रुपया लौटा देने की बात जो करुत्तम्मा करती है उसमे गलती ही क्या है ? फिर भी करुत्तम्मा के मन मे परी के प्रति प्रीति है। पहले ही शादी कराकर उसे भेज देना चाहिए था। लेकिन इसका मर्म बाप को कहाँ मालूम था ! .. चक्की ने आगे कहा, "बिटिया, तेरे ही लिए तेरा बाप इतना कष्ट उठा रहा है। बिटिया मेरी, तू यह सब व्यर्थ न कर !"

करुत्तम्मा चुप रही। चक्की ने पूछा, "बेटी, एक बात पूछूँ ? सच-सच कहना ! तू उस विधर्मी से प्रेम करती है ?"

करुत्तम्मा ने जहाँ 'नही' कहना चाहिए वहाँ कुछ नही कहा। उसके निश्चित मौन ने माँ को डरा दिया। चक्की की मानसिक शान्ति भंग हो गई। उसने विलाप करते हुए कहा, "हे भगवान्, उस महापापी ने मेरी बेटी को जादू-टोने से वश मे कर लिया है, ऐसा लगता है।"

चक्की का मन यहाँ तक चला गया। करुत्तम्मा ने अपने हाथ से चक्की का मुँह बन्द करते हुए कहा, "यह कैसा पागलपन है अम्मा!"

चक्की ने कातर भाव से बेटी की ओर देखा और गिड़गिड़ाकर कहा, "बिटिया, माँ को धोखा न देना!"

इतना होने पर भी करुत्तम्मा ने यह नही कहा कि वह परी से प्रेम नही करती।

उस शाम को अच्चन चेम्पन के घर आया। घाट पर जो-जो बातें हुई थी सब उसने चक्की को सुना दी। वहाँ लोगो ने गडबड़ी पैदा करने का निश्चय किया है। अच्चन और मूप्पन उनमे मुख्य है। लौटने पर चेम्पन को सबसे पहले इस नये संकट से बचने का उपाय करना चाहिए। उसने आगे कहा, "हम दोनो बचपन के साथी हैं। यह सब सुनकर मै चुप नही रह सकता था।"

अब चक्की के मन की बची-खुची शान्ति भी काफूर हो गई। घाट के किसी के खिलाफ़ हो जाने का क्या मतलब है, यह चक्की जानती थी। उसके मन मे सवाल उठा :

'इस तरह की सजा के लिए हमने क्या कसूर किया है? क्या बेटी की शादी अभी तक नही की है—यही?'

: ४ :

घाट वालो के प्रतिनिधि के तौर पर रामन् मूप्पन और अच्चन दो और आदमियों के साथ मुलाकात के लिए घटवार के पास गये। घाट की एक बड़ी अनिष्टकारी बात के सम्बन्ध मे उन्हे शिकायत करनी थी। चेम्पन की बेटी बड़ी हो गई है; चेम्पन ने अभी तक उसकी शादी नही की और वह स्वतंत्र रूप से घाट पर घूमती फिरती है। यही वह बड़ी शिकायत थी। घटवार ने सब बाते ध्यान से सुनी और कहा कि वह उचित कार्यवाही करेगा।

अच्चन को लगा कि शिकायत को सुनकर घटवार पूरा प्रभावित नही हुआ है। घटवार के जवाब देने के बाद भी सब वही खडे रहे। घटवार ने पूछा, "अब क्यों खड़े हो ?"

अच्चन को कुछ और शिकायत करनी थी, "जब बेटी घाट का सर्वनाश करने पर तुली है तब बाप नाव और जाल खरीदने गया है।"

घटवार को यह बात नही मालूम थी। उसने पूछा, "इसके लिए उसके पास रुपया कहाँ से आया ?"

मूप्पन और अच्चन आदि को भी यह नही मालूम था। अच्चन ने सविनय एक प्रश्न किया, "चेम्पन 'मछुआ' है। आपने उसे नाव और जाल खरीदने की अनुमति दी है क्या ?"

"नही तो। हमसे तो पूछा भी नही है।"

"हम घाट वाले क्या करे ?"

घटवार ने थोड़ी देर सोचकर कहा, "वह सोचता होगा कि जमाना अब बदल गया है।"

अच्चन ने हामी भरी। घटवार ने अपना निर्णय सुनाया, "नाव और जाल लाने दो ! उसमें काम पर कोई भी हमसे पूछे बिना न जाय।"

अच्चन ने कहा, "ऐसा हीहो गा।"

घटवार ने अपना विचार प्रकट किया, "लेकिन कुछ नौजवान लोग हैं, उनका क्या रुख होगा, मालूम नही।"

अच्चन के मन मे उस समय वेलायुधन् का खयाल आया। घटवार के लिए यह कोई बड़ा सवाल नही था। क्योकि वह जानता था कि खुल्लम-खुल्ला उसका विरोध करने की हिम्मत किसी को नही हो सकती। उसने कहा, "अच्छा, इसका उपाय मै स्वयं करूँगा। तुम लोग सब घाट वालों को सूचना-मात्र दे देना कि नाव और जाल खरीदने की अनुमति मैंने नही दी है।"

मूप्पन और अच्चन की अपनो जीत हो गई—ऐसा भाव लेकर मूप्पन और अच्चन लौट आए। घर-घर जाकर उन्होंने घटवार की सूचना सबको दे दी। अच्चन का खयाल था कि सिर्फ वेलायुधन् ही घटवार की आज्ञा का उल्लघन करेगा और उसका फल भोगेगा।

चक्की को सब बात मालूम हो गई।

घाट वालो के क्रोध का पात्र बनने से घर डुबा देने की कहानी उसने सुनी थी। रातो-रात परिवार-के-परिवार घाट छोड़कर भाग भी गये है। इस तरह घाट छोड़कर आने वाले दूसरी जगह जाकर मछुआरे के रूप मे जम जायँ और अपनी जीविका चलायँ, ऐसा नही हो सकता था। वे जहाँ कही भी जायँ सामाजिक नियमों का प्रतिबन्ध लगा ही रहता था। इसलिए ऐसे लोग साधारणत. अपना धर्म-परिवर्त्तन कर लेते थे। अब उस नियम का बन्धन ज़रा ढीला पड गया है। जमाना ही बदल गया है न ! फिर भी अगर घटवार हुक्म दे तो आज भी कोई काम पर नही जायगा, ऐसी स्थिति हो सकती है। ऐसा भी हो सकता है कि जन्म-मरण आदि के अवसरो पर कोई घर में न आय। इस तरह की रोक-थाम की बातें आज भी हो सकती है। नाव और जाल लेने के लिए जाने के पहले नज़राना

देकर अनुमति ले लेना आवश्यक था।

उन लोगो ने किसका क्या बिगाड़ा है ? घाट पर सब जगह घटवार के प्रतिबन्ध के बारे मे चर्चा होने लगी। स्त्रियो के बीच यह बात उठी कि वयस्क लडकी का ब्याह लोग नही करा रहे है, यही उनका बडा अपराध है। करुत्तम्मा को अपने जीवन से विरक्ति हो गई। उसको लगा कि उसके कारण माँ-बाप को क्या-क्या परेशानी उठानी पड रही है। लडकी होकर जन्म लेना उसके वश की बात तो थी नही, घाट की पवित्रता को भी उसने नष्ट नही किया है। उसके अविवाहित रहने से किसका क्या बिगड़ता है ? लेकिन इस तरह का तर्क किसी को भी मान्य नही हो सकता था।

माँ-बेटी दोनो बडी आतुरता से चेम्पन के आने की प्रतीक्षा करने लगी। काली के घर मे चार-पाँच स्त्रियाँ बैठकर बाते कर रही थी। बात उन्ही लोगो के बारे मे थी। चक्की छिपकर उनकी बाते सुन रही थी। एक ने कहा कि परी का करुत्तम्मा से सम्बन्ध है; उसने उन दोनो को नाव की आड मे आपस मे हँसते-बोलते देखा है, इसी कारण माँ-बाप उसका ब्याह नही करा रहे है ।

आदमी सब-कुछ सह सकता है। लेकिन एक माँ अपनी बेटी के बारे मे इस तरह की बाते कभी बर्दाश्त नही कर सकती। चक्की आड मे से एक गुस्साभरे चीते की तरह उन लोगो के बीच में कूद पड़ी। झगडा बढ गया।

किसी ने कहा कि जवानी मे चक्की ने खुद घाट की पवित्रता नष्ट की थी। चक्की ने काली के एक बच्चे के असली पिता का नाम पूछा और कहा कि उसे मालूम है कि उसका जन्म-दाता वह मोतलाली है, जो उन दिनो सूखी मछली बेचने के लिए घर-घर घूमा करता था। वहाँ जितनी औरते थी उनकी और उनकी माताओ की, सबकी अलग-अलग कहानी सुनाई गई।

चक्की तथा बाकी औरतो के बीच एक वाक्-युद्ध छिड़ गया, चक्की

अकेली ही बाकी सबसे जूझ रही थी।

घेरे के पास खड़ी करुत्तमा ने सब-कुछ सुना। वे सब बातें सुनकर वह स्तम्भित रह गई। उसकी माँ ने भी जवानी मे किसी से प्रेम किया है क्या ? क्या यह सम्भव है कि इन सबोंने घाट की पवित्रता नष्ट की है ? तो क्या घाट की पवित्रता का तत्त्व-ज्ञान एक निरर्थक बात ही है ? इन सबोंके बारे मे ऐसी कहानियों के रहते हुए भी समुद्र पहले की तरह आज भी पश्चिम में लहरा रहा है; आज भी इसमें पहले की तरह ज्वार-भाटे आते हे; मछुआरो की आमदनी भी वैसी ही होती है; उनका जीवन-क्रम भी पहले ही-जैसा चलता है। तब इस पवित्रता की कहानी का क्या मतलब है ?

झगड़ा बढते-बढ़ते करुत्तम्मा के बारे मे ही बातें होने लगी। करुत्तम्मा को अपने कान बन्द कर लेने पड़े। कैसी-कैसी झूठी बाते कही जा रही थी ! परी ने उसे रखैल बना रखा है, इस जंगी घोड़े पर मोतलाली ही लगाम कस सकता है, आमदनी कम हो जाने के डर से उसकी शादी कराकर नही भेज रहे हैं, आदि-आदि।

तब तो माँ के बारे में उन औरतो ने जो कहा है और उनके बारे में माँ ने जो-जो कहा है सब झूठ ही होगा।

चक्की की बातो का जवाब देना मुश्किल पाकर काली ने कहा, "देखती रहो, तुम लोगो का क्या होने जा रहा है ! घटवार ने तय कर लिया है।"

चक्की चुप नही हुई। मुकाबला करने का भाव बढता ही गया, सबोका मुकाबला करने का भाव। उसने कहा, "क्या तय किया है री ? घटवार क्या करने जा रहा है ?"

पेण्णम्मा ने कहा, "मर्यादा त्यागकर काम करने वालों के साथ क्या करना चाहिए, यह घटवार को मालूम है।"

चक्की ने दृढता के साथ कहा, "क्या करेगा घटवार ? हम इस्लाम अपना लेगे। नही तो ईसाई हो जायँगे। तब वह क्या करेगा ?"

एक ने कहा, "हूँ ऊँ ! ! अब बात मुँह से निकल ही तो गई। तो सोच-विचार करके ही बिटिया को मुसलमान छोकरे के साथ छोड़ दिया है !"

एक दूसरी ने कहा, "माँ-बेटी दोनों के लिए वही अच्छा होगा।"

चक्की ने पूछा, "अरी, इसमे बुराई ही क्या है ?"

करुत्तम्मा को ऐसी घबराहट हुई जैसी इसके पहले कभी नही हुई थी। कोई दर्द हुआ ?– दर्द नही कहा जा सकता।– कोई गहरी खुशी ?– यह भी नही कहा जा सकता। एक मर्म वेदना के साथ करुत्तम्मा ने माँ को पुकारा। उसकी आवाज़ मे एक घबराहट थी। चक्की चली आई।

घर में आने पर चक्की बोलती रही। करुत्तम्मा न जाने क्या-क्या पूछना चाहती थी, पर हिम्मत नही हुई। 'इस्लाम अपना लेगें'—ये शब्द उसके कानों मे गूँज रहे थे। उसकी शिराएँ गरम हो गईं। कैसी असह्य गरमी उसे मालूम हो रही थी।

यह स्वाभाविक ही था। उसका हृदय अपहृत हो चुका था। आदर्श जीवन के लिए बनाये गए सदाचार, निष्ठा और विश्वास के दुखदायी तथा खतरो से भरे किले के भीतर वह जी रही थी, उसे अब बाहर निकलने का रास्ता दिखाई देने लगा। एक निश्चय की ही जरूरत थी। उसके बाद सब ठीक हो जायगा।

इस्लाम धर्म अपना लेना ! तब वह कैसी लगेगी ! कुर्ता और गोटेदार कपड़ा पहने, कान को ऊपर से नीचे तक छिदवाकर उसमे सोन की 'रिंग' डाले और सिर को कपड़े से ढके जब वह परी के पास जायगी तब उसे कितनी खुशी होगी। तब तो परी को उसके साथ पूरी आज़ादी होगी। अपने बन्धन के कारण, जिसे वह पूर्ण रूप से नही समझ रही थी वरन् महसूस कर रही थी, उसके बाहर निकलने का वह रास्ता था। मछुआरे की पत्नी होकर रहने की ज़रूरत नही रहेगी। यदि उस समय परी आ जाता तो वह कह भी देती कि उसके घर वाले इस्लाम धर्म अपनाने जा रहे हैं। सुनकर परी के आनन्द की सीमा न रहती।

लेकिन माँ ने क्या वास्तव मे सोचकर ऐसा कहा था ? उस समय गुस्से मे कहा होगा। 'क्या सचमुच इस्लाम अपनाने का विचार है क्या'— यह सवाल पूछने मे ही उसे डर लगा। पूछने पर माँ सोचेगी कि वह अपनी इच्छा ही प्रकट कर रही है। करुत्तम्मा इस तरह के विचार मे डूबी रही।

घटवार के यहाँ से तीन-चार आदमी आये। पर चेम्पन अभी तक नही लौटा था। चार-पाँच दिन के बाद घाट पर चेम्पन की नाव आ गई। जाल भी था। पल्लिक्कुन्नम 'जालवाला' कण्डनकोरन की वह नाव थी। एक दिन वह नाव बहुत ही मशहूर थी। अब थोडी पुरानी-सी हो गई है। बस, इतना ही।

इस घाट वालों ने भी उस नाव को चेर्तला घाट पर अजेय होकर चलते देखा था। पुरानी होने पर भी कण्डनकोरन ने इसे कैसे बेच दिया, यही आश्चर्य की बात थी। हाँ, उसकी स्थिति ज़रा बिगडी हुई ज़रूर थी। वह था भी बड़ा शानियल और ज़रा फिज़ूलखर्च।

सबने आकर नाव को देखा। किसी ने सीधे कुछ नही कहा। फिर भी चेम्पन को एक ऐसी अच्छी ऐश्वर्यशालिनी नाव मिली है, यह खयाल सबके मन मे पैदा हुआ।

अच्चन ने साथियो से कहा, "पल्लिक्कुन्नम का ऐश्वर्य इस नाव के साथ चेम्पन के पास चला आया।"

अच्चन ने उसे फटकारा, "उस खानदानी का ऐश्वर्य इस मछुआरे को कहाँ से मिलेगा जी! उसका सोने का-सा रग! तौंद के ऊपर सफेद-स्वच्छ कपड़ा पहने और काली किनारी की महीन चादर कन्धे पर लटकाये, नाव किनारे लगते समय उस तट पर आकर उसका खडा होना!— उसमे और चेम्पन मे क्या समानता हो सकती है।"

मूप्पन ने भी अपनी राय प्रकट की, "तब तो पतली-दुबली काली चक्की भी कण्डनकोरन की घर वाली के बराबर हो जायगी! क्या तुमने कण्डनकोरन की घर वाली को देखा है?"

"हाँ, हाँ, उसका चेहरा देखते ही आँखें चौंधिया जाती है।"

घर पहुँचते ही चेम्पन को बडा धक्का लगा। वह बड़ा उत्साह लेकर लौटा था। उस नाव का मिलना, एक बडा भाग्य था। पल्लिक्कुन्नम कण्डनकोरन के यहाँ वह कैसे गया, कैसे वहाँ खाना खाया—आदि-आदि बातें उसे चक्की को सुनानी थी। कोरन की पत्नी के बारे मे भी उसे कहना था। ये सब बातें मन में सोचता हुआ वह लौटा था, लेकिन घर लौटते ही उसे एकाएक एक धक्का लगा।

इसके पहले कभी भी उसे इस तरह का बोझीलापन नही मालूम हुआ था। उसके सामने सिर्फ एक लक्ष्य था, जो आज सफलीभूत हो गया। लेकिन अब काम आगे नही बढेगा, ऐसा लगने लगा।

नाव और जाल खरीदने के पहले वह घटवार से नही मिला, यही उसका सब से बडा अपराध था। बात ठीक भी थी। उसने पुराने ज़माने से चले आने वाले रिवाज का उल्लघन किया था। कितनी मुश्किल से उसने नाव और जाल के लिए रुपये जुटाये! अब ऊपर से . . .
पन्द्रह-बीस रुपये और खर्च के लिए प्राप्त करने का कोई उपाय नही था। उसने सोचा ही नही कि यह इतनी भारी गलती मानी जायगी।

निस्सहाय भाव से उसने अपनी पत्नी से पूछा, "हमने दूसरो का क्या बिगाड़ा है री ?"

चक्की ने जवाब दिया, "कुछ बिगाडने की आवश्यकता है? ईर्ष्या है, ईर्ष्या!"

"यह ठीक है। लेकिन बीस-पच्चीस रुपये का उपाय हो जाय तो सब ठीक हो जायगा। क्या किया जाय ? नाव पर भी थोडा और खर्च करना जरूरी है। अभी तो सिर्फ एक ही जाल है।"

चेम्पन ने एक-एक करके सब ज़रूरते बतलाईं। चक्की को नहीं बतलाता तो किसको बतलाता! सुनने के लिए और कौन था? लेकिन चक्की ने सान्त्वना देने के बदले पूछा, "तब क्यो बेकार ही यह झंझट सिर पर उठा लिया ?"

चेम्पन ने कुछ नही कहा। शायद उसे भी लगा होगा कि उसने अपनी

शक्ति के बाहर बोझा उठा लिया है। पैसा सब खत्म हो चुका था। लोग भी खिलाफ हो गए।

चक्की ने कहा, "पास में जो पैसा था उससे बेटी की शादी ही करा दी होती तो कम-से-कम यह हालत तो न होती !"

चेम्पन ने इसका भी जवाब नही दिया। बड़ी अभिलाषाएँ होने से शान्ति नही रहती क्या ? क्या इसके यही मानी है कि आदमी जितना है उसीमें निभाता जाय !

असल मे वह दिन खुशी मनाने का था जब कि जीवन की उसकी एक बडी अभिलाषा पूरी हुई थी। लेकिन उसका घर उस दिन उदासी मे डूबा हुआ था।

काफी रात होने पर चेम्पन ने पत्नी से कहा, "पैंतीस रुपये हो जायँ तो सब काम बन जायगा।"

चक्की ने पूछा, "कैसे ?"

चेम्पन ने सुनाया, "कल घटवार से जाकर मिलूँगा। तब सब ठीक हो जायगा।"

"मछली का जाल और सहारे का जाल ?"

"सब-कुछ हो जायगा।"

चक्की ने बाँस की नली मे बन्द करके जमीन में गाडकर जो रुपया बचा रखा था उसे भी वह निकालकर दे चुकी थी। इस तरह उसकी छोटी पूँजी भी खत्म हो चुकी थी, जिसके लिए उसने चेम्पन को दोषी ठहराया।

उसने कहा, "देखा, अभी कैसी मुसीबत मे फँस गए हो! एक रत्ती सोने का भी कुछ बनवाकर रख लिया होता तो! मै जब-जब कहती थी तब तो तुम कान ही नही देते थे।"

चेम्पन ने मान लिया और आगे कहा, "एक ही रास्ता है चक्की !"

"कौन-सा ?"

कहने मे मानो चेम्पन को सकोच हो रहा था। चक्की ने अपना सवाल दुहराया। चेम्पन ने कहा, "उसी छोकरे को पकड़ने से काम बनेगा।"

चक्की ने चेम्पन का मुँह बन्द कर दिया। उसको मालूम नही था कि करुत्तम्मा सोई हुई है या जागी है। पत्नी का हाथ हटाते हुए चेम्पन ने कहा, "क्या है री ?"

"धीरे से बोलो !"

"ऊँ !—क्या है ?"

इसमे जो बात थी वह चेम्पन को मालूम नही होनी चाहिए थी। किसी भी पिता को ऐसी बाते मालूम नही होने देनी चाहिएँ। फिर भी कुछ जवाब देना तो जरूरी था। चेम्पन ने सवाल दुहराया। चक्की ने उसके कान मे कहा, "करुत्तम्मा कहती है कि इससे अपमान होता है। उसे मालूम हो जायगा तो वह लड पड़ेगी।"

"इसके अलावा और कौन-सा रास्ता है ?"

"मै भी वही सोच रही हूँ।"

थोड़ी देर बाद चेम्पन ने पूछा, "वह होगा वहाँ ?"

"होगा।"

"मै जरा जाकर देख आता हूँ।"

चक्की ने कुछ नही कहा। चेम्पन दरवाजा खोलकर बाहर चला गया।

करुत्तम्मा सोई हुई थी। उसे कुछ मालूम नही हुआ। थोड़ी देर बाद चेम्पन लौट आया। वह प्रसन्न था। उसे देखते ही मालूम होता था कि काम हो गया है।

"बडा भोला-भाला लड़का है वह। बहुत अच्छा उसका स्वभाव है। उसके पास तीस रुपये थे। उसने निकालकर दे दिए।"

चिन्ता दूर हो जाने पर भी चक्की के मन में एक कसक रह गई। क्या उसकी उदारता बिलकुल निरुद्देश्य है ? जब-जब माँगा गया तब-तब उसने बिना कुछ कहे ही रुपया क्यो दे दिया ?—यह एक बड़ा सवाल

था। लगता है करुत्तम्मा के कारण ही उसने ऐसा किया है।

दूसरे दिन चेम्पन घटवार से मिलने गया। घटवार ने पहले उसे बहुत डाटा। लेकिन बाद में वह शान्त हो गया। उसने आदेश दिया कि लड़की का ब्याह जल्दी-से-जल्दी हो जाना चाहिए। नाव की आमदनी का उसका हिस्सा भी रोजाना अपने पास पहुँचा देने को उसने कहा। चेम्पन ने घाट वालो की ईर्ष्या की शिकायत की। घटवार ने उसका उपाय करने का आश्वासन दिया।

इस तरह उस समय वायु-मडल शान्त हो गया। पूर्ण सजावट और शान-शौकत के साथ नाव को उतारने में पाँच सौ रुपये का खर्च था। वह भी करना तय हुआ।

"कैसे होगा ?"—यह सवाल चक्की ने किया।

चेम्पन ने कहा, "परी से ही यह भी लेना होगा।"

चक्की स्तब्ध रह गई। करुत्तम्मा के जाने बिना दोनो में लड़ाई हो गई। पति के अधिकार के साथ चेम्पन ने हुक्म दिया, "तुमको माँगना होगा।"

"मुझसे नही होगा।"

"तो नाव पड़ी रहेगी।"

"पडी रहने दो!"

लेकिन चक्की को यह पसन्द नही आया कि नाव ऐसे ही पड़ी रहे। चेम्पन की बात से चक्की को लगा कि वह आगे स्वय कुछ नही करेगा। चेम्पन भी चाहता था कि चक्की ऐसा महसूस करे। चक्की ने पूछा, "अच्छा, ये सब रुपये उसे लौटा दोगे न ?"

चेम्पन ने सूद सहित लौटा देने का निश्चय प्रकट किया।

इस तरह इस बार चक्की ने खुद जाकर माँगा। रात को परी के डेरे मे सूखी मछली की बिक्री हुई। चेम्पन की नाव की सजावट और सब तैयारियाँ पूरी हो गईं।

सब-कुछ ठीक हो गया। काम पर जाने वालों को निश्चित करने का

समय आया। घटवार ने पुराने मछुआरों को बुलाकर सब इन्तज़ाम कर दिया। घाट वालो का विरोध वास्तव मे नही के बराबर था। नाव को देखते ही सबके मन मे उस पर काम के लिए जाने की इच्छा हुई थी। अच्चन ने आशा की थी कि चेम्पन उससे राय लेगा और उसे काम के लिए बुलायगा। इस बात को लेकर उसके घर मे एक झगडा भी हो गया था। ज़रूरत पड़ने पर वह घटवार के खिलाफ भी खडा होने को तैयार था। बचपन से ही दोनों साथी थे न! लेकिन दो-तीन बार मिलने पर भी चेम्पन ने उससे कुछ नही कहा। घाट वालों मे से चेम्पन ने जिन बारह व्यक्तियो को चुना था उनमें अच्चन नही था।

नाव उतारने के प्रथम दिन एक भोज देने की प्रथा है। भोज का सब सामान चेम्पन ने हसन दुकानदार से उधार लिया। काक्काषात्त और पुन्नप्रा गाँवों मे रहने वाले बन्धुजनो को निमत्रण देना था। इसके लिए चेम्पन ने करुत्तम्मा को भेजा।

करुत्तम्मा विचार-मग्न अवस्था मे समुद्र-तट पर चली जा रही थी कि अचानक "मछली हमारे हाथ बेचोगी ?" यह छोटा-सा सवाल सुनकर चौंक पड़ी।

परी सामने खड़ा था। कहाँ से आया, कौन जाने। करुत्तम्मा ने कोई जवाब नही दिया। वह अब पुरानी करुत्तम्मा नही रही। वह सिर झुकाये खड़ी थी।

परी ने पूछा, "तुमने मुझसे कुट्टी कर ली है क्या करुत्तम्मा ?"

करुत्तम्मा ने जवाब नही दिया। उसका हृदय इस तरह धक्-धक् करने लगा, मानो फट जायगा।

"पसन्द न हो तो मै कुछ नही कहूँगा।"

वास्तव मे उसे बहुत-कुछ पूछना था। 'इस्लाम को अपनावे ?'—यहाँ तक पूछना था।

वह किनारे लगी नाव की आड़ में कुछ देर तक चुपचाप खडी रही। उस समय परी उसके उन्नत वक्ष को देख रहा था। उसने अब परी को

वैसा करने से मना नहीं किया। सिर उठाकर उसने पूछा, "मोतलाली! मैं जाऊँ?"

क्या जाने के लिए उसे परी की अनुमति की ज़रूरत थी? क्या वह जा नहीं सकती थी?

एकाएक करुत्तम्मा ने डरकर कहा, "ओह, कोई देख लेगा।"

अब वह आगे बढी। कुछ कदम आगे बढ़ने पर उसे पीछे से उसका नाम लेकर पुकारने की आवाज़ सुनाई पडी। उस पुकार में एक विशेषता थी, जिसका अनुभव उसके पहले न उसके कान को हुआ था, न हृदय को।

काँटे मे फँसी मछली की तरह वह खड़ी हो गई। उसने प्रतीक्षा की होगी कि परी उसकी ओर आयगा। लेकिन परी नहीं आया।

कितनी देर तक दोनो एक-दूसरे को देखते खड़े रहे। इसका खयाल उन्हे नहीं रहा। करुत्तम्मा के मन में क्या-क्या विचार उठे होगे!

समुद्र में न तूफान उठा, न आँधी आई। उल्टे ऐसा लगा कि समुद्र-माता मन्द पवन के सहारे लहरो मे हिलोरे पैदा करते हुए उनके बुलबुलों के ऊपर सफेद फेनो के जरिये मुस्करा रही हो।

क्या इस तरह का प्रेम-नाटक उस समद्र-तट पर इसके पहले भी नहीं खेला गया था?

परी को जो कुछ कहना था, पूछना था, सब एक प्रश्न के रूप में मुखरित हो उठा, "तुम मुझसे प्रेम करती हो करुत्तम्मा?"

बिना सोचे-समझे करुत्तम्मा ने जवाब दिया, "हाँ।"

आतुरता पूर्वक एक और सवाल परी ने पूछा, "क्या सिर्फ मुझसे ही प्रेम करती हो?"

परी को तुरन्त उसका भी जवाब मिल गया, "हाँ सिर्फ तुमसे ही।"

करुत्तम्मा को उसकी अपनी ही आवाज़ ने एक मेघ-गर्जन की तरह चौंका दिया। शायद अब उसे होश भी आ गया और उसे अपने शब्दों का अर्थ भी स्पष्ट हो गया। उसको लगा कि उसके शब्द सामने मूर्तिमान

होकर उसे फटकार रहे हैं।

उसने परी की ओर सिर उठाया। आँखे चार हो गईं। जो-कुछ कहना था, सब-कुछ कहा जा चुका था। हृदय की बात हृदय ने जान ली।

करुत्तम्मा आगे चल दी।

: ५ :

दूसरे दिन सुबह तीन बजे ही सब लोग घाट पर एकत्रित हुए। उस दिन चेम्पन की नाव को उतारना था। जब कोई नई नाव निकाली जाती है तब वह सब नावो के साथ एक ही साथ निकलती है। चक्की, करुत्तम्मा, पचमी सब समुद्र-तट पर पहुँची। थोडी दूर पर परी भी था। पचमी ने करुत्तम्मा का ध्यान परी की ओर आकृष्ट किया और करुत्तम्मा ने पचमी को चुटकी काटी।

देरी करने वालो को रामन् मूप्पन ने आवाज देकर बुलाया। अच्चन उन सबो पर बिगडा, "नई नाव निकालनी है यह जानते हुए भी इतनी देरी क्यो करते हो ?"

चेम्पन की नाव मे काम करने वाले तैयार होकर आगे बढे। किसी ने वह गाना गाया जो परी गाया करता था। वह करुत्तम्मा के दिल मे एक दर्द पैदा करने वाला गाना था।

पूरब दिशा मे चाँद नारियल के पेड़ो के ऊपर से झाँकता-सा दिखाई पड़ रहा था, वह मानो चेम्पन की नाव के उतरने का दृश्य देख रहा हो। समुद्र-माता प्रसन्न दिखती थी। नावो को घेरकर सब लोग खड़े हो गए। चेम्पन की नाव को सबसे पहले निकलना था। अच्चन ने मगल-ध्वनि[1] की और बाकी लोगो ने उसे दुहराकर साथ दिया। समुद्र-तट मंगल-निनाद से गूँज उठा।

---

१ शुभ कार्य के अवसर में केरल में पुरुष लोग मुँह से एक हर्ष-सूचक ध्वनि निकालते है, जिसे मलयालम में 'आर्पु' कहा जाता है।

मूप्पन ने कहा" "चेम्पा ! पतवार थामो !"

चेम्पन ने पतवार थामी और उसे सिर से लगाकर अपने इष्ट देवताओ का ध्यान किया। सबोने मिलकर नाव को ठेला। नाव समुद्र मे चली गई। चक्की और करुत्तम्मा दोनो ने हाथ जोडकर ध्यान लगाया। दोनो ने जब आँखे खोली तब उन्होने नाव को तरगो की चोटियो और खाइयो से होकर चढ़ते-उतरते पश्चिम की ओर अग्रसर होते देखा।

इसमे भी लक्षण देखे जाते है, रामन् मूप्पन और अच्चन दोनों लक्षण देखने के लिए किनारे पर खडे-खडे गौर से निहार रहे थे। मूप्पन ने कहा, "कैसा है अच्चा ?"

"वजन पश्चिम की ओर है न ?"

"हाँ। और झुकाव दक्षिण की ओर है।"

चक्की उत्सुकता से फल जानने के लिए उनके पास आई, उसने पूछा, "बताओ अच्चन भाई, लक्षण कैसा है ?"

अच्चन ने एक जानकार की गम्भीरता के साथ कहा, "अच्छा है री ! कभी अभाव का अनुभव नही होगा।"

चक्की ने अतीव भक्ति के साथ उस समय भी हाथ जोड़कर सर्व-शक्तिमती समुद्र-माता का नाम लिया। नाव सफलता के दृढ विश्वास के साथ समुद्र में आगे बढती गई।

करुत्तम्मा ने कहा, "हमारी नाव की एक शान है। है न अम्मा ?"

देखते-देखते ही चक्की ने कहा, "इसकी चाल ही कितनी सुन्दर है।"

अच्चन ने कहा, "यह कहने की बात है बहन ! तुम लोगों को अब यह मिल गई है सही, लेकिन है किसकी ? पल्लिक्कुन्नम कण्डनकोरन की। इसके समान अच्छे लक्षणों वाली कोई नाव है इस समुद्र-तट पर ? कण्डनकोरन का सब-कुछ वैसा ही है। उसकी स्त्री है तपे हुए सोने के समान ! उस-जैसी स्त्री मछुआरो मे है ही नही। इतनी सुन्दर है वह ! और घर ? सब-कुछ ऐसा ही है। नाव अब तुम लोगों को मिल गई है, यह एक सयोग की ही बात है, बहन !"

बाकी सब नावो को भी पानी मे उतार दिया गया।

तट पर माँ, बच्चे और परी रह गए। ठण्डी हवा से परी को ठण्ड लगने लगी। नावे सब बीच समुद्र मे फैल गईं और जाल फेके जाने लगे।

परी धीरे-धीरे चक्की के पास आया। करुत्तम्मा माँ की आड मे पीछे हट गई। पचमी परी की ओर गौर से देखती रही।

परी ने बदस्तूर अपना सवाल किया। इस बार सवाल माँ से किया गया। इतना ही फर्क था। मजाक मे या असलियत मे, उसे वही एक सवाल पूछना था, "मछली हमारे हाथ बेचोगी न ?"

चक्की ने कहा, "नही तो और किसको बेचेगे ?"

परी के उस सवाल का असली आशय चक्की की समझ मे नही आया। समझ मे आयगा भी नही। वह सिर्फ उतना ही बडा सवाल था क्या ? उसमे विचारो का एक समुद्र नही छिपा था ?

माँ की आड मे खडी करुत्तम्मा ने कहा, "अम्मा, मुझे जाडा लग रहा है।"

उस दिन नाव समुद्र मे उतारी गई। चक्की एक बात कहे बिना वहाँ से नही जा सकती थी।

"बेटा, तुम्हारे ही कारण आज यह नाव समुद्र मे उतर सकी। नही तो यह कभी सम्भव नही होता।"

परी ने कुछ जवाब नही दिया। माँ ने कम-से-कम इतना तो कह दिया। यह करुत्तम्मा के लिए बडे सन्तोष की बात थी। इस तरह उसका आभार तो मान लिया।

चक्की ने आगे कहा, " 'चाकरा'[1] खतम होने पर रुपये लौटा देगे।"

---

१ चाकरा=जून में वर्षा ऋतु के शुरू होने पर समुद्र में उथल-पुथल मच जाती है और जल की सतह से पाँच फीट नीचे तीन-चार मील लम्बे-चौड़े क्षेत्र में मिट्टी की तह जम जाती है। उसे 'चाकरा' कहते हैं। मिट्टी की उस तह पर समुद्र शान्त हो जाता है और मछलियों की

"नही। मुझे नही चाहिए तो ?"

"नही चाहिए ? क्यो ?"

परी ने कहा, "लौटा देने के लिए मैने नही दिया है।"

चक्की की समझ मे कुछ नही आया। करुत्तम्मा ने समझा। इतना ही नही, उसका सारा शरीर पसीना-पसीना हो गया। चक्की के मन मे भी एक डर पैदा हो गया। उसने पूछा, "ऐस, क्यो बेटा ?"

परी ने निश्चय के साथ कहा, "नही वह लौटाने की जरूरत नही है।"

एक क्षण बाद परी ने आगे कहा, "करुत्तम्मा ने एक नाव और जाल खरीदने के लिए रुपया माँगा था। मैने दिया। वह मुझे वापिस नही चाहिए।"

करुत्तम्मा की आँखो के सामने अँधेरा छा गया। सिर मे चक्कर-सा आ गया। चक्की ने जरा कठोर स्वर मे पूछा, "अरे, तुम करुत्तम्मा को क्यो पैसा दोगे ? वह तुम्हारी कौन होती है ?" उसने आगे और कठोर स्वर मे कहा, "ऐसा नही हो सकता। यह सब नही चाहिए। सब रुपये तुम्हे वापिस लेने ही होगे।"

परी समझ गया कि चक्की गुस्से मे आकर बोल रही है। उसने कुछ नही कहा। चक्की ने एक माँ की तरह उपदेश देते हुए आगे कहा, "बेटा, तुम विधर्मी हो। हम लोग मछुआरे है। इस समुद्र-तट पर तुम लोगो ने बचपन का खेल खेला है। वह थी बचपन की बात। अब हम एक अच्छे मछुआरे के साथ इसका ब्याह करने जा रहे है। तुम भी अपनी जाति मे शादी करके जीवन बिताओ।"

भरमार हो जाती है। यह समय मछुआरों के लिए एक वरदान है। मिट्टी का इस तरह सतह बनाना कॅणनूर से शुरू होकर प्रतिवर्ष क्रमशः दक्षिण की ओर बढ़ता जाता है और अन्त में कोल्लम के पास गदरे समुद्र में खतम हो जाता है। एक 'चाकरें' को इस तरह कोल्लम के नजदीक गदरे समुद्र में विलीन होते-होते आठ मास लग जाते हैं।

थोडी देर बाद चक्की ने आगे कहा, "तुम लोग अभी बच्चे ही हो। कुछ समझ नही सकते। बदनामी का कोई काम न करो ! इतना भी लोग देख ले तो बाते करने लगेगे। ऐसी ही लोगो की आदत है।"

चक्की बच्चो के साथ जाने लगी। पीछे घूमकर वात्सल्य के स्वर मे उसने फिर परी से कहा, "सुनो बेटा, तुम अपना पैसा वापिस ले लेना !"

चक्की आगे और करुत्तम्मा तथा पचमी पीछे-पीछे चली गई। परी खड़ा-खडा उन लोगो को जाते हुए देखता रहा।

चक्की ने जो-कुछ कहा था, सब ठीक ही था। लेकिन उसे इतनी कठोरता के साथ वैसा नही कहना चाहिए था। उन बातो ने करुत्तम्मा के हृदय को बेध दिया।

थोडी दूर जाने पर करुत्तम्मा ने पीछे घूमकर देखा। बिना ऐसे देखे उससे रहा नही गया। घर पहुँचने पर हृदय विदीर्ण करने वाला वह गाना समुद्र-तट की ओर से सुनाई पडा।

चक्की ने कहा, "इस लडके को नीद नही आती क्या ?" चक्की ने आगे करुत्तम्मा से कहा, "अब तुझे किसी तरह यहाँ से भेज दूँ, यही मै चाहती हूँ।" माँ के शब्दो मे एक आरोप छिपा था कि बेटी के कारण उसे चैन नही है। किसी को शान्ति नही है।

करुत्तम्मा ने असह्य दु ख और क्रोध से पूछा, "मैने क्या किया है ?"

चक्की चुप रही।

सुबह समुद्र मे नाव को देखने के लिए चक्की और बच्चे तट पर गये। सब नावे दूर समुद्र मे थी। समुद्र का रग-ढग देखकर ऐसा लगता था कि उस दिन खूब मछलियाँ फँसेगी। करुत्तम्मा ने माँ से पूछा कि किन-किन मछलियो के मिलने की आशा है। माँ ने लक्षण से अयिला[1] बताया।

---

१. 'अयिला'—एक प्रकार की मछली, जिसे मांस-मछलियाँ खाने वाले बहुत स्वादिष्ट मानते है।

करुत्तम्मा ने उत्साह के साथ कहा, "तब तो शुरू ही से हमारे लिए अच्छा होगा।"

"समद्र-माता की कृपा रहे, बिटिया!"

एक छोटा बच्चा जैसे माँ से अपनी एक इच्छा प्रकट करता है, वैसे ही करुत्तम्मा ने अपनी एक इच्छा प्रकट की, "अम्मा अपनी नाव की मछलियो को उस छोटे मोतलाली को देना चाहिए।"

चक्की इससे नाराज नही हुई। उसने यह भी नही पूछा कि छोटा मोतलाली उसका कौन है। चक्की का भी वही विचार था। लेकिन उसे एक सन्देह था, "वह पिशाच ऐसा करेगा? कौन जाने!"

करुत्तम्मा ने उसके लिए एक उपाय सुझाया, "नाव जब किनारे लगने लगे तभी हम लोगो को भी पहुँच जाना चाहिए। उसी समय अम्मा, तुम बप्पा से कहना!"

चक्की ने ऐसा ही करने को कहा। वह जरूरी था। वैसा होना ही चाहिए था।

नाव के किनारे लगने की खबर घर पर करने के लिए पचमी समुद्र-तट पर खडी देखती रही।

तब तक एक दूसरा काण्ड शुरू हो गया। पडोसिन नल्लम्मा, काली, पेण्णम्मा, लक्ष्मी आदि एक साथ पहुँच गईं। उन लोगो का एक उद्देश्य था। पेण्णम्मा ने यह जानना चाहा कि चेम्पन की नाव की मछलियाँ थोक माल खरीदने वालो के हाथ बेची जायँगी या खुदरा खरीदने वालो के हाथ। थोक खरीदने वालो के हाथ एक साथ बेच देने का रिवाज भी वहाँ चल पडा था। इससे पूरब मे टोकरियो मे माल बेचने जाने वाली औरतो को थोक खरीदने वालो के पाँव पकडने पडते थे। पेण्णम्मा ने आगे कहा, "दीदी, हम क्यो आई है यह तो बिना हमारे कहे ही तुम जानती हो।"

चक्की उन औरतों की बात समझ गई। थोक वालो से लेकर बेचने में कोई लाभ नही होता। मुँहमाँगा दाम देना पड़ता है। इतना ही नही थोक माल वालो की गाली भी सुननी पड़ती है।

चक्की ने पूछा, "उसके लिए मैं क्या कर सकती हूँ ?"

नल्लम्मा ने अधिकार के साथ कहा, "तुम्हारी नाव की मछलियाँ यहाँ की औरतो को मिलनी ही चाहिएँ।"

चक्की इसका कोई जवाब नही दे सकी, सब-की-सब पडोसिने ही थी। उनका कहना भी सही था। लेकिन वह वचन नहीं दे सकती थी। यह भी निश्चय नही था कि चेम्पन मानेगा कि नही। इतना ही नही, परी ने भी मछलियाँ माँगी है, इस बात को वह बाहर किसी से कह भी नही सकती थी।

काली ने पूछा, "चक्की भोजी, तुम कुछ बोलती क्यो नही ? चेम्पन भैया मानेगे कि नही यही डर है क्या ? तुम्हे उनको मनाना ही होगा। तुमने भी तो नाव और जाल खरीदने के लिए टोकरी-पर-टोकरी ढो-ढो कर बिक्री की थी और पैसा जमा किया था।"

चक्की ने कहा, "सो तो ठीक है।"

लक्ष्मी ने कहा, "तुम अब बिक्री के लिए पूरब जाओगी क्या ?"

"क्यो, ऐसा क्यो पूछती हो ? आगे दस नावे भी हो जायँ तो भी चक्की हमेशा चक्की ही रहेगी," चक्की ने नम्रता पूर्वक कहा।

"नही जी, मेरा मतलब वह नहीं था। तुम भी जाओगी तो हम इकट्ठा माल लेकर आपस मे बाँट लेगी, यही सोचकर पूछा था।"

चक्की ने अपनी लाचारी प्रकट की, "वह पिशाच मानेगा कि नही यह कौन जाने ?"

नल्लम्मा ने कहा, "तुम्हे उनसे कहना चाहिए। तुम कहोगी तो हो जायगा।"

काली ने करुत्तम्मा से भी कहा, "तू भी बप्पा से कहना बिटिया !"

करुत्तम्मा ने साफ इन्कार कर दिया।

पचमी ने कहने का भार अपने ऊपर लिया। नाव के किनारे लगने पर थोक खरीददारो की भीड लगने के पहले ही वह बप्पा से कहेगी।

इसमे उसका भी एक उद्देश्य था। उसने मन मे निश्चय किया था कि जब-जब नाव किनारे पर लगेगी तब-तब वह एक छोटी टोकरी मे 'ऊपा'[1] उठा लेगी और उसे सुखाकर जमा करेगी। लेकिन यह तभी सम्भव था जब कि थोक खरीददारो के हाथ मछली न बेची जाय।

लाचारी मे पडकर चक्की ने भी कोशिश करने का वचन दिया। ऐसा होगा नही, यह वह जानती थी। उसको लगा कि एक बडी शिकायत होने वाली है।

दोपहर को समुद्र-तट पर बच्चे, टोकरी वाली औरते और थोक-खरीददार सब पहुँच गए। समुद्र मे बहुत ऊँचाई पर ऊपर समुद्री बगुलो के झुण्ड चक्कर काटते दिखाई पडे। नावो पर लोग जाल खीचते या झाडते होगे। तट पर हरेक आदमी अन्दाज लगाने लगा कि जाल मे कौन-कौन-सी मछलियाँ होगी। कादरी को लगा कि परमाणु के समान छोटी मछलियाँ होगी। जो भी हो 'बटोर' अच्छा हुआ है, इसमे कोई सन्देह नही रहा। इतने मे दो समुद्री बगुले पश्चिम से पूर्व की तरफ उडते हुए आये। एक की चोंच मे मछली थी। सबकी नजर ऊपर चली गई, एक की आवाज़ सुनाई पडी ? "मत्ती है मत्ती[2]।"

समुद्र मे नावें हिलती दिखाई पडी। सब पूर्व की ओर मुड गईं। पंचमी घर की ओर दौड गई। उसने कहा, "बटोर[3] मे मत्ती है मत्ती।"

करुत्तम्मा और चक्की उत्साह के साथ बाहर निकली। चक्की ने फिर अतीव भक्ति के साथ समुद्र-माता का नाम लिया। अपनी नाव को अच्छा खासा बटोर लिये लौटती हुई देखने के लिए माँ-बेटी, दोनों समद्र-तट की ओर दौड पडी।

मध्य समुद्र मे नावे तरगो के चढाव-उतार के साथ उठती-झुकती

---

१ ऊपा=सबमे छोटी मछली को मलयालम में 'ऊपा' कहते है।

२. मत्ती=सारडीन मछली (Sar dine)

३. बटोर=संग्रह।

आगे बढ रही थी। माँ-बेटी अनुमान लगाने लगी कि उनमे से कौन-सी उनकी नाव है।

लोगो ने, यह मालूम हो जाने पर कि 'बटोर' मे मत्ती है, हर्ष-ध्वनि करनी शुरू की। पेण्णम्मा, नल्लम्मा, काली, लक्ष्मी आदि चक्की के पास इकट्ठी हो गईं। पचमी ने भी एक छोटी टोकरी ले ली थी। इतने मे द्रुत गति से एक नाव एक तरग से दूसरी तरग पर उडती-सी आती दिखाई पडी। उनमे माल भरा-जैसा लगता था।

पचमी बोल उठी, "एक ही डाँड है।"

उस नाव की चाल एक जलूस-जैसी लगती थी। ऊपर समुद्री बगुलो के झुण्ड-के-झुण्ड और पीछे बाकी सब नावे। समुद्र भी मानो हर्ष-नाद कर रहा था।

आगे वाली नाव की पतवार पर चेम्पन खडा था। वह खडा नही था, वह ऊपर से कूदकर डाँड से पानी को चीरकर पीछे फेक रहा था। ऐसा लगता था कि वह नाव मे नही वरन् आकाश मे है। उसके डाँड से आकाश मे एक गोलाई बन रही थी। इस रूप मे नाव लहरो के ऊपर उडती हुई-सी आगे बढती आ रही थी।

काली ने कहा, "नाव की यह चाल बहुत सुन्दर लगती है।"

सबने एक ही राय प्रकट की कि नाव बहुत सुलक्षणी है।

"कोई कुछ न कहे," चक्की ने विनती की।

नाव पास आ गई। चेम्पन एक दूसरा ही आदमी मालूम होता था। कैसा परिवर्त्तन था। चक्की ने कहा, "वह एक गम्भीरता है, समुद्र-माता की सन्तान की गम्भीरता।"

नाव किनारे लगी। डॉड ले-लेकर सब मल्लाह किनारे पर कूद पडे और नाव को खीचकर ऊपर कर दिया। बच्चे नाव के चारो ओर इकट्ठे हो गए। उनमे पचमी भी थी।

चेम्पन पतवार की जगह से उत्तेजित रूप मे बाहर कूद पडा। बच्चे चिल्लाते हुए तितर-बितर हो गए। पंचमी जहाँ थी वही खडी रही।

वह क्यो डरती ? लेकिन चेम्पन ने गरजकर कहा, "मेरी नाव के नीचे से कोई भी 'ऊपा' न बटोरे," और कहते-कहते उसने पचमी को ढकेल दिया। 'माई रे' चिल्लाती हुई वह कुछ दूर पर जा गिरी। करुत्तम्मा और चक्की भी चिल्ला पडी।

एक औरत ने कहा, "बाप रे बाप ! यह कैसा पिशाच मालूम होता है !"

चेम्पन की तरह पचमी को भी एक अभिलाषा थी, वह ऊपा बटोर-कर सुखाकर जमा करना चाहती थी। शायद उससे भी कुछ आमदनी हो जाती, जो काम आती। वह अपना अधिकार समझकर अपने पिता की नाव से ऊपा बटोरने गई थी। चेम्पन को कुछ सूझता नही था क्या ? क्या इस तरह आदमी अपने को भूल जाता है ?

उस नाव मे जो-कुछ था, सब समुद्र की देन थी। किसी व्यक्ति का पैदा किया हुआ या पाला हुआ नही था। उसका एक हिस्सा ऊपा लेने का हक गरीबो को भी था। समुद्र-तट का यह नियम है।

"हाय रे पिशाच !" कहकर चिल्लाती हुई चक्की ने पचमी को गोद मे उठा लिया। माँ-बेटी मिलकर जहाँ पचमी को चोट लगी थी उस जगह को सहलाने लगी। लेकिन पचमी को तो चोट से बढकर बाप के व्यवहार से दुख था।

थोक खरीदने वालो ने नाव के चारो ओर भीड लगा दी, परी सबसे आगे था। चेम्पन ने किसी से जान-पहचान का भाव नही दिखाया।

कादरी मोतलाली ने पूछा, "क्या भाव है चेम्पा ?"

पेण्णम्मा, लक्ष्मी आदि इधर-से-उधर चक्कर काट रही थी। पचमी, जिसने उनको मछली दिलाने का वादा किया था, बेदम पडी थी। चक्की उसके पास बैठी थी।

थोक खरीदने वाले भाव तय कर रहे थे। पेण्णम्मा ने साथियो को एक बार पूछने की राय दी। नल्लम्मा ने जवाब दिया, "उस पिशाच से कौन बात करेगी ?"

बाकी नावे भी एक-एक करके पहुँचने लगी। चेम्पन को उनके किनारे लगने के पहले ही अपना माल बेच देना था।

परी ने पूछा, "मछली मेरे हाथ बेचोगे ?"

चेम्पन ने परी को मानो देखा ही नही। उसने पूछा, "नकद पैसा है ? मुझे नकद चाहिए।"

इतने मे कादरी मोतलाली ने सौ-सौ के नोट चेम्पन को थमा दिये।

माल की बिक्री तय हो गई।

परी दूसरी नावो के पास दौडकर गया। सब जगह बिक्री हो चुकी थी। पचमी की रुलाई जब जरा कम हुई तब करुत्तम्मा ने परी को उदास भाव से लौटते देखा। उसके पास नकद पैसा नही था।

करुत्तम्मा ने माँ से कहा, "छोटे मोतलाली को मछली नही मिली।"

चक्की परी के पास गई। पूछा, "माल नही माँगा, मोतलाली ?"

"माँगा।"

"तब ?"

परी ने कुछ जवाब नही दिया। उस दिन उसको माल ही नही मिला। आज जैसा 'बटोर' बहुत दिनो से नही हुआ था। चक्की को सब मालूम हो गया। उसने चेम्पन को अपने को भूलकर व्यवहार करते देखा ही था। उसने कहा, "मछली देखकर वह पिशाव हो गया है मोतलाली!"

"मेरे पास थोडा पैसा था। बाकी मै पीछे भी दे देता।"

"इसीसे सौदा नही पटा ?"

"हो सकता है।"

परी आगे बढा। करुत्तम्मा को कुछ कहने की इच्छा हुई। लेकिन वहाँ कैसे कहती ? पहले-पहल परी ने जो सवाल किया था, सो आज होकर ही रहा। उसके शब्द करुत्तम्मा के कानो मे गूँज गये, नाव और जाल जब हो जायगा तब मछली हमारे हाथ बेचोगी ?' और उसका जवाब कि 'अच्छा दाम दोगे तो दूँगी।'

काली, पेण्णम्मा आदि गाली देने लगी। अन्त मे उन लोगों ने थोक

माल लेने वालो से माल लिया।

चेम्पन ने काम करने वालो मे उनका हिस्सा बाँट दिया। जाल भी धोकर पसार दिया गया। तब वह घर की ओर चला। उसके हाथ मे काफी रुपये थे। जीवन मे एक नया प्रकाश आ गया, ऐसा उसे लगा। उसने एक नये रास्ते पर चलने का निश्चय किया। तीन बजे भोर से वह कठिन परिश्रम कर रहा था। तब भी घर लौटते समय वह थका हुआ नही मालूम होता था।

घर का वातावरण सुखद नही था। हाथ के रुपयो के नोटो की थाक उसने चक्की को दिखाई। देखकर चक्की को कोई खास खुशी नही हुई।

"क्यो? यह सबके लिए है," उसने पूछा।

"क्यो री? ऐसा क्यो पूछती है?"

"देखो, जरा पचमी की छाती की चोट देखो!"

सिसक-सिसककर रोती हुई पचमी को चेम्पन ने उठाकर देखा। उसकी छाती मे काफी चोट लगी थी।

उसने पूछा, "वहाँ जाकर क्यो खडी हो गई बेटी?"

चक्की ने पचमी की इच्छा कह सुनाई। सुनकर छोटी बेटी के प्रति चेम्पन की प्रीति बढ गई। तो वह कुछ कमाना चाहती थी। चेम्पन ने वादा किया कि दूसरे दिन से वह रोज एक छोटी टोकरी भर मछली उसे दिया करेगा।

चक्की ने परी के बारे मे पूछा, "यह कैसा अन्याय है? किसकी मदद से नाव और जाल बना है?"

चेम्पन को समझ मे नही आया कि इसमे अन्याय की क्या बात है। उसने पूछा, "कैसा अन्याय री?"

"उसे मछली दे देते तो क्या होता?"

"तब काम कैसे चलता? काम करने वालो को हिस्सा देना था न?"

उसने आगे कहा, "उसे मछली देने से एक घाटा है। उसे जो पैसा मिलना चाहिए उसमे से वह काट लेगा।"

"तब तो उसने जो मदद की वही उसके मार्ग मे बाधक हो गई है ?"

करुत्तम्मा को गुस्सा आया। भीतर से उसने कहा, "जो भी हो। उसके डेरे मे अब उसके पास कुछ भी नही है।"

उस शाम को अच्चन के घर मे भी पति-पत्नी मे झगडा हुआ।

पत्नी ने पूछा, "बचपन का साथी है—कहते-कहते नाव मे जाने का सपना देखते रहने का क्या नतीजा हुआ ?"

अच्चन ने पूछा, "तुझे चक्की के पीछे घूमने से क्या मिला ?"

अच्चन ने आगे कहा, "आदमी के हाथ मे जब पैसा हो जाता है तब वह पुरानी सब बाते भूल जाता है।"

नल्लम्मा ने भी इसका समर्थन किया। अच्चन ने अपना पुराना निश्चय दुहराया, "ऊँ देखूँ मै भी नाव और जाल खरीद सकता हूँ कि नही।"

नल्लम्मा को उसकी बात उतनी विश्वास-योग्य नही लगी।

६

चेम्पन भाग्यवान है। समुद्र मे उसके बराबर मछलियाँ और किसी को नही मिलती। दूसरो की अपेक्षा उसे दुगुनी मिलती है। वह जब जाल फेकता है कभी बेकार नही जाता। यह एक आश्चर्य की बात है।

रात को रुपये गिनकर चक्की ने कहा, "अब हमे लडकी का ब्याह कर देना चाहिए।"

चेम्पन ने इसका कोई सीधा जवाब नही दिया। चक्की ने आगे पूछा, "और क्या विचार है? क्या, सोचते हो कि ऐसी ही बैठी रहे?"

चेम्पन चुप रहा। पैसा कमाने के सामने दूसरा कोई सवाल शायद उसे बडा नही लगता। पैसा रहने पर जब जो चाहेगा तत्काल हो ही जायगा।

एक नाव के लिए जितने साधन ज़रूरी थे, उसने सब ले लिए। किसी भी मौसम मे वह समुद्र मे काम के लिए जा सकता था। उसके पास सब सामान थे।

परी का डेरा बन्द-जैसा मालूम होने लगा। वहाँ कोई काम नही हो रहा था। उसके पास पैसा भी नही था। उसके बाप ने एक बार आकर उसे खूब डाँटा। अब्दुल्ला मोतलाली ने शिकायत की कि उसने अपने पास का पैसा किसी मल्लाहिन पर लुटा दिया है। यह बात करुत्तम्मा के कान मे पड गई।

करुत्तम्मा ने माँ पर जोर डाला कि परी का पैसा लौटा दिया जाय। अब्दुल्ला ने परी से जो कहा था वह भी उसने माँ को सुना दिया। इससे बढकर शर्म की बात और क्या हो सकती थी? वास्तव मे परी ने अपनी मूल-धन की रकम एक मल्लाहिन को दे ही दी थी।

चेम्पन ने उस दिन भी जवाब दिया, "अरी, वह लौटा दूँगा। ज़रा ठहर तो सही।"

चेम्पन के मुँह से कभी-कभी उसकी कुछ इच्छाएँ प्रकट हो जाती थी। दो नाव और जाल और होना चाहिए। अपनी जमीन और घर भी होना चाहिए। हाथ मे थोडा पैसा भी नकद रहना चाहिए, "ज़िन्दगी भर कमाता ही रहा न! अब पल्लिक्कुन्नम की तरह हमे भी थोड़ा सुख भोगना चाहिए।" चक्की को थोडी मोटी होना है-यह इच्छा भी उसने प्रकट की।

"ओ, अब मै मोटी होऊँगी ? चक्की ने कहा।

"हाँ री, क्यो नही ? तू भी मोटायगी।"

इसके पहले चक्की ने चेम्पन को सुख भोगने की बाते करते कभी नही सुना था। चेम्पन के मन मे सुख भोगने के बारे मे एक नई इच्छा पैदा हुई है, ऐसा उसे लगा ?

उसने पूछा, "इस बुढापे मे कैसा सुख भोगना चाहते हो ? यह विचार कहाँ से मिला है ? कही से तो मिला ही होगा !"

"अरी, बुढापे मे भी आदमी सुख भोग सकता है। उस पल्लिक्कुन्नम को जरा जाकर देखो न, तब मालूम हो जायगा कि आदमी कैसे सुख भोगता है।"

चक्की ने उपदेश देने के भाव से कहा कि वह गलत रास्ता पकडने की बात सोच रहा है। बुढापे मे सुख भोगने की बात करना गलत है।

चेम्पन ने कहा, "तू सुनेगी ? वह स्त्री तेरी ही उम्र की है। वह बराबर सज-धजकर रहती है। बाल सँवारे रहती है, बिन्दी लगाती है और होठ भी लाल रखती है। देखने मे भी सोने की तरह लगती है। पति-पत्नी बच्चो की तरह है।"

"तब मुझे भी एक बच्ची की तरह सज-धजकर रहना चाहिए ?"

"इसमे क्या बुराई है ?"

"शरम नही लगेगी ?"

"शरमाने की क्या बात है ?"

चक्की ने लाज का भाव दिखाते हुए एक क्षण के बाद कहा, "मुझसे नही होगा यह सब ।"

चेम्पन ने 'जालवाला' कण्डनकोरन की कहानी सुनाते हुए कहा कि उसने वहाँ जैसा भोजन किया वैसा कही नही किया है। उनके यहाँ की तरकारियो मे एक खास स्वाद था। वे बच्चो की तरह अपना जीवन सुख से बिता रहे है। उसने आगे कहा, "एक बात सुनेगी ? मै तो देखकर शरमा गया। एक दिन जब मै उनके यहाँ पहुँचा तब दोनो एक-दूसरे के आलिगन मे बँधे एक-दूसरे का चुम्मा ले रहे थे।"

चक्की के मुँह से निकला, "छी ·। शरम की बात है।"

चेम्पन ने कहा, "शरम की क्या बात है री ? वे छोटे बच्चो की तरह है। हँसते है, खेलते है। ऐसा ही है।"

"बाल-बच्चे नही है क्या ?"

"एक ही लडका है।"

चक्की की ओर देखते हुए चेम्पन ने कहा, "पाप्पी[1] के समान तुम्हारे मोटा होने के बाद हमे भी उसी तरह बच्चो का खेल खेलना है।"

वास्तव मे चक्की के मन मे भी उसी तरह आलिगन मे आबद्ध होकर चुम्बन का आनन्द लेने की इच्छा हुई। लेकिन उसने उसे प्रकट नही किया।

उसने कहा, "अपन भी ज़रा मोटे हो जायँ।"

"मै भी मोटाऊँगा। उसके बाद ही यह सब होगा।" कहकर चेम्पन हँस पडा। सुख की सारी कल्पना उसकी आँखों के सामने हाजिर थी।

चक्की ने शिकायत के स्वर मे कहा, "लगता है, उस स्त्री को देखकर तुम पागल होकर लौटे हो।"

"ठीक ही कहा री ! जो भी उसे एक बार देख ले वह पागल ही हो जायगा।"

---

१. कण्डनकोरन की स्त्री।

थोडी देर बाद चेम्पन ने आगे कहा, "कण्डनकोरन बडा भाग्यवान है।"

चक्की ने कहा, "पहले समुद्र-माता की कृपा होनी चाहिए। जब अपनी जमीन और घर हो जायगा और निश्चिन्त होकर गुजारा करने की स्थिति हो जायगी तब फिर से बच्चे बनकर सुख से जीवन बिताने की बात करना। तब तक लडकियो की शादी करके उन्हे भेज देगे। चेम्पन का भी यही विचार था। लेकिन चक्की ने कहा, "मै सुन्दर तो हूँ नही।"

चेम्पन ने विश्वास दिलाया, "उस समय तक हो जाओगी।"

"अगर तब तक मै मर जाऊँ तो?"

"धत्त। अशुभ शब्द मुँह से न निकालो!"

एकाएक एक दिन समुद्र का रग बदल गया। पोला[1] आ गया था, पानी लाल हो गया। दो-तीन दिन बीत गए। चेम्पन से चुपचाप बैठा नही गया। उसने समुद्र मे दूर तक जाकर काँटा डालने की बात सोची। शायद कुछ मछली आ जायँ।

उसने अपनी नाव पर काम करने वालो को बुलाया, और उनकी राय पूछी। कोई भी तुरन्त जवाब नही दे सका। उन घाट वालो मे बहुत कम ही लोग कभी काँटा डालने गये होगे। और ऐसे पोले के समय तो कोई भी कभी नही गया था।

चेम्पन ने दृढता पूर्वक उनसे कहा, "मै एक बात कहे देता हूँ। तुम लोग नही आओगे तो भूखे ही रहोगे। पैंचा देने का काम मुझसे नही होगा।"

फाके के दिन बढ भी सकते थे। वह समय लम्बा होता ही है। हरेक के पास की बचत खत्म हो चुकी थी। कुछ लोगो ने नाव लेकर थोडी

---

१. पोला में पानी का रंग बदल जाता है। इसे लोग समुद्र-माता के ऋतुमती होने का लक्षण मानते हैं। ऐसे समय में कोई मछलियाँ मारने समुद्र में नहीं जाता।

कोशिश भी की। एक अरभिक्त[1] तक नही मिली। नाव पर काम करने वालो के लिए, मालिको को पैंचा के लिए तग करने का वह समय था। उनका भी हाथ खाली था।

पडोस के घरो मे फाकाकशी की हालत पैदा हो गई। पूरी फाका-कशी। अच्चन की, जिसने नाव और जाल खरीदने का निश्चय किया था, स्थिति और भी मुश्किल हो गई। उसके कई बाल-बच्चे भी तो थे।

एक दिन कोई उपाय नही था। पिछले दिन झार-झूर करने पर बचा-खुचा जो निकला था उसे बेचकर और मरचीनो[2] खरीदकर उससे काम चलाया गया था। उस दिन कोई उपाय नही हो सका। पति-पत्नी मे झगडा हो गया। गुस्से मे पति ने पत्नी को दो तमाचे लगा दिए और बाहर जाने के लिए उठा। बच्चो का भार घर वालो पर रहता है। वह घर छोडकर कैसे कही जा सकता है।

नल्लम्मा ने अच्चन को खरी-खोटी सुनाते हुए कहा, "चाय की दूकान मे हॉडी भरने जाता होगा।"

यह आरोप सुनकर भी अनसुनी करके अच्चन चला गया, हो सकता है कोई उपाय ढूँढने के लिए ही निकला हो।

शाम तक नल्लम्मा उसका रास्ता देखती रही। अन्त मे वह उठी और घर मे जो फूल का गिलास था उसे लेकर चक्की के पास गई। उसने चक्की से उसे बन्धक रखकर या उसके दाम के तौर पर ही, एक रुपया देने को कहा। चक्की ने उसे बन्धक रखकर एक रुपया दे दिया। लक्ष्मी को जब मालूम हुआ तब वह अपनी बच्ची के कान का फूल लेकर पहुँची। इस तरह अनेक स्त्रियॉ जब मॉगने आने लगी तब चक्की को दिक्कत मालूम होने लगी। सबो को देने के लिए उसके पास रुपये नही थे। 'पया

---

१. **एक तरह की मछली।**

२. tapioca **एक तरह का कन्द। गरीबों को यह भोजन का काम देता है।**

नही है' कहने पर कोई विश्वास ही नही करता। काली एक फूल की उरुली (कढाई) लेकर बडो आशा से आई; जिसे उसने पिछले साल 'मण्णारशाला'[1] से खरीदा था। चक्की ने कहा, "इस तरह सब लोग यहाँ आने लगे तो देने के लिए रुपये कही गाडकर रखे है क्या?"

बच्चे घर मे भूखे थे। इसीलिए काली आई थी। उसने यह नही सोचा था कि चक्की इस तरह रुखाई का व्यवहार करेगी। चक्की ने आगे कहा, "सबको चेम्पन का पैसा चाहिए। पर मौका मिलने पर सब पत्तल में छेद करने लगेगे।"

काली ने पूछा, "मैने क्या किया है जी?"

"कुछ नही किया है। यहाँ रुपया नही है।"

"तुम ऐसे क्यो बोल रही हो, मानो मुझे पहले कभी देखा ही न हो।"

"अपनी बात मुझे नही कहनी चाहिए?"

काली को गुस्सा आ गया। उसने कहा, "तेरे पास कब से रुपया हो गया है री?"

"तू क्यो मेरा अपमान कर रही है री?"

इसके बाद एक वाक्-युद्ध शुरू हो गया। करुत्तम्मा ने आकर बीच-बचाव किया। उसे डर था कि झगड़ा बढने पर उसीकी बात घसीटी जायगी। उसने काली के पैर पकड़ लिये। काली अपनी 'उरुली' लेकर लौट गई।

करुत्तम्मा माँ पर बिगड़ी, "यह क्या है अम्मा? तुम इस तरह अपना होश-हवाश क्यो खो बैठती हो?"

"और क्या?"

"ऐसे भी, नाव और जाल खरीदने के बाद बप्पा और तुम—दोनों ही बदल गए हो।"

उस शाम को चेम्पन जब खाना खा रहा था तब चक्की मोहल्ले वालो

---

१. एक जगह का नाम, जहाँ हर साल एक बड़ा मेला लगता है।

का समाचार यानी उनकी फाकाकशी की कहानी सुना रही थी। उस दिन एक घर मे भी चूल्हा नही जला था।

चेम्पन ने कहा, "भूखे पड़े रहने दो तभी हमारा काम बनेगा।"

कौन काम बनेगा– यह करुत्तम्मा जान गई। उसे अपने बाप से घृणा हो गई।

चक्की ने पूछा, "कौन काम ?"

"सबको ऐसे ही छटपटाने दो। हाथ में चार पैसे हो जाते हैं तो इन लोगो को—स्त्री-पुरुष दोनो को, होश नही रहता। जिस दिन पैसा हो जाता है उस दिन आलप्पुषा (शहर) ही जाकर खाना खाते है। घर मे औरत के पहनने के लिए कपडा नही होगा, लेकिन जरी के किनारे का महीन कपडा जरूर खरीदेगे। मल्लाहिनो का पाँव उस दिन जमीन पर नही पड़ता। अब सबको तारे गिनने दो।"

करुत्तम्मा आश्चर्य से सुनती रही। चक्की ने पुराना तत्त्व-ज्ञान सुनाया, "मल्लाह कभी बचाकर रखता ही नही !"

"नही बचाता, तो न बचावे। अब उसका फल भोगे। यह सब बेटी को भी सिखा दो। वह भी भूखी रहना सीख जाय !"

चक्की ने मुस्कुराते हुए कहा, "ओह, बडे होशियार बन गए हो !"

"हाँ री, मै होशियार ही हूँ। मेरे पास पैसा है।"

"हाँ-हाँ उसके बारे मे कुछ कहना ही क्या ? उस बेचारे छोकरे ने अपना डेरा ही बन्द कर दिया है और घर मे लडकी भी शादी की उम्र पार कर बैठी है।"

करुत्तम्मा को यह पूछने का मन हुआ, 'परी को भी भोगना चाहिए, है न ?'

समुद्र-तट के उस अकाल से फायदा उठाकर चेम्पन और चक्की ने सोने-चाँदी और फूल के बरतन सस्ते दाम पर खरीद लिये। लडकी की शादी के समय बहुत चिन्ता नही करनी पड़ेगी। एक दिन एक अच्छी खाट मिली। पति के घर आने पर पत्नी ने सलज्ज भाव से हँसते हुए

कहा, "मैने एक खाट मोल ली है ।"

उसी तरह हँसते हुए चेम्पन ने पूछा, "क्यों खरीदी ?"

"खाट किस काम के लिए है ? लेटने के लिए ही न ?"

"किसके लेटने के लिए ?"

"लड़की के लिए। जब लड़का आयगा तब उसके लेटने के लिए।"

"ओह !! उनके लिए है ?"

"नही तो फिर किसके लिए ? बूढे-बूढी के लिए ?"

चेम्पन ने मानो उसका समर्थन करते हुए कहा, "ओह, तब नही चाहिए। लेकिन मैने एक तोशक बनवाने का निश्चय किया है। कण्डन-कोरन के यहाँ जैसा देखा है वैसा ही तोशक।"

चक्की ने कहा, "तब उस पर साथ मे सोने के लिए एक सुन्दर लड़की भी चाहिए न ?"

"मै तुझे वैसी ही बनाऊँगा।"

चेम्पन के मन मे एक और बडी इच्छा पैदा हुई। शायद वह जीवन मे सुख भोगने की इच्छा की एक कडी ही हो। उसे एक और नाव लेनी चाहिए। लेकिन पास मे जो नकद था उसमे से तीन चौथाई जगम सम्पत्ति मे लग चुका था। फिर भी चेम्पन को वह असाध्य नही लगा।

एक दिन सुबह जब चेम्पन उठा तब उसने अपने यहाँ 'जालवाला' रामन् आया देखा। चेम्पन ने उसकी आवभगत की, और उसे आदरपूर्वक बैठाया। रामन् उसी घाट का था। उसके पास दो नावें थी। उसकी स्थावर सम्पत्ति सब दूसरो के हाथ मे चली गई थी। चेम्पन ने कुछ काल तक उसकी नाव पर काम किया था।

रामन् को उस भुखमरी के समय अपने यहाँ काम करने वालो को पैसा देने के लिए कुछ रुपयो की जरूरत थी। जरूरत पडने पर वह औसेप्प से कर्जा लिया करता था। औसेप्प को कुछ चुकाना बाकी रह गया था। ऐसी हालत मे उससे माँगने मे उसे सकोच मालूम हुआ। उसने चेम्पन से कहा, "हमारे सहारे गुजारा करने वाले सब भूखो मर रहे

हैं। समुद्र मे इस समय कोई काम नही है। उनकी हालत देखी नहीं जाती।"

चेम्पन ने उसकी बात का समर्थन किया।

"हाँ, हाँ, इस समय जैसी हालत है उसमे चुप लगाकर बैठ जाना ठीक नही है।"

बिना किसी हिचक के चेम्पन कर्जा देने के लिए तैयार हो गया।

"कितने रुपये चाहिएँ?"

"डेढ सौ काफी है।"

चेम्पन ने गिनकर रुपये दे दिए।

रामन् ने पूछा, "तुम, अपनी नाव मे काम करने वालो को उधार नही देते?"

सिर खुजाते हुए चेम्पन ने कहा, "मै कैसे दूँगा? मै भी तो उन्हीकी तरह काम करने वाला ही हूँ न? 'गिलहरी कैसे हाथी की तरह मुँह बाये'!"

रामन् हँस पडा। चेम्पन ने अपने कथन को और स्पष्ट कर दिया। रामन् ने चले जाने पर चेम्पन चक्की के पास जाकर पागलो की तरह हँसने लगा। उस दिन की तरह इतने उत्साह के साथ उसे कभी हँसते नही देखा गया था।

चक्की ने पूछा, "यह कैसा पागलपन है?"

"अरी पगली, तू क्या समझेगी? छः महीने के अन्दर उसकी चीनी नाव मेरी हो जायगी।"

उसने आगे कहा, "पैसा पास मे रहने से यही फायदा है।"

चेम्पन की नाव मे काम करने वाले उधार के लिए उसे तंग करने लगे। उसने पूछा, "तुम लोग काम करने के लिए तैयार हो?"

"हाँ।"

"तब चलो, बीच समुद्र में जाकर काँटा डाले।"

"यह कैसे हो सकता है? इस कुसमय में बीच समुद्र में कैसे जाया

जायगा ?"

चेम्पन ने एक दूसरा उपाय सोचा। उसने कहा, "वह दूसरे लोगों को काँटा डालने के लिए साथ मे ले जायगा और बाद मे उन्होको काम के लिए रखेगा।"

"पैसा लगाकर नाव और दूसरी जरूरी चीजे प्राप्त कर लेने के बाद चुप नही बैठा रह सकता। इससे कितना घाटा होगा ?"

दो-तीन दिन के बाद एक दिन सुबह चेम्पन को पतवार की जगह पर खडे होकर नाव को तीव्र गति से पश्चिम की ओर ले जाते जब देखा तभी चक्की और करुत्तम्मा को यह बात मालूम हुई। उस दिन तेरह घरो की औरतो और बच्चो ने भगवान् का नाम लेते हुए समुद्र-तट पर ही आतुरता पूर्वक समय काटा। पुराने लोगो ने समुद्र का रग-ढग देखकर स्थिति को विकट बतलाया। उनका अनुमान था कि समुद्र मे भँवर पैदा होगी।

रात होने पर भी नाव नही लौटी। तट पर रोना-धोना शुरू हो गया। थोड़ी देर मे घाट वाले इकट्ठे हो गए। सबकी नज़र पश्चिम की ओर थी।

रात शान्त थी। समुद्र निश्चल था। तारे चमक रहे थे। किसी को लगा कि उधर समुद्र मे बहुत दूर पर एक बिन्दु के समान कोई चीज दिखाई दे रही है। शायद वही नाव होगी।

लेकिन नाव नही आई।

कोच्चन की बूढी माँ छाती पीट-पीटकर रोती हुई चक्की से अपने बेटे को माँगने लगी। बाबा की पत्नी, जो गर्भिणी थी, किसी पर आरोप लगाये बिना, बैठकर रो रही थी। इस तरह समुद्र-तट पर खूब रोना-धोना होता रहा।

करीब आधी रात के समय दूर से एक 'आरव' सुनाई पड़ा। किसी ने चिल्लाकर कहा, "नाव आ रही है।" नाव एक पक्षी की तरह तेजी से आ रही थी।

नाव मे एक 'शार्क' था। दो पकडे गये थे। पर दोनो को एक साथ नाव में लाना कठिन हो गया। इसलिए चेम्पन ने दूसरे को काट डाला

था। उसके टुकडे-टुकडे करके उन्हे उसने बिक्री के लिए पूरब जाने वाली औरतो मे बाँट दिया, और कह दिया कि बेचकर लौटने पर दाम चुका देना काफी है। काली, लक्ष्मी आदि सबको हिस्सा मिला। उस दिन कई घरो मे चूल्हे जलाये गए।

दो दिन बाद फिर काँटा डालने के लिए लोग गये। उस दिन भी चेम्पन सफल होकर लौटा। समुद्र की बिगडी हालत मे भी चेम्पन के पास पैसा जमा होने लगा। पुराने लोग हारकर चुप हो गए थे। औरतो ने कहा कि चेम्पन के कारण कम-से-कम पानी पीने का उपाय तो हो जाता है।

और नाव वालो ने भी काँटा डालने के लिए जाने का निश्चय किया।

सबको विश्वास था कि भुखमरी के बाद समृद्धि होगी। पिछले साल 'चाकरा' आलप्पुषा के उत्तर मे था। उस हिसाब से इस बार इसी तट पर होगा। दुर्भाग्यवश ऐसा न भी हो तो भी मछली मारने की तैयारी तो होनी ही चाहिए। इसका यह अर्थ था कि नाव, जाल आदि सब चीजों की मरम्मत होनी चाहिए। यह काम उस अकाल के समय ही हो जाना चाहिए। नाव वाले सकट मे पड़ गए।

औसेप्प और गोविन्दन् रुपयों की थैलियाँ लेकर निकल आए। सबको पैसे की जरूरत थी। किसी भी शर्त पर कर्ज लेने के लिए लोग तैयार थे। थोक माल लेने वालो ने आलप्पुषा कोल्लम, कोचीन आदि जगहो के झिगा मछली के व्यापारी सेठो के मैनेजरो की खुशामद की।

इस तरह कर्ज से उठाये गये पैसे का प्रताप उस तट पर दिखाई देने लगा। कम्पा जाल[1] की मरम्मत का काम भी होने लगा।

छोटे-छोटे व्यापारी लोग औरतो को कर्जा देने के लिए पैसा लेकर घर-घर आने-जाने लगे। घरो मे औरत और बच्चे मिलकर जो मछली

कम्पाजाल=थोड़ी दूर पर समुद्र में डाला जाने वाला जाल, जिसमें एक लम्बा रस्सा बँधा रहता है। नाव पर ले जाकर इसे पानी में डाल दिया जाता है। बाद को उसे समुद्र-तट पर खड़े हुए लोग खींच लेते हैं।

सुखा-सुखाकर रखते थे, उसके लिए पेशगी के तौर पर पैसे दिये जा रहे थे। इस बीच घर-घर घूमने वाले एक मोतलाली छोकरे को कोच्चुकुट्टी के घर मे उसके पति ने घायल कर दिया। इस पर एक केस भी चल गया।

चेम्पन बीच-बीच मे रामन् से मिलता था। रामन् डरता था कि वह कर्जा लौटाने की माँग न कर बैठे। लेकिन चेम्पन ने रुपये लौटाने की बात नही उठाई। इतना ही नही, उसने पूछा कि और रुपये की ज़रूरत है क्या?

परी 'चाकरा' व्यापार के लिए कोई तैयारी नही कर रहा था। उसके बाप ने डेरे को बन्द ही कर देने को कहा था। उसका कहना था कि परी समुद्र-तट पर काम छोड दे और कोई दूसरा धन्धा शुरू करे। लेकिन परी को ऐसा करना पसन्द नही था। उसने साफ कह दिया कि वह ऐसा नही कर सकता। वह उस स्थान को छोड़कर कही जाने को तैयार नही था।

उसके बाप अब्दुल्ला को आश्चर्य हुआ। उसके सामने परी ने पहले कभी इस तरह बात नही की थी।

अब्दुल्ला ने जगह छोडने का कारण पूछा।

परी ने कहा, "आपने मुझे बचपन मे ही यहाँ लाकर मछली के व्यापार मे लगाया था। मुझे दूसरा कोई काम नही आता।"

"पूँजी ही जो तुमने खत्म कर दी है।"

इसका जवाब तो परी को देना ही था। उसने कहा, "ऐसे तो बप्पा, व्यापार मे लाभ-हानि, दोनो होते ही है। कभी-कभी पूँजी भी खत्म हो जाती है।"

"आगे भी ऐसा ही हो तब?"

इसका एक ही जवाब परी के पास था, "बप्पा, मुझे जितना देने का आपने निश्चय किया है उतना ही दे दे तो काफ़ी है। बाद मे फिर कभी कुछ देने की ज़रूरत नही है।"

"इसके लिए इतनी सम्पत्ति कहाँ है रे? कुल ४० सेण्ट ही तो ज़मीन है।"

अब्दुल्ला पर काफी जिम्मेवारियाँ थी। पहले उसके पास जो ज़मीन थी, अब नही रही। एक बेटी की शादी करनी थी। शादी तय हो गई थी। अब्दुल्ला ने यह सब परी को बतला दिया। तब भी परी मे कोई परिवर्तन नही हुआ।

करुत्तम्मा को मालूम हो गया कि परी के डेरे मे 'चाकरा' व्यापार की कोई तैयारी नही हो रही है। उसके लिए चटाई-टोकरी आदि नही खरीदी जा रही है। टोकने की मरम्मत भी नही हो रही है। न चूल्हा ही बनाया जा रहा है। उसने अपनी माँ से कहा कि परी ने जो मदद की है उसके लिए ज़रा भी अहसान का भाव मन मे हो तो उसका पैसा इसी समय उसे वापिस कर देना चाहिए।

चक्की ने चेम्पन को तंग करना शुरू किया। लेकिन कोई फायदा नही हुआ। इतना ही नही, चेम्पन उल्टा नाराज हो गया। करुत्तम्मा को अब विश्वास हो गया कि चेम्पन परी को उसका रुपया नही लौटायगा। कभी-कभी वह अपने मन मे कुछ तय भी करती। ऐसे ही, एक अवसर पर उसने माँ से कहा "मेरा शरीर इस भार को सहन नही कर सकता।"

इसका मतलब माँ तुरन्त नही समझ सकी। उसने पूछा, "तेरे शरीर पर कौन-सा भार है री ?"

करुत्तम्मा रो पडी। चक्की ने उसे शान्त करने की कोशिश की। लेकिन करुत्तम्मा ने हठ पकड़ी, "बप्पा से मै सब-कुछ कह दूँगी। सब-कुछ . . . . .। मैं जानती हूँ, उस समय पैसा भी हो जायगा।"

चक्की घबराई, "बिटिया मेरी, तू ऐसा मत कर !"

चक्की जितना जानती थी वह सब चेम्पन जान जाय तो क्या होगा ? चक्की यह सोच भी नही सकती थी। करुत्तम्मा की बात सुनकर उसे लगा कि उसको जितना मालूम है इसमें उससे भी ज्यादा बात है।

अकेले मे करुत्तम्मा का मन कभी-कभी बेकाबू हो जाता था। वह परी से प्रेम करती थी। उसके हृदय में दूसरे किसी के लिए जगह नही थी, चाहने पर भी, परी को ही नही, परी के साथ अपना सम्बन्ध भी वह एक

क्षण के लिए नही भुला पाती थी। एक मल्लाहिन के तौर पर ही उसने जन्म लिया था, और एक मल्लाहिन के तौर पर ही उसे मरना है। यह कैसे हो सकता था, वह जानती थी। उसके लिए परी को भूल जाना था न ?

अगर कर्जा चुका दिया जाय तो वह भूल सकेगी। ऐसा उसका विश्वास था। वह यह सोच नही सकती थी कि उसीके कारण परी अपना सब काम-धन्धा गँवाकर निराधार हो जाय। यही बात उसके दिमाग में हमेशा बनी रहती थी। समय बीतता गया। लेकिन स्थिति मे कोई फर्क नही पड़ा। चेम्पन ने परी को रुपया नही लौटाया।

७

समुद्र-तट पर लोग प्रतीक्षा मे ही दिन काट रहे थे। रात के भोजन में मरचीनी और कंजी[1] लेते समय हरेक घर मे लोग समुद्र-माता को स्मरण करके यह प्रश्न करते कि 'हे समुद्र-माता, एक मुट्ठी अन्न खाने का अवसर फिर कब मिलेगा ?' उसका उत्तर भी वे स्वय देते थे, 'चाकरा के साथ।' उन्हे लग रहा था कि एक मुट्ठी अन्न खाये ज़माना बीत गया।

चाय वाले जब चाय उधार देने से इन्कार करते तब मछुआरे कहते थे कि "अरे, 'चाकरा' आयगा जी !"

घरो मे औरतो के कपडे गन्दे होकर फटने लगे और उनमे पैबन्द लगने लगे। तब भी लोग यही कहते, "'चाकरा' आने दो ! मलमल और महीन कपड़े सब खरीदेगे।"

उस समय सब इच्छाओ और आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है।

करुत्तम्मा के मन मे भी एक अभिलाषा थी, जिसको उसने अपनी माँ से कहा, "'चाकरा' के समय किसी भी तरह कुछ पैसा कमाना चाहिए। उसके अलावा बप्पा की कमाई से भी कुछ पैसा लेना चाहिए। ऐसा करके परी का कर्जा चुका देना चाहिए।"

चक्की ने भी कुछ कमाना चाहा। लेकिन उसका उद्देश्य कुछ दूसरा ही था। वह चाहती थी कि कमाकर कुछ सोना खरीदे।

करुत्तम्मा ने कहा, "मुझे सोने-वोने की जरूरत नही है। वह कर्जा चुका दिया जाय। यही बहुत है।"

---

१. कंजी=पतली मांड सहित भात।

चक्की न पूछा, "बेटी, उस कर्जे को चुकाने की जिम्मेवारी बाप की ही है न ?"

"बप्पा नहीं चुकायँगे ।"

चक्की ने हुंकारी भरकर सहमति प्रकट की । करुत्तम्मा हिसाब लगाने लगी ।

पचमी का अपना अलग कार्यक्रम था । वह ऊपा बटोरेगी । बप्पा ने एक-एक टोकरी मछली देने का वचन भी दिया है ।

परी ने भी कुछ तय किया । अब्दुल्ला ने घर और ज़मीन सेठ के पास रहन रख दी । उसके आधार पर वह दो हजार रुपये तक खर्च के लिए ले सकता था । उसने निश्चय किया कि उस साल होशियारी से 'चाकरा' व्यापार चलायगा और कर्जा चुकाकर बहन की शादी भी कर देगा ।

अच्चन ने निश्चय किया कि इसी 'चाकरा' मे उसे भी एक नाव का मालिक बनना है । समुद्र का पोला और अकाल बिलकुल अप्रतीक्षित था । उस समय खूब फाकाकशी रही । अच्चन औसेप्प के पास गया और एक नाव तथा जाल खरीदने की बात उठाई । उसके लिए चाहे जैसी भी व्यवस्था करनी पडे वह तैयार था । उसने कहा, "मैं भी एक नाव की पतवार पर चढ़कर समुद्र मे जाना चाहता हूँ । मेरी भी स्त्री समुद्र-तट पर आकर खड़ी-खड़ी देखा करेगी ।"

औसेप्प ने पूछा, "हाथ मे कितना है अच्चा ?"

अच्चन ने कहा, "कुछ नही ।"

"तब कैसे होगा ?"

आखिर औसेप्प ने एक सुझाव दिया, "'चाकरा' की कमाई जमा करनी चाहिए । 'चाकरा' के बाद नाव खरीदना ! जो रकम घटेगी, वह दे देगा ।"

"लेकिन एक बात है । नाव और जाल मेरे ही नाम पर खरीदना होगा । तुम्हे सिर्फ़ हिस्सा मिलेगा । पतवार का हिस्सा भी तुम्हे मिलेगा । अच्छा तो यह होगा कि 'चाकरा' मे जो-कुछ मिले, मेरे ही पास जमा करते

जाओ ! मै हिफाजत से रखूँगा ।"

अच्चन सहमत हो गया । ऐसा ही वहाँ हुआ करता था । घर पहुँच-कर उसने नल्लम्मा को सब बाते कह सुनाई और कहा, "पूरब मे बिक्री से तुम्हे जो मिले उसे भी मुझे दे दिया करना !"

"ऐसा क्यो ? तुम अपना हिस्सा भी मेरे पास जमा करना !" नल्लम्मा ने कहा ।

"जा निकम्मी कही की । दोनो का हिस्सा औसेप्प के यहाँ जमा करना है ।"

नलम्मा को इस पर पूरा विश्वास नही हुआ । उसने पूछा, "मालूम है चेम्पन भाई ने कैसे नाव और जाल खरीदा ? वह अपनी कमाई का पूरा पैसा चक्की को सौपता जाता था ।"

अन्त मे औसेप्प के पास जमा कराने पर दोनो सहमत हो गए ।

अच्चन ने सबसे कहा कि वह भी नाव और जाल खरीदने जा रहा है ।

इस तरह की प्रतीक्षा के बीच ही वर्षा का आरम्भ हो गया । समुद्र में उत्तुग तरगो का दृश्य उपस्थित हो गया । बाद मे पानी के खिंचाव से जान पडा कि 'चाकरा' वही होगा । वहाँ के मल्लाहो के चेहरे पर आशा और उमंग का भाव खिल उठा । समुद्र-तट शीघ्र ही उत्तर से दक्षिण तक एक बड़े शहर का रूप धारण कर लेगा । दोनो तरफ झोपड़ियाँ खडी करनी शुरू कर दी गईं । चाय की दुकानें, कपडे, दर्ज़ी, सोने-चाँदी सब तरह की दुकाने सज गईं । इस साल एक 'डायनमा' लगाकर बिजली की बत्ती का इन्तजाम करने की भी खबर थी ।

समुद्र में दूसरी बार तरगे उठी । पानी खूब मथा गया । सब लोग आनन्द से उछल पडे । सबोंके हृदय मे इच्छाओ की कलियाँ अकुरित होने लगी । इस उथल-पुथल के बाद पानी जब शान्त हो जायगा तब लोगों की समृद्धि का उदय होगा ।

समुद्र शान्त हो गया । दूर-दूर से नावे आने लगीं । बरसात का मौसम था । आँधी-पानी का भी जोर था । फिर भी समुद्र एकदम एक

तालाब-जैसा शान्त था।

चेम्पन की नाव पर काम करने वाले सब-के-सब होशियार थे। उसने उन्हे और भी निपुण बना दिया था। चेम्पन पतवार पर जाकर खडा हो गया और उसने एक गौरव के साथ नाव को चला दिया। वह एक सुन्दर दृश्य था।

पहले दिन मछली कम ही मिली। पानी की स्थिरता देखकर मछलियो ने आना अभी शुरू ही किया था। दूसरे दिन भी सब नावे समुद्र मे गईं। चेम्पन को अधिक मछलियाँ मिली। अच्चन का खयाल था कि चेम्पन सबसे पहले मछली मारने निकल गया। इसीलिए उसे अधिक मिलीं, रामन् मूप्पन का खयाल इससे भिन्न था। उसने कहा "वह पल्लिक्कुन्नम का भाग्य ही है जो मोल लाया है।" सबकी इच्छा थी कि चेम्पन के बराबर नही, तो कम-से-कम भी उसके लगभग तो मिलना ही चाहिए। वास्तव मे चेम्पन से सबको एक प्रेरणा प्राप्त हुई।

अच्चन ने अपने साथियो को ठीक किया, "सब याद रखो! ज़ोर से आवाज़ देकर सबको बुलाने की ज़रूरत नही होनी चाहिए। अरे, हमें भी एक निश्चय करना चाहिए।"

सबने निश्चय किया कि वह भी देखेंगे कि चेम्पन के बराबर बटोर ला सकेंगे या नही।

लोग पहले की अपेक्षा सवेरे ही समुद्र-तट पर इकट्ठे हो गए। फिर भी कुछेक को आवाज़ देकर बुलाना ही पड़ा। चाय की दुकानो मे भी पहले ही बिक्री हो गई। दूसरो की स्पर्धा के बारे में चेम्पन को कुछ मालूम नही था। उस दिन इसकी नाव बाद मे गई।

समुद्र मे नावों की चाल देखकर ऐसा लगा कि उस दिन खूब मछली मिलेगी। थोक माल लेने वाले और दूसरे व्यापारी, सब तट पर इकट्ठे हो गए। परी ज़रा चिन्तित दीख रहा था। वह किसी की प्रतीक्षा में था। हाथ में पैसा कम था। सेठ जी के मैनेजर ने पैसे लाकर देने की बात कही थी। लेकिन वह आया नही। परी उसीकी प्रतीक्षा कर रहा

था। सब तरह से कमाने का वह अवसर था। समुद्र में बटोर बहुत अच्छा हुआ। दिन भी साफ और धूपदार था। झिंगा उसनी जाय तो अच्छी तरह सूख जायगी। उस दिन आदमी कुछ कमा सकता था।

समय बीतता गया। सेठ का मैनेजर पाँचु पिल्लै नही आया। परी डरा कि उसके लिए 'चाकरा' की शुरुआत ही बिगड रही है।

सब नावे तट की ओर मुडी। परी की घबराहट बढने लगी। बाकी सब लोग पैसे लेकर खडे थे।

तट पर से हर्ष-नाद बुलन्द हो उठा। होटलों मे भोजन परसने की तैयारी शुरू हो गई। नाव किनारे पर लगते ही सब भीड़ लगाने लगेगे। डेरे में लोग कण्टर चूल्हो पर रखने लगे। एक मिनट भी बर्बाद नही करना था। परी के मजदूर भी काम के लिए तैयार हो गए।

सबके आगे चेम्पन की नाव थी। रोज की तरह वह उछलती हुई आ रही थी।

कादरी ने कहा, "उसकी नाव से जीतने की बात सोचना ही व्यर्थ है।"

मोयिदीन ने उसका समर्थन किया।

एक बूढे मल्लाह ने अपनी राय प्रकट की, "पतवार पर खुद मालिक ही जो है।"

नाव किनारे लगी। नाव पर झिंगा मछली थी। कही जगह खाली नही थी।

परी अपने को भूलकर चेम्पन के पास दौड़ा गया। पहले का अनुभव वह भूल गया था। उस समय कोई भी भूल सकता था।

परी ने प्रार्थना के स्वर मे कहा, "चेम्पन कुञ्ञे, माल मुझे दो !"

चेम्पन ने निर्दयता पूर्वक उसकी ओर देखा और पूछा, "पास मे पैसा है ? नही है तो जाओ !"

नाव किनारे लगने पर मल्लाह का स्वभाव ही ऐसा हो जाता है।

परी के कुछ जवाब में कहने के पहले ही कादरी वहाँ पहुँच गया।

परी यह समझकर कि चेम्पन की नाव की मछली नही मिलेगी दूसरी नावो की तरफ दौडा ।

उस रोज भी पहले की तरह चेम्पन ने ही मछली का भाव तय किया । उस दिन खूब मछली मिली थी । चेम्पन का बटोर सबसे ज्यादा था ।

परी ने किसी दूसरे की नाव से एक तिहाई माल मोल लिया । उसके पास उतना ही रुपया था । खर्च काटकर नाव वालो को हिस्सा दिया गया । तब चेम्पन को एक खयाल आया । उसने पूछा, "आज समुद्र की कमाई देखो ! कैसी धूप है और कैसा प्रकाश है ! कमाने का अच्छा दिन है । दाम भी अच्छा मिला है ।" उसके कहने का मतलब नाव पर काम करने वालो ने नही समझा । तब चेम्पन ने आगे कहा, "अरे गधे सब, मौका जब मिलता है तब उसका पूरा फायदा उठाना चाहिए । पैसा कमाने का यही समय है न ! खाना खाकर तैयार हो जाओ ! एक और बटोर के लिए मै जाने को तैयार हूँ ।"

पास मे खडा अच्चन सुन रहा था । चेम्पन ने उससे तो कहा नहीं था । फिर भी वह बोल उठा, "सुनने पर जवाब दिये बिना मै नही रह सकता । पैसा मिलेगा यह सोचकर समुद्र ही खाली कर दोगे क्या ?"

इतना ही नही । एक ही दिन मे दो बार मछली मारने के लिए जाने का काम इसके पहले कभी नही हुआ था । ऐसा होना भी नही चाहिए ।

चेम्पन ने कहा, "तुम्ही लोग सोचो !"

समुद्र-तट ऐश्वर्य से जगमगा रहा था । घरो के चारो तरफ सोना बिखरा हुआ-जैसा लग रहा था । उसनी हुई मछली सूखने के लिए पसार दी गई थी ।

उस दिन अच्चन खाना खाने के लिए होटल में नही गया । सीधा घर गया । कमाकर पैसा बचाने का निश्चय किया था न ! नल्लम्मा ने पूछा, "आज बिना खाना खाये क्यो चले आए ?"

अच्चन झुँझला गया । बोला, "अरी तेरा कभी भला नही हो सकता । मैं कहे देता हूँ, तुझे कभी नाव और जाल नही मिल सकता ।"

अच्चन वापिस जाने लगा। अपनी गलती महसूस करते हुए नल्लम्मा ने कहा, "सुबह जाते समय कहकर क्यों नही गये ?"

अच्चन ने कहा, "यह तो पहले ही कसम खाकर हम दोनो ने तय किया था न ?"

उसका कहना ठीक ही था। जब अच्चन आगे बढा तब नल्लम्मा ने कहा, "खाने का खर्च निकालकर बाकी यहाँ दे जाया करो! मैं रखूँगी। औसेप्प के पास बाद को जमा किया जायगा।"

अच्चन ने कुछ नोट और खरीज उसके सामने फेक दी।

खाना खाने के बाद चेम्पन तुरन्त समुद्र-तट पर चला आया। उसी दिन वह और पैसा कमाने का सपना देख रहा था।

शाम को चेरियषिक्कल और तृक्कुन्नपुषा आदि जगहो से नावें पहुँच गईं। रात को घनघोर वर्षा हुई। दूसरे दिन प्रकाश होने के बाद ही नावे समुद्र मे उतरी।

खूब सवेरे ही नाव न निकालने के कारण चेम्पन काम करने वालो पर खूब बिगड़ा।

उस दिन भी चेम्पन ही आगे था। लेकिन एक और नाव भी तेजी से आगे बढ़ रही थी। उसमें लोग दम तोडकर डाँड चला रहे थे। पतवार की जगह पर एक बहुत होशियार आदमी खड़ा होकर फुर्ती से नाव का संचालन कर रहा था। उसे देखकर लोग आश्चर्य करने लगे कि वह किसकी नाव है। पता लगा कि वह तृक्कुन्नपुषा की नाव है और पतवार-चालक का नाम है पलनी। वह कम ही उम्र का था।

चेम्पन की नाव और पलनी की नाव बराबर-बराबर रही। देखने से ऐसा लगता था कि आगे निकल जाने के लिए दोनों मे होड़ लगी है। नावों के नाविक मानो ज़िद पकडकर डाँड चला रहे थे और दोनों नावों के पतवार-चालक पूरी ताकत लगाकर नाव का संचालन कर रहे थे। बड़ा ही स्फूर्तिदायक दृश्य था।

ऐसा सन्देह होने लगा कि चेम्पन की नाव ज़रा पीछे पड़ रही है।

ज्यादा मछली किसको मिलेगी, नही कहा जा सकता था। जाल फेकने और नाव घुमाने का दोनो का ढग देखकर कुछ अनुमान करना मुशकिल था।

लौटते समय भी दोनो में होड लगी। दोनो का अगला हिस्सा पास-पास आ जाने पर मार-पीट भी हो सकती थी। एक बार जब दोनो का अगला भाग आपस मे टकरा गया तो सब डर गए। करुत्तम्मा ने पूछा, "अम्मा, बाबू क्यो इस तरह हठ कर रहे हैं ?"

चक्की भी घबराई थी। मछली मारकर लौट आना है। इस तरह स्पर्धा क्यो होनी चाहिए ? चेम्पन अब जवान तो है नही। नाव का अगला भाग टकरा जाय तो क्या न हो जाय ?

उस समय एक-एक क्षण एक युग-जैसा लगा। आखिर नावे किनारे पर लगी। तट पर जोरो से हर्ष-नाद हुआ। किसी की न हार हुई, न किसी की जीत। दोनो बराबर रही। माल भी दोनो नावो मे भरा था।

दोनो नावे एक साथ किनारे पर लगी। करुत्तम्मा ने पलनी को गौर से देखा। वह सिर पर एक कपडा बाँधे और हाथ मे एक डॉड लिये नाव से जमीन पर कूदकर खड़ा हो गया। वह एक बलिष्ठ युवक था। चेम्पन ने पलनी को गले लगाया और कहा, "बेटा, तुम सचमुच समुद्र के वीर पुत्र हो !"

पलनी चुप रहा।

उस दिन की बिक्री मे पलनी को थोडा ज्यादा पैसा मिला। इस तरह चेम्पन की ज़रा-सी हार हो गई।

चेम्पन ने पलनी से पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है बेटा ?"

वह बलिष्ठ-काय युवक जरा सकोचशील था। चेम्पन के सामने खडे उस युवक मे नाव मे खडे उस पतवार-चालक का कोई लक्षण नजर नही आता था। वह एक बच्चे-जैसा लगता था। पता नही उस समय उसका गम्भीर-भाव कहाँ गायब हो गया था। उसने कहा, "पलनी !"

"तुम अपना काम जानते हो बेटा ! मछुआ होकर जन्म लेने प

समुद्र मे काम करने की कला मालूम होनी ही चाहिए ।"

पलनी ने कुछ नही कहा ।

चेम्पन ने पूछा, "बेटा, तुम्हारे बाप का नाम क्या है ?"

"वेलू। मर गया है ।"

"और माँ ?"

"वह भी मर गई ।"

"घर मे और कौन है ?"

"कोई नही ।"

जरा आश्चर्य के साथ चेम्पन ने कहा, "कोई नही !"

पलनी ने कुछ नही कहा ।

घर पहुँचने पर चक्की ने चेम्पन से पूछा, "जवान होना चाहते हो, सो तो ठीक है । लेकिन जवानी का यही मतलब है क्या ?"

चेम्पन ने सुनकर भी अनसुनी कर दी । उसके दिमाग मे एक बात घुस गई थी । समुद्र मे वह किस आत्म-विस्मृति के साथ पतवार-चालक का काम कर रहा था, उसके बारे मे उसे चक्की से जरूर कुछ कहना था । लेकिन इस समय उसे पत्नी से एक दूसरी ही बात कहनी थी । उसने चक्की से धीरे-धीरे बाते शुरू की, "अरी, उस नाव के पतवार वाले लडके को तूने देखा ?"

"हाँ, देखा तो ।"

"लडका अच्छा और होशियार है न ?"

चक्की को भी लडका बहुत पसन्द आया । सिर्फ चक्की को ही नही, समुद्र-तट पर सबको वह बहुत पसन्द आया था ।

चक्की ने पूछा, "क्या मतलब है ?"

"वह मिल जाय तो बडा अच्छा होगा ।"

चक्की ने कुछ नही कहा । चेम्पन ने आगे कहा, "मैने पूछा था । उसके घर मे कोई नही है । लेकिन इससे क्या ? एक दृष्टि से यह अच्छा ही है ।"

चक्की ने कहा, "तब उसे खाने के लिए बुलाया क्यो नही ?"

"वह तो मै भूल ही गया।"

चक्की को खुशी हुई कि चेम्पन ने लडकी के लिए एक लड़का पसन्द किया है। इससे प्रकट है कि लडकी की शादी को बात उसे याद है।

लडका काबिल है। कोई भी उसे फँसा सकता है। चेम्पन को यह डर हुआ। खाना खाने के बाद वह उठा और समुद्र-तट पर चला गया।

पलनी और उसके साथी नारियल के पेड की छाया मे सोये थे। उस दिन उससे चेम्पन को और कुछ बात नही हो सकी। दूसरे दिन भी समुद्र पर दौड लगी। चेम्पन इस बार हार गया। मछली भी पलनी को ही अधिक मिली।

चेम्पन के नाव वालो मे जिद्दीपन आ गया। करुत्तम्मा ने कहा, "उन लोगो को इस तट पर आकर हम ऐसा नही करने देगे।"

बाबा की इच्छा हुई कि पलनी की नाव से भिडन्त क्यो न हो जाय ? तब मार-पीट भी हो जायगी।

चेम्पन बीच मे बोला, "अरे कैसी बाते कर रहे हो ? एक तेज लडके से भेट हुई तो इतनी ईर्ष्या क्यो ? उन लोगो को जीतना चाहते हो तो कोशिश करो !"

चेम्पन के नाव वाले सोचने लगे कि बीच समुद्र मे नही तो तट पर ही उन्हे नीचा दिखाया जाय। लेकिन वेलुत्ता ने इसका विरोध किया। उसने कहा, "आज ये लोग हमारे तट पर आये है। हो सकता है कि कल हम उनके तट पर जायँ।"

फिर भी चेम्पन के नाव वालो मे कुछ-न-कुछ करने की इच्छा बलवती हो उठी, खूब कमाने का वह अवसर था। मुकदमा लडना पडे तो लडा जायगा, ऐसा उनका विचार था।

चेम्पन उनका यह विचार जान गया। यह उसकी अशान्ति का एक कारण हो गया। चेम्पन की नाव पर काम करने वालो को ही नही, उस तट पर सबको उस नाव वालों से ईर्ष्या हो गई। लोगो ने कहा, 'ये अपने

को इतना काबिल समझकर न जाने पायँ।' कुछ लोगो ने इस तरह के विचार का भी विरोध किया।

दो-तीन दिन के भीतर ही समुद्र-तट पर मार-पीट हो गई। मार-पीट नाव मे काम करने वालो के बीच हुई थी। दो-तीन लोगो का सिर फूटा। उस दिन और अगले दिन भी उस घाट की कोई भी नाव समुद्र मे नही गई। सब-के-सब छिप गए। पुलिस आई और कुछ लोगो को गिरफ्तार किया। घटवार ने बीच मे पडकर उनको छुडा लिया।

वे सब एक-एक करके घटवार से मिले और उसे नज़राना दिया। बाद मे एक चन्दे का चिट्ठा निकाला गया और मामला खत्म कर दिया गया। पर नतीजा यह हुआ कि तब तक की कमाई भी खत्म हो गई। सिर्फ वेलायुधन् घटवार से मिलने नही गया। वह घटवार की नज़र पर चढ गया। घटवार ने पुलिस से उसे पकडवा दिया। एक हफ्ता जेल मे रहकर वह लौटा और उसने कहा, "मै घटवार को नही मानूँगा।"

चेम्पन को एक हफ़्ते की कमाई का घाटा लग गया। खूब कमाने के उस मौसम मे वह कितना बडा घाटा था!

समुद्र मे फिर काम शुरू हुआ।

चक्की रोज चेम्पन से पलनी को भोजन के लिए बुलाने की बात कहती। इसी बीच काम करने वाले एक दिन की छुट्टी लेकर तृक्कुन्नपुषा गये। पलनी नही गया। चेम्पन ने पलनी से पूछा, "बेटा, तुम क्यों नही गये?"

"मै कहाँ जाता?"

ठीक है तृक्कुन्नपुषा मे उसका कोई नही था, जिससे वह मिलने जाता। चेम्पन ने पलनी को भोजन के लिए निमंत्रण दिया, "तो दोपहर का खाना खाने के लिए मेरे यहाँ आना?"

पलनी ने निमत्रण स्वीकार किया। चेम्पन के घर में एक बढिया भोज की तैयारी हुई।

पलनी एक घर की सन्तान न रहकर पूरे तृक्कुन्नपुषा की सन्तान हो

गया था। माँ-बाप की उसे याद ही नही थी। वह कैसेपला ?– इसका यही उत्तर था कि वह पला। किसने पाला ? किसी ने भी नही। उसके लिए किसी ने भी कष्ट नही उठाया। वह सिर्फ अपने लिए कमाता था। जब वह एक छोटा बच्चा था तभी नियति ने उसे समुद्र मे जाल की रस्सी पकडने के लिए ला पटका था, जिसमे खतरनाक जल-जन्तु भरे पडे थे। उसके लिए चिन्ता करने वाला कोई नही था। जब वह बडा हुआ तब वह नाव पर जाने लगा और कमाने लगा। पैसा हाथ मे आने पर इच्छानुसार खर्च भी किया। जब पैसा नही रहता या कम रहता तब उसीके मुताबिक गुजारा भी करता। क्या उसके मन मे भी अभिलाषाएँ थी ? हो भी सकती थी। अभी तक किसी ने आग्रह नही किया था कि वह खाना खाये, उसका पेट भरे। न वह इस प्रकार का हक लेकर कही गया ही।

आज उसके लिए एक जगह खाना तैयार हुआ। वह प्रसन्नता से भरपेट खाये, इस विचार से आज एक औरत ने खाना परोसकर खिलाया। कैसी भावुकतापूर्ण अनुभूति थी! उसे कौन-कौन तरकारी अच्छी लगी, चक्की ने समझ लिया। और बार-बार परोसकर खिलाया।

कौन जाने पलनी के मन मे यह सन्देह उठा कि नही कि यह सब खातिरदारी क्यो हो रही है।

चक्की ने पूछा, "बेटा, तुम्हारी क्या उम्र है ?"

"कौन जाने!"

उसे अपनी उम्र का पता नही था। चक्की की जिज्ञासा बढ़ी। अपनी उम्र न मालूम रहने की बात अच्छी नही थी। तब तो आगे एक-एक सवाल होशियारी से पूछना चाहिए। कौन जाने उसकी जात क्या थी! पर जान लेना तो जरूरी था।

"बेटा, तुम कहाँ रहते हो ?"

"अब एक झोपडी है। उसीमे।"

"यहाँ जो कमाते हो उससे क्या करोगे ?"

"क्या करूँगा ? खर्च करूँगा।"

एक माँ की तरह चक्की ने उपदेश दिया, "बेटा तुम अकेले हो न ? इस तरह खर्च करोगे तो क्या होगा ? चार दिन कही बीमार ही पड गए तो क्या उपाय होगा ?"

पलनी ने मानो इसका भी जवाब पहले ही सोच रखा था। सिर्फ इतना बोला, "ओ !"

यह बात उसे कितनी निस्सार लगी। उसका जीकर बडा होना ही एक आश्चर्य की बात थी। तब बडा होने पर बीमार पडने की बात ही कोई बडी बात हो सकती थी ?

चक्की बैठी देखती रही। मानो उसे अब कुछ और पूछना नही था। पलनी काफी हट्टा-कट्टा था। बुरा नही था। उसके बारे में दुखी या प्रसन्न होने वाला कोई नही था। इस तरह एकाएकी उसका जीवन बीत रहा था। आज तक किसी ने उसके जीवन के बारे में कुछ सोचा नही था।

चक्की ने एक माँ की आत्मीयता के साथ पूछा, "इस तरह जीवन बिताना काफी है बेटा ?"

"और क्या चाहिए ?"

तो उसके जीवन मे कोई उद्देश्य नही है ? यह ठीक है क्या ? 'नही' यह भी नही कहा जा सकता था। जल्दी ही उसने जवाब दिया था और उसमे किसी तरह की हिचक नही थी। जीवन का कोई उद्देश्य बनाने की उसने कोशिश ही नही की। उसकी ज़रूरत भी किसी को नही थी।

चक्की ने कहा, "ऐसी उदासीनता ठीक नही है बेटा ?"

पलनी ने कोई जवाब नही दिया। चक्की ने आगे कहा, "बेटा, तुम अकेले हो। काम भी कर सकते हो। यह सब बदल जायगा। तुम्हारी तबीयत बिगड सकती है। इसके अलावा आदमी के लिए कुछ बाते जरूरी है, देख-भाल के लिए एक साथी हो तो । वह ज़रूरी है। बेटा, तुम्हारे लिए खाना तैयार करके प्रतीक्षा में रखे रहने के लिए एक जगह हो, यानी घर हो तो वह खुशी की ही बात होगी न ?"

पलनी चुप ही रहा।

"बेटा, तुम्हे शादी कर लेनी चाहिए ।"

"हाँ, सो तो ठीक ही है ।"

"तो शादी की बात मै तय करूँ ?"

"हाँ, हाँ । क्यो नही !" पलनी ने स्वीकृति दे दी ।

चक्की ने पूछा, "लडकी 'कौन है' यह जानना नही चाहते ?"

"कौन है ?"

"मेरी बेटी ।"

पलनी ने यह भी स्वीकार कर लिया ।

बात यहाँ तक तय हो जाने पर भी चक्की के खयाल मे कुछ खामियाँ रह गई थी, यद्यपि अच्छे पहलू भी थे । पलनी का न घर था, न सगे-सम्बन्धी थे । ऐसे आदमी को बेटी दे देने के बाद अगर वह अविवेक का कोई काम करे तो क्या होगा ? किससे कहा जायगा ?

चेम्पन ने कहा, "लेकिन लडका बहुत अच्छा है ।"

"यदि कोई पूछे कि बेटी को कहाँ भेजा, तो क्या उत्तर दिया जायगा ?"

"वह घर बनायगा ।"

सबसे अधिक चक्की को दुखी बनाने वाली एक दूसरी ही बात थी । उसने पूछा, "वह किस जाति का है ?"

"वह मनुष्य जाति का है । समुद्र मे काम करने वाला है ।"

"हमारे सम्बन्धी बिगड खडे होगे ।"

"बिगडा करे ।"

"तब हम अकेले पड जायँगे ।"

"पडने दो !"

चेम्पन ने दृढ निश्चय के साथ आगे कहा, "मै लड़की की शादी उसीसे करूँगा ।"

८

दो-तीन दिन से रात-दिन लगातार पानी बरस रहा था। समुद्र में झिंगा मछली की भरमार थी। लेकिन नाव नही खोली गई थी। काम तो आदमियो को ही करना पडता था न ! कडाके की ठण्ड पड रही थी। चौथे दिन का सूर्योदय प्रकाशमान था। नावे समुद्र मे उतरी। खूब बटोर हुआ। व्यापार भी हुआ। आकाश फिर मेघाच्छन्न हो गया। पानी भी पडने लगा। ऐसी मूसलाधार वर्षा इससे पहले नही हुई थी। बरसना जारी रहा।

डेरो मे अच्छी तरह सुखाई हुई मछलियाँ पडी थी। अधसूखी और उसनी हुई भी थी। सडी-गली मछलियो का चोइयाँ भी पडा था। सब मिलाकर डेरो की हालत बडी तकलीफदेह थी। सब जगह घाटे-ही-घाटे का लक्षण नजर आता था।

'चाकरा' के शुरू के दिन धूप और प्रकाश के थे। रोज का माल रोज तैयार हो जाता था। सेठो के आदमी आते-जाते रहते थे। इस तरह व्यापार जारी था। ऐसे ही समय मे यह दुर्भाग्य शुरू हो गया।

परी को एक और आफत का सामना करना था। उसका पहली बार का माल अच्छा था। दूसरी बार के माल के बारे मे कहा गया कि माल काफी सुखाया नही गया था। सेठ ने कहला भेजा कि परी का माल उसे नही चाहिए और यह कि सेठ का पैसा लौटा दिया जाय।

किसी भी शर्त पर सेठ मानने के लिए तैयार नही होता था। आल-प्पुषा की सब दूकानो मे कोशिश की गई। किसी को भी माल की ज़रूरत नही थी। गोदाम सब भरे पडे थे।

परी ने पॉच्चू पिल्लै का पॉव पकडा, जिससे थोडा पैसा सेठ को मिल जाय। कुछ कमीशन पाने की शर्त पर पॉच्चू पिल्लै ने कोशिश करने का वचन दिया। इस तरह घाटे पर थोडे पैसे का प्रबन्ध हो गया। इस पैसे से माल खरीदा गया। इतने ही मे ऑधी-पानी शुरू हो गया ।

परी का पैसा (माल) पडे-पडे सडकर दुर्गन्ध पैदा करने लगा। एक और दिन पडा रहे तो उसे गाड देने के सिवा और कोई उपाय नही था।

तट पर का वातावरण एकाएक उदास हो गया। नावे समुद्र मे जाती थी और बढिया बटोर भी लाती थी। घरो मे झिगे की कुछ बिक्री भी होती थी। लेकिन लौरियॉ कम ही आती थी। ऐसी स्थिति थी। माल के मोल-तोल का समय नही था। व्यापारियो की इच्छा के अनुसार माल बेचना पडता था ।

होटलो मे बिक्री बन्द हो गई। कपडे की दुकानो मे कोई झॉकने भी नही जाता। यहॉ तक कि मूँगफली बेचने वाले छोकरे भी दिखाई नही पडते थे।

यह स्थिति कब बदलेगी ? रोज का खर्च चलाना भी मुश्किल है।

उस तट के नाव वाले सब सकट मे पड गए। खासकर रामन्। उस साल उसका व्यापार ठप्प हो गया। औसेप्प ने अपने पैसे के लिए उसे तग करना शुरू किया। उसकी नजर रामन् की चीनी नाव पर थी।

दोनो मे आपस मे तर्क-वितर्क हुआ। दोनो एक-दूसरे से नाखुश हो गए। एक हफ्ते के अन्दर किसी भी तरह पैसा लौटा देने की रामन् ने शपथ खाई। उस समय रामन् के मन मे चेम्पन का ध्यान था।

रामन् ने चेम्पन से पैसा माँगा। इस बार माँगने पर तुरन्त देने के लिए चेम्पन तैयार नही हुआ। रामन् ने उसका कारण समझ लिया।

"बात क्या है चेम्पन ? खोलकर कहो तो सही।"

जरा सकोच के अभिनय के साथ चेम्पन ने कहा, "बिना किसी जमानत के देता रहूँ तो ठीक नही होगा!"

"तुमको क्या जमानत चाहिए ?"

"यह मै कैसे कहूँ ?"

अन्त मे चेम्पन ने अपनी इच्छा प्रकट की कि रामन् अपनी चीनी नाव जमानत मे रखे।

इस तरह चेम्पन के पास रामन् की नाव आ गई, उस दिन भी अच्चन के घर झगडा हुआ। चेम्पन के पास एक नही, अब दो नावे हो गईं। नल्लम्मा ने अच्चन को आडे हाथो लिया।

" 'आदमी हूँ'—कहकर, इस तरह क्यो रहते हो ?"

"अरी तेरे साथ होने से ही सर्वनाश हुआ है। औसेप्प के पास जमा करने के लिए चाकरा की कमाई जो दी थी, उसका क्या हुआ ?"

"पहनने के कपडे बिना और पानी पीने के बरतन बिना आदमी का काम चल सकता है ?"

"वह पैसा मेरे ही पास रहता तो ?"

"पीने ही मे खत्म हो गया होता।"

अच्चन ने गुस्से मे नल्लम्मा को कसकर दो थप्पड लगा दिये।

एक और नाव हो जाने से चक्की को खुशी जरूर थी, लेकिन परी का कर्ज बाकी रहने का दु ख भी था। करुत्तम्मा चक्की को बराबर याद भी दिलाती रहती थी।

जिस दिन चीनी नाव जमानत मे आ गई उस दिन चक्की ने पति से कहा, "यह भारी अन्याय है।"

"क्या ?"

"आधी रात के समय उस छोकरे से चोरी कराकर अब चुप्पी साध ली है।"

चेम्पन ने चक्की को फटकारा।

"इस तरह फटकार देने से ऋण-मुक्त हो जाओगे क्या ? वह बेचारा इस समय बडे सकट मे है। इस समय उसके रुपये दे दो तो बडा उपकार होगा।"

"अभी रुपये कहाँ से आयँगे ?"

करुत्तम्मा खडी-खड़ी यह बातचीत सुन रही थी। वह बोल उठी, "उसके रुपये जरूर लौटा दो बप्पा !"

चेम्पन ने गम्भीर होकर पूछा, "इससे तुझे क्या मतलब है री ?"

इसका वह उचित जवाब दे सकती थी। कहने के लिए काफी बाते भी थी। वह कहना चाहती थी कि पैसे की माँग पहले-पहल उसने ही की थी और इसीलिए हाथ मे पैसा न रहने पर भी परी ने माल दिया था। वह बाप को चेतावनी भी देना चाहती थी कि वह जितना अधिक पैसे वाला होता जाता है उतना ही अधिक उसकी बेटी उस विधर्मी के अधीन होती जाती है।

चक्की डर गई कि करुत्तम्मा कुछ बोल न दे। इसमे खतरा था।

चक्की ने चेम्पन से तर्क किया, "इतना नाराज़ होने की क्या बात है ? लडकी ने तो ठीक ही कहा है।"

"म पूछता हूँ कि इसको उससे क्या मतलब है। क्या इसीने वह कर्ज लिया है ? इसीसे वह पैसा माँगेगा ?"

थोडी घबराहट के साथ चक्की ने कहा, "इससे वह नही माँगता है तो क्या यह कुछ कह भी नही सकती ?"

चेम्पन ने गम्भीरता पूर्वक उपदेश देते हुए वह बात वहाँ खत्म कर दी, "हाँ, मै एक बात कहे देता हूँ। मर्द लोग आपस मे भिड जाते है। इसमे तुझे बीच मे पडने की जरूरत नही है, याद रखना कि तुम्हे एक पुरुष के साथ जिन्दगी गुज़ारनी है।"

उपदेश तो ठीक था। करुत्तम्मा को यह सब सीखना ही था।

फिर चेम्पन का गुस्सा चक्की की ओर बढा, "यह हो कैसे सकता है ? तुझीको देखकर लडकी सीखती है न ?"

चेम्पन ने सारा दोष चक्की पर डाल दिया। समय ऐसा था कि चक्की ने कुछ जवाब दिये बिना चुपचाप रहना ही ठीक समझा।

माँ-बेटी जब अकेली रह गईं तब चक्की ने करुत्तम्मा से कहा, "बिटिया, तू बप्पा से क्यो कह रही थी। बप्पा को कुछ सन्देह हो

जाय तो उसका क्या नतीजा होगा ? पड़ोस मे बातूनी लोग क्या-क्या कहते है यह तूने सुन ही लिया है। अगर तेरे बाप के कान मे ये बाते पड जायँ तो क्या होगा। हे समुद्र माता !"

करुत्तम्मा सब जानती थी। उसने कहा, "उसका पैसा लौटा देना है।"

"मेरा भी यही विचार है !"

"कहने को तो तुम कहती हो माँ, लेकिन देती नही। मैंने क्या-क्या उपाय नही सुझाये। तुमने एक को भी काम मे नही लिया।"

एक क्षण बाद उसने फिर कहा, "उस कर्जे को चुकाने के बाद ही ..।"

आगे की बात वह नही कह सकी। लेकिन चक्की समझ गई।

"ठीक है बेटी ! वैसा ही करना ठीक है।"

पलनी के साथ शादी करने के सम्बन्ध मे करुत्तम्मा का क्या मनोभाव था, चक्की ने यह जानने की कोशिश की थी। लेकिन करुत्तम्मा ने यह प्रकट नही होने दिया कि वह उसे पसन्द है या नही। बच्ची है, लज्जा के कारण कुछ प्रकट नही करना चाहती, ऐसा ही चक्की ने सोचा। फिर भी परी के प्रति उसके प्रेम का क्या नतीजा होगा, यह डर भी उसके मन मे था। करुत्तम्मा की सहेलियो से पुछवाना उसने इसलिए ठीक नही समझा कि बात पूरे समुद्र-तट पर फैल जायगी। ऐसी ही परिस्थिति मे करुत्तम्मा के मुँह से सकेत निकला कि 'कर्जा चुकाने के बाद ही हो।' उस सकेत से चक्की को तसल्ली हुई। उसका चेहरा एक प्रसन्न मुस्कान से चमक उठा। उसने पूछा, "बेटी, तो यह शादी तुझे मजूर है न !"

करुत्तम्मा ने कोई जवाब नही दिया।

चक्की ने उसी आनन्द के साथ आगे कहा, "लडका बड़ा होशियार है बिटिया, बडा अच्छा है।"

चक्की ने पलनी की प्रशसा की। प्रशसा के योग्य वह था भी। प्रशंसा सुनते-सुनते करुत्तम्मा के मन में एक विरोध का भाव उत्पन्न

होने लगा। वह विरोध करना चाहती थी। उसके विरोध के लिए कारण भी था। पलनी की उम्र क्या है, उसके सगे-सम्बन्धी कौन हैं, आदि जानने का उसे हक था न? सबसे बढ़कर उसके हृदय में पलनी के लिए स्थान है क्या?

चक्की को बडा सन्तोष था। वह कहती गई। करुत्तम्मा का दम घुटने लगा। वह कुछ कहे बिना नही रह सकी। वह फूट पडी, "जरा चुप भी क्यो नही होनी अम्मा!" वह अपने होठों को दाँतो से दबाते हुए मन-ही-मन कुछ बुदबुदाने लगी। वह क्या कह रही थी, चक्की की समझ में नही आया। चक्की ने कहा, "शादी के पहले ही तेरी माँ वह कर्जा चुका देगी।"

बहुत घृणा और क्रोध प्रकट करते हुए करुत्तम्मा ने कहा, "ओ हो, माँ चुका देगी! तो अब तक क्यो नही चुकाया?"

"मै जरूर जोर लगाऊँगी।"

निराशा-भरी आवाज म करुत्तम्मा ने कहा, "कुछ होने वाला नही है अम्मा! शादी ही होगी। यही होने जा रहा है।"

चक्की ने दृढता से कहा, "तू देखती रह?"

करुत्तम्मा के सब अव्यक्त विचार मिलकर एक बडे निश्चय के रूप में प्रकट हुए, "वह पैसा लौटाये बिना मै नही मानूँगी। नही लौटाया गया तो अपने प्राण त्याग दूँगी।"

चक्की घबराकर बोली, "मेरी बिटिया, ऐसे अशुभ शब्द मुँह से न निकाल!"

करुत्तम्मा रो पड़ी, "और क्या करूँ? वह बेचारा दिवालिया हो गया है। यहाँ पैसा नही है, ऐसी बात भी नही है। देना नही चाहते, यही तो बात है।"

करुत्तम्मा न चक्की को कसूरवार ठहराया। चक्की सुनती रही।

"अम्मा, तुम्हारा भी विचार न देने का ही है।"

चक्की ने कसम खाई कि उसका ऐसा विचार नही है। करुत्तम्मा

ने अपना निश्चय प्रकट किया, "अब मैं सीधी साफ-साफ बातें करूँगी।"

"ऐसी बात न करना, बिटिया !"

"नहीं तो और क्या करूँ ?"

थोड़ी देर बाद उसने आगे कहा, "तय हो जाने पर धूम-धाम से शादी करने के बाद जब विदा करोगी, उस समय यदि वह रास्ते में रोक कर, पैसा चुकाने के बाद जाने को कहे तो क्या किया जायगा ?"

तब तक चक्की ने ऐसी स्थिति के बारे में नहीं सोचा था। अब डराने वाला एक चित्र सामने चित्रित हो गया। घबराकर चक्की ने पूछा, "वह तुझसे पैसे क्यों माँगेगा ?"

"मेरे माँगने से ही तो उसने पैसा दिया था।"

"तूने तो..वह..खेल-खेल..में ही माँगा था न ?"

"ऐसा किसने कहा ?"

परी के रास्ता रोककर खड़े होने की सम्भावना चक्की के मन से हटती नहीं थी।

परी निराश था, अब बुरी हालत में था। किसी साहसपूर्ण कार्य के लिए वह तैयार भी हो सकता था। चाहे तो वह एक बड़ी विकट स्थिति पैदा कर सकता था।

करुत्तम्मा ने कहा, "मैंने बप्पा से कहने का निश्चय कर लिया है। आज मैं कहूँगी। क्यों न कहूँ ?"

"मेरी बिटिया, ऐसा न करना।"

"मैं जरूर कहूँगी।"

चक्की ने वचन दिया कि शादी के पहले किसी तरह ठीक कर दिया जायगा।

उस रात को पत्नी ने पति से कहा कि करुत्तम्मा शादी के लिए राजी है लेकिन..। उसके राजी होने के पीछे एक अप्रकट, फिर भी अर्थपूर्ण 'लेकिन' था। उस 'लेकिन' के बारे में कुछ कैसे कहा जाता !

चेम्पन के सामने करुत्तम्मा की मंजूरी का कोई सवाल ही नहीं था।

परी का कर्जा चुकाने के लिए चेम्पन पर जोर डालने लायक चक्की को कोई रास्ता नही सूझ रहा था।

* * *

मछली बहुत सस्ती हो गई थी। चेम्पन को ही नही, किसी को भी चैन नही थी। कुछ दिन बाद एक जागृति आई। कोचीन और आलप्पुषा मे ढेर लगाकर रखी गई सूखी झिंगा मछली सब बाहर भेज दी गई। लेकिन रगून मे भी माल सस्ता ही था। सेठ-साहूकारों का कहना था कि दाम मूलधन से आधा हो गया है। ऐसी ही खबर थी कि एक जहाज समुद्र मे ही नष्ट हो गया। इस कारण आधा ही दाम देकर हिसाब साफ किया जा रहा है।

परी को हजार रुपये का घाटा हुआ।

करुत्तम्मा मे कुछ परिवर्तन हुआ। शायद वह अपने को बदली हुई परिस्थिति के अनुसार बना रही थी। वह बडी हो गई थी। कुछ सूझ-बूझ और हिम्मत तो उसमे थी ही, वह परी से बाते करने के मौके की ताक मे रहने लगी। उसे परी से बहुत-कुछ कहना था।

घेरे के उस तरफ और इस तरफ खडे होकर दोनो मिले। करुत्तम्मा ने ही उस दिन बातचीत शुरू की। वह बे-मतलब ही हँसी उत्पन्न करने वाली बातचीत नही थी। करुत्तम्मा ने पूछा, "व्यापार मे घाटा हुआ है न, छोटे मोतलाली ?"

परी ने वार्तालाप के ऐसे प्रारम्भ की उम्मीद नही की थी। उसने कोई उत्तर नही दिया। करुत्तम्मा ने आगे कहा, "तुम्हारा पैसा लौटा देगे, मोतलाली!"

परी ने कहा, "तुमने मुझसे पैसा कहाँ लिया है ?"

"फिर भी उसे लौटाने का भार मुझ पर है।"

"कैसे ?"

"ऐसे ही मोतलाली ! तुम्हारा कर्जा चुकाने के बाद ही . . . ।" करुत्तम्मा अपना वाक्य पूरा नही कर सकी, उसका गला रुँध गया, सारा शरीर शिथिल हो गया और आँखे भर आईं।

उसका अधूरा वाक्य परी ने पूरा किया, "कर्जा चुकाने के बाद ही शादी करके जाना है, क्यो ?"

करुत्तम्मा की आँखो से टप-टप आँसू गिरने लगे।

परी नही रोया। उसने पूछा, "क्या सब सम्बन्ध तोडकर जाओगी ? क्यो ?"

यह प्रश्न करुत्तम्मा के हृदय मे तीर की तरह चुभ गया। सवाल पूछते समय परी भाव-शून्य हो गया था क्या ? परी को लगा, करुत्तम्मा वास्तव मे असहाय है। फिर भी उसने उत्तर की प्रतीक्षा की।

करुत्तम्मा ने कहा, "नही, नही, छोटे मोतलाली तुम्हारा भला हो !"

परी अब पहले-जैसा हल्के दिल वाला प्रेमी नही था। वह मुस्करा दिया— एक निर्जीव-सी मुस्कराहट।

"मेरा भला, करुत्तम्मा !"

परी के शब्दो का मतलब करुत्तम्मा ने समझ लिया। उसका भला अब तो हो नही सकता। करुत्तम्मा वहाँ खडी नही रह सकी। वह वहाँ से चल दी।

उस रात चेम्पन को एक खास बात कहनी थी। बडे उत्साह से उसने धीरे से चक्की को सुनाया, "पलनी स्त्री-धन नही लेगा। सुना ?"

चक्की को विश्वास नही हुआ। उसने पूछा, "ऐसा कैसे हो सकता है !"

"इसमे क्या है। बिना स्त्री-धन लिये हो वह शादी करने को तैयार है।"

चक्की चेम्पन की ओर टकटकी लगाकर देखती रह गई। . . . . चेम्पन ने शपथ खाकर विश्वास दिलाया।

"समुद्र-माता की शपथ। उसने कहा है कि वह बिना स्त्री-धन लिये

ही शादी करेगा।"

चक्की ने पूछा, "उसने न लेने की बात कही होगी, तो भी हमे तो देना ही चाहिए न !"

चक्की चेम्पन की ओर देखती रही। चेम्पन को चक्की का इस तरह हठ करना अच्छा नही लगा। कोई जब कहता है कि उसे पैसा नही चाहिए तब उसे जबरदस्ती देने की क्या ज़रूरत है ? चक्की के रुख पर उसे आश्चर्य हुआ।

चक्की ने कड़ी आवाज मे कहा, "उस सीधे-सादे बच्चे को कुछ कहकर उससे वैसा कहलवा दिया होगा।"

चेम्पन ने झट जवाब दिया, "नही-नही, मैंने कुछ भी नही कहा।"

चक्की ने फिर गम्भीर होकर पूछा, "आदमी के लिए रुपया-पैसा किस काम के लिए है ? स्त्री-धन क्या है ? जो कुछ हम अपनी बच्ची को देंगे, वही स्त्री-धन है न !"

"उसे नही चाहिए तब ?"

"फिर किसके लिए कमा रहे हो, यह मैं पूछती हूँ।" चेम्पन के अधिकार की परवाह न करके चक्की ने आगे कहा, "बुढापे में सुख भोगने की अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए। जो चाहे सो करो, लेकिन फिर भी जीवन मे कर्तव्यो के पालन के लिए कुछ करना ही होगा। इतना जो कमाया है उसमे मेरा भी हाथ रहा है न !"

चेम्पन ने हँसते हुए चक्की के गुस्से को ठण्डा करने के खयाल से कहा, "इससे क्या ? तोशक हम दोनो के लिए ही बनेगा। हम दोनो ही सुख भोगेंगे।"

चक्की का पारा चढ गया। वह जोर-ज़ोर से बोलने लगी। चेम्पन को डर लगा कि झगडा बढ जाने से पडोस के लोगो का ध्यान इधर आकृष्ट हो जायगा। इसलिए बात खत्म करने के खयाल से वह घर से बाहर चला गया।

करुत्तम्मा माँ के पास आई और बोली, "अम्मा, मुझे स्त्री-धन

नही चाहिए ।"

"क्यो ? लडकी बिना स्त्री-धन के जाय तो यह अपमान की बात होगी । तुम्हारे पास भी चार पैसे अपने होने चाहिएँ ।"

एक क्षण बाद करुत्तम्मा ने कहा, "ससुराल मे न सास होगी, न ननद । ऐसी ही जगह जाना है न ?"

यह बात चक्की के हृदय मे चुभ गई । सचमुच लडकी ऐसी ही जगह जायगी जहाँ उसका कोई सम्बन्धी नही होगा । उसने कहा, "फिर भी बिटिया, गाँव वाले क्या कहेंगे ?"

"ओ ! गाँव वाले ! मुझे किसी भी तरह विदा कर देना, मोतलाली को वह पैसा दे देना काफी होगा । वह बेचारा अब दिवालिया हो गया है, उसे इस तरह निराधार बनाकर मै नही जा सकती । मेरे जाने पर वह बेचारा मर ही जायगा ।"

करुत्तम्मा ने सब-कुछ कह डाला । लेकिन चक्की की समझ मे बात आई कि नही, मालूम नही । बात समझ मे आ गई होती तो एक माँ का आगे का क्या सवाल होता ? सम्भव है कि चक्की ने बेटी के प्रेम की गति समझ ली हो, पर उसे न प्रकट करना ही ठीक समझा । उसने कहा, "बेटी, वह कर्जा चुकाने का भार मै अपने ऊपर लेती हूँ ।"

"बप्पा वह पैसा नही देंगे ।"

माँ ने सवाल किया कि क्या किया जाय । करुत्तम्मा ने सुझाया कि बाप की तिजौरी से थोडा-थोडा चुराकर भी पैसा इकट्ठा किया जाय और कर्जा चुका दिया जाय । चुराने की बात अगर चेम्पन जान गया तो हत्या-काण्ड भी हो सकता है । चक्की में इतनी हिम्मत नही थी । उस तरह का काम उसने कभी नहीं किया था ।

करुत्तम्मा ने पूछा, "तुमको इसमे डर क्यो लगता है अम्मा ?"

डर तो था ही । इसलिए पहले के निश्चय के अनुसार काम नही हुआ ।

'चाकरा' से शुरू में रोज की कमाई काफी अच्छी थी । उस समय

थोड़ा-थोडा रोज-रोज निकाल लिया होता तो अब तक चुपचाप काम बन् गया होता। करुत्तम्मा ने चक्की को हिम्मत बँधाई। उद्देश्य का महत्त्व चक्की की प्रेरणा का कारण बना। भोर मे जब चेम्पन समुद्र मे गया तब माँ-बेटी दोनो ने मिलकर बक्सा खोला और एक छोटी-सी रकम निकाल ली। दोनो का सारा दिन डर मे कटा। चेम्पन ने दिन की कमाई के रुपये बक्से मे बन्द किये। चक्की ने उस दिन अकारण ही दिन की कमाई के बारे मे पूछा।

चेम्पन ने जवाब दिया, "कोई भी झिंगा नही चाहता था।"

"फिर भी कितना मिला ?"

"जानकर क्या होगा ?"

प्रतिदिन माँ-बेटी मिलकर थोडा-थोडा निकालती रही।

एक दिन चेम्पन ने पैसा गिनकर हिसाब किया। उस दिन माँ-बेटी दोनों का हाल बेहाल हो रहा था। चेम्पन ने जब बक्सा बन्द किया और माँ-बेटी की चोरी नही पकडी गई तब दोनो की जान-मे-जान आई।

बेटी ने माँ से पूछा, "कितना हुआ अम्मा ?"

कई दिनो की कोशिश के फलस्वरूप वह सिर्फ सत्तर रुपये जमा कर पाई थी। करीब दस-बीस रुपये की सूखी मछली भी थी।

रकम छोटी होने पर भी उसे परी को दे देने का निश्चय किया गया।

६

शादी तय हो गई। उसके लिए बहुत बड़ी तैयारी की ज़रूरत नहीं थी। पूछने-कहने के लिए पलनी को तो कोई था नही, किसी मतभेद की भी गुजाइश नही थी। उसने सिर्फ अपनी नाव के मालिक से कहा और चेम्पन के साथ जाकर अपने घटवार को नजराना दिया। इस तरह लड़की की शादी न कराने की शिकायत भी दूर हो गई। चेम्पन ने तनकर चक्की से कहा, "क्यों री ! देखा, किस तरह चेम्पन ने सब काम कर डाला !"

चक्की ने जड़ दिया, "हाँ-हॉ। लेकिन लडका कैसा है ! जिसके घर-द्वार का कोई पता नही। अच्छा है !"

"जा गधी कही की। तुझे क्या मालूम ? वह लड़का होनहार है, कमाने वाला है, उसका शरीर बलिष्ठ है और तौर-तरीका अच्छा है। उसके-जैसा लडका ढूँढ़ने पर भी यहाँ नही मिलेगा।"

चक्की ने विरोध नही किया। वह हँसती हुई बोली, "तब तो अब सुख भोगने मे कोई बाधा नही होगी।"

"मैं ज़रूर सुख भोगूँगा। पल्लिक्कुन्नम की तरह ही सुख भोगूँगा।"

"लेकिन उस मोतलाली छोकरे का पैसा नही लौटाया न ?"

चेम्पन ने झुँझलाकर कहा, "यह कैसी बात है कि जब भी करुत्तम्मा की शादी की बात उठती है तब तुम इस बात को छेड देती हो ?"

चक्की चौक पडी। बात सच ही थी। करुत्तम्मा की शादी के साथ-साथ यह बात याद आ ही जाती थी। लेकिन चेम्पन विशेष रूप से इस पर ध्यान देगा, यह उसने नही सोचा था। चक्की ने एक नया तर्क पेश किया, "हम फिर से बच्चे बनकर सुख भोगना चाहते है न ? तब

उसका रुपया लौटा देने की जिम्मेदारी भी खत्म हो जाय तो अच्छा ही होगा, यही मैंने सोचा ।"

उसका भी उपाय है। बात उसे याद है। मौके और सुविधा के अनुसार वह एक-एक जिम्मेदारी निभायगा। उसने अभिमान पूर्वक चक्की से कहा, "अरी, हमे लडका नही है। उसे बेटे की तरह अपना ले, यही मेरा विचार है।"

चक्की ने कहा, "ऐसे भी तो वह हमारा बडा लड़का हुआ।"

चेम्पन ने चक्की को और समझाया। पलनी के घर में अपना कोई नही है। इसलिए शादी के बाद उसे अपने यहाँ ही रख ले तो क्या नुकसान होगा। अपने पास दो-दो नावे हैं ही। पलनी भी रहेगा तो अच्छा ही होगा। चक्की ने भी इन बातो पर विचार किया। उसे भी बात अच्छी लगी। बेटे का अभाव दूर हो जायगा। लेकिन चक्की के मन मे एक शंका उठी, "पलनी को यह सब स्वीकार होगा क्या ?"

चेम्पन ने कहा, "क्यो नही स्वीकार होगा ?"

चक्की ने पूछा, "कौन ऐसा मल्लाह है जिसने मल्लाहिन के घर में रहना पसन्द किया हो ?"

चेम्पन ने जरा सोचकर जवाब दिया, "उसे सब पसन्द आयगा री! वह बडा सीधा है, बडा सीधा।"

"हूँ-ऊँ-ऊँ। जरा अपनी बात सोचो न! शादी के बाद दो दिन भी मेरे घर मे रहे थे क्या ?"

"मेरे तो माँ-बाप दोनो थे।"

चक्की को विश्वास नही था कि पलनी साथ रहेगा।

करुत्तम्मा को चेम्पन की योजना का पता लग गया। उसने माँ से इसका विरोध किया। करुत्तम्मा का विरोध देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसने बेटी से कहा, "अरी, तू तो बडी कृतघ्न मालूम होती है। शादी तय होते ही माँ-बाप के प्रति तेरी मोह-माया खत्म हो गई! तब तो इतना कष्ट सहकर हमने जो तेरा पालन-पोषण किया सब बेकार ही हुआ।

जैसे ही तेरे लिए एक मल्लाह के आने की बात उठी, वैसे ही तुझे न माँ की जरूरत रही, न बाप की। हाय रे भाग्य !"

चक्की के शब्दो से करुत्तम्मा मर्माहत हो गई। उसने यह नही सोचा था कि उसके शब्दो का ऐसा अर्थ लगाया जायगा। क्या माँ-बाप के प्रति स्नेह की कमी से ही उसने विरोध प्रकट किया था ? माँ के घर मे रहने से उसके अभिमान को धक्का लगेगा, ऐसा भी उसका खयाल नही था। वह तो हमेशा माँ की बेटी रहेगी—उस माँ की, जो उसके लिए सब-कुछ करने को तैयार रहती है। और पचमी के बिना भी वह कैसे रह सकती थी ? घर छोडकर जाने का दिन !— वह दिन उसे कैसे सह्य होगा ?

इतना होने पर भी करुत्तम्मा चाहती थी कि वह वहाँ से किसी तरह चली जाय। विह्वल होकर उसने कहा, "अम्मा, मेरे कहने का वह मतलब नही था। तुम ऐसी बाते न करो ! मेरे लिए अपने माँ-बाप को छोडकर और कौन हो सकता है ?"

सिसक-सिसककर रोती हुई वह अपनी माँ के कन्धे पर गिर पडी। माँ ने उसे गले से लगा लिया।

चक्की ने जो-कुछ कहा था, यह सोचकर नही कहा था। उसे यह भी खयाल नही था कि उसकी बात सुनकर करुत्तम्मा इतनी दुखी हो जायगी। करुत्तम्मा फूट-फूटकर रो रही थी, मानो उसका हृदय ही फटा जा रहा हो।

चक्की भी रो पडी। करुत्तम्मा ने कहा, "मुझे मुझे .... इस तट पर नही रहना है। नही तो ..हम सब .. एक साथ ही कही चले चले।"

स्नेहार्द्र होकर चक्की ने पूछा, "बिटिया, तू क्या कह रही है ?"

असह्य भाव से करुत्तम्मा ने कहा, "इस तट पर मै रहूँ तो . ।"

"क्या होगा बिटिया ?"

करुत्तम्मा कुछ कहना चाहती थी। चक्की को पहले भ्रम था कि उसके विचार-शून्य शब्दो की तीक्ष्णता ने ही करुत्तम्मा को रुलाया था। पर अब यह प्रकट हो गया कि कोई भारी चिन्ता करुत्तम्मा के मन को

डावॉडोल कर रही है। चक्की को पता नही था कि वह चिन्ता इतनी दुखदायी थी।

सिसकियो के बीच हॉफते हुए और होठो को दॉत से दबाते हुए करुत्तम्मा ने कह डाला, "मै यहॉ रहूँगी तो यह समुद्र-तट ही अपवित्र हो जायगा।"

चक्की की ऑखे भी भर आई। उसने कहा, "बिटिया मेरी, ऐसी बात न कह!"

"सच कहती हूँ अम्मा! मुझे यहाँ से जाना ही चाहिए। तभी ठीक होगा। मै अपना दु.ख तुमको छोडकर और किससे कह सकती हूँ?"

करुत्तम्मा को दिल खोलकर बाते करने के लिए और कोई तो था नही।– और हृदय भी पूरा खोला जा सकता है? यह सम्भव है?

उस समय भी चक्की ने कहा, "हे भगवान्! मालूम होता है कि उस मुसलमान छोकरे ने मेरी बच्ची के ऊपर जादू-टोना कर दिया है।"

करुत्तम्मा ने इसका खण्डन किया और कहा कि किसी ने भी उस पर जादू-टोना नही किया है। उसने पूछा, "इस तट पर इसके पहले मेरे-जैसी लडकी हुई है अम्मा?"

"कैसी लडकियाँ बिटिया?"

"तुमको नही मालूम?"

"हे मेरी समुद्र-माता! बच्ची मेरी पागल हो गई है क्या?"

"मै पागल नही हुई अम्मा! मै पूछ रही थी कि मेरे-जैसी कोई लडकी यहॉ इसके पहले भी हुई है क्या?"

करुत्तम्मा नही जानती थी कि वह कैसे अपने मन का भाव प्रकट करे। वह जानना चाहती थी कि उसके-जैसी, किसी विजातीय के साथ प्रेम करने वाली मल्लाहिन उस तट पर कभी हुई है कि नही, जिसकी कठिन कोशिश के बावजूद, प्रेम-बन्धन शिथिल होने के बदले दृढतर होता गया और जिसके साथ जीवन-पर्यन्त दृढतर होने वाली प्रेम-कहानी लगी रही। इस तरह की प्रेम-कहानी से समुद्र-तट परिचित था क्या? क्या किसी विजातीय युवक ने किसी मल्लाहिन से कभी प्रेम किया था और दोनो उस प्रेम मे निराश

होकर रह गए थे ? क्या उस तट के कण-कण मे वैसे प्रेमियो के गीत ने प्राण का संचार किया था ? यदि हाँ, तो उन प्रेमियो की क्या स्थिति हुई ?"

माँ से ये सब बाते वह कैसे पूछती ? हो सकता है उस तट पर ऐसे प्रेमी और प्रेमिका रहे भी हो, जो भग्न-हृदय होकर गुज़र गए हो। ऐसा हुआ होगा कि प्रेमिका ने अपन प्रेम को दिल मे छिपाये, किसी दूसरे की पत्नी के रूप मे अपना जीवन बिताया हो। नही तो—ऐसा भी हुआ होगा कि दोनों ने आत्म-हत्या कर ली हो।–ऐसा नही हुआ है तो . . . . . !

करुत्तम्मा को लगा कि ऐसे भाग्य-दोष की भागी सिर्फ वही हुई है, उसीने उस तरह के एक युवक से प्रेम किया है। यद्यपि दूसरे लोगो की भी अपनी-अपनी प्रेम-कहानी रही होगी, फिर इस तरह का अनुभव सिर्फ उसीको हुआ है।

चक्की ने घबराकर पूछा, "बिटिया, क्या कुछ गलती भी हो गई है ?"

करुत्तम्मा की समझ मे नही आया कि माँ क्या पूछ रही है। चक्की ने समझाने की कोशिश की। करुत्तम्मा ने कहा, "नही अम्मा, मैंने कोई खराब काम नही किया है ?"

करुत्तम्मा की यही प्रार्थना थी कि उसे बचने का मौका मिले। उसके मन में एक भारी डर समा गया था और वह उस डर की छाया से भी बचना चाहती थी। माँ ने उसे बचाने का भार अपने ऊपर लिया। शादी के दिन ही उसे ससुराल भेजने का उसने वचन दिया।

करुत्तम्मा पडोस की औरतो के स्नेह और आदर की पात्र बन गई। पुराने जमाने से चला आने वाला एक रिवाज दुहराया गया। शादी तय हो जाने पर वधू को भार्या-धर्म का उपदेश साधारणत: पडोस की स्त्रियाँ ही दिया करती है, यदि वधू कोई भूल करे तो इसके लिए पडोसियो को ही जिम्मेदार ठहराया जाता है।

नल्लम्मा ने करुत्तम्मा से कहा,"एक पुरुष को रखने की जिम्मेदारी तुम पर पडने जा रही है।"

"एक मर्द के हाथ मे लडकी नही सौपी जाती। यहाँ बात उलटी है।"

काली ने दूसरी बात कही, "समुद्र की उमडती तरगो के बीच हम लोगो के मर्दों का जीवन बीतता है बेटी !"

पेण्णम्मा ने चेताया, "स्त्रियो का दिल कमजोर होता है बेटी, हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए।"

इस तरह सबने उपदेश दिये। सबने अपने जमाने मे जैसे उपदेश पाये थे, वैसे ही उपदेश वे दूसरो को दिया करती है। ऐसा करना वह अपना कर्तव्य समझती है। वहाँ से जाने वाली किसी भी लडकी के बारे मे पडोसियो को अब तक कोई शिकायत नही हुई थी। जो उपदेश दिये गए, सब निश्छल भाव से दिये गए।

करुत्तम्मा ने ध्यान देकर सब सुना। उपदेशो से उसका मन भर गया था। लेकिन माँ से जो वह पूछना चाहती थी वही बात उसे इनसे भी पूछनी थी, 'क्या इस तट पर ऐसी कोई स्त्री हुई थी जिसने किसी से प्रेम किया और प्रेम पाया और फिर भी, दूसरे किसी से शादी की ?'

इस प्रश्न से उसका हृदय बोझिल था। लेकिन वह किसी से कुछ पूछती नही थी। ऐसी अभागिनी नारी की क्या स्थिति हुई होगी !

कभी-कभी करुत्तम्मा को लगता था कि ऐसी ही किसी शाप-ग्रस्त नारी की पिपासित आत्मा उस समुद्र-तट के वायु-मण्डल में क्रन्दन करती हुई मँडराती फिरती है। उसे लगता था कि समुद्र के एकान्त स्थानो मे किसी की जीवन-कहानी सुनाई पडती है। . उसकी तरह दुखी जीवन बिताने वाली दादियाँ और परदादियाँ भी वहाँ हुई होगी। हवा मे सुनाई पडने वाली ध्वनि उन्हीकी जीवन-कथा होगी, समुद्र की लहरो की आवाज़ मे भी वही कहानी गूँजती होगी। मिट्टी का कण-कण भी यह सब जानता होगा। उन पर दादियो की अस्थियाँ बिखरकर वहाँ की मिट्टी के जर्रे-जर्रे मे मिल गई होगी। वे भी पडी-पडी व्यथित होती होगी।

एक दिन करुत्तम्मा ने नल्लम्मा से पूछा, "मौसी, इस तट पर स्त्रियाँ कभी पतित भी हुई है ?"

"हाँ, एकाध के पतित होने की कहानी पुराने जमाने से चली आ रही है। वे जान-बूझकर पतित नही हुई थी। उनके जीवन की कहानी एक पुराने गीत का विषय हो गई है। उनके पतित होने के फलस्वरूप कैसे समुद्र मे बडी-बडी तरगे उठी और कैसे जमीन पर जल का आक्रमण हुआ, कैसे समुद्री जीव अपने-अपने गुफानुमा मुँह खोले नावो के पीछे पड गए—आदि बाते उस गीत मे बताई गई है। वह एक पुरानी कहानी है।"
उस गीत की कुछ कडियाँ गाकर नल्लम्मा ने करुत्तम्मा को सुनाई।

"वह भी एक प्रेम-कहानी थी।—तब वर्षों बाद उसकी कहानी भी एक ऐसे गीत का विषय बन सकती है।"

नल्लम्मा ने कहा, "समुद्र-तट पर यही रिवाज चला आ रहा है।"

करुत्तम्मा ने पूछा, "आजकल की क्या बात है ?"

"आजकल पुराने जमाने की शादी और पवित्रता नही है। अब पुरुष भी वैसे नही है। उस पुराने आचार-विचार से लोग हट रहे है। लेकिन समुद्र की बेटियो को अपने चरित्र की रक्षा तो करनी ही है।"

पडोस की छोटी लडकियो ने पूछा, "दीदी, तुम जा रही हो ?"

उसे इन बच्चियो से गम्भीर बाते करनी थी। उन्हे यह चेतावनी देनी थी कि हवा मे उडने वाले सूखे पत्तो की तरह वे समुद्र-तट पर विचरण न करे! कइयो को उसने समझाया।

करुत्तम्मा का, विदा लेने का समय आ गया। उसने उस तट पर जन्म लिया था, वहाँ बडी हुई थी। अब उस जगह को छोडना होगा। लेकिन वह उस तट को कभी भूल नही सकती थी!

अब उसे कहाँ जाना होगा ? वहाँ का तट कैसा होगा ? करुत्तम्मा के मन मे यही सन्देह उठता था कि क्या वहाँ भी सूरज यहाँ की ही भाँति सुनहली कान्ति का प्रसार करते हुए अस्त होता होगा। आँधी और तूफान मे बहुत ऊँचाई तक उठने वाली लहरो का क्रीडा-स्थल बनते समय यहाँ के समुद्र का दृश्य बडा ही सुन्दर हो जाता है। उसे तट पर कभी डर नही लगता था। यहाँ की हवा मे, जिसमे उस पुरानी अभागी प्रेमिका की

कहानी सुनाई पडती थी, स्नेह भरा था। वहाँ का तट भी ऐसा ही होगा क्या ? कौन जाने !

वहाँ के लोग ? वे भी स्नेहशील होंगे। फिर भी वह तट, जहाँ वह पली थी, विशेष रूप से उसे प्रिय था। अब वह इसको छोडकर जा रही है।

उसने सब चीजो से विदा ली।

स्वच्छ चाँदनी रात थी। समुद्र शान्त था। उस रात की चाँदनी मे एक खास तरह की मिठास भरी मालूम पड रही थी। उसी चाँदनी मे सिक्त होकर एक गीत का स्वर चारो ओर फैल रहा था।

परी बैठा गा रहा था।

करुत्तम्मा के कान मे वह आवाज परी के गाने की आवाज़-जैसी नही, वरन् एक आनन्दमयी दुनिया की पुकार-जैसी पडी। परी का व्यक्तित्व काफूर हो गया। गीत की वह ध्वनि स्वच्छ चाँदनी मे विह्वल उस तट की पुकार थी, उसके जीवन के आनन्द की पुकार थी। जिस तट को वह छोडे जा रही थी उसी तट का वह सगीत था। उस तट की कितनी ही प्यारी-प्यारी मीठी स्मृतियो के चिन्ह थे।

गाने की तरगे करुत्तम्मा के हृदय मे प्रविष्ट हुई। वह उठ बैठी। परी का रूप उसके मन मे प्रत्यक्ष हो गया। क्या सचमुच परी उसको बुला रहा था ? उस गीत के माधुर्य के सिवा उसे शान्ति देने वाला कौन था ? आज ही नही, वह रोज गायगा। उसके चले जाने के बाद भी गायगा। पर किसी को सुनाने के लिए नही।

माँ सोई हुई थी। बाप घर मे नही था। समुद्र-तट पर एकान्तता का साम्राज्य था, यह वह जानती थी। अनजाने उसे दरवाजा खोलकर बाहर जाने की एक प्रेरणा हुई।

उस गाने वाले का दिल टूक-टूक नही होता। कलेजा फाड़ डालने के लिए वह गा रहा था। गाने की तर्ज वही थी, जो कि एक पतित नारी की कहानी के गीत मे उसने सुनी थी।

नल्लम्मा ने उसे यह गीत सुनाया था। गीत की कड़ियो के शब्द उसे पूरे याद नही थे। पर उसके भावो ने उसकी हृत्तन्त्री को झंकृत कर दिया।

वह पतित नारी भी इस तरह के गीत से आकृष्ट होकर समुद्र-तट की ओर बेसुध चल पडी होगी। चाँदनी ने उसे भी पुकारा होगा।— अब उसी तरह एक दूसरी नारी भी निकल रही है।

समुद्र मे उत्तुग तरगे विकराल रूप धारण कर सकती है। हो सकता है बडे-बडे जल-जन्तु ऊपर सिर उठाकर गुफा के समान अपने मुँह खोले; और जमीन पर जहरीले साँप लोटे।

करुत्तम्मा का विचार एक नई दिशा की ओर गया। वह जा रही थी। जान-पहचान के सब लोगो से उसने विदा ले ली है। सब छोड जाने के लिए वह तैयार भी हो गई है। लेकिन तट पर की चाँदनी से उसने विदा नही ली थी, चाँदनी मे चमकने वाले तट से उसने विदा नही ली थी, और हाँ, चाँदनी के देवता से जाने की उसने अनुमति नही ली थी।

हो सकता है कि कल, परसो और उसके जाने के दिन तक फिर यह गाना नही भी गाया जाय। हो सकता है कि उस दिन गाते-गाते गायक का कण्ठ ही रुद्ध हो जाय। यह भी हो सकता है कि गायक आगे गाना ही बन्द कर दे। तब उस तट की चाँदनी भी शोक से मूक हो जायगी।

वह एक दूसरे आवेग से पराभूत हो गई। अब आगे फिर कभी ऐसी चाँदनी मे इस तरह के गान से अभिभूत होने का अवसर उसे नही मिल सकेगा। यह शायद उसका अन्तिम अवसर था। करुत्तम्मा को लगा कि वह इस अवसर का उपयोग किये बिना नही रह सकती। जिस आनन्द से वह वचित होने जा रही थी, उस आनन्द का एक बार फिर अनुभव ले लेने के लिए, वह तट पर खीचकर रखी हुई नाव की आड की ओट मे अन्तिम बार जाने के लिए प्रेरित हो उठी।

उसी तट पर एक बच्ची के रूप मे वह खेलती-कूदती पली थी। वही पर वह एक युवती हुई, और उसने प्रेम किया। अब वह भँवर और जल-

जन्तु से भरे समुद्र में मछली पकड़ने वाले एक मछुआरे की पतिव्रता पत्नी होने जा रही है। वह जीवन का एक महत्त्वपूर्ण मोड़ पार करने जा रही है। उसका जीवन आगे गुरुतर और अर्थपूर्ण होने जा रहा है। जीवन के हल्के हिस्से के इस आखिरी दिन, वह क्यो न थोडा आनन्द अनुभव कर ले।

लेकिन करुत्तम्मा को डर था। उसे अपने ऊपर पूरा विश्वास नही था। हो सकता है कि वह गलती कर बैठे और अपवित्र हो जाय। अब तक उसे इस तरह का कोई डर नहो हुआ था।

करुत्तम्मा को परी से बहुत-कुछ कहना था। आगे गाने को उसे मना करना था। चाँदनी मे इस तरह विह्वल बनाने वाला काम न करने को कहना था। उससे अपनी गलतियो के लिए माफी भी माँगनी थी।

करुत्तम्मा खडी हो गई और उसने धीरे से दरवाजा खोला। बाहर स्वच्छ चाँदनी फैली हुई थी। वह घर से बाहर निकली। नारियल के पेडो की छाया से होकर वह समुद्र-तट की ओर चल दी।

एकाएक गाना बन्द हो गया। गाते-गाते परी ने अपने देवता को सम्मुख खडा कर दिया। एक क्षण के लिए परी को अपनी आँखो पर विश्वास नही हुआ।

उसने पूछा, "करुत्तम्मा, तुम जा रही हो?"

इसके सिवा बेचारा दूसरा क्या समाचार पूछता! उसने आगे कहा, "जाने के बाद मुझे याद रखोगी? नही भी याद रखो, तब भी मैं यहाँ बैठा गाता रहूँगा। बूढा होने पर जब सब दाँत गिर जायँगे तब भी बैठा गाता रहूँगा।"

करुत्तम्मा ने कहा, "छोटे मोतलाली, तुम एक अच्छी शादी करके घर बसाओ और व्यापार करके सुख-चैन का जीवन बिताओ!"

परी ने जवाब नही दिया।

करुत्तम्मा ने आगे कहा, "मोतलाली, तुम मुझे भूल जाना! बचपन मे हम कैसे एक साथ खेला करते थे, वह सब भूल जाओ! यही हम दोनो के लिए ठीक होगा।"

परी ने कुछ नही कहा ।

करुत्तम्मा कहती गई, "हम लोगो ने जो रुपया लिया है सो मेरे जाने के पहले ही लौटा दिया जायगा । तुम्हारी भलाई के लिए ।"

करुत्तम्मा आगे कुछ न कह सकी । वह चाहती थी कि 'भगवान् से प्रार्थना करूँगी' कहकर वाक्य पूरा करे । लेकिन उसे डर लगा कि एक मल्लाह की पत्नी होने पर उसे सिर्फ एक ही पुरुष की भलाई के लिए जब प्रार्थना करनी है तब किसी दूसरे पुरुष की भलाई की प्रार्थना वह कैसे कर सकती है । लेकिन अनजाने उसके मुँह से निकला, "मैं हमेशा छोटे मोतलाली को याद रखूँगी ।"

"ओह ! नही, करुत्तम्मा, इसकी क्या जरूरत है ?"

नि शब्दता मे थोडा समय बीता । पर वास्तव मे वे शब्दो से अधिक प्रभावक क्षण थे ।

एक चातक नारियल के पेड से उडकर चाँदनी मे अदृश्य हो गया । मानो वह यह प्रकट करना चाहता था कि उसने उस वियोग का दृश्य देखा है । थोडी दूर से एक कुत्ता भी उन्हे देख रहा था । इस तरह दो-दो साक्षी हो गए ।

परी ने पूछा, "इस तट पर खेलते-कूदते हमारा जो सीप चुनने का खेल होता था, सब खत्म हो गया न ?"

एक लम्बी साँस के बाद उसने आगे कहा, "वह जमाना बीत गया ।"

यह वाक्य करुत्तम्मा के हृदय के अन्तस्तल को लगा ।

परी ने आगे कहा, "मैंने सोचा था कि करुत्तम्मा विदा लेने भी नही आयगी । बिना मिले तुम चली जाती तो मुझे और अधिक दुःख होता । फिर भी मै शिकायत नही करता । मुझे तुम्हारे बारे मे कोई शिकायत नही है ।"

हाथ से मुँह ढककर करुत्तम्मा रो रही थी । परी को जब मालूम हुआ तब उसने कहा, "क्यो रोती हो करुत्तम्मा ! पलनी अच्छा आदमी है । बडा होशियार है ।"

गद्‌गद् स्वर मे परी ने आगे कहा, "तुम्हारा भला होवे।"

इससे अधिक वह बर्दाश्त नही कर सकती थी। उसने कहा, "मोतलाली मुर्दे पर वार मत करो!"

परी को कुछ समझ मे नही आया। उसे डर लगा कि उसने कोई गलत बात कह दी है, जिससे करुत्तम्मा को दुःख पहुँचा है। अपने जानते तो उसने कोई कसूर नही किया था।

गहरे दुःख के साथ करुत्तम्मा ने कहा, "ऐसे भी छोटे मोतलाली, तुम तो प्यार करते नही।"

"ऐसा क्यो कहती हो?"

परी ने कसम खाई कि उसकी सबसे बडी अभिलाषा करुत्तम्मा का सुख है। उसने कहा, "मै यहाँ बैठकर गाता रहूँगा और जोर से गाऊँगा।"

करुत्तम्मा ने जवाब दिया, "मै भी तृकुन्नपुषा समुद्र-तट पर बैठी-बैठी यह गाना सुनूँगी।"

"इस तरह गाते-गाते कण्ठ फट जाने से मै मर जाऊँगा। तब इस तट पर चाँदनी मे दो आत्माएँ मँडराती फिरेगी।"

परी ने हुकारी भर दी।

इसके बाद किसी ने कुछ नही कहा।

बिना कुछ कहे ही करुत्तम्मा अपनी कुटिया की ओर चल पडी। यही उसका विदा लेने का तरीका था।

परी उसको देखता रहा। विदा देने का उसका भी यही ढग था।

इस तरह वे एक-दूसरे से विलग हो गए।

१०

चक्की की इच्छा थी कि शादी जरा धूम-धाम से की जाय। पडोसियो को भी एक अच्छे समारोह की आशा थी। चेम्पन के पास पैसा था। करुत्तम्मा उसकी प्रथम पुत्री थी। ऐसी स्थिति मे शादी धूम-धाम से होगी, ऐसी आशा करना स्वाभाविक ही था।

लेकिन चेम्पन इतना खर्च करने के लिए तैयार नही था। करुत्तम्मा के लिए कुछ गहने बनवा देने मे थोडा पैसा खर्च हो ही गया। बहुत हाथ रोकने पर भी कुछ खर्च किये बिना काम तो चलता नही। खर्च की बात को लेकर पति-पत्नी मे तर्क-वितर्क हुआ। झगडा निबटाने का काम करुत्तम्मा को करना पडा। उसको बडा दु ख हुआ कि उसीकी बात को लेकर माँ-बाप झगड़ते रहते है। किसी तरह शादी हो जाती तो चैन मिलता। उसे लगने लगा कि उसके कारण, उससे सम्बन्धित सब लोगो को दु ख-ही-दु ख होता है। आगे भी किस-किसको परेशान होना पडेगा, कौन जाने।

शादी का काम विधिवत् सम्पन्न होने से पहले घटवार को निमत्रण देना था। चेम्पन रुपया और पान-सुपारी-तम्बाकू आदि लेकर घटवार के यहाँ गया। घटवार बडा प्रसन्न हुआ और उसने शादी के दिन आने का आश्वासन दिया।

आखिर शादी का दिन आ गया। चेम्पन के अन्दाज से ज्यादा की ही तैयारी हो गई। घटवार पहले ही पहुँच गया। तृक्कुन्नपुषा से दस-पन्द्रह लोग आये। उनके साथ कोई स्त्री नही थी। पलनी को अपनी तो कोई थी नही लाने के लिए। यह बात सबको मालूम ही थी। फिर भी वर-पक्ष की तरफ़ से कोई स्त्री नही आई है, यह शिकायत की बात हो

गई। चक्की को भी यह बात खली।

नल्लम्मा के मुँह से निकला, "ये लोग कम-से-कम पडोस की ही किसी स्त्री को बुला लाते।" काली ने उसका समर्थन किया, "हाँ जी। भला इन मर्दों के साथ लडकी को कैसे भेजेगे ?" लक्ष्मी ने पूछा, "और उपाय ही क्या है ?" नल्लम्मा ने कहा, "यह कैसा रिवाज है ? लडकी को लिवा ले जाने के लिए वर के साथ औरतों का आना ज़रूरी समझा जाता है।"

औरतो के बीच हुई इस बातचीत की खबर चक्की को लगी। चक्की को खुद भी यह बात खटक रही थी।

रुपये-पैसे की बात तय करने का समय आया। रकम निश्चित करने का अधिकार घटवार का होता है। वह निश्चय हो जाने के बाद ही शादी होती है।

घटवार ने पलनी और उसके साथियो को बुलाया। सब आकर सामने आदर-भाव से खडे हो गए। घटवार ने कहा, "पचहत्तर रुपये भर दो!"

यह सुनकर वर-पक्ष वाले स्तम्भित रह गए। इतनी बडी रकम की माँग की उन्हे आशा नही थी। सबकी यही राय हुई कि माँग की रकम बहुत बडी है। एक 'जालवाले' की शादी मे ही इतनी बडी रकम माँगी जाती है।

कुछ देर तक किसी ने कुछ नही कहा। तब वर-पक्ष के मुखिया ने सविनय निवेदन किया, "मालिक बुरा न माने। हम भी घाट वाले हैं। हमारा भी घटवार और कायदा-कानून है। आपने जो रकम तय की है, मै उसका विरोध नही करता। फिर भी·········।"

"कहो, कहो! क्या बात है ?"

अच्युतन् (मुखिया) ने कहा, "पैसा भरने के लिए कहना आपके अधिकार की बात है। लेकिन वर-पक्ष वालो से जरा बातें कर लेनी चाहिए थी।"

घटवार की ओर से एक भूल हो गई थी। जब यह बतलाया गया तब घटवार अप्रसन्न हो गया। उसने पूछा, "अरे, इसमे इतनी पूछ-ताछ करने की क्या बात थी ?"

अच्युतन् ने अपनी बात छोडी नही। उसके घाट पर भी एक प्रभावशाली घटवार था। उसने कहाँ, "हाँ पूछना ही चाहिए था।"

"क्या पूछना चाहिए था ?"

अच्युतन् ने कहा, "लगता है कि यह शादी करने का आपका विचार नही है।"

बात ज़रा बढ गई। घटवार ने बिगडकर उसे फटकारा कि उस पर आरोप लगाया गया है।

अच्युतन् न सफाई दी कि वर-पक्ष के पास कितनी रकम है, यह मालूम किये बिना ही, 'इतनी रकम देनी है' कहने का यही मतलब हो सकता है कि शादी ही न हो।

घटवार ने पूछा, "अरे, तुम लोग इतने गये-गुजरे हो ?"

अपना घटवार न होने पर भी, एक घटवार का आदर करने के भाव से, उन लोगो ने उसकी डाट सह ली।

फिर भी अच्युतन् को कुछ कहना था।

घटवार ने चेम्पन से पूछा, "चेम्पा, तुम अपनी बेटी को ऐसे ही आदमी को सौंप रहे हो जिसमे पचहत्तर रुपये भरने की सामर्थ्य भी नही है ?"

स्त्रियो को यह प्रश्न अच्छा लगा। सबके मन मे यही प्रश्न उठ रहा था। सबके मन मे एक तरह का दर्द था कि एक भली लडकी को एक ऐसे आदमी के साथ भेजा जा रहा है जिसके न घर-द्वार है, न भाई-बन्धु। सबने इसमे चेम्पन को कसूरवार ठहराया था। अब घटवार ने जब चेम्पन से जवाब तलब किया तब सबको अच्छा लगा।

चेम्पन चुप था। अच्युतन् ने कहा, "बात ठीक है मालिक ! कोई उपाय नही है। हम लोग उसके कोई नही हे। एक ही घाट के रहने

वाले है, बस इतना ही। इसीलिए कहा कि भरने की रकम के बारे में पहले पूछ लेना चाहिए था।"

अच्युतन् ने पलनी के बारे मे जो बाते सुनाई, उन्हे सुनकर करुत्तम्मा के प्रति स्त्रियो की सहानुभूति बढ गई। कुछ ने आपस मे यहाँ तक कहा, कि ऐसी शादी कराकर लडकी को विदा करने के बदले उसे समुद्र मे डुबो देना ज्यादा अच्छा होगा।

इतना होने पर भी घटवार ने अपनी बात नही छोडी। उसने कहा, "अरे ठीक है। फिर भी, पैसा भरने की बात लड़के की स्थिति देखकर ही होती है क्या ?"

अच्युतन् ने नकारात्मक जवाब दिया। घटवार ने आगे कहा: "लडकी अच्छी है। उसे चाहते हो तो उसके लायक पैसा भी भरना होगा।"

वर-पक्ष के पप्पू नामक एक आदमी ने धीमे स्वर मे कुछ कहा। उसे घटवार की बाते पसन्द नही आ रही थी। उसकी बर्दाश्त के बाहर जब बाते हो गई तब उसने कुछ कह दिया। घटवार ने बिगडकर उससे पूछा, "अरे, तू क्या बक रहा है ?"

उसने उस समय कुछ नही कहा। घटवार ने ज़ोर डाला कि वह अपनी बात कहे।

मन मे जो बात थी आखिर उसे कह डालने का ही उसने निश्चय किया। हो सकता है कि यह कहने का उसने पहले से ही निश्चय कर रखा हो और चाहता हो कि शादी ही न हो। उसने एक चुनौती के तौर पर कहा, "हाँ, लडकी के बारे मे ज्यादा कुछ न कहना ही अच्छा है।"

"ऐ, क्या कहा रे ?"

"वह यहाँ रहकर इस घाट को अपवित्र न करे इसी विचार से यह शादी कराई जा रही है न ? हमारा घाट नष्ट-भ्रष्ट हो जाय या नही, इसकी आपको क्या परवाह है! फिर भी, मामूली रिवाज से बढकर लडका पैसा भी भरे! यह तो बड़ी विचित्र बात है!"

उसकी बाते सुनकर सब लोग चौक गए। चक्की खडी-खडी जहाँ-की-तहाँ गिर पडी। करुत्तम्मा ने माँ को थाम लिया। उसके मुह से निकला 'माई रे माई'। उसकी चिल्लाहट ने लोगो का ध्यान आकृष्ट किया। चक्की बेहोश हो गई थी।

चेम्पन पागल की तरह इधर-से-उधर दौडने लगा। उसको लगा कि पत्नी मर रही है और शादी भी रुक रही है।

कुछ लोगो ने इस तरह बात करने वाले को दोषी ठहराया और उससे ऐसी बाते करने का उद्देश्य पूछा। उस समय उसका उस तरह की बाते करना बिलकुल गलत बतलाया गया। लेकिन बोलने वाले को लेश-मात्र भी पश्चात्ताप नही था। वह बिलकुल उदासीन था। उसने कहा, "अरे, मै इस तट पर इसके पहले भी आया हुआ हूँ। मै सब-कुछ जानता हूँ।"

इससे यही ध्वनि निकलती थी कि लडकी मे कोई रहस्यपूर्ण भेद छिपा है ? लेकिन उस समय किसी को भी वह रहस्य जानने की उत्सुकता नही थी। सबकी यही कोशिश थी कि किसी तरह उस आदमी का मुँह बन्द कर दिया जाय। सब दूसरे घाट पर आये थे न !

अच्युतन् ने गुस्सा दबाते हुए कहा, "अरे चुप भी हो जाओ !"

नल्लम्मा और काली दोनो चक्की की परिचर्या मे लग गई। जब वह होश मे आई तब करुत्तम्मा के गले मे हाथ डालकर 'बिटिया मेरी, बिटिया मेरी' कहती-कहती फिर बेहोश हो गई।

स्त्रियो ने करुत्तम्मा को ढाढ़स बँधाया और चक्की की परिचर्या मे लगी रही।

जब चक्की को थोडा आराम हुआ तब चेम्पन ने पलनी और अच्युतन् को पास बुलाकर कहा कि वह उन्हे ७५ रु. देने के लिए तैयार है। उसे लेकर वे घटवार के कथनानुसार काम करे।

इस तरह भरने के लिए रुपये लेकर पलनी मडप मे आया। तब तक वहाँ का वातावरण भी शान्त हो गया था। पप्पू की बातो की ओर किसी

का ध्यान नही रहा।

पैसा भरा गया। रिवाज के मुताबिक उसमे से एक हिस्सा घटवार ने लिया और बाकी चेम्पन को दिया गया। इतनी चख-चख होने पर भी मुहूर्त का समय समाप्त नही हुआ था। शादी की प्रारम्भिक रस्म पूरी हो गई।

चक्की उठकर बैठने योग्य हो गई। लेकिन सिर मे चक्कर आना बन्द नही हुआ था। बैठते समय आँखो के सामने अँधेरा छा जाता था और कान से सुनाई नही पडता था। अधिक समय तक वह बैठने मे असमर्थ थी।

लडकी मडप मे लाई गई। मूप्पन[1] ने विधिवत् शादी कराई। मगल-सूत्र बॉधने और वधू को वस्त्र देने की विधि पूरी हुई। पलनी का हाथ करुत्तम्मा के हाथ मे दिया गया। चेम्पन को लगा कि करुत्तम्मा ने उस समय अपना हाथ कडा कर दिया और जरा पीछे खीच लिया। उसको लगा कि करुत्तम्मा ने पलनी का हाथ ठीक से पकडा भी नही।

उस समय बेचारी करुत्तम्मा के मन मे कैसे-कैसे विचार उत्पन्न हुए होगे, यह कौन कह सकता है ? जो-जो कहने को कहा गया वह एक यन्त्र की तरह करती गई।

औरतो ने चक्की को सहारा देकर मडप मे लाकर खडा किया। ठीक मुहूर्त के समय चक्की फिर बेहोश हो गई।

कुछ औरतो ने इसे अशुभ माना। चक्की फिर होश मे आ गई। लोगो ने सान्त्वना दी कि पूरा आराम करने लेने से बिलकुल ठीक हो जायगी।

भोज का समय आया। उस समय फिर एक गडबडी हुई। कुछ औरते बिना खाना खाये ही चली गई। क्योकि उन्हे पलनी की जाति के बारे मे सन्तोष नही हुआ था। वर-पक्ष का गडबडी पैदा करने वाला पप्पू भी चला गया।

लेकिन इन बातो से चेम्पन विचलित नही हुआ। उसने घटवार के

---

१ मछुआरों का पुरोहित।

पैर पकडे और अपना दुखडा रोया कि चक्की गिर गई है; करुत्तम्मा आज तक घर से कभी बाहर नही गई, अब उसे अकेले दूसरी जगह जाना पड रहा है, वर के साथ कोई औरत भी नही आई है, ऐसी हालत मे लडकी को उस दिन विदा न किया जाय तो अच्छा होगा। उसने आगे कहा, "पलनी भी रह जाय तो ठीक होगा। करुत्तम्मा चली जायगी तो बीमार को थोडा पानी औटाकर देने के लिए भी कोई नही रहेगा।"

चेम्पन पागल-जैसा हो रहा था। उसे देखकर घटवार ने सहानुभूति के साथ कहा, "तुम्हारा कहना सब ठीक है चेम्पा, लेकिन वर-पक्ष वाले यदि जोर दे कि शादी के बाद लडकी को ले ही जायँगे तो मना कैसे किया जा सकता है ?"

चेम्पन ने कहा, "मालिक, आप कहे तो वे लोग मान जायँगे।"

घटवार ने हँसकर कहा, "वे सब त्रृकुन्नपुषा के हैं। धूर्त है सब। तुमने अभी देखी ही है उनकी धूर्तता ?"

चेम्पन को घटवार की ही सहायता का भरोसा था। उसने सोचा कि घटवार कोशिश करे तो काम हो जायगा।

भोज के बाद पान-सुपारी का वितरण हुआ। अच्युतन् ने बारात को विदा करने की अभ्यर्थना की। करुत्तम्मा माँ के पास बैठी थी। उसकी आँखो से अविरल अश्रु-धारा बह रही थी। काम की भीड मे चेम्पन इधर-से-उधर दौड़ रहा था। अच्युतन् ने विदा करने की बात दुहराई। तिबारा जब बात उठाई गई तब चेम्पन के लिए उपेक्षा करने का कोई रास्ता नही रहा। उस समय घटवार ने पूछा, "क्यो जी, लडकी को आज ही ले जाना जरुरी है क्या ?"

ऐसे सवाल की किसी को आशा नही थी। अच्युतन् की समझ मे यह नही आया कि तुरन्त क्या उत्तर दे। घटवार जवाब की प्रतीक्षा कर रहा था। अच्युतन् ने पूछा, "आप यह क्यो पूछ रहे है ?"

"क्यो ?"

"शादी के बाद लड़की को छोड जाना न्याय-सगत होगा ?"

घटवार को मालूम था कि उसका प्रश्न उचित नही है। लडकी को छोड़ जाने के लिए अधिकार पूर्वक नही कहा जा सकता था। इसलिए उसने उस घर की तात्कालिक परिस्थिति का वर्णन किया। वह बात उन लोगो को मालूम थी ही। घटवार ने पूछा, "मै पूछता हूँ कि माँ के ज़रा अच्छी होकर उठने के बाद लडकी को ले जाना काफी नही होगा !"

अच्युतन् ने जवाब दिया कि लडका ही इसका उत्तर दे सकता है।

अपने तर्क की पुष्टि मे घटवार ने कहा, "लडकी को इसी समय ले जाना चाहिए, इस बात पर जोर देना आप लोगो के लिए ठीक भी नहीं है।"

अच्युतन् ने पूछा, "क्यो ?"

"लड़की को लिवा ले जाने के लिए एक स्त्री भी तो आप लोगो के साथ नही आई है।"

मुँह-तोड जवाब के तौर पर अच्युतन् ने पूछा, "जिसके साथ ऐसी कोई स्त्री आने के लिए नही थी, ऐसे व्यक्ति को लड़की दी ही क्यो गई ?"

घटवार ने ज़रा गुस्सा दिखाते हुए कहा, "तुम सिर्फ तर्क कर रहे हो जी !"

अच्युतन् चुप हो गया। वह बात तय करने का भार लड़के पर आया। अच्युतन् ने उसी पर छोड दिया। घटवार ने सोचा कि पलनी विरोध नही करेगा।

कुछ समय तक किसी ने कुछ नही कहा। तब अच्युतन् ने देरी होने की बात कही। घटवार ने यह राय प्रकट की कि पलनी भी रह जाय तो अच्छा होगा। इसका भी किसी ने जवाब नही दिया। जवाब देना था पलनी को।

अच्युतन् ने पलनी से कहा, "अरे तू क्या कह रहा है ? हमे तो जाना है !"

पलनी हिचकिचाया। उसे मालूम नही हुआ कि क्या कहे। सब बाते वह सुन रहा था। वह किसी निश्चय पर नही पहुँच सका था।

जो भी हो, ऐसा नही मालूम होता था कि वह उन बातो से प्रभावित हुआ है।

अच्युतन् ने असन्तोष प्रकट करते हुए कहा, "अरे कुछ जवाब नही देता। बेकार क्यो दूसरो को हैरान कर रहा है ?"

अच्युतन् ने शिकायत की कि पलनी-जैसे आदमी के काम मे पडने से भले लोगो के साथ झगडना भी पडा।

पलनी क्या कहेगा यह जानने के लिए चेम्पन आतुर हो रहा था। उसका विश्वास था कि पलनी सीधे स्वभाव का है, वह कोई जिद नही पकडेगा। ऐसे तो वह जहाँ रहे, वही उसका घर है। इसीलिए वह साथियो को भेजकर रह जायगा, ऐसा ही चेम्पन ने सोचा।

अच्युतन् ने फिर कहा, "कुछ जवाब दो न पलनी !"

पलनी ने अच्युतन् की तरफ और फिर दूसरो की तरफ देखा। कही से कोई सकेत उसे नही मिला। उसने कहा, "मै लडकी को अभी ले जाना चाहता हूँ।"

चेम्पन को आश्चर्य हुआ। उसने ऐसे मुँह-तोड जवाब की आशा नही की थी। छाती पीटते हुए उसने विनती की, "बेटा, उसकी माँ की स्थिति जरा देखो, तब कहो !"

इस स्थिति से पलनी के दिल को कुछ हुआ कि नही, नही कहा जा सकता। पलनी ने किसी सकेत की प्रतीक्षा मे फिर अच्युतन् की ओर देखा। लेकिन कोई लाभ नही हुआ।

पलनी बोला, "मै लडकी को ले ही जाना चाहता हूँ।"

अब उसका दिमाग भी काम करने लगा और कई तर्क उसने पेश किये। यद्यपि उसके पास घर-द्वार नही है, फिर भी एक घर बसाने के लिए ही उसने यह शादी की है। उसे एक नया जीवन शुरू करना है। शादी करके छोड जाने से उसका काम नही चलेगा। उसे कई काम शुरू करने है और एक भी टालने लायक नही है। इसलिए वह लड़की को साथ ही ले जाना चाहता है।

इतनी बाते पलनी कह सका, यह आश्चर्य की बात थी। उसने देखा कि उसकी बाते साथियो को पसन्द आईं। लेकिन इसका असर चेम्पन पर क्या पडा, इसका खयाल किसी को नही था। चेम्पन ने दयनीय भाव से गिडगिडाकर कहा, "बेटा, एक बच्ची को पालकर बडी करने वाला व्यक्ति ही तुमसे कह रहा है। तुम भी एक पिता बनने वाले हो।"

पलनी अटल रहा। हो सकता है कि साथियो को बात मजूर होती, तो पलनी भी राजी हो जाता। हो सकता है कि अच्युतन् का दिल भी पिघल गया हो। लेकिन उसने प्रकट नही किया। घटवार तो पिघल ही गया। उसे गुस्सा भी आया। उसने कहा, "यह कैसे हो सकता है ? वह तो किसी घर मे पला हुआ है नही। माँ-बाप की ममता वह क्या जाने ? घर मे ही आदमी मोह-माया सीखता है। जो समुद्र-तट पर पला हुआ है, उसे ये गुण कहाँ से मिले होगे ?"

कुछ क्षण के बाद घटवार ने चेम्पन से कहा, "ऐसे आदमी को लडकी देने के लिए तुम ही दोषी ठहरते हो।"

चेम्पन ने कुछ नही कहा। घटवार का कहना उसे ठीक मालूम हुआ। जिस पलनी को उसने पहले देखा था वह ऐसा निकलेगा, ऐसा उसने नही सोचा था। हो सकता है कि घर के वातावरण मे न पलने से उसमे यह कमी रह गई हो। भविष्य मे कौन जाने, क्या-क्या होने जा रहा है! चेम्पन को भी लगा कि उसने अपनी बेटी पलनी को देकर उसने गलती की है, शादीके दिन ही यह बात प्रकट हो गई। पलनी मे मोह-माया है ही नही, यह बात शुरू मे ही स्पष्ट हो गई।

अच्युतन् ने एक उपाय सुझाया, "अरे तू क्यो यह शाप अपने ऊपर ले रहा है ? जाना तो लडकी को है। पहले उसीसे पूछा जाय, उसीको कहने दिया जाय।"

यह सुझाव चेम्पन को पसन्द आया। पलनी को भी इससे सन्तोष हुआ। घटवार ने भी इसे ठीक समझा। उसने कहा, "यह ठीक है, उसे ही कहन दो। लडकी को इधर बुलाओ।"

चेम्पन ने करुत्तम्मा को बुलाया। वह माँ के पास बैठी थी। रोते-रोते भीगे हुए चेहरे सहित वह दरवाज़े पर आकर खडी हो गई। घटवार ने उससे पूछा, "अरी, तू अपनी माँ को ऐसी स्थिति मे छोड़कर जाने को तैयार है क्या? यहाँ तेरे बाप को भी पाव-भर पानी औटाकर देने के लिए कोई नही है। शादी के बाद तो पति के साथ जाना ही धर्म है। फिर भी तू सोचकर तय कर!"

करुत्तम्मा इसका क्या उत्तर देती! किसी निश्चय पर पहुँचने की शक्ति उसमे नही थी। उसने अपने गाँव से विदा ले ही ली थी। डर के साथ उसने भविष्य के बारे मे सोचा, वह जितनी जल्दी हो सके उतनी ही जल्दी गाँव को छोडकर चली जाने के लिए तैयार थी। वह दिन भी आ गया। लेकिन उसी दिन उसकी माँ भी अस्वस्थ हो गई। पिता की सेवा के लिए भी कोई नही था। करुत्तम्मा रो पड़ी। कुछ बोलने की शक्ति ही उसमे नही थी।

सब लोग उत्सुकता पूर्वक उसके जवाब की प्रतीक्षा कर रहे थे। घटवार ने कहा, "बेचारी कैसे कोई जवाब देगी! फिर भी जवाब उसे ही देना है। उसीको बात तय करनी है न!"

करुत्तम्मा माँ के पास गई। वह उसके गाल-से-गाल सटाकर फूट-फूटकर रोने लगी। चक्की भी रो रही थी। करुत्तम्मा ने माँ से बहुत-कुछ पूछा। लेकिन माँ की समझ मे कुछ नही आया। माँ ने पूछा, "बिटिया, तूने क्या पूछा?"

करुत्तम्मा कुछ बोल नही सकी। सिसकते-सिसकते वह इतना ही कह सकी कि "मै . . मै . . . . नही जाऊँगी, अम्मा!"

एकाएक चक्की ने कहा, "बिटिया मेरी! तू ऐसा मत कह! तू जा! तू नही जायगी तो . . ।" माँ वाक्य पूरा नही कर सकी। उसकी आँखो के सामने करुत्तम्मा के न जाने से, क्या-क्या हो सकता है उसका चित्र खिच गया। भले ही एक बूँद पानी तक देने के लिए घर मे कोई न रहे, लेकिन वह बेटी को कोई नुकसान नही पहुँचने देगी। चक्की ने बेटी

को, जितनी जल्दी हो सके, भेज देने का निश्चय किया। उसने कहा, "बिटिया, तू जाकर कह दे कि तू जायगी।"

चक्की ने जबरदस्ती करुत्तम्मा को अपने शरीर से अलग कर दिया और डाटते हुए यह कहकर उसे जाने के लिए बाध्य किया, "क्यो री-तू उस मुसलमान छोकरे को छोडकर जाना नही चाहती क्या ?"

माँ की फटकार सुनते ही करुत्तम्मा मे न जाने कैसे एक शक्ति आ गई। उसने दरवाजे पर जाकर कहा, "मै जाऊँगी।"

बाद को माँ-बेटी दोनो एक गाढ आलिङ्गन मे बँध गईं। दोनों का हृदय फट रहा था।

करुत्तम्मा ने चेम्पन के पैर पर गिरकर दोनो हाथ से उसके पैर पकड लिये। चेम्पन पैर झाडकर मुँह फेरकर खडा हो गया। कुछ समय वैसी ही पडी रहने के बाद करुत्तम्मा उठी। माँ ने उसे आशीर्वाद दिया और सब बाते याद रखने को कहा।

पलनी ने विदा माँगी। लेकिन चेम्पन ने कुछ नही कहा। चेम्पन परेशान नही दीख रहा था। वह रोता भी नही था। उसका भाव पूरा बदल गया था, चेहरा लाल हो उठा था और रौद्र रूप मे परिणत हो गया था।

दस-पन्द्रह लोग आगे-आगे और करुत्तम्मा पीछे-पीछे इस तरह सब लोग आगे बढे। बेटी को विदा होते देखने के लिए माँ ने हाथ के सहारे सिर उठाकर देखा। लेकिन उसका सिर नीचे लुढक गया। नल्लम्मा ने आँसू बहाते हुए चक्की का सिर थाम लिया।

होठो को दाँत से काटते हुए चेम्पन गरज पडा, "वह मेरी बेटी नही है।"

रोती हुई पचमी चिल्ला उठी, "दिदिया ! ओ दिदिया ! !"

चक्की के पास नल्लम्मा और काली थी।

करुत्तम्मा अपने भावी जीवन की ओर अग्रसर होती हुई रो रही थी। वह भावी जीवन कैसा होगा ? खतरो से बचकर ही वह जा रही थी क्या ? उसके लिए किसी ने प्रार्थना नही की। उसने स्वय भी कोई प्रार्थन

नहीं की।

शायद परी उसके लिए प्रार्थना कर रहा होगा।

इस तरह उस तट पर से वहाँ की चिरपरिचिता करुत्तम्मा विदा हो गई।

क्या आगे भी परी के गाने का स्वर वहाँ गूँजेगा? शायद गूँजेगा। लेकिन सुनने वाली नहीं रहेगी।

दूसरा खण्ड

११

वहाँ का समुद्र ही करुत्तम्मा को भिन्न प्रकार का लगा। उसका पानी भी दूसरे किस्म का था। वहाँ समुद्र शान्त नही है। भीतर खौलती हुई भँवरो और अन्तर-धारा को समुद्र अपने मे छिपाये रहता है। वहाँ की मिट्टी के रग मे भी फर्क है।

नई वधू को देखने के लिए कई लोग आये। वह लोगो से कैसे मिले और बाते करे, यह उसको मालूम नही था। जो-जो स्त्रियाँ मिलने आई, सब उसे बडे गौर से देखने लगी। करुत्तम्मा को यह बहुत बुरा लगा।

फिर भी वह यह जानती थी कि सब पर अच्छा प्रभाव पडना चाहिए। पर यह कैसे हो, यह उसके लिए चिन्ता की बात हो गई।

भोर मे पलनी समुद्र मे गया। मछली पकडने का वह बहुत अच्छा समय है। करुत्तम्मा अब एक घर की मालकिन थी। उसे अब काम था।

घर में एक पतीला, एक घडा और एक कलछी इतना ही सामान था। एक घर के लिए और भी कितने ही ज़रूरी सामान जुटाने थे। एक टोकरी में थोड़ा चावल, नमक, मिर्च आदि खरीदकर रखा था। शादी के पहले पलनी को घर नही था। घर मे क्या-क्या रहना चाहिए, यह बताने के लिए भी उसके कोई नही था। अब करुत्तम्मा को सबका इन्तजाम करना था।

करुत्तम्मा ने भात तैयार किया। प्याज की एक झोलदार तरकारी भी तैयार की। इसके लिए बरतन एक पडोसी के यहाँ से माँग लाई। मसाला पीसने का काम भी पड़ोसी के घर मे ही हुआ। उत्तर वाले घर की बुढ़िया ने उसे उपदेश दिया, "बेटी, एक लड़के को तुम्हारे हाथ में

सौपा गया है। सब तुम्हीको सँभालना है!"

अपने तट पर करुत्तम्मा ने जो-जो सुना था, वह सब यहाँ भी सुना। कोई भी लडकी हो, कही भी हो, उसे इसी तरह के उपदेश सुनने पडते होगे। नही तो क्या वे उपदेश विशेष रूप से उसीके लिए थे? उसे लगा कि सब लोग उसे सन्देह की दृष्टि से देखते है। क्या लोगो को उसके रहस्य का पता लग गया है?

वहाँ की स्त्रियाँ इकट्ठी होकर नव-वधू के बारे मे बाते करने लगी। बाते करने लायक विषय भी तो था। करुत्तम्मा एक 'जाल वाले' की बेटी है, जिसके पास दो नावे है। तब लडकी को एक ऐसे लड़के के साथ क्यो भेज दिया गया जिसके पास न कोई घर है, न सगे-सम्बन्धी ही।

एक ने कहा, "हो सकता है, लडकी के बाप के पास नाव और जाल न हो!"

कोच्चम्मा ने इसका खण्डन किया। उसका पति 'चाकरा' के समय नीर्क्कुन्नम तट पर गया था। उसे सब सच्ची बाते मालूम थी। उसने कहा, "उसके पास नाव भी है और पैसा भी। बहुत पैसा।"

तब बाबा ने पूछा, "ऐसी बात है तो लडकी की शादी इस लडके के साथ क्यो हुई?"

कोच्चम्मा ने पूछा, "लडके मे क्या कमी है?"

कोता तो कुछ और ही सन्देह था, "मेरे खयाल मे लडकी मे कुछ गडबडी है।"

ऐसा लगा कि कोता कोई बात जानकर बोल रही है। सबके सुनने की जिज्ञासा बढ गई। सब ने कोता से ऐसा कहने का कारण पूछा। कोता ने कहा, "लडकी ने कुछ अनुचित काम किया होगा और लोगो को उसे अपने तट से किसी तरह भेज देने की फिक्र हो गई होगी।"

यह सुनकर बुढिया चौंक गई। उसने कहा, "तब क्या वह यहाँ हमारा तट भी भ्रष्ट करने आई है?"

बुढिया ने अपने कलेजे पर हाथ रखा। सबने कोता से स्पष्ट बातें

कहने को कहा। लेकिन कोता ने आगे कुछ नही कहा।

भात और तरकारी बना लेने पर करुत्तम्मा का काम खत्म हो गया। उसके घर मे लोग आते-जाते रहे। उसे लगने लगा कि सब लोग उसे एक वचित्र प्राणी की तरह मानकर व्यवहार कर रहे हैं।

चक्की की बीमारी के बारे मे भी लोग जान गए। माँ जब उस हालत मे पडी हो तब कोई बेटी घर छोडकर कहाँ जा सकती है? माँ का ही प्रश्न अधिक महत्त्वपूर्ण माना जायगा न! इस बात ने लोगो को करुत्तम्मा के बारे मे अधिक जिज्ञासु बना दिया।

दोपहर होते-न-होते करुत्तम्मा एक बडे रहस्य का केन्द्र बन गई। सब घरो मे उसके बारे मे बातें होने लगी।

वह एक भ्रष्टा होगी, किसी भी तरह उसे दूर करना था। यही सोच-कर यहाँ भेज दिया होगा। यही बात हो तो? यह एक प्रश्न हो गया।

करुत्तम्मा ने माँ के बारे मे सोचा। माँ की हालत कैसी थी, यह उसे मालूम नही था। माँ को उस हालत मे छोड़कर आना ठीक था क्या? पिता ने हमेशा के लिए उसे त्याग दिया है। पिता के अन्तिम शब्द कि 'वह मेरी बेटी नही है' उसके कानो मे गूँज रहे थे।

करुत्तम्मा अपने पिता को अच्छी तरह जानती थी। उसे अब वह बेटी के रूप मे मानेगा ही नही। उसे लगा कि उसका व्यवहार कठोर हो गया था। एक लड़की ने कभी भी ऐसा नही किया होगा। नीर्क्कुन्नम तट पर सब उसे दोषी ठहराते होगे और शाप भी देते होगे। लेकिन माँ ने आशीर्वाद दिया था। माँ की मंजूरी उसे मिली थी।

बेचारी माँ कितना बरदाश्त करती है! एक माँ की यही गति होती है। पाव-भर पानी खौलाकर देने के लिए कोई नही है। ऊपर से, पिता माँ को ही दोषी ठहराता होगा। वह भी माँ को सहना पड़ेगा। उसके कारण माँ को और भी सहना पड़ेगा। पिता उसे कभी माफ़ नही करेगा।

करुत्तम्मा ने अपने भावी जीवन के बारे मे भी सोचा। उसकी एक माँ थी, बाप था। वह बाप परिश्रम करके कमाने वाला था। उसका

जीवन सुरक्षित था। जीवन की उसकी आशाएँ और आवश्यकताएँ परिमित थी और सबकी पूर्ति होती थी। कमी का उसने कभी अनुभव नही किया। वह सब उन सबको त्यागकर, सुरक्षित स्थिति से निकलकर एक नये जीवन मे आई है। यह नया जीवन कैसा होगा !

उसे खाना मिलेगा ? पहनने को कपडे और लगाने को तेल मिलेगा ? भूख क्या है, इसका उसने कभी अनुभव नही किया था। आगे क्या होगा, यह कौन जानता है ! कुछ भी निश्चित नही है। क्या वह दिल खोलकर हँस भी सकेगी ? उसे अब सब-कुछ अनिश्चित और अरक्षित-सा लगने लगा।

उससे किसी ने प्रेम भी किया है ? जिसके साथ वह आई है, क्या वह आदमी उससे प्रेम करेगा ? यह एक बडा प्रश्न था। उसके बारे मे उसे कुछ नही मालूम था।

यह आदमी, जिसने माँ को उस स्थिति मे देखकर भी ऐसी जिद पकडी थी, कैसा निकलेगा ? यदि उसने कह दिया होता कि 'लडकी को अभी नही ले जाऊँगा' तो कोई झझट नही खडा होता। दो दिन ठहर जाने से सब ठीक हो जाता। .....ऐसी परिस्थिति मे इस आदमी का स्नेह और प्रीति प्राप्त करके उसे कैसे कायम रखा जा सकता है ? ऐसा निर्दयतापूर्ण व्यवहार इस आदमी से आगे भी हो सकता है न ? स्नेह को बनाये रखना कैसे सम्भव होगा ?

अब इसके सिवा उसका कौन है ? कोई नही, यही अब उसका एकमात्र सहारा है। इसकी इच्छा-अनिच्छा ही अब उसके जीवन का आधार है। पर उन इच्छाओ-अनिच्छाओ के बारे मे उसे कुछ भी मालूम नही है।

करुत्तम्मा को लगा कि वह सब-कुछ सह सकती है। उसे सब-कुछ सहन करते हुए अपनी जीवन-लीला समाप्त करने वाली अनगिनत मल्लाहिनो मे से एक होकर रहना पर्याप्त मालूम हुआ। वह चाहती थी कि उसका जीवन साधारण तौर से समाप्त हो जाय और कोई विशेष घटना न घटे। क्या यह सम्भव था ? यही उसका डर था। उसका अन्त.करण

भीतर से चेतावनी देता-सा मालूम पड़ा कि यह सम्भव नही है। इस आशका न उसके मन मे आज से नही, बहुत पहले से ही जगह कर ली थी। सम्भव है, उसके जीवन मे और घटनाएँ घटे, जो उसके जीवन की धारा को और भी टेढी-मेढी कर दे। इस विचार ने एक रूप धारण किया।

करुत्तम्मा ने चाहा कि उसका पति उससे प्यार करे। लेकिन उसे सन्देह हुआ कि उसकी यह इच्छा न्याय-संगत है या नही।

युवतियाँ साधारणत चाहती है कि पति उन्हे प्यार करे। लेकिन क्या प्रेम का असली बोध किसी को होता है ? प्रेम क्या है, यह करुत्तम्मा ने जाना है। प्रेम की व्यथा का भी उसे अनुभव हुआ है। शायद इसीलिए उसे सन्देह हुआ कि पति का प्रेम उसे प्राप्त हो सकता है कि नही।

उसके मन मे यह विचार बैठ गया कि पलनी प्रेम करने वाला व्यक्ति नही है। तब वह अपना घर छोड़कर क्यों आई ? यह परीक्षा खतरे से खाली नही थी। वह घर ही क्यो न चली जाय ? पर वह तो इससे भी बढकर खतरे वाली परीक्षा साबित होगी।

दोपहर को पलनी समुद्र से लौटा। करुत्तम्मा ने श्रद्धा पूर्वक उसे भात और तरकारी परोस दी। वह उसे प्रथम बार खिला रही थी। तरकारी उसे पसन्द आयगी कि नही ? भोजन अच्छा लगेगा कि नही ? पलनी ने खाना शुरू किया। भोजन की शुरूआत सन्तोषप्रद लगी। करुत्तम्मा को थोडी तसल्ली हुई। वह चौके के दरवाजे की आड मे खडी थी। वहा से उसे जो-कुछ कहना था, सब कहा। दूसरी तरकारी बनाने के लिए कडाही नही थी इसीलिए एक ही तरकारी तैयार की है, भात में ककड मिलेगे, क्योकि चावल साफ करने के लिए कोई बरतन नही था; शायद कलछी एक ही है, झोल जो बना है अच्छा नही हुआ होगा, क्योकि छौकने के लिए कुछ नही था। उतर वारी पडोसिन से कडाही लाकर काम चलाया और वही जाकर मसाला भी पीसा। ये सब बातें करुत्तम्मा ने कह डाली और आगे कहा, "हमे घैला, पतीला, बरतन सब खरीद लेने चाहिएँ।"

"खरीदेगे, लेकिन सब एक साथ नही हो सकता ।"

"एक साथ नही चाहिए । थोडा-थोडा करके ले लेना काफी है ।"

परोसा हुआ सब भात पलनी ने खा लिया । करुत्तम्मा थोडा और परोसने लगी । पलनी के 'बस-बस' कहने पर भी एक कलछी और डाल दी । यही दस्तूर है । करुत्तम्मा वह जानती थी । पलनी ने कहा, "भात ज्यादा हो गया ।"

"इससे क्या ? ज्यादा जो है छोड देना !"

थोडी देर बाद उसने हिम्मत करके पूछा, "झोल अच्छा नही बना है क्या ? भोजन अच्छा नही लगा ?"

"झोल बढिया बना है । मैने बहुत ज्यादा खा लिया है ।"

"इतने ही को बहुत ज्यादा कहते हो ? खूब !"

"मै इतना नही खाता था ।"

एक पत्नी की मुस्कुराहट के साथ करुत्तम्मा ने कहा, "आगे और ज्यादा खाओगे, नही तो मै खिलाऊँगी ।"

पलनी हँस पडा । वह हँसी भावपूर्ण थी । दर्द-भरे हृदय को आश्वस्त करने वाली थी । पलनी शान्त प्रकृति का है । उसको मानता है । सबसे बढकर, उसकी आँखो से एक अनिर्वचनीय भाव प्रकट होता है । शुरू-शुरू मे यह काफी था न !

करुत्तम्मा उसी बरतन मे भात परोसकर खाने बैठ गई । हाथ धोकर एक बीड़ी पीते-पीते पलनी भी चौके मे आ गया और करुत्तम्मा के पास बैठ गया । उसने कहा, "तुम्हे मै परोस दूँ !"

करुत्तम्मा ने कुछ जवाब नही दिया । उसकी हृदय-कली आनन्द-सागर मे गोते लगाने के लिए व्याकुल हो रही थी । स्नेह की मन्दोष्ण किरणे उस कली को प्रस्फुटित करने लगी ।

"ओह, बातो मे फँसकर कुछ खाया ही नही !"

"मेरा पेट भर गया ।"

पलनी ने हाँडी की ओर देखते हुए पूछा, "भात नही है क्या ?"

"है, लेकिन मुझे अब नही चाहिए।"

"नही, काफी नहीं था।"

पलनी ने एक कलछी भात निकालकर डाल दिया। करुत्तम्मा ने 'ना-ना' किया। फिर भी उसने परोसा हुआ भात खा लिया।

करुत्तम्मा ने एक प्रेमिका के तौर पर नही, वरन् एक गृहिणी, एक घर की मालकिन के तौर पर अपना जीवन शुरू किया।

पलनी भी एक घर का मालिक बन गया। खाकर और बरतन साफ करके रखने के बाद जब करुत्तम्मा आई तब पलनी ने कहा, "कह, क्या-क्या खरीदना है ?"

"सब-कुछ खरीदने लायक पैसा है क्या ?"

पलनी ने पैण्ट मे से कागज मे लपेटकर रखे हुए पैसे निकालकर गिने। चार रुपये थे। उस दिन की आमदनी और खर्च का हिसाब सुनाया। समुद्र मे 'बटोर' कम हुआ था। शादी के लिए जो कर्जा किया था, सो थोड़ा चुकाया। बाकी जो बचा था, सो ही वे चार रुपये थे।

करुत्तम्मा ने पूछा, "यहाँ बटवारे की क्या रीति है ?"

"सौ मे पचास।"

"हमारे यहाँ सौ मे साठ है।"

करुत्तम्मा ने कहा, "पडोस के तट की रीति बताकर हिस्सा माँगना!"

पलनी ने उपेक्षा भाव से पूछा "यहाँ ऐसा ही चलता है।"

करुत्तम्मा ने सुनाया कि कैसे चेम्पन ने मजदूरो का संगठन करके हिस्सा बढाकर ६० कर दिया।

पलनी ने जवाब दिया, "यहा ऐसा नही हो सकता।"

पलनी ने फिर पूछा कि क्या-क्या जरूरी सामान लाना है।

करुत्तम्मा ने पूछा, "अभी ही खरीदने जाओगे ?"

"हाँ !"

करुत्तम्मा ने कहा, "ज़रा आराम कर लो! समुद्र से मेहनत करके

लौटे हो। अभी ही तुरन्त जाने की जरूरत नही है। लोग मेरी शिकायत करेगे कि काम पर से आते ही मैंने तुम्हे बाजार भेज दिया। थोडा आराम करने के बाद शाम को जाना काफी है।"

पलनी को उसकी सलाह पसन्द आई। वह एक चटाई बिछाकर लेट गया और करुत्तम्मा को अपने पास बुलाया।

शायद करुत्तम्मा इस बुलाहट की प्रतीक्षा मे थी। उसने आवाज दी और सकुचाते हुए पास आ गई। शायद उसमे एक सुरक्षा का बोध उत्पन्न हुआ और उसने एक अच्छी पत्नी बनकर रहने की कोशिश करने की मन मे प्रतिज्ञा की।

पलनी ने उसे अपने शरीर से लगाकर कसकर दृढ आलिगन मे बाँध लिया। वह दम घुटाने वाली आनन्दानुभूति मे सुध-बुध खोकर अर्ध-निमीलित नेत्रो से पडी रही। . उसने एक पुरुष से प्रेम किया था और उस पुरुष ने भी उससे प्रेम किया था। लेकिन एक पुरुष के स्पर्श का अनुभव उसे पहले-पहल अब हुआ। हो सकता है कि इस अनुभव की तीक्ष्ण आकाक्षा उसमे पैदा हो चुकी थी। लेकिन उसने नियम का उल्लघन नही किया था। अब वह विवाहिता हो गई थी। एक पुरुष ने पूरे अधिकार के साथ उसे अपने शरीर से लगा लिया और वह राजी हो गई। एक से प्रेम करने पर भी, दम घुटाने वाली आनन्दानुभूति उसे दूसरे ही से मिली। अब वह इसी पुरुष की स्त्री थी। उसका शरीर इसीके लिए था। इसीलिए उसने अपना शरीर तब तक पवित्र बनाये रखा था। आगे भी वह अपना शरीर शुद्ध बनाये रखेगी।

करुत्तम्मा को मालूम नही हुआ कि वह उस आनन्दानुभूति मे कब तक विलीन पडी रही। भावावेश से भरे यौवन की गर्मी की तीक्ष्णता थी! बाँध तोडकर बहने वाली नदी का उद्दाम प्रवाह था, बिलकुल अनियत्रित!

जब करुत्तम्मा होश की दुनिया मे आई तब वह लाज के मारे गड़ गई। सिर्फ लाज ही नही, एक डर भी उसे हुआ, —एक डर जिससे वह चिन्तित हो गई। उस अर्ध चेतनावस्था मे उसने क्या-क्या कहा, उसे

याद नही रहा। उसे लगा कि वह पागल-सी हो गई है। उसने लाज-शर्म भुलाकर कैसा गन्दा काम किया! क्या वह किसी भी लडकी के लिए शोभाजनक हो सकता है? उसका पति ही क्या सोचता होगा!

उसे डर लगा कि उसने गलती की है, उसके रहस्य का भण्डाफोड हो गया है और पलनी को सब-कुछ मालूम हो गया है। पलनी ने उसे अपना बना लिया है; फिर भी वह एक अजनबी ही तो है। एक अजनबी के साथ, चाहे वह पति ही क्यो न हो, पहले ही दिन, इस तरह बिना किसी तरह के सकोच का व्यवहार कैसे ठीक माना जायगा। उसने क्या सोचा होगा?

ऐसा कैसे हुआ? वह तो स्वभाव से लज्जाशील थी। उसे डर लगा कि उसका पति कही कोई ऐसा सवाल न पूछ बैठे, जिससे उसका जीवन ही बर्बाद हो जाय।

लेकिन उसका डर निराधार था। पलनी ने कुछ नही कहा। वह बाहर जाना चाहता था। उसने करुत्तम्मा से, कौन-कौन चीज़े खरीदनी है, फिर पूछा। करुत्तम्मा ने कहा, "पास मे जो पैसा है उससे जो-जो चीज़ ला सकते हो, खरीद लेना!"

उसने जरूरी चीज़ो के नाम भी बता दिये।

घर मे जब वह अकेली रह गई तब उसका ध्यान परी की ओर गया। वह अब किस हालत मे होगा! बेचारा बडा दुखी हुआ होगा। उसका पैसा उसे चुकाया नही गया। माँ बीमार है। हो सकता है कि परी का पैसा लौटाया ही न जाय! ऐसे ही वह दिवालिया हो गया।

परी का खयाल उसके मन से हटता नही था। यह पाप है न? एक की पत्नी होकर वह पर-पुरुष के बारे मे सोचती है। उसका अन्तःकरण गवाही देता है कि वह परी को कभी भुला नही सकती। यह पागलपन जीवन-भर उसके साथ रहेगा।

उसका गाना तट पर अब भी गूँजता होगा! करुत्तम्मा का मन अशान्त हो उठा। उसे कैसे और कब शान्ति मिलेगी? शायद उसके

भाग्य मे मानसिक शान्ति लिखी ही नही है।

पलनी जरूरी चीजे खरीदकर लौटा। रास्ते में साथियो ने उससे मजाक किया। घर आने पर करुत्तम्मा ने उन चीजो को देखकर टीका-टिप्पणी की, "घैला ठीक नही है, उसकी मिट्टी मे कंकड़ है, पतीला भी दूसरी तरह का लेना था।"

पलनी ने कहा, "इन चीजों के गुण-दोषो के बारे मे मै क्या जानूँ ?"

करुत्तम्मा हँस पडी। दोनो को अच्छा लगा।

उस रात को दोनों को नीद नही आई। दोनो को एक-दूसरे को क्या-क्या सुनाना था! कहते-कहते बात खत्म ही नही होती थी। तब भावी जीवन की जड जमाने वाली बाते शुरू हुईं। करुत्तम्मा ने पूछा, "माँ उस तरह बेहोश पडी थी तब मुझे कैसे ले आए ?"

करुत्तम्मा अब इस तरह का सवाल करने की आजादी महसूस कर रही थी। पलनी के लिए सवाल का जवाब देना जरा कठिन था फिर भी उसने जवाब दिया, "क्या शादी करके लडकी को उसकी माँ के घर मे छोड आने मे मर्दानगी थी ? वैसा करना ठीक नही होता।"

पलनी ने आगे कहा कि उसके साथियो ने उसे ठीक नही समझा। इसलिए उसने भी साथ लाने पर ही जोर दिया। बाद को जरा सकोच के साथ उसने पूछा, "तुम्हारा आने का मन नही था क्या ?"

"हाँ, था।"

करुत्तम्मा के दिल की बात छिपी रही। उसे उस समय अपने बाप के बारे मे एक बड़ी बात कहनी थी, "अब मेरा कोई बाप नही रहा। बप्पा का स्वभाव ही ऐसा है। मेरी-जैसी उसके कोई बेटी भी है, अब वह ऐसा कभी नही सोचेगा।"

पलनी ने तटस्थ भाव से कहा, "यदि बाप यह कहता है कि तू उसकी बेटी नही है, तो तू भी सोच ले कि वह तेरा बाप नही है।"

करुत्तम्मा को लगा कि पलनी ने इन शब्दो मे उसके जीवन की सुरक्षा का वचन देने का सकेत किया है। उसके कहने का मतलब यही था न कि वह तेरा बाप नही है तो मै तो हूँ ! पलनी ने आगे कहा, "तुम्हारा बाप बडा लालची है। वहाँ का घटवार भी वैसा ही है। उसने मेरा अपमान भी किया।"

पलनी का स्वाभिमान जाग उठा। उसने कहा, "मै बे-घर-द्वार का हू, सगे-सम्बन्धी नही है; फिर भी समुद्र-माता की सन्तान तो हूँ। सामने फैली हुई इस जल-राशि मे मेरी भी सम्पत्ति है। मुझमे क्या कमी है ? समुद्र-तट पर बाकी जो मल्लाह है, उन्हीकी तरह मै भी हूँ। मेरी खास बात यह है कि मै घमण्ड रखता हूँ कि मै अपना काम अच्छी तरह जानता हूँ। मै किसी भी परिस्थिति मे नाव चला सकता हूँ। कैसी भी भँवर हो, मै उसे पार कर सकता हूँ। कोई भी मुझे नीचा नही दिखा सकता।"

करुत्तम्मा ने कुछ नही कहा। उसे लगा कि इस विषय को शुरू नही करना चाहिए था। उसके बाप के प्रति पलनी के मन मे कोई आदर-भाव नही था। वह उस तट के घटवार को ही नही, यदि जरूरी हो तो यहाँ के घटवार को भी धिक्कार देगा।

पलनी ने कहा, "अरी मै किसी से क्यो डरूँ ? डरने की कोई जरूरत नही है।"

लेकिन करुत्तम्मा को एक बात कहनी थी, "मेरी माँ बेचारी बडी भली है।"

इसका पलनी ने कोई जवाब नही दिया। उसका ध्यान दूसरी ओर गया, "एक बात मै कहे देता हूँ। तुम्हारा बाप जब तक खुद नही आयगा तब तक मै उधर नही जाऊँगा।"

पिता की तरह पति ने भी एक दृढ निश्चय किया। यह निश्चय भी डिगने वाला नही था।

करुत्तम्मा ने अपनी बात कही। उसके लिए माँ-बाप दोनो नही रहे।

अब उसके लिए पति ही सब-कुछ है। पति को ही उसे प्यार करना है। वह एक जिम्मेवार आज्ञाकारिणी पत्नी बनी रहेगी।

पलनी ने उसकी बाते सुनी। करुत्तम्मा ने दुहराया कि उसके लिए पति के सिवा और कोई नही है। वह सब-कुछ सहने के लिए तैयार है। वह उसकी इच्छा के अनुसार ही काम करेगी। वह सिर्फ उसका प्यार चाहती है।

पलनी ने यह नही कहा कि बदले मे वह भी उसे प्यार करे। शायद उसे शब्दो मे कहने की जरूरत नही थी। करुत्तम्मा को भी शायद इस सम्बन्ध मे कोई वाग्दान पाने की आवश्यकता प्रतीत नही हुई होगी।

तो भी, थोडी कमी रह गई। एक तरफ से प्यार की माँग हुई और दूसरी ओर से कोई माँग ही नही हुई। करुत्तम्मा ने एक अच्छी पत्नी होकर रहने का वचन दिया। पलनी ने प्यार नही माँगा। तो भी करुत्तम्मा को प्यार करने का वचन देना चाहिए था न? लेकिन उसने वचन नही दिया। पलनी माँगता तो शायद वह कह देती कि वह प्यार करती है।

इस तरह पहली रात बिना टकराये इधर-उधर की थोडी-बहुत बाते हुईं। अन्त मे घर बसाने की एक राय पर दोनो आ गए।

करुत्तम्मा ने हँसते-हँसते कहा, "मेरे भी सगे-सम्बन्धी नही हैं और घर-द्वार भी नही है।"

भोर मे साढे तीन बजे के लगभग समुद्र-तट पर लोगो का शोर-गुल शुरू हो गया। पलनी के जाने का समय हो गया।

करुत्तम्मा को जीवन-चर्या की जानकारी थी। शादी के पहले ही पडोस की औरतो ने उसे कई बाते समझा दी थी। उनमे से एक बात उसे याद आ गई।

जब पलनी बाहर जाने लगा तब उसने पूछा, "क्या सीधे नाव पर ही जा रहे हो?"

उसका मतलब पलनी की समझ मे नही आया। उसने कहा "हाँ, क्या बात है?"

करुत्तम्मा को मालूम नही था कि वह कैसे समझावे, उसने कहा, "घर से उठकर जाते समय ऐसे नही जाना चाहिए।"

"तब कैसे जाना चाहिए ?"

"समुद्र मे जाने वालो को पवित्र होकर जाना चाहिए।"

पलनी रुक गया। उसने पूछा, "तुम क्या कह रही हो ?"

"जरा सकोच के साथ करुत्तम्मा ने पूछा, "जरा नहाकर क्यो नही जाते ?"

करुत्तम्मा के कथनानुसार पलनी ने स्नान किया। वह भी नहा-धो ली।

पलनी जब समुद्र-तट पर पहुँचा तब मूप्पन का पहला सवाल था, "नहा लिया है रे ?"

१२

करुत्तम्मा ने घर मे ही यह सबक सीखा था कि घर की संवृद्धि के लिए क्या-क्या करना चाहिए। उसने अपने माँ-बाप को उसके लिए परिश्रम करते देखा था। इस सम्बन्ध मे उसका बाप उसके सामने आदर्श रूप था। उसने देखा है कि कैसे उसने फिजूल-खर्ची से बचते हुए पैसा जमा किया और अन्त मे नाव और जाल खरीद लिया। आगे बढने के लिए उसके सामने एक आदर्श था। जब वह अकेली रहती तब अपने घर के बारे मे सोचा करती।

पलनी को नहलाकर उसने समुद्र मे भेज दिया। जब तक नावे नही लौटी तब तक उसे चैन नही था। उस दिन उसने एक के बदले दो तर-कारियाँ तैयार की। पिछले दिन की अपेक्षा दूसरे दिन उसे पलनी से ज्यादा नजदीकपन महसूस हुआ। खाना तैयार करके वह प्रतीक्षा करने लगी।

उस दिन अप्रत्याशित रूप से खूब मछली मिली थी। करीब तीस रुपये पलनी को हिस्से मे मिले। जाल धोकर सूखने के लिए डाल देन के बाद जब सब नहा रहे थे तब अय्यप्पन ने साथियो से पूछा, "क्यो, आज हम लोग हरिप्पाट जाकर भोजन क्यो न करें ?"

किसी को आपत्ति नही थी। सबके पास पूरा पैसा था। समुद्र-माता ने कृपा की थी। ज़रा आनन्द मनाने मे क्या हानि थी ? लेकिन सिर्फ पलनी ने कोई जवाब नही दिया। वेलुत्ता ने पूछा, "क्यो रे पलनी ! तू क्यो नही बोलता ?"

आण्डी ने मज़ाक किया, "तुम लोग क्या कह रहे हो जी ! नववधू

ने भात-तरकारी वगैरा तयार कर रखी होगी । उसके पास बैठकर खाना खाने मे उसे ज्यादा आनन्द आयगा।"

कोच्चप्पन ने इसका जवाब दिया, "इसमे आश्चर्य की क्या बात है। युवको को ऐसा लगना स्वाभाविक ही है। उस जमात मे सब विवाहित और बाल-बच्चे वाले थे। वेलायुधन ने साधारण अनुभव के आधार पर कहा,"यह तो चार दिन की बात है। उसके बाद तो न घर मे भात ही होगा, और न भात होने पर उसमे कोई खास स्वाद ही मिलेगा।"

सबके नहा चुकने के बाद वेलुत्ता ने पूछा, "तुम नही आते पलनी ?"

पलनी ने कहा, "मै भी चलूँगा।"

पलनी ने कह तो दिया। फिर भी जरा अन्यमनस्क-सा हो गया। सब लोग बस पकडकर एक साथ हरिप्पाड के लिए रवाना हो गए।

बहुत देर तक करुत्तम्मा प्रतीक्षा मे बैठी रही। जब पलनी नही आया तो उसने घर से निकलकर तट पर आकर देखा। सब नावे ऊपर निकालकर रख दी गई थी और तट पर कोई नही था।

उसी समय आण्डी की पत्नी भी वहाँ पहुँची। उसने कुशल-मंगल पूछा, "क्यो री नववधू ! खडी-खड़ी समुद्र की ओर क्या देख रही है ?"

करुत्तम्मा ने जरा शरमाकर जवाब दिया, "कुछ नही। यो ही देख रही हूँ।"

पारू को बात मालूम थी, "मल्लाह को खोजती होगी। आज सब हरिप्पाड गये है। आज उन्हे ज्यादा पैसा मिला है बच्ची।"

नीर्क्कुन्नम तट पर भी ऐसा होता है। वहाँ के लोग आलप्पुषा जाते है। इतना ही फर्क है। लेकिन पलनी उस दिन जायगा, ऐसा उसने नहीं सोचा था।

थोडी देर तक पारू और करुत्तम्मा ने बाते की। करुत्तम्मा का मन उदास था। उसे लगा कि इस तरह फिजूल-खर्ची नही होनी चाहिए। उस दिन हरिप्पाड मे जो पैसा खर्च होगा उससे घर में कितनी ही ज़रूरी चीज़े आ जाती। ऐसे ही विचार उसके मन मे उठ रहे थे।

पारू ने कहा, "जो भी हो, हरिप्पाड से लौटते समय पति नववधू के लिए जरी के किनारे का महीन कपडा और रेशमी साडी ले आयगा।"

करुत्तम्मा ने तर्क किया, "लेकिन दीदी, घर मे पानी पीने के लिए बरतन नही है। दो ही मटके है।

पारू ने कहा, "इससे क्या ? इससे ज्यादा किसके घर मे है ? यह सब 'चाकरा' के ही समय पूरा होगा बच्ची ! उस समय जुटाकर रखने से अकाल के समय बेच-बाचकर काम चला सकते है।"

एक कुत्ता घर के चारो तरफ घूम रहा था। वह भीतर घुसने की कोशिश मे था। करुत्तम्मा घर लौट आई।

वह प्रतीक्षा मे बैठी रही। दो-तीन घण्टे रात बीतने पर पलनी लौटा। उसके हाथ मे कागज की एक पोटली थी।

करुत्तम्मा रूठकर चुपचाप बैठी रहना चाहती थी। लेकिन पलनी को पसन्द आयग। कि नही, यह डर भी था। उसने मुस्कुराहट के साथ पूछा, "क्यो अभी ही नाव किनारे लगी पर है ?"

उसका व्यग समझे बिना ही पलनी ने कहा, "नही, नही, यह देख !"

पलनी ने करुत्तम्मा के हाथ में पोटली दे दी। उसे खोलते-खोलते करुत्तम्मा ने पूछा, "यहाँ समुद्र मे जाल फेकने पर जरी का महीन कपडा भी मिलता है ?"

पलनी हँस पडा। करुत्तम्मा भी हँसी।

पलनी एक बहुत बढिया जरी वाला महीन कपडा लाया था। करुत्तम्मा ने उसे खोलकर देखा। कपड़ा बडा और बढिया था। पलनी ने उसका दाम बताया। लोगो ने उस तरह के पाँच कपडे खरीदे थे। वेलुत्ता, वेलायुधन कोच्चुरामन और अय्यप्पन ने भी एक-एक लिया था। वेलायुधन का बच्चा बीमार था। दवा के लिए पैसा मे सापहरन ने से उसकी पत्नी पारू के यहाँ गई थी। पारू ने यह बात सुनाई थी। वैसे ही अय्यप्पन के यहाँ भी पैसे का अभाव था। लेकिन इन घरो मे उस दिन कीमती जरी

वाला महीन कपडा आ गया।

एक मनोहारी मन्द हास के साथ करुत्तम्मा ने पूछा, "पानी पीने के लिए जब घर मे बरतन नही है, तब इस कामनी कपडे की क्या जरूरत थी ?"

उस मनोहारी हँसी के सामने सवाल के मतलब पर ध्यान न देकर पलनी हँस पडा और उसने कहा, "तुझे मालूम है कि यह क्यो खरीदा गया है ?"

करुत्तम्मा ने पूछा, "क्यो खरीदा गया है ?"

"आर्थिल्यम मेले के अवसर पर मण्णारशाला जाने के लिए। पहन-कर तो देख, जरा देखूँ !"

पलनी ने उसकी ओर भावपूर्ण दृष्टि से देखा। उसकी पैनी नजरो के सामने शरमाकर करुत्तम्मा घूमकर खडी हो गई। पलनी दो-तीन कदम आगे बढा। तब करुत्तम्मा ने कहा, "अभी छोड दो ! सारा शरीर धूल और पसीने से भरा है।"

घर मे पीने के लिए बरतन नही है। फिर भी जरी का महीन कपड़ा लेना कोई भारी गलती है ? वह तो पलनी की इच्छा थी। वह चाहता था कि पत्नी पहने-ओढे और उसे देखे। जीवन क्या कर्म की चक्की मे पिसने के लिए ही है ? जीवन का उद्देश्य सिर्फ पैसा कमाना और घर का सामान जुटाना ही है ? जीवन मे आनन्द के लिए स्थान नही है ?—अवश्य है।

करुत्तम्मा ने अपने घर मे ऐसी कोई बात नही देखी थी। इसलिए उसे शायद यह सब अनावश्यक प्रतीत हुआ होगा। फिर भी उसे सजी-धजी देखने के लिए पलनी उत्सुक था। यह बात करुत्तम्मा को भी आनन्द देने वाली थी।

एक गाढ आलिङ्गन मे दोनो एक हो गए। होठ-से-होठ मिल गए। दोनो अर्ध निमीलित नेत्र होकर आनन्दानुभूति मे खो गए। वे एक-दूसरे को कस कर पकड़े खडे थे। अलग होने की इच्छा ही नही थी। ऐसा लगता था।

करुत्तम्मा को उस समय यह अनुभव हुआ होगा कि जीवन मे जरी का महीन कपडा भी एक जरूरी चीज है; और जीवन सिर्फ घरेलू बरतन और माल से पूर्ण नही होता।

जब दोनो एक ही बरतन मे खा रहे थे तब भी करुत्तम्मा के नेत्र अर्धनिमीलित थे। मुख पर एक विशेष चेतना का भाव था। पलनी एक कौर उठाकर करुत्तम्मा के मुँह मे देने लगा।

"बाप रे, इतना बड़ा कौर मेरे मुँह मे अटेगा ही नही।"

करुत्तम्मा ने ठीक ही कहा। पलनी के बलिष्ठ हाथो से बनाया हुआ वह कौर काफी बडा था। उसने उसे कुछ छोटा बनाकर दिया। करुत्तम्मा ने भी एक कौर उठाकर पलनी के मुँह मे दिया। पलनी ने कहा, "वाह, यह तो मुँह मे मालूम ही नही पड़ा।"

इस तरह दोनो बहुत देर तक मनोरजन की बातो मे लगे रहे। महीन जरी का कपडा लाने की बात को लेकर गलती पकडने वाली करुत्तम्मा ने कहा "अब एक रेशमी ब्लाउज और लुगी भी चाहिए।"

जब करुत्तम्मा भावुक जगत् से वास्तविक दुनिया मे आ गई तब उसने सोचा कि एक जीवन-चर्या निश्चित कर लेनी जरूरी है। उस दिन की क्या कमाई थी, यह जान लेने का उसका हक था। वह यह भी जानना चाहती थी कि कितना खर्च हुआ। उसने पूछा, "आज कितना मिला था ?"

"करीब तीस रुपये।"

"कितना बचा है ?"

उदासीन भाव से पलनी ने जवाब दिया, "छप्पर मे एक पुडिया मे है। निकालकर गिन लो!"

करुत्तम्मा ने पुड़िया निकालकर गिने। उसमे दो रुपये थे। अट्ठाईस रुपये खर्च हो गए थे। इतने से क्या-क्या न कर सकती थी! लेकिन कुछ कहने मे उसे सकोच हुआ।

पति के गले मे हाथ डालकर और उससे सटकर बैठे-बैठे उसने पूछा,

"रसोई बनाने और सोने के लिए एक ही कोठरी है। यह काफी है ?"

"नहीं", पलनी ने यत्रवत् जवाब दिया।

'क्या-क्या चाहिए'—इसकी तफसील करुत्तम्मा को ही मालूम थी। हँसते-हँसते उसने कहा कि वह उसे सच्चे अर्थ में एक योग्य मल्लाह बनायगी। उसे आगे बढाने का उसने निश्चय किया है। इतना कहने की आज़ादी उसे अनुभव हो रही थी। उसके प्रति पलनी का जो आकर्षण था, उस पर उसे पूरा विश्वास हो गया था।

पलनी को यह भी स्वीकार था कि करुत्तम्मा उसे और अच्छा बनावे। अपनी मनोहारी हँसी के साथ करुत्तम्मा ने कहा कि सफलता के लिए पलनी को कुछ शर्तों का पालन करना होगा। उसने कहा, "सबसे पहले, जो कमाते हो उसे इस तरह नहीं खर्च कर डालना है।"

अपने दोनो हाथो से पलनी के दोनो कपोल दबाते हुए उसने आगे कहा, "हाँ, इस तरह मै खर्च नही करने दूँगी।"

"तब क्या मै चाय भी न पीऊँ, भात भी न खाऊँ ?"

"इन सबका वह खुद इन्तजाम करेगी।" उसने फिर पूछा,"बाल-बच्चे हो जायँ तो क्या करोगे ?"

इस सवाल का मतलब पलनी की समझ मे नहीं आया।

"बच्चे ऐसे ही बडे हो जायँगे।"

करुत्तम्मा ने,एक अबोध बच्चे को जैसे समझाया जाता है,वैसे ही पलनी को एक सुव्यवस्थित जीवन-पद्धति के बारे मे समझाया। कोई भी मल्लाह हो, वह अपने लिए नाव और जाल बना लेने की आकाक्षा रखता है। उसने समझाया कि पलनी मे भी ऐसी अभिलाषा होनी चाहिए।

तब पलनी ने पूछा,"इस तट पर जितने मल्लाह है अगर सब इसी तरह सोचने लगे तो सब-के-सब लखपति हो जायँगे। सब ऐसा क्यो नहीं सोचते ?"

एक सवाल ही इसका जवाब था,"हम ऐसा सोचे तो क्या नुकसानहै ?"

पलनी ने जवाब मे एक साधारण मल्लाह का तत्त्व-ज्ञान सुनाया।

मल्लाह जो कमायगा वह जमा नही कर पायगा। इसका कारण यह है कि वह जो कमाता है वह लाखो-करोडो प्राणियो को मारकर कमाता है। वह पानी मे स्वतत्र जीवन बिताने वाली असख्य मछलियो को धोखे मे फँसाकर पकड लेता है और उसीसे पैसा कमाता है। उन अनगिनत प्राणियो को दम घुटा-घुटाकर छटपटाकर अगर मरते देखो (रोज देखन वालो को भले ही कुछ महसूस न हो) तो जरूर विश्वास हो जायगा कि ऐसी जीव-हत्या से होने वाली कमाई टिकने वाली नही हो सकती। उसे कोई जमा नही कर सकेगा। उसने पूछा, "नही तो, तट पर लोगो को इय तरह भूखे रहना पडता ?"

यह तत्त्व-ज्ञान पलनी का अपना नही था। पीढी-दर-पीढी लोग सुनते आये हैं। करुत्तम्मा ने भी सुना था। लेकिन एक आदमी—उसका बाप इसके खिलाफ बोला है। बाप का तर्क उसे उन दिनो विश्वास-योग्य नही लगा था। लेकिन बाद को उसे उसकी सार्थकता मालूम हो गई। फिर भी उस तर्क को करुत्तम्मा ने आगे नही बढाया। प्रतिवाद करने का उसे साहस नही हुआ।

पालनी ने आगे कहा, "अरी, मल्लाह क्यो जमा करे ? यह विस्तृत जल-राशि ही उसकी सम्पत्ति है। इसमे क्या नही है ? जमा करे तो समुद्र-माता की कृपा बनी रहेगी। यह नीति है।"

करुत्तम्मा ने पूछा, "जब मछली नही मिलती,तब भूखे रहने की नौबत क्यो आती है ?'

"यह तो भोगना ही है।"

करुत्तम्मा के ध्यान मे माँ-बाप की बात आई। कैसे उन लोगो ने परिश्रम करके नाव और जाल ख़रीदा। एकाएक कलेजे मे उसे आग लगने-जैसी जलन का अनुभव हुआ। उस जलन की लहर रक्त-प्रवाह के साथ सारे शरीर मे फैल गई। नाव और जाल कैसे प्राप्त हुआ ?—बेचारा परी इसमे बरबाद हो गया। पलनी ने पूछा, "क्या तू अपने बाप की बात को ध्यान मे रखकर बोल रही है ?"

करुत्तम्मा को लगा कि पलनी का भाव जरा बदल गया है। पलनी ने आगे कहा, "वही से तूने ऐसी लालच की बाते सीखी है। सब लोग अब पूछ रहे हैं कि हम ससुराल कब जा रहे है!"

करुत्तम्मा से भी औरते यह बात पूछती थी। इसका उसके पास कोई जवाब नही था। शादी के बाद माँ-बाप वर-वधू को निमत्रण देकर न बुलावे तो यह बहुत बुरा माना जाता है। बुलावा आयगा, इसमे उसे सन्देह था।

"माँ को मरणासन्न अवस्था मे छोड आए है। वहाँ से निमत्रण लेकर कौन आने वाला है?"

थोडी देर बाद वह हँसती हुई बोली, "शादी के बाद यहाँ लड़के के सम्बन्धियो मे किसने-किसने निमत्रण दिया है? यह भी तो एक रिवाज है!"

करुत्तम्मा ने मज़ाक मे कहा था। फिर भी उसमें पलनी को बुरा लगने वाली बात छिपी थी। पलनी को उससे दुःख भी हुआ। उसने उसे मजाक के रूप में नही लिया। उसका भाव बदल गया। उसने पूछा, "यह पहले ही मालूम था न? जानते हुए भी क्यो यहाँ भेज दिया?"

करुत्तम्मा का चेहरा उतर गया। पलनी रुष्ट हो जायगा, इसका उसे खयाल नही था। पलनी ने आगे कहा, "हाँ, पलनी के कोई नही है। उसके लिए दुखी होने वाला कोई नही है। सुखी होने वाला भी कोई नही है। तट पर रहने के अयोग्य एक लडकी थी। उसे पलनी के मत्थे मढ़ दिया गया। समुद्र मे जाकर वह मर भी जाय तो भी उसके लिए रोने वाला कोई नही है। असल मे ऐसा ही हुआ है।"

यह निष्ठुर प्रतिघात था। 'तट पर रहने के योग्य वह नही थी'—यह आरोप वह कैसे सह सकती थी? फिर भी उसमे कुछ सत्याश तो था न! उसे लगा कि अन्दर का अपराध साकार हो रहा है। शादी के बाद पति अब मुँह पर ही ऐसी बाते कह रहा है।

करुत्तम्मा हाथ से मुँह को ढककर सिसक-सिसककर रोने लगी।

सिसकियो के बीच उसका सारा शरीर काँपता नज़र आ रहा था। पलनी उसे बैठा देखता रहा। कुछ समय तक करुत्तम्मा की सिसकियाँ ही वहाँ सुनाई पड रही थी। पलनी के मन मे सहानुभूति हुई कि नही, कौन जाने !

थोडी देर के बाद करुत्तम्मा के कान मे यह शब्द पडे, "यह मैं नही कहता। लेकिन बाकी लोग ऐसा ही कहते है।"

तो पलनी का मन जरूर पसीजा है। उसने आगे कहा, "उस पप्पू ने यह सब सुनाया है।"

इस तरह, शादी के बाद पहले-पहल उस घर मे अश्रु-पात हुआ। सान्त्वना देने की कोशिश भी हुई। घर के प्रेमिल अन्तरिक्ष मे काले बादल छा गए। रात-भर खिन्नता रही। सिसकियो के बीच उसने कहा, "मैं समुद्र-तट के अयोग्य नही होऊँगी।"

उसने उस पर विश्वास करने को कहा। पति समुद्र में जाय तो उसके न लौट सकने लायक वह कोई काम नही करेगी। —समुद्र मे तूफान उठाने वाला व्यवहार उसका नही होगा। —जहरीले साँप जमीन पर लोटने लगे, ऐसा काम वह नही करेगी। उसने वचन दिया कि वह एक पतिव्रता मल्लाहिन होकर रहेगी। उसने बार-बार पलनी से पूछा कि उस पर उसको विश्वास है कि नही। पलनी ने 'ना' या 'हाँ' कुछ नही कहा। पलनी की छाती पर सिर रखकर उसे आँसुओ से भिगोने के सिवा वह कर ही क्या सकती थी ?

पलनी ने पूछा, "तू क्यो बार-बार यह पूछती है कि विश्वास है कि नही ? तेरे सवालो की झडी देखकर यह सन्देह होने लगता है कि तुझे खुद अपने ऊपर विश्वास नही है।"

करुत्तम्मा को लगा कि उस पर एक और वज्रपात हो गया। उसके रहस्य के बारे में जरूर पलनी को कोई सन्देह हो गया है। किसी द्रोही ने सब कह दिया होगा।

इसके बाद करुत्तम्मा ने रात-भर कुछ नही कहा। पति ने उसका

रहस्य जाना हो या नही, सच्ची बाते उससे कह देना ही ठीक होगा न ! सच-सच कह देने पर पति क्या क्षमा नही कर देगा ? लेकिन वह कैसे कहती ? जैसे भी हो, दूसरो की बढा-चढाकर कही हुई बाते सुना करे, इसकी अपेक्षा सीधी-सच्ची बाते कह देना ही बेहतर है।

करुत्तम्मा को एक निश्चय पर आना था। वह कई बार कहने के लिए तैयार हुई। लेकिन कैसे शुरू करे, यही नही मालूम होता था। 'मै एक आदमी से प्रेम करती थी' —इस तरह शुरू करे ? लेकिन यह सुनने की क्षमता एक पति मे होगी ? 'मेरा बचपन का एक साथी था'—इस तरह शुरू करे क्या ? यह भी नही हो सकता। इस तरह कहानी शुरू करे तो पुरानी मधुर स्मृतियो मे वह बहुत-कुछ कह जायगी। मुमकिन है, वह परी की प्रशसा भी कर दे। इससे यह सन्देह हो जायगा कि उसके प्रति अब भी प्रेम-भाव है। नही, इस तरह नही। 'तट पर के एक मुसलमान युवक ने मुझ पर धोखे से जादू-टोना कर दिया था'—ऐसा कहे ? ना-ना ऐसा नही कहा जा सकता। ऐसा कहना परी को एक बुरे आदमी की तरह चित्रित करना होगा। ऐसा वह नही कर सकती। परी ने ऐसा किया भी तो नही है। धोखा भी नही दिया है। करुत्तम्मा के मन के सामने भीगी ऑखो सहित विवश-भाव से खडे परी की मूर्ति खडी हो गई। अँधेरे मे भी उस मूर्ति को वह देख सकती थी। करुत्तम्मा को लगा कि उसके कलेजे पर पैर रखकर उसे रौदकर यहाँ चली आई है। उसने उसे सब तरह से बरबाद कर दिया है। उसके जीवन मे अब कुछ भी बाकी नही रहा। सत्तर-पचहत्तर साल तक का हो जाय तो भी वह उस तट पर बैठा गाता रहेगा। और गाते-गाते ही एक दिन मर जायगा। ····· करुत्तम्मा के सामने परी की वह मूर्ति प्रत्यक्ष-सी हो गई। वह अपनी परिस्थिति ही भूल गई। बगल मे लेटे पति का उसे ध्यान नही रहा। उसके नारी-हृदय से एक शब्द निकला, 'मै तुम्हे प्यार करती हूँ।'

उसने परी को लक्ष्य करके ही यह शब्द कहे थे। लेकिन उसीके शब्दो ने उसे चौका दिया।

पलनी ने पूछा, "क्या कहती है री ? प्रेम करती है ?"

करुत्तम्मा जाग गई। उसे डर लगा कि कही कोई अनुचित बात तो मुँह से नही निकल गई। फिर भी उसने जवाब दिया, "हॉ।"

"किससे? "—पलनी ने पूछा।

करुत्तम्मा ने जवाब मे एक भारी झूठ कह दिया, "अपने पति से।"

भोर हुई। मुर्गे ने बॉग दी। तट पर से पुकार की आवाजे सुनाई पडने लगी। नाव पर जाने का समय हो गया। पलनी उठा। करुत्तम्मा ने नहाकर जाने पर जोर दिया। पलनी नहा लिया।

उस दिन पलनी जरा देर से तट पर पहुँचा। दूसरे सब उसके लिए ठहरे हुए थे। ऐसा इसके पहले कभी नही हुआ था। वेलायुधन ने मजाक मे कहा, "शादी हो जाने पर जागने मे देर हो जानी स्वाभाविक ही है।"

वेलायुधन का मजाक पलनी को अच्छा नही लगा। उसने कहा, "चुप रहो भैया!"

वेलायुधन ने पूछा, "क्यो खफा होते हो जी ?"

पलनी को लगा कि वेलायुधन और कुछ कहना चाहता है और वह भी करुत्तम्मा के बारे मे।

नावे समुद्र मे उतर गईं और पश्चिम की ओर बढी। मछली कही दिखाई नही दे रही थी। नावे जाल बिना डाले ही इधर-उधर घूमने लगी। पलनी ने अपनी नाव सीधी पश्चिम की ओर आगे बढाई। नाव को वह आवेश मे बढाता रहा। देखने से लगता था कि उसे समुद्र का विस्तार ही कम मालूम हो रहा है और वह अपनी सारी ताकत लगाकर क्षितिज को पार कर जाने की कोशिश कर रहा है।

नाव असीम समुद्र के मध्य मे पहुँच गई। आण्डी ने पूछा, "तू नाव को कहाँ ले जा रहा है रे ?"

सबने डाँड चलाना बन्द कर दिया। फिर भी पलनी के हाथ की पतवार की गति से नाव आगे उछलती गई। सबको लगा कि पलनी

एक भूत बन गया है और क्षितिज की रेखा ही उसकी सीमा है

कुमारन् डर गया। उसने बिगडकर पलनी से कहा, "अरे कुत्ते के बच्चे! तेरे भले ही कोई न हो, पर दूसरो की स्थिति ऐसी नही है। तू जाकर मर जा! एक भ्रष्टा को लाकर तुझे डूब मरना ही चाहिए। तेरे भाग्य मे वही लिखा है। लेकिन हम लोगो के बाल- बच्चे हैं।"

वेलायुधन ने पलनी के हाथ से पतवार ले ली और नाव को घुमा दिया। इतनी देर के कठिन परिश्रम से थका हुआ-सा पलनी चुपचाप बैठ गया। थोडी देर के बाद वह डॉड चलाने लगा। जहॉ दूसरी नावे थी, नाव को वहाँ लाकर लोगो ने जाल फेका।

उस दिन किसी को कुछ भी नही मिला। पलनी की नाव मे ही थोडी छोटी किस्म की मछलियाँ आई। एक-एक को डेढ-डेढ रुपया हिस्से में मिला।

नहाते समय वेलायुधन ने पूछा, "पलनी, तुझे क्या हो गया था ?"

यह जानने के लिए सब उत्सुक थे। पलनी का आदमीपन मानो खत्म हो गया था। वह नाव को जोश और हिम्मत के साथ तो चलाया करता था, लेकिन इस बार की तरह सुध-बुध खोकर नही।

पलनी ने कहा, "मालूम नही।—कैसे मै भुलावे मे पड गया।"

आण्डी ने कहा, "हम लोग बाल-बच्चे वाले है, यह याद रखना है।"

कुमारन् ने कहा, "अब इसके हाथ मे पतवार नही देनी चाहिए। कही बीच समुद्र मे ले जाकर डुबो देगा!"

सब लोग इस बात पर एक मत हो गए कि जरूर पलनी के ऊपर भूत सवार हो गया है।

१३

शादी के बाद चौथे दिन वर-वधू दोनो को बुला लेना चाहिए। लेकिन बुला लाने को भेजने के लिए कोई नही था।

चक्की ने शादी के दिन से ही खाट पकड ली थी। उसके बाद उठी ही नही। पडौस की नल्लम्मा बार-बार आकर परिचर्या कर जाती थी। घर का काम-काज पचमी सँभालती। बीमार पत्नी की ओर चेम्पन ने कोई ध्यान नही दिया। नल्लम्मा ने किसी अच्छे वैद्य को बुलाकर दिखाने के लिए दो-तीन बार कहा। लेकिन चेम्पन ने उस पर ध्यान नही दिया।

चेम्पन शादी के बाद काम की भीड मे था। कभी-कभी चक्की के कमरे मे जाकर उसे देख लेता। ऐसे ही जब एक दिन वह चक्की को देखने आया तब चक्की ने करुत्तम्मा और पलनी को जाकर बुला लाने की बात कही। उसकी बात सुनकर चेम्पन गुस्से से काँपते हुए गरज पडा, "मै नही जाऊँगा। मेरे घर मे उसके आने की कोई जरूरत नही।"

चक्की को बहुत क्षोभ हुआ। उसका नतीजा यह हुआ कि वह बेहोश हो गई।

उस दिन चेम्पन एक वैद्य को बुला लाया। शादी के बाद लडकी को बुलाना ही चाहिए। क्यो नही बुलाया जाता, यह सवाल सबने करना शुरू किया। जो भी सवाल करता था उससे चेम्पन बिगड जाता था। लेकिन लोगो ने उसे छोडा नही। इस तरह सबसे उसका झगडा होने लगा।

तृक्कुन्नपुषा-तट पर भी करुत्तम्मा के लिए घर से बुलावा न आना लोगो की बातचीत का विषय हो गया। रिवाज के मुताबिक किसी को

आकर उसे बुला ले जाना चाहिए। ऐसी बात नही थी कि उसके घर मे कोई नही था। न बुलाने का यही कारण हो सकता है कि लोगो ने उसे घर से बाहर कर दिया है। आदमी कितना भी गरीब क्यो न हो, शादी के बाद लडकी को अवश्य बुलाता है।

करुत्तम्मा ने भी प्रतीक्षा की। उसे विश्वास नही था कि पिता उसे छोड देगा। माँ के बारे मे भी उसकी व्याकुलता बढती गई। लेकिन पति से कुछ कहने से वह डरती थी। फिर भी उसने दिल थाम कर कहने का निश्चय किया।

एक दिन खाना खाने के बाद समय अच्छासमझकर उस ने कहा, "मेरी माँ अब है कि नही, कौन जाने ?"

पलनी ने कोई जवाब नही दिया। करुत्तम्मा ने पलनी की ओर गौर से देखा। उसने कहा, "हम जरा चले ?"

उसे एक मुँहतोड जवाब मिला, "इसकी अभी कोई जरूरत नही है।"

वह इतना कठोर होकर बोलेगा इसकी उम्मीद करुत्तम्मा को नही थी। पलनी के भाव-भेद ने उसे डरा दिया।

उसने जरा मन्द हास के साथ कहा, "इस तरह कहने से कैसे होगा ?"

गम्भीर होकर पलनी ने पूछा, "ऊँह ! क्यो ?"

"हमे भी लडकियाँ होगी। उनके भी लडके होगे। वे भी बदला चुकायँगे।"

इसका भी जवाब पलनी के पास तैयार था, "उस समय जैसा होगा, देखा जायगा।"

इसका वह क्या जवाब दे सकती थी ! करुत्तम्मा ने बात वही छोड दी। फिर जब मौका मिला तब उसने पूछा, "तो मै अकेली ही जाकर माँ को देख आऊँ ?"

इसमे पलनी को आपत्ति नही थी। लेकिन उसने एक शर्त रखी,

"जाती हो तो फिर वापिस आने की जरूरत नही है।"

करुत्तम्मा के मन मे गुस्सा पैदा हुआ, जो इन शब्दों मे प्रकट हुआ, "बाप रे, इन मर्दो का मन कैसा होता है!"—इतना कहकर उसने थोडा हँसने की कोशिश की।

नीर्क्कुन्नमु-घर मे चक्की की और तृक्कुन्नपुषा-घर मे करुत्तम्मा की इच्छाओ का महत्त्व नही रहा। इस तरह दिन बीतते गये। दोनो की आत्माएँ व्याकुल होकर तडपती रहीं। अकेले मे करुत्तम्मा रोया करती। चक्की का कलेजा फटता रहता। लेकिन किसी ने भी इस बात को नही समझा।

चक्की की बीमारी बढती गई। यह सुनकर परी एक दिन उसके यहाँ गया। चेम्पन घर मे नही था। समुद्र में उस दिन न जाने पर भी वह कही बाहर गया हुआ था। परी को देखकर चक्की रो पडी। उसकी रुलाई देखकर परी असमजस मे पड गया।

परी भी अब बदल गया था। उसमें पहले का-सा उत्साह नही था। रोते-रोते बीच मे चक्की ने कहा, "मै. . मै जा रही हूँ, मोतलाली!"

चक्की बहुत कष्ट मे थी। यह परी ने देखा। फिर भी उसने कहा, "क्या कहती हो? . नही-नही, इतनी बडी बीमारी नही है।"

चक्की ने पास मे बैठने का इशारा किया। वह बैठ गया। परी को देखती हुई चक्की रो रही थी। परी को मालूम नही होता था कि क्या कहना चाहिए। चक्की ने कहा, "मोतलाली, तुमसे बहुत-कुछ कहना था।"

परी ने कहने के लिए कहा।

उसे उस पैसे की बात ही पहले कहनी थी। परी ने उसे तसल्ली दी कि पैसे की बात को लेकर उसे दुखी होने की जरूरत नही है। चक्की ने पति पर गुस्सा प्रकट करते हुए कहा कि वह बडा कजूस और लालची है। उसने आगे कहा, "हमारे छटपटाने से क्या फायदा? वह पैसा नही

देता है ।"

"उसके बारे मे चिन्ता न करो !"

"नही मोतलाली, मेरी लडकी को भी अच्छी जगह मे नही भेजा । उसे भी दु ख छोडकर सुख भोगने को नही मिलेगा ।"

इसके बारे मे परी को कुछ कहना नही था। वह करुत्तम्मा से सम्बन्ध रखने वाली बात थी । चक्की ने आगे कहा, "मै यहाँ इस तरह मर रही हूँ । तब भी मेरी लड़की को नही बुलवाया है ।"

एक माँ की सारी चिन्ताएँ और वेदनाएँ जाग पडी । उसकी बेटी की एक प्रेम-कहानी है । उस प्रेम-कहानी की छाया उसके जीवन मे असर नही डालेगी, यह निश्चय पूर्वक कैसे कहा जा सकता है ? वह अपने जीवन का नया अध्याय शुरू कर रही है । फिर भी बीते हुए जीवन का असर नही रहेगा, यह कौन कह सकता है ? सबसे बडी बात यह है कि उसे एक ऐसे आदमी के साथ भेजा गया है जिसका जीवन मे कुछ नही है, और कोई नही है। पलनी उसे प्यार करेगा कि नही,कौ न जाने !

चक्की ने कहा, "ऐसा लगता है कि उसे समुद्र मे निराधार छोड दिया गया है ।"

परी ने आश्वासन दिया, "ऐसा मत कहो, पलनी अच्छा आदमी और कमाने वाला है। वह उसकी रक्षा करेगा ।"

चक्की ने सिर हिलाते हुए अविश्वास प्रकट किया। उसने कहा, "तुम इस तट पर साथ-साथ खेला करते थे ।"

परी के हृदय की एक कोमल तली छू गई । बीते हुए दिन याद आ गए । चक्की समझ गई । चक्की भी वह प्रेम-कहानी जानती थी न ! उसमे कितनी शक्ति है, शायद यह भी उसे मालूम होगा । दो प्राणियो से सम्बन्ध रखने वाली वह बात थी। बीमार चक्की एक माँ की तरह बोली, "मेरे पेट से लडके का जन्म नही हुआ है बेटा !"

असह्य दु ख के साथ चक्की ने आगे कहा, "लेकिन मेरा एक बेटा है ।"

परी ने जिज्ञासा-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। चक्की ने परी की ओर ऐसे देखा, मानो कह रही हो कि जानने की जरूरत नही है। फिर चक्की ने परी का हाथ अपने हाथ मे ले लिया और उसे दबाते हुए कहा, "यही, यही परी मेरा बेटा है।"

ऐसा लगा कि परी के परितप्त हृदय के एक कोने में आशा की एक लहर लहरा उठी। जिससे उसने प्रेम किया था, वह उसकी होकर भी नही रही। लेकिन अब उसे लगा कि नही, वह उसकी कोई है और वह भी उसका कोई है।

करुत्तम्मा उस शादी से सुखी होगी, चक्की को इसकी आशा नही है। परी के और उसके साथ-साथ खेल कर बडे होने की बात उसे याद है। वह उसे बेटा बना लेती है।तब—तब— परी की टूटी हुई आशा मे अकुर निकलता है। क्या करुत्तम्मा अब भी उसकी हो सकती है? नही भी हो, तो भी माँ ऐसा चाहती है क्या? एक क्षण मे परी एक अस्पष्ट और अयथार्थ जगत् मे पहुँच गया। माँ ने कहा, "बेटा, तुम शादी करके व्यापार मे उन्नति करो और सुखी होओ?"

कभी भी न भुलाया जा सकने वाला यह वाक्य परी के कान मे गूँजने लगा। उस रात को करुत्तम्मा ने भी यही कहा था। लेकिन करुत्तम्मा को जैसा जवाब उसने दिया था वैसा कोई जवाब उसने चक्की को नही नही दिया।

"बेटा, तुम करुत्तम्मा को तकलीफ मे न डालना! उसका ब्याह हो गया। अब उसे कोई कष्ट न देना!"

परी को विस्मय हुआ। उसे लगा कि तकदीर उसे आज्ञा देती है वह करुत्तम्मा के जीवन मे प्रवेश न करे।

उसने चक्की को यह कहते सुना, "परी, तुम करुत्तम्मा के भाई हो, उसका कोई सगा भाई नही है। बेटा, तुम्हे उसका सगा भाई होकर रहना है!"

चक्की ने ही यह सब कहा था। इसमे परी को सन्देह नही था। चक्की

ने और भी बातें कहीं। चेम्पन ने करुत्तम्मा को त्याग दिया है। वह खुद मर रही है। करुत्तम्मा ऐसे आदमी की दया पर छोड दी गई है जिसका न घर है, न कोई सगा-सम्बन्धी। उसका अब इस दुनिया में अपना कौन है। सिर्फ परी है। उसने कहा कि दोनों के बीच भाई-बहन का सम्बन्ध रहना चाहिए।

चक्की ने पूछा, "बेटा, तुम हमेशा उसके भाई होकर रहोगे न ?"

परी की आँखों में आँसू आ गए। वे आँसू टप-टप गिरने लगे। चक्की ने देखा। उन आँसुओं का अर्थ भी उसने समझा।

उस प्रेम-कहानी का रहस्य चक्की ने प्रकट कर दिया, "बेटा, तुम्हें उससे प्रेम था। लेकिन अब उसे बहन समझना ! यही तुम्हारे प्रेम का परिणाम होना चाहिए। क्यों ?"

परी कोई जवाब नहीं दे सका। उसका गला रुँध गया था। वह उसे प्यार करता है तो अब उसका भाई बन जाय—यह ठीक ही है।

नि:शब्दता में कुछ समय बीता। चक्की ने पूछा, "ठीक है न बेटा ?"

यन्त्रवत् परी ने जवाब दिया, "हाँ।"

"तुम भाई-बहन होकर रहना है !"

एक क्षण बाद चक्की ने फिर कहा, "यदि वह यहाँ रहती तो मरते समय उसे भी समझा देती।"

चक्की भावावेश में आ गई। वह परी से बार-बार करुत्तम्मा का भाई होकर रहने की बात कहती रही। जब कोई नहीं रहेगा तब उसकी सुधि लेने को कहा। उसके मरने के पहले अगर वह न आये तो उससे उसका भाई होने की बात कहने को कहा। परी ने सब मान लिया। चक्की को लगा कि परी का उस तरह मान लेना काफी नहीं है। इसलिए चक्की ने फिर परी से एक बार प्रार्थना की।

उस रात को चक्की ने परी को तट पर गाते सुना।

चेम्पन के लिए वह दुर्दिन का समय था। वह समुद्र में नहीं जा सकता

था। आमदनी घटती जाती थी। ऊपर से उसे एक और घाटा हुआ। कादरी मोतलाली को उसने जो माल दिया था, उसका दाम थोडा मिलना बाकी था। कादरी एक रात को अपनी झोपडी मे से सब सामान लेकर चम्पत हो गया। उस घाटे से चेम्पन को एक बडा धक्का लगा।

चेम्पन ने पहले की तरह फिर समुद्र मे जाने का निश्चय किया। कब तक घर मे बैठा रहता ! कई दिनो के बाद एक दिन फिर लोगो ने चेम्पन को अपनी नाव पर पतवार थामे देखा। लेकिन वह बैठा था, खडा नही था। नाव की गति मे पहले-जैसी तेजी नही थी। वह पहले की तरह लहरो पर उछलती-फाँदती नही थी। चेम्पन पहले-जैसी फुर्ती से पतवार को सँभाल भी नही पाता था। उसके पाँव थरथराते थे। नाव के उस सकरे नुकीले हिस्से पर अँगूठे के बल पर खडे होने मे अब उसे डर लगता था। ..तो क्या आगे बढने की उसकी प्रवृत्ति खत्म हो गई। मुमकिन है कि बाकी नावो को पीछे छोडकर पक्षी-जैसी तेजी से अपनी नाव को आगे बढाने और बाकी नावो की अपेक्षा अधिक माल लादकर लौटने मे चेम्पन अब असमर्थ हो जाय। उसकी नाव अब दूसरी नावों की तरह ही उतराती रहती है। तट वाले आगे उसकी पक्षी की गति नही देख पायँगे।

समय होने के पहले ही नाव तट की ओर मुडी। नाव खेने वालो ने इसका कारण पूछा। चेम्पन ने कहा, "दूसरे दिन देखेगे। आज इतना ही काफी है।"

'काफी है'—ऐसा इसके पहले चेम्पन ने कभी महसूस नही किया था।

नाव किनारे लगने आ रही थी। चेम्पन ने ज्यो ही डाँड खीचा, पानी मे गिर गया। खेने वालों ने मिलकर उसे पकड लिया और नाव मे चढा लिया। इसके बाद चेम्पन फिर पतवार थामने नही बैठा।

उस दिन चेम्पन ने माल के बारे मे मोल-तोल भी नही किया। जितना मिला उतने ही पर माल बेच दिया। वह थका-माँदा घर लौटा। उसकी चाल एक टूट हुए आदमी की तरह थी।

क्या चेम्पन का सब कार्य-क्रम टूट गया ? पंचमी पिता की प्रतीक्षा मे खडी थी। उसने भात तैयार कर रखा था। तरकारी भी पिता की पसन्द की बनाई थी। कमजोर आवाज मे चक्की भीतर से यह कहती सुनाई पडी, "बिटिया, खाना परोस दे ! बप्पा आ रहा है।"

पचमी ने खाना परोसकर सामने लाकर रख दिया। चेम्पन ने थोडा उठाकर खाया। लेकिन रुचि और खुशी के साथ नही। जब वह बाहर गया तब पचमी ने माँ से कहा, "अम्मा, आज बप्पा ने मन से खाना नही खाया।"

हाथ-मुँह धोकर चेम्पन चक्की के पास आया। चक्की ने चेम्पन को गौर से देखा। दोनो की आँखे भर आई।

जीवन मे पहली बार चेम्पन की आँखे सजल हुई। चक्की ने कहा, "क्या किया जाय ? सब विधि की लीला है।"

चेम्पन ने आँसू पोछ डाले। एक बूँद भी नीचे नही गिरने दी। इतनी इच्छा शक्ति अब भी बाकी थी। उसने पूछा, "तू उठ नही सकती क्या ?"

"मैने कोशिश तो की है। लेकिन क्या किया जाय।"

थोडी देर तक चुप रहकर चेम्पन ने पूछा, "तब मै क्या करूँ ?"

चक्की को लगा कि चेम्पन, उसके मरने के बाद वह क्या करेगा, इसके बारे मे सोचने लगा है। उसका सारा जीवन अपूर्ण ही रहेगा, आगे बढने मे असमर्थ ही रहेगा। क्या जवाब दे, यही चक्की सोचने लगी।

चेम्पन खाट पर चक्की के पास बैठ गया। चक्की ने देखा कि पति मे पहले-जैसी ताकत और फुर्ती अब नही रही। चेम्पन ने उस दिन समुद्र मे जो घटना घटी थी, उसे कह सुनाई। उसने कहा, "मेरे पैर ढीले पड गए।"

पति से समुद्र मे कोई दुर्घटना हो सकती है, यह खयाल चक्की को कभी नही हुआ था। आज वह भी हो गया। आग भी कुछ हो सकता है।

निस्सहाय भाव से चेम्पन ने पूछा, "मैं क्या करूँ चक्की ?"

वह चक्की से नही तो फिर किससे यह सवाल करता ! जवाब देने का अधिकार भी और किसको था ? उसके जीवन की व्यवस्था और सफलता के लिए चक्की एक अविभाज्य अग जो थी ! अब उसे खाट की शरण लेनी पडी है। उसके साथ ही चेम्पन का सब तेज भी समाप्त-सा हो गया। वह एक हारे हुए व्यक्ति की भाँति सिकुडकर खाट पर बैठा था।

चक्की ने चेम्पन का हाथ छाती पर रखकर उसे दबाते हुए पूछा, "मै मर जाऊँगी तो क्या करोगे ?"

चेम्पन रो पडा।

"ऐसी बात न कह चक्की।—मैं क्या करूँगा ?"

चेम्पन के हाथ पर चक्की की पकड कस गई। चक्की की छाती पर चेम्पन का हाथ पडते ही छाती की धडकन की तेजी से उसको अपना हाथ हिलता-सा लगा।

चक्की ने चेम्पन पर अपनी नज़र गडाते हुए कहा, "किसी दूसरी से शादी कर लेना !"

इतना कह चुकने पर चक्की का शरीर काँपने लगा और हाथ-पाँव ऐठने लगे। छाती की धडकन भी धीमी पडती-जैसी मालूम हुई।

चक्की की नज़र चेम्पन के चेहरे पर गडी थी। चेम्पन ने पूछा, "क्या कहा तूने ! दूसरी शादी करने के लिए ?"

कोई जवाब नही मिला। चक्की को मालूम था कि जीवन में आदमी को एक साथी की ज़रूरत होती है। उसके लिए उसने एक रास्ता भी सुझा दिया। चेम्पन ने तब तक इस तरह की बात के बारे में नही सोचा था।

"तू बोलती क्यो नही ?"

चक्की की आँखें पथराने लगी। चेम्पन डर गया। उसने चिल्लाकर चक्की को पुकारा,

"चक्की ! चक्की ! !"

चक्की निश्चल थी।

"हाय, तू चली गई री!"

चेम्पन चक्की की देह पर गिर गया। उस समय भी चक्की की पकड़ ढीली नहीं हुई थी।

१४

पचमी फूट-फूटकर रो रही थी । नल्लम्मा उसे शान्त कर रही थी । चक्की पचमी का भार नल्लम्मा को सौप गई थी । नल्लम्मा ने भी, उसके चार के बदले पाँच बच्चे ह, ऐसा मान लिया । लेकिन इससे पचमी की तसल्ली नही हो सकती थी ?

अच्चन और अन्य साथियो ने मिलकर चेम्पन को चक्की के शरीर से अलग किया और बाद मे जो-जो करना था, उसका प्रबन्ध किया । घटवार को खबर दी गई । वह आ गया । करुत्तम्मा को खबर देने की बात उठाई गई । जब वह बात शोकातुर चेम्पन के कान में पडी तब तुरन्त उसने गरजकर कहा, "नही, उसे खबर करने की कोई ज़रूरत नही है ।"

चेम्पन के विचार मे करुत्तम्मा ही चक्की की अकाल मृत्यु का कारण थी । सब लोग थोडी देर के लिए निस्तब्ध हो गए। चेम्पन के इस निश्चय के न्यायान्याय के बारे मे सब सोचते ही होगे । घटवार की राय की प्रतीक्षा थी । घटवार ने कहा, "माँ को बेहोश हालत मे पडी देखकर ही न वह गई थी। सब त्यागकर ही वह गई है न ? जाने दो !"

पचमी तब भी अपनी दिदिया को पुकारती रही थी । लेकिन उस पर किसी ने ध्यान नही दिया ।

दाह-सस्कार की तैयारियाँ होने लगी । गैर-धर्मी परी थोडी दूर पर खडा रहा । करुत्तम्मा के बिना ही दाह-सस्कार हो रहा था, इससे उसे दु:ख हुआ । लेकिन वह इस सम्बन्ध मे कुछ कर भी नही सकता था ।

करुत्तम्मा को कितना दु:ख हो सकता है ! आगे कभी मिलने पर वह उससे पूछ सकती है और कह सकती है, 'मोतलाली, तुमने भी तो खबर

नही दी !' इतना ही नही। चक्की भी उसे माफ नही करेगी ?

परी को लगा कि इस समय उसे कुछ करना चाहिए। लेकिन क्या करे, यह स्पष्ट नही था। वह करुत्तम्मा का भाई बन गया था। उसे अपनी बहन बना लिया था। अब भाई के तौर पर उसे जीवन बिताना था।

उस रात को परी को नीद नही आई। रात काफ़ी बीत जाने पर वह उठकर बैठ गया। थोडी देर बाद वह झोपडी को बन्द करके निकल पड़ा।

वह आगे बढता गया। समुद्र के किनारे की हवा मानो कुछ गुनगुना रही थी। तरगे भी मानो कुछ पूछ रही थी—कहाँ जा रहा है ?—तृक्कुन्नपुषा ?—क्यो ?—करुत्तम्मा को उसकी माँ के मरने की खबर देने ?—इसके लिए तुम्हे क्या अधिकार है ?—यदि कोई यह सवाल पूछ बैठे तो वह क्या उत्तर देगा ?

करुत्तम्मा से जब वह मिलेगा तब वह क्या कहेगा ? इस तरह के प्रश्न उसकी गति को रोकने वाले प्रश्न थे। फिर भी वह बढता गया, पर वह उसका भाई है। उसकी माँ ने उसे उसका भाई बना दिया है। लेकिन क्या वह बहन बनेगी ?

परी यदि करुतम्मा से जाकर मिले तो उस मिलन का नतीजा क्या होगा, इसके बारे मे उसने सोचा है ?

खूब भोर के समय वह तृक्कुन्नपुषा-तट पर पहुँचा। नाव पर जाने के लिए निकलने वाले एक मल्लाह को उसने देखा। परी ने उससे पलनी के घर का पता पूछा। 'चाकरा' के समय वह आदमी नीर्क्कुन्नम-तट पर गया था। उसने परी को पहचान लिया। उसने पूछा, "छोटे मोतलाली ! पलनी को क्यो खोजते हो ?"

परी जरा घबरा गया। उसने कहा, "पलनी की स्त्री की माँ मर गई है।"

कोच्चुनाथन के लिए यह एक समाचार था। वह चेम्पन और चक्की दोनो को जानता था। उसने चक्की की प्रशसा की। लेकिन वह एक गडबड मे डालने वाला सवाल पूछ बैठा, "मरने की खबर लेकर

मोतलाली तुम कैसे आये ? वहाँ कोई मल्लाह उन्हे नही मिला क्या ?"

यह सवाल परी के मन मे भी उठा था और उसने एक जवाब भी सोच रखा था, "लोगो ने पलनी और उसकी पत्नी को खबर न देने का ही निश्चय किया है । इसलिए मै चला आया । चक्की के मरने के बाद वहाँ का समाचार परी ने कह सुनाया । तब भी कोच्चुनाथन ने सवाल उठाया, "उसके लिए आधी रात के समय ही मोतलाली क्यो निकल पडे ?"

इसका जवाब उसे भाई बनाने वाली बात थी । लेकिन वह कारण बताने लगता तो उसके पीछे की कहानी भी कहनी पडती । एक मुसलमान कैसे एक मल्लाहिन का भाई बन गया ? माँ ने क्यो उसे भाई बना दिया ? यह सब बताना पडता । उपयुक्त जवाब न पाकर वह परेशान हुआ । आखिर उसने एक गोल-मटोल जवाब दिया कि उन लोगो की हृदय-हीनता देखकर उसे बहुत दुःख हुआ । इसलिए वह चल पडा । पता नही इस जवाब से कोच्चुनाथन को सन्तोष हुआ कि नही । उसने परी को पलनी का घर बता दिया ।

करुत्तम्मा से क्या कहे ? सीधे खबर दे देना ठीक है ? उसे कैसे समझाया जाय ?

नावे समुद्र मे उतर गई थी । पलनी के घर के सामने आकर परी खडा हो गया । वह छोटा घर शान्त और निश्शब्द था । परी का कण्ठ सूख गया । थोड़ी देर तक वह खडा रहा । फिर अनजाने 'करुत्तम्मा' शब्द उसके मुँह से निकल गया ।

कोई जवाब नही मिला । परी ने दुबारा पुकारा । भीतर से आवाज़ आई–"कौन है ?" करुत्तम्मा ने परी की आवाज़ पहचान ली ।

"मै हूँ, करुत्तम्मा !"

"मै माने ?"

"मुझे पहचाना नही ?"

"कौन हो ?"

"मै हूँ परी, परी।"

फिर एक लम्बी निस्तब्धता रही। परी ने कहा, "एक बडी बात कहनी है करुत्तम्मा !"

रुलाई की आवाज मे भीतर से जवाब आया, "वहाँ से चले आने पर भी मुझे चैन से नही रहने दोगे ? नही, नही, मै दरवाजा नही खोलूँगी। — — — मै देखना नही चाहती।"

वह रो रही थी। उसके शब्द परी के कलेजे मे चुभ गए। उसने ठीक ही कहा। वह अपने बचाव की खोज मे थी। वह उसके चले आने पर भी उसे चैन से नही रहने देता ! बिना कुछ कहे ही उसने लौट जाने की बात सोची। फिर सोचा, जो बात कहनी है बाहर ही से क्यों न कह-कर चला जाय ! लेकिन एकाएक कठोर होकर वह कैसे कहे ? परी ने दरवाजा खोलने की प्रार्थना की। उसने पूछा, "करुत्तम्मा ! क्या तुम मुझे नही जानती ?"

अपने उमडते गहरे भावो को होठ काटकर दबाते हुए भीतर से ही उसने कहा, "जानती हूँ।"

"तब बाहर आने से क्यो डरती हो ?"

इसका कोई जवाब नही मिला। उसने आगे कहा, "मै अब भी वही पुराना परी हूँ। मै जानता हूँ कि तुम अपने पति के साथ रहती हो।"

निस्सहाय होकर करुत्तम्मा ने कहा, "मै तुम्हे नही देख सकती।"

परी को कही से हिम्मत मिली। उसने कहा, "ऐसा मत कहो करुत्तम्मा ! हमे आगे भी मिलते रहना है। एक-दूसरे से आमने-सामने होकर बाते भी करनी है।"

"बाप रे, नही-नही, ऐसा नही होना चाहिए। वह समुद्र में गया है—तूफान और आँधी वाले समुद्र मे।"

फिर निस्तब्धता छा गई। परी ने फिर पुकारा, "करुत्तम्मा !"

करुत्तम्मा ने लाचारी से जवाब दिया, "क्या है ?"

"मै तुम्हारा भाई हूँ।"

"भाई ?"

उस गहरे सम्बन्ध का विच्छेद न करके, उसे एक नये रूप मे प्रकट करना सम्भव हो गया। करुत्तम्मा कुछ आश्वस्त हुई।

परी ने कहा, "हाँ, बहन, तुम्हारा भाई। तुम्हारा सगा भाई नही है न ?"

"नही।"

"तो तुम्हारा भाई तुम्हे बुला रहा है। तुम्हारी माँ ने कहा है कि मै तुम्हारा भाई होकर तुम्हारी देख-भाल करूँ।"

"मेरी माँ ?"

"हाँ, हाँ, दरवाजा खोलो ! सब बाते सुना दूँ।"

करुत्तम्मा ने भीतर बत्ती जलाई और दरवाजा खोल दिया। कैसे वह बात कहे ? लेकिन निष्ठुरता के साथ बात निकल गई, "तुम्हारी माँ मर गई।"

करुत्तम्मा सुनते ही धाड मारकर रोने लगी। पडोस की स्त्रिया आ गईं। तब तक परी वहाँ सेचला गया था। पडोसिनो ने करुत्तम्मा को शान्त करने की कोशिश की। उसकी माँ के मरने की बात पर उन्हे विश्वास नही हुआ। उस दुःख मे भी करुत्तम्मा ने यह नही बताया कि किसने खबर दी है। स्त्रियो ने अन्दाज लगाया कि उसने सपना देखा है।

काफी देर तक अश्रु-पात करने के बाद उसके मन मे कई विचार उठे। उस खबर पर विश्वास किया जा सकता है ? उसे लगा कि कही वह खबर एक निराश प्रेमी की द्रोह-बुद्धि का फल तो नही है ! यदि माँ सचमुच मर गई है तो खबर देने के लिए कोई नही आयगा क्या ?

पति समुद्र मे गया था। लौटने पर उसे खाना देना था। पत्नी की कर्त्तव्य-भावना ने उसे घर के काम-काज मे फँसा दिया। किसी तरह रोज की तरह उसने भात-तरकारी तैयार की।

वह एक-एक क्षण इस प्रतीक्षा मे रही कि कोई खबर लेकर आयगा। पलनी ज़रा पहले ही लौट आया। फूट-फूटकर रोती हुई करुत्तम्मा ने

कहा, "मेरी माँ मर गई।"

पलनी ने अनसुनी कर दी। उसके चेहरे पर एक अभूतपूर्व गम्भीरता दिखाई पडी। करुत्तम्मा रो रही थी।

"मैंने अपनी माँ को मार डाला।"

जरा भी सहानुभूति प्रकट किये बिना पलनी ने पूछा, "खबर कौन लाया है ?"

क्या जवाब दे ?—करुत्तम्मा घबरा-सी गई। पलनी गौर से उसे देख रहा था। आखिर करुत्तम्मा ने कहा, "वह छोटा मोतलाली।"

"तब वह कहाँ है ?"

"खबर देने के बाद वह दिखाई नही पडा है।"

पलनी की उस गम्भीरता का क्या कारण था ? —परी का आना या रिवाज के मुताबिक खबर न मिलना ? पलनी ने पूछा, "क्या उस मुसलमान को तेरे बाप ने भेजा था ?"

करुत्तम्मा इसका जवाब नही दे सकी। पलनी ने आगे पूछा, "यह खबर भेजने के लिए क्या उन्हे उस तट पर कोई मल्लाह नही मिला ?"

करुत्तम्मा इसका भी क्या जवाब देती ? इसी मौके पर छुरा भोक-कर कायदे-बेकायदे की बात उठानी थी ? पलनी के मन मे किसी सन्देह ने जगह कर ली थी। क्या सन्देह था, करुत्तम्मा को मालूम नही हुआ, उसे सिर्फ एक बात कहनी थी, "हम लोग चले!"

"कहाँ ?"

"नीर्क्कुन्नम-तट पर।"

पलनी अपना होठ एक ओर खीचकर जरा हँस दिया। उसका अर्थ था कि वह जाने के लिए तैयार नही है। करुत्तम्मा ने कहा, "मेरी माँ, जिसने मुझे जन्म दिया है, मर गई है।"

इस तर्क का पलनी पर कोई असर नही पड़ा। करुत्तम्मा ने कहा कि उसकी माँ ने एक माँ की तरह पलनी से प्यार किया था; माँ ने कोई गलती नही की है, गलती हुई है तो उसीसे हुई है, शादी के दिन माँ ने ही

उसे यहाँ आने को कहा था और उसीके कहने से वह चली आई। उसने आगे कहा, "समुद्र-माता की कसम ! मै जब आने मे हिचक रही थी तब माँ ने ही जोर देकर मुझे आने को कहा था। हम जरा जाकर वहाँ देख आयेँ।"

करुत्तम्मा पलनी का पैर पकडकर रोने लगी। लेकिन वह पत्थर की मूर्ति की तरह अचल रहा।

माँ कैसी होती है, यह चक्की ने ही पलनी को दिखा दिया था। वही चक्की मर गई है। उसकी मृत्यु का पलनी पर असर नही होगा, यह कैसे हो सकता था ! उसने अपने-आप बोलते हुए कहा, "सबने मिलकर मुझे किनारे पहुँचा दिया।"

करुत्तम्मा ने पूछा, "नीक्कुंन्नम जाने के लिए न ?"

"ऐसा ही कह रहे थे। लेकिन कोई ज़रूरत नही है।"

"क्यो ?"

थोडी देर बाद पलनी ने कहा, "उसको आते हुए कोच्चुनाथन भैया ने देखा था। वह पप्पू तट के लोगो के बीच अपयश की बाते फैलाता ही रहता है। जब-जब ····"

कहते-कहते उसका गला रुँध गया। गला साफ करके वह फिर बोला, "वे सब बाल-बच्चे वाले है। इसलिए मुझे नाव पर से उतार दिया।"

करुत्तम्मा को सब बाते समझ में आ गई। उस मौके पर यह भी हो गया। करुत्तम्मा को सिर्फ एक ही सवाल करना था। उसने पूछा "मुझ पर सन्देह करते हो ?"

वह न 'ना' कह सकता था, न 'हाँ'। उसने पूछा, "वह मुसलमान आकर खबर देने के बाद फाँसी लगाने के लिए कहाँ चला गया ?"

"उसके बाद मैने उसे नही देखा।"

"वह क्यो अपने को यहाँ घसीट लाया ?"

सब-कुछ कह डालने का वह मौका था। बिना कुछ छिपाये सब बात बताई जा सकती थी। लेकिन करुत्तम्मा को कहने के लिए शब्द नही

मिल रहे थे।

पलनी ने पूछा, "उसने आकर क्या कहा ?"

"कि माँ मर गई।"

वह उस छोटे परिवार के भविष्य का निर्णय करने वाला क्षण था।

उस समय समुद्र मे उस खबर के बारे मे चर्चा हो रही थी। बुढ़िया की मृत्यु की बात सच्ची हो सकती है। चक्की के बेहोश होकर गिर जाने की बात सबको मालूम ही थी। शायद वह फिर उठेगी नही, यह भी सभी ने अन्दाज लगाया था। लेकिन मरने की खबर देने के लिए एक मुसलमान छोकरे के आने की क्या जरूरत थी ?

कोच्चुनाथन ने कहा, "मेरे पूछने पर वह घबरा गया था।'

पप्पू को और भी बाते सुनानी थी। उसने कहा कि नीर्क्कुन्नम-तट पर करुत्तम्मा और वह मुसलमान रात-दिन साथ-साथ खेलते और दौडते-फिरते थे। उसने आगे कहा, "रात को वह बैठकर गाता था और यह निकलकर मिलने जाती थी। इसलिए न शादी के समय मैने झगडा खडा किया था!" पप्पू को एक जीत–जैसा अनुभव हुआ।

सबको एक बात का दु:ख था। पलनी बेचारा एक शुद्ध आदमी है। उसे एक ऐसी स्त्री मिली, इसका सबको दु:ख था।

एक ने पूछा, "तब उसे नाव पर कैसे ले जायँगे ?"

इस सवाल का मतलब सब जानते थे। सबने समझा कि पलनी का घर शुद्ध नही है। उस स्थिति मे पलनी अगर नाव पर आवे तो कभी भी सकट उपस्थित हो सकता है।

वेलायुधन ने पूछा, "उसका घर शुद्ध नही है, यह किसने कहा है ?"

आण्डी ने भी वेलायुधन का पक्ष लिया और बात उठाने वाले कुमारन से पूछा, "क्यो रे! तू निश्चित रूप से कह सकता है ? उसका घर शुद्ध नही है, यह निश्चित रूप से यहाँ कौन कह सकता है ?"

यहाँ तक कहने के लिए कोई तैयार नही था। पलनी का घर शुद्ध है, इसका विश्वास किया जा सकता था। इसमें किसी को आपत्ति नही

हो सकती थी। फिर भी मामूली तौर पर एक सन्देह सबको था। उस दिन पलनी इसी कारण नाव को बीच समुद्र मे नही ले गया था कि उस की बुद्धि विकृत हो गई थी ? पप्पू, जो कहानी फैलाता रहता है उससे भी उसके मन मे तकलीफ है। फिर भी, 'लडकी अच्छी है', यह कहने वाले भी थे।

कुमारन् को छोडकर बाकी सब पलनी के घर को पवित्र मानने के लिए तैयार थे। कुमारन् ने एक सवाल उठाया, "एक मल्लाह, मरने की खबर देने के लिए एक मुसलमान को ही भेजेगा क्या ? तिस पर रात के समय वह क्यो आया ?" इसका जवाब कौन दे सकता था ?

सब दृष्टि से देखने पर एक सन्देह बना रह गया। लेकिन पलनी से सबको सहानुभूति थी।

पलनी के घर मे भी बाते अनिश्चित थी। करुत्तम्मा ने एक पीड़ित शोकातुर हृदय के तौर पर, एक पत्नी के अधिकार के साथ नही, विनती की कि उसे माँ का शव ही अन्तिम बार देख आने के लिए जाने दिया जाय, लेकिन पलनी ने कुछ नही कहा।

करुत्तम्मा ने पूछा, "मुझ पर विश्वास कर सकते हो ?"

"विश्वास करूँगा ही।"

लेकिन वह कुछ बाते जानना चाहता था। और करुत्तम्मा बिना कुछ छिपाये सब-कुछ कह डालने के लिए तैयार थी। लेकिन उस समय उसमे कुछ कहने की शक्ति नही थी। उसके लिए वह समय बहुत महत्त्व-पूर्ण था। लेकिन पलनी उसको गुरुता नही समझ सकता था। उसकी ही माँ की नही, किसी की भी माँ की मृत्यु की गुरुता वह नही समझ सकता था।

करुत्तम्मा निरुपाय होकर रोई। एक समाधान उसके मन में आया। उसे अकेले ही जाने दे; वह उसी दिन लौट आयगी। पलनी ने इस सुझाव का भी कोई निश्चित उत्तर नही दिया। करुत्तम्मा के मन मे यह विचार भी आया कि पति की उपेक्षा करके ही वह क्यो न चली जाय ! लेकिन

इसका मतलब था कि लौटकर नही आना होगा। नही, उसके लिए वह तैयार नही थी। उसने एक मल्लाहिन होकर जन्म लिया है, वैसे ही उसे मरना भी है। उसकी माँ की भी वही इच्छा थी। वह पिता के ही पैरो से लिपटकर अपनी जीवन-लीला समाप्त करेगी। एक आदमी को भेजकर माँ के मरने की खबर तक न देने वाला बाप उसे शरण देगा, इसकी आशा करना व्यर्थ था। हक के तौर पर भी वह शरण नही माँग सकती थी। वह पिता की अवहेलना करके घर त्यागकर एक आदमी के पीछे आई है। अब वह उसकी छोटी झोंपडी मे ही पडी-पडी अपनी जिन्दगी गुजार लेगी।

उसे पचमी की भी याद आई। आते समय उसने 'दिदिया-दिदिया' कहकर जो करुण पुकार की थी वह अब भी उसके कानो मे गूँज रही थी। वह पचमी माँ के दाह-सस्कार के समय आश्रयहीन होकर रोती होगी। अब उसे घर मे अकेले रहना होगा। समुद्र-तट पर और भी तो परी होगे!

पलनी दूसरी तरफ मुँह किये चुपचाप बैठा था। उसके मन मे भी शान्ति नही थी। अब तक वह सब तरह की चिन्ताओ से मुक्त रहा है। कही भी रहे, वहाँ उसे सुख-ही-सुख मालूम होता था।

करुत्तम्मा उसके पास गई और कहा, "खाना खा लो!"

"मुझे भूख नही है।"

"क्यो?"

पलनी ने पूछा, "वह मुसलमान यहाँ क्यो आया?"

करुत्तम्मा ने अपनी सच्ची स्थिति बतला देने के विचार से कहा, "मेरा सर्वनाश करने के लिए। नही तो और किस लिए?"

करुत्तम्मा ने पलनी के सवाल का सामना किया। इतनी हिम्मत उसमे आ गई। पलनी भी सजग था। उसने पूछा, "वह कौन है करुत्तम्मा?"

करुत्तम्मा उसके सवाल का अर्थ समझकर सब-कुछ कह डालने के लिए तैयार होकर बैठ गई। कैसे कहना है इसीमे उसे सन्देह था। कही से भी शुरू करे। अब उसे उसकी परवाह नही थी। सब-कुछ कह

डालना है तो कही से भी शुरू करे, इसमे क्या हानि है! उसने कहा, "हम दोनो बचपन से साथ-ही-साथ खेलते-कूदते बडे हुए थे।"

करुत्तम्मा ने पूरी कहानी सुनानी शुरू की। बिना किसी क्षोभ या उत्तेजना के वह कहती गई। पलनी ध्यान से सुनता गया, पलनी का भाव देखकर करुत्तम्मा को डर भी लगा। थोडा सुनाने के बाद उसने पूछा, "क्या मेरी बातो का विश्वास नही होता ?"

पलनी ने कहा कि वह विश्वास करता है। एक लडकी अपने पति से अपनी प्रेम-कहानी सुना रही थी। उसमे अविश्वास करने का कोई कारण नही था। वह अपने को काले रग मे चित्रित कर रही थी न ?

आगे चलकर करुत्तम्मा उस ढर्रे से कहानी सुनाने मे असमर्थ होगई। कहानी मे वह गति नही रही। उसने अपने अठारहवे साल मे प्रवेश करने तक की बाते सुनाईं। पैसा कर्ज लेने के बारे मे कुछ नही कहा। अन्तिम विदा लेने के बारे मे भी नही कहा। बाकी सब-कुछ सुना डाला। उसे सन्देह हुआ कि पलनी को ऐसा लगा होगा कि उसने कुछ छिपाया भी है। उसने कहा, "मेरा कोई भाई नही है,वह मेरा भाई है।"

उसे नही लगा कि पलनी ने इसे मान लिया हो।

सब सुन चुकने के बाद पलनी ने कहा, "तब तो लोगो का यह कहना कि उन लोगो ने तुम्हे नीर्क्कुन्नम तट पर से दूर कर दिया है, सच ही है, है न ?"

इसके उत्तर मे करुत्तम्मा को एक ही बात कहनी थी कि वह इस तट के योग्य एक अच्छी पत्नी होकर अपना जीवन बितायगी।

१५

करुत्तम्मा ने जो कुछ कहा था वह सब सत्य था। मान भी लिया जाय कि पलनी ने सबका विश्वास कर लिया। फिर भी वह उसकी भावनाओ के लिए एक भारी आघात था। पलनी एक चिन्ताशील व्यक्ति था। वह उदास हो गया। क्या पप्पू से अब वह सीधा लड सकता है? करुत्तम्मा का चरित्र शुद्ध है, इसका उसे विश्वास था। लेकिन यदि पप्पू सामने आकर कहे कि वह करुत्तम्मा के योग्य नही है, तो वह उसका खण्डन कैसे कर सकता है? करुत्तम्मा को वह उसके पिता के सरक्षण से हठपूर्वक लाया है। उसको छोड देने के लिए उसकी धर्म-बुद्धि ने सम्मति नही दी। उसे छोड दे तो वह फिर कहाँ जायगी?

उसने सब बाते खोलकर कह दी है। इसका उसे विश्वास था। उसने अपनी गलतियो के लिए आँसू बहाते हुए बार-बार प्रतिज्ञा भी की है। बीती हुई बातो को भूल जाना चाहिए। वह अवश्य आगे सच्चरित्र होकर रहेगी, इसमे पलनी को सन्देह नही था।

लेकिन भावावेश के साथ उसको चूम लेना अब पलनी के लिए असम्भव था। आलिंगन के समय उसके हाथ अब ढीले ही रह जाते। करुत्तम्मा दुगने आवेश मे अश्रु-पात के साथ क्या-क्या बोल जाती थी। हाथ से वह निकल न जाय, इस डर से वह पति को कसकर पकड़ लेती थी, ऐसा लगता था कि उसके मन मे हमेशा यह डर है कि पलनी कही हाथ से निकलकर बाहर न गिर जाय। 'मुझ पर विश्वास नही है?', इसके सिवा 'मुझसे प्रेम नही करते क्या?'—यह सवाल वह पूछ नही सकती थी। लगता था कि ऐसा सवाल करने का उसका अधिकार खत्म हो गया।

पलनी ने, जो कभी किसी से नही झगडता था, अब एक झगडा खडा कर दिया। एक बार पप्पू ने कुछ बाते सुनाईं। पलनी करुत्तम्मा से सब सुन चुका था, फिर भी एक तीसरे व्यक्ति से सुनना वह सहन नही कर सकता था। दोनो मे झगडा हो गया और पलनी ने उसे मार दिया।

यह झगडा छोटा होकर नही रहा। पप्पू एक बडे परिवार का अग था। बात बढ गई कि पप्पू को मारने वाला पलनी होता कौन है।

करुत्तम्मा के घर जाने का सवाल इस तरह खत्म हो गया। उन दिनो समुद्र मे मछली भी नही मिलती थी। पलनी मे कोई उत्साह नही था। करुत्तम्मा को भी 'क्या हिस्सा मिला है'—यह रोज पूछने की हिम्मत नही रही।

क्या करुत्तम्मा को सजा-धजाकर मण्णारशाला मेला मे नही ले जाया जायगा? क्या उस घर को, एक खाना बनाने और एक सोने के लिए—दो कमरो वाला नही बनाया जायगा! नाव और जाल की बात को तो छोड ही देना है। वह बडी दूर की बात है। नाव और जाल हो भी सकता है, नही भी हो सकता है। इधर तो रोज का खर्च ही जुटाना मुश्किल हो गया। रोज के चावल का खर्च भी कभी-कभी नही जुटता था। करुत्तम्मा को एक और कपडा और ब्लाउज चाहिए। पलनी की देह पर भी एक ही कपड़ा था।

"मै कल से मछली बेचने पूरब मे जाऊँ?"

करुत्तम्मा के इस प्रश्न का पलनी ने झट से कोई उत्तर नही दिया। करुत्तम्मा ने बतलाया कि जाने से क्या-क्या फायदे होगे और कहा कि उसे मजूर हो तभी वह जायगी। पलनी ने कहा, "तब जाओ।"

दो दिन मे करुत्तम्मा ने एक टोकरी खरीद ली। अगले दिन जब नावे किनारे लगी तब वह बेचने के लिए मछली लेने समुद्र-तट पर पहुँची।

शादी के बाद इतनी जल्दी लड़की तट पर आ जाय, यह किसी को ठीक लगने वाली बात नही थी। कोच्चू ने पूछा, "तू क्यो इस काम के लिए आई है री?"

"मै भी तो इस तट की मल्लाहिन हूँ"—करुत्तम्मा ने जवाब दिया। फिर भी उसका तट पर जाना उस दिन लोगो के बीच चर्चा का विषय हो गया।

करुत्तम्मा को उस काम का कोई ज्ञान नही था। ऐसे काम पर जाना पडेगा, यह उसने कभी सोचा था ? कौन जाने ? उसकी माँ ने यह काम किया था जरूर। लेकिन चक्की ने भी शायद नही सोचा होगा कि उसकी बेटी को भी सिर पर भारी टोकरी लेकर बेचने के लिए घूमना पड़ेगा। नावो के किनारे लगने पर करुत्तम्मा भी दूसरी औरतो के साथ आगे बढी। एक व्यापारी ने एक नाव से थोक माल ले लिया। करुत्तम्मा और तीन-चार औरतो ने मिलकर उस माल को खरीद लिया।

दूसरी औरते करुत्तम्मा से आगे निकल गई। उन्हे अभ्यास था। करुत्तम्मा भारी टोकरी सिर पर लेकर दौड नही सकती थी। वह सबसे पीछे पड गई। कभी-कभी तीन-चार मील दूर जाना पडता था। करुत्तम्मा को न जगह से परिचय था, न वहाँ के लोगो से।

आगे जाने वाली सब स्त्रियाँ घरो मे जा चुकी थी। नया रास्ता ढूँढ-कर जाना उसे मालूम नही था। सब घरो मे उसने पूछा। कही से जवाब मिला कि खरीद चुके है, कही दाम नही पटा, तो कही मछली ही पसन्द नही आई। काफी दूर तक ढोने पर भी माल नही बिका। घाटे पर भी बेच देने का उसका मन हुआ। लौटाकर कैसे ले जाती ? इस तरह अन्त मे घाटे पर ही बेचकर वह थकी-माँदी घर लौटी। उस दिन एक सन्तोष की बात यह हुई कि वह कुछ घरो मे आगे माल देने की बात पक्की कर आई।

पलनी बैठा हुआ बीडी पी रहा था। करुत्तम्मा बहुत थक गई थी। वास्तव मे उससे चला ही नही जाता था। उसने आशा की थी कि उसकी दशा देखकर पलनी पसीजेगा और कुछ पूछेगा। कम-से-कम इतना तो पूछेगा कि 'कितना मिला ?' लेकिन पलनी ने कुछ भी नही पूछा। इस व्यवहार के खिलाफ़ वह कुछ कर भी नही सकती थी।

वह उसकी पत्नी थी। हक की बात छोड भी दी जाय तो भी उसका

कुछ कर्त्तव्य तो था ही। उसने पूछा, "खाना खाया ?"

पलनी ने जवाब दिया, "हाँ।"

नहाने के बाद बदलने के लिए उसके पास कोई कपड़ा नही था। वह गीला कपड़ा ही पहने रही।

उसने बिना पूछे ही उस दिन का अपना अनुभव सुनाना शुरू किया। उसने कहा कि उस दिन घाटा होने पर भी आगे की बिक्री की बात वह तय करके आई है। एक बात और वह कहना चाहती है। उसने पलनी से कहा कि वह किसी 'कम्बा' जाल वाले के हाथ उसे काम मे लगा दे।

पलनी ने जवाब दिया, "मुझसे यह सब काम नही होगा।"

दूसरे दिन 'बटोर' मे 'आयिला' मछली मिली। करुत्तम्मा के पास जितना पैसा था उतने से उसने आयिला खरीद ली। वह उस दिन भी सबके पीछे गई। दूसरी औरतो ने एक आने मे दो मछली की दर से बेची। करुत्तम्मा ने दो आने में पाँच की दर से बेची। लाभ कम होने पर भी उसे कुछ घरो मे रोज मछली देने की सुविधा हो गई। उन घर वालो ने नई मछली वाली के बारे मे अच्छा मत प्रकट किया।

तीन-चार दिन के बाद तट पर एक बड़ा झगड़ा खड़ा हो गया। मछली बेचने जाने वाली औरते मिलकर करुत्तम्मा की शिकायत करने लगी। करुत्तम्मा किसी से कुछ नही कह सकती थी। वह खड़ी-खड़ी रोती रही। एक ने गुस्से मे कहा, "वहाँ किसी मुसलमान के साथ रहती थी। अब यहाँ के तट का सर्वनाश करने आई है।"

एक दूसरी ने कहा, "उसे काम तो मिलेगा ही। सब घरो मे मर्द लोग उसीसे मछली खरीदने को कहेगे। यह तो ऐसे ही सज-धजकर घूमने और मर्दों को फँसाने वाली है ही।"

करुत्तम्मा के सामने यह सब कहा गया। सुनकर उसकी आँखो के सामने अँधेरा छा गया। कान बन्द हो गए। उसका पक्ष लेने वाला इस संसार में कोई नही था। किसी ने भी उसकी वास्तविक स्थिति नही समझी; दूसरी मल्लहिनों की तरह काम करके जीने का भी उसे हक नही था।

समुद्र से लौटने पर पलनी ने उस दिन उससे यह भी नही पूछा कि उस दिन वह काम पर गई थी कि नही। उसने करुत्तम्मा की तरफ सिर्फ देखा। रुआसा चेहरा देखना उसके लिए कोई नई बात नही थी। उन दिनो वह उस तरह का ही चेहरा देखा करता था। लेकिन उस दिन चेहरा रोज से ज्यादा कुम्हलाया हुआ था। पलनी ने इसका कारण पूछा। करुत्तम्मा ने कहा, "कुछ नही।" बेचारी और क्या कहती? पूरा किस्सा कैसे सुनाती?

क्या तृक्कुन्नपुषा की औरतो मे से किसी से भी कोई गलती कभी नही हुई है? नीर्क्कुन्नम तट पर तो औरते जब आपस मे झगडती थी तो एक-दूसरी की कहानी भी सुना देती थी! लगता था कि सबकी अपनी-अपनी कहानी थी। यहाँ किसी के बारे मे भी करुत्तम्मा को कुछ नही मालूम हुआ। यदि कुछ मालूम हो जाता तो वह भी कुछ सुनाती। क्यो नही सुनाती? उसने खुद क्या अपराध किया था?

क्या लडके-लडकियाँ यहाँ पर साथ-साथ नही खेलते? उसने लडके-लडकियो को सीप चुनते और छोटी मछलियाँ बटोरते देखा है। यहाँ की औरते भी तो बचपन बिताकर ही यहाँ बड़ी हुई है। करुत्तम्मा के मन मे हुआ कि कैसे भी वह इन लोगो की कहानियाँ जान जाय!

क्या यहाँ की हवा मे भी किसी पुरानी स्त्री की प्रेम-कहानी व्याप्त नही है? क्या किसी अपराधिनी मल्लाहिन की आत्मा यहाँ भी चाँदनी में मँडराती नही फिरती? ऐसी कहानी से सम्बन्धित कोई गाना किसी को गाते उसने नही सुना है।

करुत्तम्मा ने मछली बेचने जाने का काम छोड दिया। लेकिन एक दूसरा काम उसने शुरू किया—मछली खरीदना और उन मे नमक लगाकर सुखाकर रखना। जब मछली नही मिलेगी तब इसका अच्छा दाम वसूल हो जायगा। नही तो थोक माल लेने वालो के हाथ भी बेच सकती है।

इस तरह करुत्तम्मा वहाँ अपना एक अलग जीवन बिताने लगी।

वास्तव मे उसका हमेशा ही अपना एक निजी जीवन रहा है, जिसमे वह अकेली ही रहती आई है। यहाँ भी बिना किसी से दोस्ती लगाये। बिना किसी से बाते किये उसके अनेक दिन बीते हैं।

पलनी की भी वही बात थी। वह रोज़ काम पर जाता था, पर उसका जोश और उत्साह खत्म हो गया था। उसके साथी थे। लेकिन वह सबसे अलग रहता था।

पति-पत्नी का जीवन इस तरह एक सतह पर आ गया। शुरू के सब आवेग खत्म हो गए। यदि आवेश स्वाभाविक रूप से ठण्डे हो जायँ तो जीवन पर उनका कोई असर नही पडता। लेकिन इन दोनो की बात ऐसी नही हुई। प्रज्वलित होता हुआ आवेश एकाएक ठण्डा हो गया। जीवन की बन रही योजनाएँ अचानक भग हो गईं। दोनो के बीच सिर्फ एक भाव-शून्य पति-पत्नी का सम्बन्ध रह गया।

. ऐसी अवस्था से दोनो सन्तुष्ट थे कि नही, यह कोई नही कह सकता। तट पर करुत्तम्मा जैसे बातचीत का विषय बन गई, वैसे ही पलनी भी बातचीत का विषय बन गया। पलनी जब कही जाता तब उसे लगता कि उसके पीछे लोग आपस मे उसके बारे मे कुछ कानाफूसी करते रहे हैं।

चार-पाँच महीने पहले जब वह बिलकुल स्वतत्र था तब उसे देखकर कोई भी उससे प्रसन्न-भाव से कुशल-मंगल पूछे बिना नही रहता था। उसके बारे मे सबका अच्छा मत था। लेकिन आज जहाँ भी वह जाता है, लोगो को कुछ-न कुछ छिपाकर उसके बारे मे बोलने के लिए रहता है। कैसा परिवर्तन हो गया! पलनी ने किसी का भी कुछ नही बिगाडा था। . . . लेकिन उस दिन पागल की तरह बीच समुद्र मे नाव ले जाने के बाद से उसको पतवार नही लेने दी गई।

सब के मन मे एक डर समा गया कि पलनी को भ्रम हो गया है और करुत्तम्मा के अच्छा आचरण वाली न होने से पलनी के साथ समुद्र मे जाना खतरनाक होगा।

करुत्तम्मा के पक्ष मे एक शब्द भी कहने वाला कोई नही था। पलनी

की भी वही स्थिति थी। कोई उन दोनों के बारे मे कुछ भी कह सकता था। उसका प्रतिवाद करने वाला कोई नही था।

जिस नाव पर पलनी काम के लिए जाता था वह कुञ्ञन 'जालवाले' की थी। कुञ्ञन पुराने जमाने से ही नाव का मालिक रहा है। आज उसकी स्थिति गिरी हुई है। वह नाव ही उसके निर्वाह का एक-मात्र आधार थी। उसका घर और जमीन आदि सब दूसरो के हाथ मे चले गए हैं। आज उसकी नाव और जाल नष्ट हो जाय तो उसके लिए भूखो मरने की नौबत आ जाय। मजदूरी वह कर नही सकता था। ऊपर से वह बूढा भी हो गया था।

उसके कान मे भी करुत्तम्मा की कहानी पहुँची। उसको बडा धक्का लगा। एक भ्रष्टा नारी का पति रोज उसकी नाव मे जाता था। जब तक नाव नही लौटती तब तक उसे चैन नही मिलता था। समुद्र मे क्या नही हो सकता। सब-कुछ नष्ट हो सकता है।

कुञ्ञन ने बाते करने के लिए पलनी को छोडकर बाकी सब मछुआरो को बुलाया। सबको वह डर था। औरते उस डर को रोज बढाती और बचाव के लिए समुद्र-माता का नाम लेती थी। ऐसी परिस्थिति मे जब कुञ्ञन ने सबको बुलाया तब उन्हे थोडी तसल्ली हुई।

कुमारन ने कहा, "आपको अपनी नाव नष्ट होने का डर है। लेकिन हम लोगो को अपने जीवन का ही डर है। हे मालिक, यदि कुछ हो जाय तो बारह परिवार नष्ट हो जायँगे।"

वेलायुधन ने भी इसके विरुद्ध कुछ नही कहा। उसको भी शायद भीतर-ही-भीतर डर हो गया था। कुञ्ञन ने कहा,—"हाँ-हाँ, तुम ठीक ही कहते हो। समुद्र की बात पक्की है।"

इस बात के बारे मे किसी को भी सन्देह नही था। जमाना बदलता है। लेकिन समुद्र के नियमो मे कोई परिवर्तन नही होता।

कुमारन् ने डर भरी आवाज मे कहा, "जब हम समुद्र मे जायँ और उस समय वह मुसलमान कही आ जाय तो क्या स्थिति होगी।"

कुञ्ञन डर के मारे काँप गया। उसने कहा, "हाँ-हाँ, कुछ भी हो सकता है।"

आण्डी ने निराशा के भाव मे कहा, "सुनने में आया है कि वह अब भी यहाँ आया करता है।"

कुञ्ञन ने कहा, "ऐं, ऐसी बात है ? उसे खत्म ही क्यो नही कर दिया जाय ?"

"ऐसा करने से सकट बढ जायगा न मालिक ?"

घरो मे औरतो को चैन नही है। सब घबराहट में समय बिताती हैं। जब नाव समुद्र मे जाती है तब जब तक कि वह किनारे पर लौट नही आती तब तक सब व्याकुल रहती हैं। आण्डी ने आगे कहा, "औरतो का कहना यदि ठीक है तो समुद्र-माता ही बचाती आई है। यदि पुराना नियम चलता तो हममें से कोई भी अब तक जिन्दा नही रहता। सब-के-सब समुद्र के भीतर ही सड गए होते और सिर्फ हड्डी रह जाती।"

वेलुत्ता ने पप्पू से सुनी हुई बाते दुहराईं। चार-पाँच दिन पहले आधी रात के समय परी को वहाँ गाना गाते देखा गया था। इस तरह वह बराबर आया करता है।

इतने पर भी पलनी के प्रति सबकी सहानुभूति थी। बेचारा पलनी ! उसकी ऐसी तकदीर हो गई ! कोई क्या कर सकता था !

कुञ्ञन ने घबराकर पूछा, "अरे, इसके लिए क्या उपाय है ?"

कुमारन् की राय मे एक ही उपाय था। वह था पलनी को नाव से अलग कर देना।

यह राय सबको ठीक लगी। वही एक रास्ता था। कुमारन् ने उस दिन बीच समुद्र मे पलनी के नाव ले जाने की बात को शायद सौवी बार विस्तार से दुहराया। उसने आगे कहा, "उस पर फिर उस तरह का पागलपन सवार हो सकता है, मै तो नाव में बराबर उसके चेहरे की तरफ देखता रहता हूँ, जिससे यह पता चल जाय कि कब उसका रग बदलता है।"

सबने यह बात मान ली। पतवार उसके हाथ मे न रहे, पर डाँड भी कही गलत चला दे तो खतरा ही है न ?

कुमारन् की बात सबको ठीक लगी। लेकिन इससे सब को दुख भी हुआ। पलनी बचपन से ही कुञ्ञन की नाव पर काम करता रहा है। शुरू मे, उसे जाल फैलाने के काम मे लगाया गया था। बीच समुद्र में भी पलनी को काम मे लगाने मे किसी को सकोच नही होता था, क्योकि उसे कुछ हो भी जाय तो उसके लिए दुखी होने वाला कोई नहीं था। जाल फैलाने के काम से उठते-उठते वह पतवार सँभालने के काम तक आ गया। नाव पर पतवार सँभालन का काम करने के लिए हमेशा उसे औरो से दो रुपये अधिक ही मिलते थे। कुञ्ञन ने सब से कहा,'कुमारन्,पलनी के हाथ से पतवार ले लेने के बाद से आमदनी कम हो गई है न ?"

कुमारन् ने यह मान लिया। लेकिन संकट से बचने के लिए उपाय ही क्या था ? दूसरा कोई उपाय नही था।

पलनी से यह बात कहे कौन ? कहे कैसे। कुञ्ञन यह नही कर सकता था। उका मन तैयार नही होता था। उसने कुमारन से कहा, "तुम लोगो मे से कोई भी कह दे !"

कोई तैयार नही था। तब काम कैसे होता ? करुत्ता ने एक सुझाव दिया, "उसके आने के पहले ही नाव उतारकर चल दिया जाय। उसी तरह जरूरत पडने पर आदमी को भी बदला जा सकता है।"

कुञ्ञन को यह तरीका मालूम था। लेकिन उस तरह निकाले जाने वाले आदमी पीछे मालिक से झगड़ने आते है। पलनी जब आयगा तब वह उससे कैसे मिलेगा, यह भी परेशान करने वाला सवाल था।

लेकिन वही एक उपाय था। इसलिए सब नाव मे काम करने वालो ने मिलकर ऐसा ही करना तय किया। उसके बाद सब लौट गए। कुञ्ञन ने पलनी की जगह एक नये आदमी को रख लिया।

पलनी रोज की तरह सवेरे उठकर समुद्र-किनारे गया। तब तक नाव चली गई थी। उसने जोर से आवाज देकर पुकारा। उसकी आवाज

एक गम्भीर गर्जन की तरह गूँज गई। इतने जोर की आवाज़ किसी ने नही सुनी थी। पलनी को जब लगा कि वह जान-बूझकर छोड दिया गया है तब उसमे एक समुद्र की सन्तान की जो शक्तियाँ छिपी थी, सब एक साथ जागृत हो गईं। उसके शरीर की मास-पेशियाँ अजीब ढंग से फडकने लगी। उसे उसके काम से रोका गया था। उसका शरीर समुद्र के तूफान और आँधी-पानी से होड लगाने के लिए बना था। इतने दिनो से वह प्रकृति से होड लगाता आया है। अब उसे ऐसा करने से रोका जा रहा था। इस रुकावट से पलनी की शक्तियाँ जाग उठी। समुद्र मे आने वाली हवा ने पलनी के गर्जन की आवाज को आगे के घरो तक पहुँचा दिया। नाव वाले उसकी पुकार सुन भी लेते तो क्या लौट आते ? नही लौटते। जिस नाव को उसने प्यार किया था, वह समुद्र मे काम करने की उसकी अपात्रता का प्रख्यापन करती हुई आगे बढ़ती जा रही थी।

पलनी की जागृत शक्तियाँ काबू मे नही आती थी। उस घटना का अर्थ वह जानता था। वह अपना हक पाने के लिए समुद्र मे कूद पडा; मगर और शार्क की तरह वह पश्चिम की ओर बढा।

यह, मल्लाह होकर, समुद्र की सन्तान होकर जीने के उसके आग्रह का फल था। एक उत्तुग तरग—इतनी ऊँची कि वैसी पहले कभी नही देखी गई थी, उसके सिर के ऊपर से उठी और दूसरे ही क्षण उसने उसकी शक्तियो को निचोडकर उसे एक गेंद की तरह तट की जमीन पर फेक दिया।

पलनी हार गया। वह उठकर कुञ्ञन 'जाल वाले' की घर की तरफ दौडा। उसे कुञ्ञन से एक प्रश्न पूछना था, "क्या मै समुद्र मे काम करने के योग्य नही हूँ ?"

कुञ्ञन कोई जवाब न दे पाने से परेशान हुआ, "अरे वह ।'

"वह बात झूठ है, सर्वथा झूठ है। करुत्तम्मा भ्रष्टा नही है।

"फिर भी सब ऐसा ही कहते है न ?"

क्रोध से भरे पलनी ने गरजकर कहा, "ऐसा ही कहते है ? . . . . . ।" और वह वहाँ से लौटकर चला गया।

१६

पलनी जब लौटा तब करुत्तम्मा घबरा गई। क्या बात है, यह उसे मालूम नही हुआ। उसने कारण पूछा। पलनी ने जवाब दिया, "लोग कहते है कि तुम भ्रष्टा हो; इसलिए मै समुद्र मे जाने लायक नही रहा।"

करुत्तम्मा सुनकर स्तम्भित रह गई। उसे दूसरो को भ्रष्टा कहते उसने पहले सुना था। लेकिन पति के मुँह से उसने पहले-पहल आज ही सुना। भले ही उसने अपनी तरफ से नही, बल्कि दूसरो के शब्द ही क्यों न दुहराए हो।

इस तरह करुत्तम्मा के कारण एक अच्छे मल्लाह को धब्बा लग गया।

पलनी ने उससे पूछा, "यह बात भूलकर कि तू एक मल्लाह की लडकी है, तू बचपन मे क्यो उस मुसलमान छोकरे के साथ खेलने और हँसने गई?"

बात सही थी। लेकिन ऐसा सवाल अब तक किसी ने नही पूछा था। माँ ने शुरू मे डाटा तो था। लेकिन इतने स्पष्ट और सीधे प्रश्न का सामना करने की उसे जरूरत नही पडती थी। करुत्तम्मा व्याकुल हो गई। उस सवाल का मतलब वह समझ गई, लेकिन क्या जवाब देती? उसने अपनी गलती मान ली। उसने कहा, "ऐसा हो गया। माफ करो!"

पलनी का सवाल सीधे करुत्तम्मा से नही था। उसने कहा, "नही, तुम्हे कुछ क्यो कहना चाहिए? वह तुम्हारी गलती नहीं थी।"

करुत्तम्मा को जरा तसल्ली हुई। पति ने उसे माफ कर दिया। उसकी बात का वह विश्वास भी करता है। उसकी गलती सिर्फ सावधान

उसका पौरुष जागता गया।

करुत्तम्मा की शक्ति भी जागी। पलनी मल्लाह था, तो वह भी मल्लाहिन थी। उसे भी समुद्र के धन से जीना था। कोई भी मल्लाहिन नारियल का छिलका पीटकर और रस्सी बाँटकर गुजारा नही करती।

उसने पूछा, "मै मछली बेचने जाऊँ ?"

पलनी ने मना किया। उसने कहा, "नही, तू घर मे ही रह। भारी पेट लेकर बोझ ढोने की जरूरत नही है।"

"मुझे अभी कोई तकलीफ नही है। तकलीफ शुरू होने का समय अभी नही हुआ है।"

पलनी ने कहा, "तेरा खर्च मै चलाऊँगा, इसी विचार से मै तुझे लाया हूँ। इतनी शक्ति मुझमे है। तू चुपचाप रहे तो काफी है।"

करुत्तम्मा यह आदेश पूर्ण रूप से नही मान सकी। फिर भी उस आदेश मे एक बात छिपी थी। कसूरवार होने के काण उसे अपने भविष्य के बारे मे चिन्ता थी। पति अब उसे काम करने को नही कहेगा। वह उसका भरण-पोषण करेगा।

उसके जीवन मे यह दिन कभी न भुलाया जा सकने वाला था। यथार्थ मे उसने उसी दिन पत्नी का-सा अनुभव किया। अब उसे कमी किस बात की रही ? ऐसे ताकतवर पति वाली दूसरी स्त्री उस तट पर कही नही थी। वे पति-पत्नी के आपसी सम्बन्ध के बारे मे एक स्पष्ट निश्चय पर पहुँच गए। एक ही बात अब बाकी रही।

पलनी ने कहा, "करुत्तम्मा, एक ही बात जरूरी है। तुझे अपनी मर्यादा का पालन करना है। तब इस तट पर मल्लाहिन के तौर पर तुम्हारी गुज़र हो जायगी।"

इस तरह पलनी ने स्पष्ट रूप से एक माँग की। अब तक करुत्तम्मा पैर पकड़कर या छाती पर सिर रखकर वचन देती रही थी। अपनी तरफ़ से पलनी न इसके पहले माँग नही की थी।

वास्तव मे आवश्यकता न होने पर भी इस तरह की माँग करना

पति का हक होता है। शायद ऐसा न हो तो पत्नी को पूर्ण तृप्ति नही होती। ऐसी माँग विवाह-सस्कार मे भी शामिल रहती है। 'तुम्हे मर्यादा और नियम का पालन करना है' यह माँग पति-प्रेम की एक अविभाज्य कड़ी है।

अब पत्नी पूर्ण रूप से सतृप्त होकर पति के विशाल वक्ष मे विलीन हो गई। उसकी आँखो से नदी की धारा ही बह निकली। उसने पूछा, "ऐसा क्यो कहते हो ? मै अपराधिनी हूँ न ? अब अपनी मर्यादा और नियम भुलाकर मै चल सकती हूँ ?"

पलनी उसकी पीठ सहलाता रहा। उसने करुत्तम्मा को सात्वना दी और कहा, "रोओ नही, रोओ नही !"

ठण्डा पडा हुआ आवेश एक बार फिर तीव्र हो उठा। पलनी की बलिष्ठ भुजाओ ने उसे जोरो से आलिगन-पाश मे कस लिया। फिर वे आनन्द मे खो गए। पलनी के बारे मे, जिसके घर मे कोई नही था, चिन्ता करने के लिए एक व्यक्ति है करुत्तम्मा। करुत्तम्मा के लिए, जो निराश्रित हो गई थी, आश्रय के रूप मे एक व्यक्ति है पलनी। पलनी के लिए करुत्तम्मा और करुत्तम्मा के लिए पलनी है। दोनो साथ-साथ सब झझटो का सामना करते हुए आगे बढेगे।

नावे किनारे पर लग गईं। पलनी ने बिक्री की भीड देखी। उसने सोचा कि उसके साथी पूछते होगे कि आगे वह कैसे जियेगा। उसने मन में निश्चय किया कि वे जो चाहे करे। लेकिन वह हार मानने वाला नही है।

करुत्तम्मा एक बात पूछना चाहती थी, "क्या इन लोगो की औरतो मे से किसी से भी ऐसी कोई गलती नही हुई होगी ?"

"क्यो नही ? जरूर हुई होगी। सब झूठी है, अपनी बात छिपाती हैं।"

करुत्तम्मा चाहती थी कि वह सब जान जाय और एक-एक से गिन-गिन कर पूछे। उसने कहा, "आज नही तो किसी दिन मै सबसे

पूछूगी।"

नीव मजबूत हो गई। दोनो एक हो गए। फिर भी जीविकोपार्जन का प्रश्न हल करना बाकी ही रहा। करुत्तम्मा ने पूछा, "क्या करोगे यह क्यो नही बताते ?"

पलनी भी वही सोच रहा था। करुत्तम्मा ने आगे कहा, "मेरे पास बारह रुपये हैं।"

उससे तो कुछ नही होगा। एक फेकने वाला जाल लेने के लिए भी कम-से-कम तीस रुपये खर्च होगे। करुत्तम्मा को एक बात सूझ गई। उसने कहा, "काँटा क्यो न खरीदा जाय।"

पलनी ने कहा, "काँटा खरीदेगे तो एक छोटी नाव भी चाहिए न ?"

"तब एक और आदमी भी चाहिए। कौन है साथ देने वाला ?"

उस प्रश्न को गौण बताते हुए पलनी ने कहा, "वह कोई कठिनाई नही है। एक छोटी नाव हो जाय तो मै अकेला भी जाकर रोज के खर्च लायक कमा सकता हूँ।"

काँटा डालने के लिए जाने वाली पाँच-छ नावें उस तट पर थी। करुत्तम्मा ने कहा कि उनमे से एक किराये पर ले ली जाय। पलनी ने कहा, "कोई भी नही देगा री ! कुछ हो जाय तो नाव ही जो नष्ट हो जायगी सो !"

"तब और क्या उपाय है ?"

पलनी थोड़ी देर तक सोचता रहा। उसने कहा, "वह पैसा निकाल, मै एक काँटा ही खरीद लाऊँ !"

करुत्तम्मा ने रुपये निकालकर दे दिये।

जीने का निश्चय करन वाले व्यक्ति की पत्नी ही वास्तव मे भाग्यवती होती है। घर, सामान, नाव, जाल आदि अनेक चीजे भविष्य के अन्तरिक्ष मे दृष्टिगोचर होने लगी। मण्णारशाला का मेला खत्म हो गया। लेकिन अगले साल फिर होगा।

करुत्तम्मा ने भगवान् से प्रार्थना की कि उसके पेट मे जो बच्चा है वह

लडकी न हो। लड़की होने का नतीजा उसने पूरा-पूरा भोग लिया है। यदि लडकी हो जाय तो सम्भव है कि उसकी कहानी दुहराई जाय। नही, वह उसे किसी लडके के साथ खेलने-बढने नही देगी। उसे किसी प्रेम-बन्धन मे नही बँधना चाहिए। यदि लडका हुआ तो वह उसके कारण किसी लडकी का जीवन नही बिगडने देगी।

उसने खाना तैयार किया। आज पहले की तरह एक ही बरतन मे वह पति के साथ खाना खा सकती है, ऐसा उसे लगा। उसने सोचा कि आज वह बडा-बडा कौर उठाकर पति के मुह मे देगी। वह इस तरह का दिवा-स्वप्न देखती रही।

भूखी रहना पड़े तो उसे वह सह सकती है। पति उसे प्यार करता है। उसने उसे माफ कर दिया है। अब और क्या चाहिए? उसके ईश्वर ने उसकी रक्षा की है।

रात को पलनी छोटा और बडा, दोनो कॉटा खरीदकर लौटा। ठीक ढग से क्रमवार काँटो में रस्सी पिरोकर बाँध दी। इस तरह सब तैयारी कर ली गई।

जब सब लोग सो गए तब काँटा उठाकर पलनी जाने के लिए तैयार हो गया। करुत्तम्मा ने पूछा, ''क्या विचार है?"

उसने कहा कि किसी की नाव पानी मे ठेल कर वह चला जायगा और मछली पकडकर लोगो के सोकर उठने से पहले ही लौट आयगा। उसने कहा "मुझे भी समुद्र से जीवन-निर्वाह करना है।"

करुत्तम्मा डर गई। रात के समय समुद्र में जाना! ऐसे में न जाने कितने सकट आ सकते है!

उसने कहा, "बाप रे बाप! वह····"

"उँह, क्या है री?"

"अकेले हो न?"

"मै समुद्र की सन्तान हूँ।"

जब वह आगे बढा तब करुत्तम्मा ने कहा, "मछली खोजते-खोजते

समुद्र में दूर तक न जाना !"

पलनी ने कोई जवाब नही दिया।

करुत्तम्मा को नीद नही आई। वह बाहर पश्चिम की ओर देखती हुई एक नारियल के पेड के नीचे बैठी रही। उसने नाव को जरा दक्षिण की तरफ से समुद्र मे उतरते देखा। उसकी हार्दिक प्रार्थना ने अवश्य उसके लिए एक रक्षा-कवच का काम किया। पलनी लोगो के जग जाने के पहले ही मछली मारकर लौट आया। सुबह ही कातिकिपल्ली हाट मे जाकर उन्हें बेचा। आठ रुपये मिले।

एक छोटी नाव खरीदना जरूरी था। पैसा कमाकर बचत से खरीदने मे थोडा समय लग जायगा। डेढ सौ रुपये हो तो एक नाव खरीदी जा सकती है। इसके लिए एक उपाय था। करुत्तम्मा के पास सोने का गहना था, लेकिन उसका गहना बेचकर नाव लेने के लिए पलनी सहमत नही था। उसने पूछा, "वह तो तेरे लालची बाप की कमाई का है न ?"

करुत्तम्मा ने कहा, "ना, वह मेरा है। माँ ने ही मेरे लिए बनवा दिया था।"

"फिर भी स्त्री का गहना बेचकर . "

"तब क्या मैं दूसरी हूँ ?"

'हाँ'—कहने के लिए वह तैयार नही था। लेकिन पत्नी का गहना बेचकर नाव खरीदना अपमानजनक था। फिर भी सोने का गहना ले जाकर पलनी ने बेचा और एक नाव खरीदी। नाव बहुत छोटी थी। पैसा उतनी ही बडी के लिए था।

पलनी के नाव खरीदने की बात सारे तट पर फैल गई। सम्भव है कि उसके बारे में भी कहानियाँ गढी गई होगी।

पलनी की नई योजना बुरी नही थी। कभी-कभी दस-दस रुपये तक की आमदनी हो जाती थी। कभी कुछ भी नही मिला, ऐसा भी होता था। पलनी के मजबूत हाथो की मास-पेशियाँ इतनी छोटी नाव के काम

से सन्तुष्ट नही होती थी। पलनी को नाव बहुत छोटी लगती थी। उसे लगा कि एक बडी नाव जल्दी ही खरीदनी चाहिए। उसकी पतवार सँभाल-कर वह 'चाकरा' मे भाग लेगा।

करुत्तम्मा ने पूछा,"नाव बड़ी होगी तो अकेले कैसे सँभाल पाओगे? साथ मे जाने के लिए तो कोई तैयार होगा नही।"

पलनी ने कहा, "जब नाव हो जायगी तब सब कुत्ते की तरह आयँगे।"

उसने अपना यह निश्चय भी सुनाया कि आगे वह दूसरो की नाव मे काम पर नही जायगा।

करुत्तम्मा की स्थिति बदलने लगी। समुद्र मे जाने पर पलनी को हमेशा पत्नी के बारे मे चिन्ता बनी रहती थी। वह जल्दी ही लौट आने के लिए प्रेरित होता था। एक दिन जब वह लौटा तब उसने अपने घर पर चार-पाँच औरतो को देखा। उन लोगो ने हँसते हुए कहा, "लडकी हुई है।"

बच्ची को सब नहला रही थी। वह जोर-जोर से रो रही थी। धाय ने बच्ची को नहला कर पलनी की ओर बढा दिया। पलनी को मालूम नही था कि उसे कैसे लेना चाहिए। उसने कभी किसी बच्चे को गोद मे नही लिया था।

पति-पत्नी जब अकेले हुए तब पलनी ने पूछा, "क्यो री! तुझे अच्छा नही लगता क्या?"

करुत्तम्मा जरा उदास दीख रही थी। उसने कहा, "लडका होता तो।" उसने आगे पूछा, "क्या पिता को ऐसा नही लगता?"

"मुझे ऐसा नहीं लगता।"

"झूठ कह रहे हो।"

"न। लडका हो या लडकी, क्या फर्क है?"

करुत्तम्मा ने अपना निश्चय एक वाक्य मे सुनाया, "जो भी हो, मै इसे एक दूसरी करुत्तम्मा नही होने दूँगी।" एक हँसी के साथ पलनी

ने कहा, "तब तो पलनी भी एक चेम्पन नही बनेगा।"

उस छोटी बच्ची के आगमन ने उन दोनो के जीवन को गौरवान्वित बना दिया। दोनो एक तीसरे प्राणी के लिए जीने लगे। पलनी के लिए वह आनन्द का केन्द्र बन गया। समुद्र मे मछली पकडते समय उसके मन के सामने बच्ची की आँखे चमक उठती थी। वह तुरन्त घर पर जाकर बच्ची को गोद मे उठा लेने के लिए अधीर हो उठता था। बच्ची को कैसे लेना चाहिए, यह करुत्तम्मा ने उसे सिखा दिया। कभी-कभी वह पलनी से कहती—"इस तरह हमेशा उसे गोद मे उठाये रहने से वह बिगड़ जायगी।" यह सुनकर डर से पलनी बच्ची को तुरन्त नीचे लिटा देता।

करुत्तम्मा की बात कही जाय तो बच्ची के जन्म से उसे एक दु ख हुआ। उसकी माँ बच्ची को नही देख सकी। बच्ची को देखते ही उसे पचमी की याद आ जाती थी। पचमी जब इतनी ही छोटी थी तब वह हाथ-पाँव फेककर खेला करती थी। वह उसे प्राणो से बढकर कैसे प्यार करती थी। पचमी ने कोई गलती नही की थी। लेकिन उससे भी करुत्तम्मा का विच्छेद हो गया। पचमी अब किस हालत मे होगी, यह करुत्तम्मा को नही मालूम था। उसकी चिन्ता उसे असह्य मालूम पडती थी।

एक दिन पलनी ने एक नया समाचार सुनाया। चेम्पन ने चेर्तला या कही से एक औरत को लाकर घर मे रख लिया है। नीरक्कुन्नम से कोई आया था। उसीसे यह खबर लोगो को मिली है। इस तरह जिस घर मे करुत्तम्मा ने जन्म लिया, जहाँ वह पली और जिस घर मे उसकी माँ का अधिकार था वहाँ अब एक अनजान औरत गृह-नायिका होकर आई है। उस घर को उसकी माँ ने ही बनवाया था। वही उसकी स्वामिनी थी। पचमी के साथ इस अपरिचित औरत का कैसा व्यवहार होगा?

पलनी जब बच्ची को लेकर घूमता था तब उसे याद आ जाता था कि उसका बाप उसे उसी तरह लेकर खिलाया करता था। बाप उसे जरूर प्यार करता था।

जब करुत्तम्मा को पलनी के ऊपर अपना अधिकार महसूस होने लगा

जब उसे लगा कि वह उसकी गलती भी निकाल सकती है, तब मौका पाकर उसने अपने घर की बाते उठाई, "शादी के बाद हम दोनो अगर वहाँ अपने ही घर मे रहते तो. . बप्पा तो यही चाहता था न !"

पलनी ने पूछा, "जिस मल्लाह मे ताकत है वह मल्लाहिन के घर मे रह सकता है री ?"

फिर एक बार, जब पलनी बच्चे को बैठा खिला रहा था, करुत्तम्मा ने कहा, "मुझे इसका चेहरा देखकर पचमी की याद आ जाती है। मै उसे कभी नीचे नही रखती थी।"

सजल नेत्रों से उसने आगे कहा, "बेचारी अब सोतेली माँ की मार खाती होगी।"

पलनी ने पूछा, "मार क्यों खाती होगी ?"

करुत्तम्मा ने कहा, "सोतेली माताएँ ऐसा ही करती है।"

"तब क्या किया जाय ?"

होशियारी से करुत्तम्मा ने कहा, "उसे जरा देखने की इच्छा होती है।"

पलनी ने कुछ नही कहा।

फिर एक बार अच्छा मोका पाकर करुत्तम्मा ने पूछा, "पचमी को देख आने के लिए मै जरा नीरक्कुन्नम जाऊँगी ?"

पलनी को पसन्द नही आया। एक हृदयहारी मन्द मुस्कान के साथ करुत्तम्मा ने कहा, "हमारी भी एक लड़की है। वह भी बाप को देखने के लिए नही आयगी।"

कठोर स्वर मे पलनी ने पूछा, "तुम्हे क्या चाहिए। पचमी को देखने के बहाने तू फिर उस मुसलमान छोकरे को देख आना चाहती है ?"

करुत्तम्मा चौक गई। पलनी जरा भी नही बदला। मुसलमान छोकरे को काली छाया अब भी मिटी नही है। क्या वह कभी मिटेगी नही ?

करुत्तम्मा को लगा कि उसने एक गलत कदम उठाया है। उसने

कहा, "नहीं, नहीं ! मैं आगे वहाँ कभी नहीं जाऊँगी, न जाने की बात ही उठाऊँगी।"

उसे डर लगा कि कहीं जीवन फिर कटु न हो जाय। रोते हुए उसने पूछा, "क्या मेरे ऊपर विश्वास नहीं है ?"

जीवन-भर लम्बाती रहने वाली वह काली छाया ! इससे बचने का क्या उपाय है ? .. ..कोई नहीं ! ..... जीवन में निश्चिन्तता लाने के लिए फिर प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

१७

एक पत्नी जब मर जाती है तब उसकी आत्मा पति के शयनागार में रात के समय मँडराती है। मृत्यु के बाद पत्नी की आत्मा की यही स्थिति है।

"किसी दूसरे से शादी कर लेना"—यह बात चक्की ने कैसे कह दी ? शायद परिस्थिति को देखकर उसे यही सलाह ठीक जँची होगी। नही तो चेम्पन के सुख के लिए जरूरी समझकर ऐसा कहा होगा।

चक्की के मरने के बाद चेम्पन पागल की तरह पूछता रहा, "मै क्या करूँ चक्की ? तू मुझे छोडकर चली गई ?"

सबने कहा कि चक्की के मरने से चेम्पन का दाहिना हाथ भी मानो कट गया। बात भी ठीक ही थी। उसकी सारी समृद्धि का कारण चक्की थी। उसकी तरह होशियार कोई दूसरी स्त्री वहाँ नही थी।

अब चेम्पन क्या कर सकता था ? क्या पचमी-जैसी छोटी बच्ची से घर सँभलवाता ? करुत्तम्मा तो आती नही। चेम्पन उसको बुलाता भी नही। उसका नियम था 'धुएँ वाली लकडी को बाहर ही फेक देना चाहिए।'

चक्की के अन्तिम शब्द उसके कान मे गूँजते रहे कि 'किसी दूसरे से शादी कर लेना !' उसने अच्चन से राय ली।

अच्चन ने कहा, "एक को लाये बिना काम नही चलेगा। बच्ची की देख-भाल के लिए भी एक माँ की जरूरत है न ?"

"लेकिन कोई भी आये, वह मेरी चक्की की बराबरी नही कर सकती।"

"ना, उसके-जैसी दूसरी कोई होगी ही नही।"

पचमी को नल्लम्मा के यहाँ छोड़कर चेम्पन और अच्चन खोज मे निकले ।

अच्चन ने इस सम्बन्ध मे चेम्पन को सलाह दी कि उसकी स्थिति के अनुसार ही अच्छी स्थिति की अनुकूल पत्नी ढूढनी चाहिए ।

चेम्पन को सलाह ठीक लगी । इतना ही नही, अब तो वह पहले की तरह काम भी नही कर सकता । उसका तन और मन दोनो कमजोर हो गए । अब उसे आराम की जरूरत थी ।

जीवन मे सुख भोगने की इच्छा ने भी अब सिर उठाया । इस बात से उसे बहुत दुख हुआ कि चक्की, जिसने अपने जीवन मे काफी कष्ट उठाया था, कुछ सुख नही भोग सकी ।

चेम्पन और अच्चन को खबर लगी कि पल्लिकुन्नम 'जालवाला' मर गया है और उसकी पत्नी पाप्पी अब आर्थिक कष्ट मे है ।

चम्पन ने पाप्पी को लाने की बात बिना कुछ सोचे-विचारे ही मान ली । सुख भोगने की अभिलाषा वास्तव मे पाप्पी के घर से ही अकुरित हुई थी न !

पाप्पी को बात मजूर हो गई । घटवार आदि को खबर देने की कोई जरूरत नही है यही पाप्पी की भी राय थी । चेम्पन पाप्पी को बुलाकर घर लाया । पाप्पी के साथ उसका एक बडा बेटा भी था ।

पाप्पी पति के मरने के बाद आर्थिक कष्ट मे पड गई थी । तो भी वह अब भी एक सुन्दरी थी । उसके चेहरे पर कुलीनता का भाव था । लेकिन पचमी को घर में आई हुई नई स्त्री पसन्द नही आई । वह दौड-कर नल्लम्मा के पास गई और उससे कुछ कहा । नल्लम्मा ने उसे सम-झाया, "बेटी, तू कुछ मत कह !"

"कहने मे क्या है ?"

"बाप को गुस्सा आयगा ।"

यह सुनकर पचमी कारण जाने बिना ही रो पडी ।

चेम्पन को पहले-पहल उस घर मे खामियाँ मालूम हुईं । उसे लगा

कि उसका घर देखने मे अच्छा नही लगता। पाप्पी को उसीमे ले आना पडा। उसने एक अजीब तरह को हँसी के साथ कहा, "यह घर तो नाव और जाल होने के पहले ही बनाया गया था। मेरी चक्की का भी इन बातो की तरफ ज्यादा ध्यान नही रहता था। इसलिए बाद को भी मकान ठीक से नही बनाया जा सका।"

पाप्पी के बडे मकान मे चेम्पन गया हुआ था। अब वह मकान दूसरो के हाथ लग गया। फिर भी, उसका जीवन तो उसीमे बीता था।

चेम्पन ने तय किया कि थोडी जमीन लेकर नया घर बनवाया जाय। उसने अपना विचार नई पत्नी को भी सुनाया।

चेम्पन यह जानने के लिए उत्सुक था कि उसकी स्नेहमयी चक्की को, जिसने उसे दूसरी शादी करने का आदेश दिया था, यह नई आई हुई पसन्द है या नही। चेम्पन ने चारों ओर देखा। उसे लगा कि उसकी चक्की जरूर उस वातावरण मे है।

चेम्पन ने पचमी को बुलाया, जो उत्तर के घर मे नल्लम्मा के पास खडी-खडी रो रही थी। सोतेली माँ से उसका परिचय कराना था न!

नल्लम्मा ने पचमी से कहा, "जा बेटी!"

पचमी ने रोते-रोते कहा, "मै नही जाऊँगी।"

"मौसी भी साथ चलती है बेटी, चल!"

नल्लम्मा ने आँचल के छोर से पचमी का मुँह पोछते हुए उसे रोने से मना किया। पचमी का हाथ पकडे हुए उसे लेकर वह चेम्पन के घर गई।

पाप्पी ने बच्ची को ध्यान से देखकर पूछा, "रोती क्यो है री?"

चेम्पन ने कहा, "बच्ची ही है न! माँ को याद करके रोती होगी"

बेटी को गले लगाते हुए चेम्पन ने कहा, "रो नही बिटिया, यह छोटी मा वडी अच्छी है।"

बच्ची को शान्त करने के लिए चेम्पन बहुत-कुछ कह सकता था। जैसे, उसकी माँ के कहे अनुसार ही वह छोटी माँ को लाया है। छोटी माँ

खासकर उसकी देख-भाल के लिए आई है, इन्हे माँ की तरह ही मानना आदि-आदि ।

पाप्पी का बेटा गगादत्त उस घर मे एक अनावश्यक कड़ी-जैसा लगता था। सौतेले बाप से या पचमी से उसकी नही पटती थी। गगादत्त बड़ा हो गया था। पाप्पी के लिए भी वह एक भार स्वरूप था। ऐसा लगता था कि पचमी के मन मे यह सवाल उठता था कि यह लडका उधर क्यो आया है। उसी तरह, ऐसा मालूम पडता था कि लडके को खुद भी लगता था कि वह वहाँ क्यों आया है। शायद उसको यह भी लगता होगा कि उसकी माँ को दूसरे की शरण मे नही आना चाहिए था। वह सिर्फ अपने भरण-पोषण का ही सवाल हल करने नही, वरन् अपने लडके को परेशान करने के लिए भी जान-बूझकर आई है।

चेम्पन नाव खरीदने के लिए जब पल्लिक्कुन्नम गया था तब वहाँ जो भोजन किया था, उसका स्वाद वह अब भी नही भूला था। वह भोजन उसकी सुख-कल्पना की एक मुख्य कडी था। अब वह तीन बार वैसा ही भोजन कर सकता है।

लेकिन वहाँ की तरह यहाँ इतनी अच्छी तरकारी नही होती। भोजन मे पल्लिक्कुन्नम-घर के भोजन की सफाई और व्यवस्था भी नही थी।

चक्की ने जो पलग खरीदा था उस पर वह नही सोई। चेम्पन न तो उसे मोटी बना सका, न गोरी बना सका। इसके पहले ही चक्की हमेशा के लिए विदा हो गई।

चेम्पन ने तोशक भी सिलवा लिया था। वैसा ही तोशक, जैसा उसने पल्लिक्कुन्नम मे देखा था। लेकिन पाप्पी यहाँ आने पर दुबलाती नजर आई। चेम्पन को सन्देह हुआ कि शायद इस तट की हवा ही ऐसी है कि गोरे आदमी का रग भी बिगड जाता है। पाप्पी का पहले का तेज भी चेम्पन को घटता मालूम हुआ।

पल्लिक्कुन्नम से लौटने के बाद, चेम्पन के मन मे सुख-भोग की जो

कल्पना थी उसको सार्थक करने का जब समय आया तब उसे मालूम हुआ कि पति-पत्नी की भुजाओं मे न ताकत है, न प्रेम-चुम्बनों मे कोई गरमी है। चम्पन के मुँह से निकला, "ओ मेरी चक्की . . !" पाप्पी भी नई स्थिति मे घुल-मिल न सकी। दोनो मिलकर एक नही हो सके। दोनो के बीच दो और आत्माएँ थी।

उस घर मे हँसने-बोलने की कोशिश जरूर हुई। लेकिन वह बेजान की हँसी होती थी और जबरदस्ती अपनाया गया रग-ढग होता था।

उस नये जीवन मे भी एक शोभा थी। लेकिन साथ-साथ चेम्पन को एक बेचैनी भी मालूम होती थी। एक अज्ञात अकथनीय उत्कण्ठा उसे बेचैन बना देती थी। वह काम के विना नही रह सकता था। बिना काम किये वह कभी नही रहा था।

कण्डनकोरन मलमल की लुगी पहनकर किनारे वाली महीन चादर कन्धे पर लटकाये, नाव किनारे पर लगते समय समुद्र-तट पर जाया करता था और माल की बिक्री करता था। लेकिन चेम्पन ! चक्की के साथ आगे बढने की जो उसकी तीव्र इच्छा थी वह भी बुझ गई। अब कण्डन-कोरन-जैसा बनने की कोशिश कहाँ तक सफल हो सकती थी ?

आर्थिक कष्ट न होने पर भी चेम्पन अच्छा नही दीखता था। लेकिन खून की कमी से रग जरा सफेद हो गया था। एक दिन चेम्पन ने पाप्पी से कहा, "आजकल हिस्सा बहुत कम मिलने लगा है।"

पाप्पी को इसके बारे मे कुछ नही कहना था। शायद उसको पहले भी ऐसी बातो के बारे मे कुछ कहने की आदत नही थी। चेम्पन ने आगे कहा, "मेरा हिस्सा पहले इस तरह का नही होता था। पहले नाव का, जाल का और ऊपर से पतवार चलाने का यह सब हिस्सा आता था। उस पर, मेरी नाव का बटोर भी दूसरो से दुगुना हुआ करता था।"

बिलकुल सच्ची बाते कहते समय भी चेम्पन के चेहरे पर जरा सकोच का भाव था। उसने आगे कहा, "अपना हिस्सा लाकर जब मैं चक्की के हाथ मे देता था तब वह किस तरह बढ़ जाता था, इसका क्या कहना !"

उसने बताया कि चक्की ने कितना परिश्रम करके कमाया था। कैसे वह मछली बेचने जाया करती थी, कैसे कम्बा जाल खीचने जाती थी आदि-आदि। बाते करते-करते चेम्पन ने पाप्पी की ओर देखा। उसका चेहरा उतरा हुआ देखकर उसने झट से कहा, "तुमको वह सब करन के लिए नही कह रहा हूँ। चक्की ने बचपन से ही काम करना सीखा था। लेकिन तुम्हारी बात ऐसी नही है ।"

फिर भी, पाप्पी को ऐसा न कर सकने की बात से तकलीफ है, ऐसा चेम्पन को लगा। उस घर मे जो-कुछ भी है, सोने का पलग तक, चक्की के प्रयत्न का फल है।

दूसरी ओर गगादत्त माँ को तग करता रहता था। माँ ने आशा दिलाई थी कि वह उसके लिए कुछ इन्तजाम कर देगी। लेकिन अब तक वह कुछ नही कर सकी थी । लडके ने जिद पकडी कि वह उसे जल्दी विदा कर दे। उसने कहा, "उस लडकी से मुझे डर लगता है, वह कुछ कह देगी। उसके पहले ही मुझे चला जाना चाहिए।"

कुछ रुपयो का इन्तजाम करके गगादत्त को कैसे विदा करे ? घर मे पैसा तो था नही, यह पाप्पी जानती थी। माँगना बुरा लगता था।

पचमी ने एक दूसरी चाल चली। वह हमेशा बाप के साथ रहने लगी, जिससे पाप्पी को बाप के साथ ज्यादा समय बिताने का मौका न मिले। पाप्पी ने भी पचमी को हटाने की कोशिश नही की।

पाप्पी पहले अच्छी स्थिति मे थी। जब सब नष्ट हो गया तब जीने का उसने यही उपाय अपनाया। इस तरह वह चेम्पन के यहाँ आई। उसने जीवन मे सुख की कमी होने से या एक पति के साथ रहने की उत्कट आकाक्षा से प्रेरित होकर शादी करना स्वीकार नही किया था। गुजारे के लायक सम्पत्ति बच गई होती तो वह ऐसा काम कभी नही करती। अब वह सिर्फ एक पत्नी है, तो भी उसके हृदय मे, उसका भरण-पोषण करने वाले के प्रति भक्ति है। वह अपना हक साबित करने की कोशिश नहीं करती। वह हुक्म नहीं चलाती। खुद हुक्म का पालन करती है।

चक्की ने कमाया था। वैसा करके वह पति की मदद नही कर सकती थी, इसका शायद उसे दु ख भी होता होगा। चेम्पन वैसा करने के लिए उसे नही कहता। फिर भी उसके मन मे ऐसी इच्छा होना स्वाभाविक था न!

क्या चक्की ने एक ऐसी ही पत्नी को लाने की सलाह दी थी? नही, उसने अपनी ही जैसी को लाने के लिए कहा होगा, जो उसके बनाये हुए घर को और समृद्ध बनाने वाली और पति की अच्छी तरह सेवा-शुश्रूषा करने वाली होती।

पचमी बडी नटखट हो गई। वह छोटी माँ को कुछ समझती ही नही थी, गगादत्त को वह मु ँह बनाकर चिढाती थी। उसे लगता था कि वह दोनो अनावश्यक ही वहाॅ आ टपके हैं।

एक दिन पाप्पी चल रही थी तो पचमी पीछे से उसके चलने की नकल कर रही थी। पाप्पी एकाएक मुड़ी और पचमी को नकल करते देख लिया। नल्लम्मा अपने यहाँ से यह तमाशा देखकर हँस रही थी। पाप्पी रो पडी।

चेम्पन जब घर लौटा तब पाप्पी ने कहा, "इस लडकी को बहुत सावधानी से रखना चाहिए।"

चेम्पन ने पूछा, "क्या बात है?"

पाप्पी ने शिकायत न करके कहा, "इसे दूसरी जगह जाकर रहना है। प्यार मन मे रखना काफी है। यह बडी बदमाश होती जा रही है।"

चेम्पन ने फिर पूछा कि बात क्या है। पाप्पी को डर था कि चेम्पन को अपनी बेटी की शिकायत अच्छी नही लगेगी। इसलिए डरते-डरते ही पाप्पी ने कहा था। चेम्पन को भी, माँ के न रहने से पचमी का बहुत खयाल रहता था। बहुत सयम के साथ पाप्पी ने कहा, "मुझे यह कुछ समझती ही नही। पड़ोस वाली स्त्रियाँ सब इसे चढा देती है।

चेम्पन ने पचमी को बुलाया। वह नल्लम्मा के यहाॅ थी। पुकार सुनकर वह डर गई। पाँच-छै बार पुकारने के बाद वह आई। पाप्पी ने उसे मारने को नही कहा। फिर भी गुस्से मे चेम्पन ने उसे दो थप्पड लगा दिये। पचमी के प्रति नही, पडोसियो के प्रति जो गुस्सा था वह इस

रूप मे प्रकट हुआ।

पचमी अपनी माँ को पुकार-पुकारकर रोने लगी। पडोसियो का दिल क्षुब्ध हो गया। नल्लम्मा दौडी आई और उसे पकड़ लिया। उसने पाप्पी से पूछा, "यह क्या है री ? इस मातृहीन बच्ची को मरवा देना चाहती है ?"

पाप्पी ने जवाब दिया, "वह बिगड न जाय इसी विचार से न . . . !"

उस जवाब मे, उसके मन मे पडोसियो से जो गुस्सा था, सो भी मिला हुआ था।

नल्लम्मा ने पूछा, "वह कैसे बिगड़ रही है ?"

चेम्पन की ओर देखकर नल्लम्मा ने कहा, "औरत को देखकर बच्ची को नही मार डालना है, समझे ?"

पाप्पी ने नल्लम्मा से पूछा, "तुझे इससे क्या मतलब है ?"

नल्लम्मा ने कहा, "तू जिस धन से खाती-पीती है उसे बनाने वाली वह चक्की मरते समय इस बच्ची को मेरे ही हाथो में सौप गई है।"

पाप्पी सीधी होने पर मल्लाहिन तो थी ही। उसका मल्लाहिनपन जाग उठा। उसने कहा, "तू चुप हो जा ! मै पाप्पी हूँ, पल्लिक्कुन्नम कण्डनकोरन के साथ रह चकी हूँ।"

नल्लम्मा की तरफ से मुँहतोड जवाब आया, "अब तो चेम्पन की ही मल्लाहिन है न ? खाती है चक्की की कमाई हुई सम्पत्ति से। खुद ही चुप हो जा !"

चेम्पन निस्सहायावस्था मे खडा रहा। पाप्पी भी अपने को गुस्से मे भूल गई। उसने कहा "तेरा इससे क्या नाता है ?"

"चेम्पन तेरा कौन है ?"

नल्लम्मा भी गुस्से से काँप गई। उसने कहा, "जा-जा ! मेरा भी अधिकार है, जान को हथेली पर रखकर समुद्र मे जाकर मेरी और मेरे बच्चो की परवरिश करने वाले मेरे पति का यह बचपन का साथी है, में अपने पति को प्यार करती हूँ। इसलिए चेम्पन

की बातो के बारे मे भी बोलने का मेरा अधिकार है। चक्की के आने पर उससे मेरा बहुत स्नेह हो गया था। कभी-कभी आपस मे हम झगड़ भी लेती थी। फिर भी हम एक-दूसरे को बहुत चाहती थी। मरते समय उसने अपनी बच्ची को मेरे हाथ मे सौप दिया था। यही मेरा अधिकार है। पचमी मेरे पेट से पैदा नही हुई तो क्या ? अब मेरा अधिकार समझी तू ?"

नल्लम्मा ने घूमकर चेम्पन से कहा, "चेम्पन भैया! तुम इसको छोड दो! मै इसे पा लूँगी।"

आगे उसने तुरन्त कहा "नही तो, तुम्हे यह सब भोगना ही चाहिए। चक्की इतनी भली थी। तुमने उसे कष्ट देकर मार डाला! तुम बडे लालची हो। बडी लडकी को तुमने छोड ही दिया है। अब यही बच्ची बची हुई है। आखिर . . .नही, मै कुछ नही कहूँगी।"

नल्लम्मा का गुस्सा खत्म ही नही होता था। वह फिर पाप्पी की ओर मुडी और कहा "यहाँ पर मल्लाह मर जाता है तो हम लोग दूसरे मर्द के साथ नही जाती। समझी ? यही यहाँ का नियम है।"

नल्लम्मा की वाक्धारा के सामने पाप्पी का वश नही चला। चेम्पन भी कुछ नही कह सका। थोडा बरस जाने के बाद नल्लम्मा का गुस्सा ठण्डा हो गया। फिर भी वह पचमी को उन लोगो पर छोडकर जाने के लिए तैयार नही थी। उसने पचमी से पूछा, "तू आ रही है री ?"

चेम्पन स्तब्ध रह गया। नल्लम्मा उसकी बेटी को बुला रही थी। पचमी चली गई।

पाप्पी को इस तरह का अपमान जिन्दगी मे कभी भी नही सहना पड़ा था। उसने क्या-क्या सुना! अब कुछ भी बाकी नही रहा। दु.ख और गुस्से से उसने पूछा "मान-मर्यादा के साथ रहने वाली थी मै। यही सब सुनने के लिए मुझे यहाँ ले आए हो ?"

चेम्पन निस्सहाय भाव से मौन था।

पाप्पी ने आगे कहा, "कोई मल्लाहिन मेरे सामने मुँह नही खोलती थी। मै पोन्नानी-घाट के घटवार के परिवार की हूँ।"

उसे शान्त करने के लिए चेम्पन ने कहा, "यहाँ वाली सब ऐसी ही है।"

"तुम कुछ बोले क्यो नही ?"

"मै क्या बोलता ?"

"एक अच्छे मर्द के साथ रहने के बाद . यह सब मेरे भाग्य का ही दोष है।"

नल्लम्मा ने जो-कुछ भी सुनाया था उसका जवाब अब चेम्पन को देना पडा। पाप्पी का गुस्सा पचमी की ओर गया, "दुलारी बेटी ! उसके बुलाने पर कैसे चली गई !"

चेम्पन ने कहा, "दोनो बच्चो को इन्ही लोगो ने पाला है।"

उमडते हुए गुस्से से भरी पाप्पी ने एक शाप दिया, "अच्छा, यह भी बडी की तरह ही भ्रष्टा होकर रहेगी।"

चेम्पन चौक पडा। कितना कठोर शाप था वह। बडी लडकी उसके लिए मर चुकी थी। अब सिर्फ पचमी बची थी। वह भी नष्ट हो जायगी, यही कहती है !

पाप्पी आगे बोली। बिना बोले वह रह नही सकती थी, "यह भी अपनी दीदी-जैसी ही है। यह भी किसी मुसलमान छोकरे के साथ लग जायगी और यहाँ घूमती फिरेगी।"

चेम्पन के मस्तिष्क मे बिजली कौध गई, उसे ऐसा लगा। कुछ पूछने-कहने के लिए बाकी नही रहा।

तो मुसलमान के साथ जोडा है। वह कहानी अब स्पष्ट मालूम पडने लगी। परी का पैसा लौटा देने की व्यग्रता ! सब उसे अब साफ मालूम होने लगा। वह... वह.. चक्की ने भी क्या उसकी मदद की होगी ? .... अब इतना ही उसे जानना था।

चेम्पन पर एक पागलपन सवार हो गया। वह दौडकर नल्लम्मा

के घर गया। पचमी को उसकी गोद से खीचकर एक छडी लेकर उसने खूब पीटा । वह पचमी से पूछता जाता था कि क्या वह मुसलमान के साथ जायगी ? ,

नल्लम्मा मुँह बाये खड़ी रह गई। पचमी 'माँ-माँ' कहकर चिल्ला रही थी।

मारते समय चेम्पन कहता गया, "कह कि मुसलमान का साथ नही करेगी ।"

मार खाते-खाते व्याकुल होकर पचमी ने कहा, "मुसलमान का साथ नही करूँगी बप्पा!"

बेचारी पचमी! क्या वह कुछ जानती थी ? हो सकता है कि जानती भी हो। उसने भी कुछ देखा था न!

चेम्पन उसे घर की ओर खीच लाया।

उस दिन उसे चक्की के शव-सस्कार की जगह को खोदते देखा गया किसलिए खोदता था ? मालूम नही।

शायद उससे कुछ पूछकर तसल्ली पाना चाहता हो।

१८

कुछ दिन के बाद चेम्पन का पागलपन उतर गया। लेकिन उसकी बुद्धि मन्द हो गई। वह बिलकुल मौन रहने लगा। उसका तौर-तरीका देखकर लगता था कि वह बिलकुल टूट गया है। उसका धन खत्म हो गया। उसके पास अब पैसा नही था। उस समय तक की कमाई का सब पैसा लुप्त हो गया। ऐसी हालत मे बुद्धि भी नष्ट हो जाय तो इसमे आश्चर्य ही क्या ! ऐसा नही होता तो जीवन और भी कष्टपूर्ण हो जाता।

चेम्पन की दोनो नावो मे मरम्मत की जरूरत थी। बिना मरम्मत के वे काम मे नही लाई जा सकती थी। जाल भी समय पर मरम्मत न होने से बेकार हो गए थे। एक 'आयिला' जाल मे एक बडे जल-जन्तु के फँस जाने से वह फट गया था। सबको ठीक करने के लिए कुल मिलाकर एक बडी रकम की जरूरत थी। घर मे खर्च ज्यादा था, लेकिन आमदनी नही थी, क्योकि चेम्पन समुद्र मे नही जाता था।

पाप्पी ही घर का काम सँभालती थी। उसने चेम्पन से नाव और जाल की मरम्मत की बात कही। रुपये कर्ज लिये बिना काम नही चल सकता था। चेम्पन ने कर्ज लेने की बात मान ली।

किससे कर्ज लेता ? औसेप्प ही एक ऐसा आदमी था जिससे कर्ज़ ले सकता था। माँ के समय से 'ऊपा' बटोरकर पचमी ने जो कमाया था उसमे से २० रु. उसके पास थे। उसने उन रुपयो को चेम्पन के हाथ मे दे दिया। चेम्पन उन रुपयो को लेते हुए रो पड़ा। पचमी ने कहा, "रोज यदि 'ऊपा' बटोर पाती तो इससे ज्यादा हुआ होता, बप्पा ! नही तो, माँ रहती तब भी काम हो जाता !"

चेम्पन ने कुछ नही कहा। उसके हृदय मे अब किसी महत्त्वाकाक्षा के लिए स्थान नही था।

गगादत्त ने विदा किये जाने के लिए अब अपनी माँ को खूब तग करना शुरू किया। पाप्पी अभी तक अपनी यह जरूरत चेम्पन के सामने नही रख सकी थी। वह अपने गुज़ारे के लिए या गगादत्त के कारण बहुत-कुछ चुपचाप सहती हुई समय बिता रही थी। पचमी का भाव उसके प्रति बदला नही। पाप्पी को यह भी लगता था कि उसके लडके को वहाँ रहकर खाते रहने का कोई हक नही है। ऊपर से चेम्पन की उदासीनता! उसने सोचा नही होगा कि बाते ऐसी हो जायँगी।

चेम्पन इस तरह कष्ट मे पड जायगा, इसकी उसे कल्पना भी नही थी। उसके कष्ट को बढाने का काम वह नही करेगी। वह उसकी रक्षा करने वाला व्यक्ति है।

शायद पाप्पी को ऐसा लगता होगा कि वह चक्की की तरह चार पैसे कमाने वाली होती तो हालत इतनी नही बिगडती। इससे उसे दु ख भी होता होगा। यदि वह माल बेचने के लिए चक्की की तरह जा सकती, यदि उसे जाल खीचना आता तो स्थिति सँभालने मे कुछ सफलता होती। हो सकता है कि कोई धन्धा शुरू करने का विचार उसके मन मे कभी-कभी उठता भी हो।

पाप्पी ने एक पति की सेवा की थी। वह काम उसे मालूम था। उसने चेम्पन को भी प्यार किया। बिना प्यार किये वह रह नही सकती थी। सिर्फ इतना ही फर्क था कि पाप्पी के हृदय मे पहले कण्डनकोरन के लिए स्थान था। इस बात मे जैसे चेम्पन को चक्की की याद आती थी, मुमकिन है पाप्पी को कण्डनकोरन की याद आती हो और मन-ही-मन वह उससे क्षमा भी माँगती हो।

पाप्पी वास्तव मे बेचैन थी। उसे स्थिति की और भी उलझने की सभावना थी। उसे शायद यह भी लगता होगा कि सारी गडबड उसीके कारण हुई है। चक्की के साथ चेम्पन ऐश्वर्यशाली बना। अब पाप्पी के

साथ उसका ह्रास हो रहा है । चक्की थी समुद्र मे काम करने वाले एक मल्लाह की पत्नी और पाप्पी थी एक 'जालवाले' की पत्नी ।

नावे-बेमरम्मत ऊपर पडी रहे यह पाप्पी के लिए असह्य हो गया । उसने औसेप्प को बुलाने का निश्चय किया । रात का खाना खाकर जब चेम्पन चिन्ता मे डूबा बैठा था तब पाप्पी ने उसके पास जाकर पूछा, "इस तरह बैठे रहने से कुछ न होगा । नावों की मरम्मत होनी चाहिए न!"

चेम्पन ने सिर उठाकर पाप्पी की ओर देखा । वह कुछ बोला नही । पाप्पी ने फिर पूछा । तब चेम्पन ने सिर्फ 'हाँ' कह दिया ।

पाप्पी ने आगे पूछा, "तब औसेप्प को बुलवाऊँ ?"

"बुलवाओ !"

चेम्पन ने झट से उत्तर तो दे दिया । पर यह स्पष्ट था कि उसने कुछ सोच-समझकर जवाब नही दिया । क्योकि औसेप्प से रुपया कर्ज लेने का क्या मतलब है, यह उससे ज्यादा वहाँ किसी को नही मालूम था । वह जरा भी सोचता तो औसेप्प को बुलवाने को नही कहता । ऐसा भी लगता था कि नावे पडी-पड़ी खराब होती जा रही है, इसके बारे मे भी उसे चिन्ता नही थी ।

उस घर मे प्रतिदिन रात का खाना खाने के बाद इसी तरह विचार-विनिमय हुआ करता था । उन दिनो मिट्टी के तेल का दिया ऐसे दृश्यो की गवाही देता था । उन दिनो तीक्ष्ण बुद्धि, कर्मठ और फुर्तीले चेम्पन और बचपन मे ही उसकी सहधर्मिणी होकर आई हुई चक्की के जीवन-सम्बन्धी बातो के बारे मे साफ-साफ़ चर्चा हुआ करती थी । वे सब पहलुओ पर खूब गम्भीरता से सोचा करते थे और दोनो बच्चियाँ शान्ति से सोती रहती थी । आज जब पाप्पी और चेम्पन के बीच बातचीत हुई, तब पचमी भीतर सोते-सोते डरावने सपने देखकर नीद मे कराह रही थी ।

पाप्पी ने पूछा, "मै क्या करूं ?"

चेम्पन चुप था । पाप्पी ने आगे कहा, "मै एक भार-स्वरूप हूँ । मुझसे कुछ नही हो सकता । मै क्या करूँ, मर्द जो कमाकर देता है । मै

उसीसे गुजारा करना सीखा है।"

चेम्पन चुपचाप सुनता रहा। पाप्पी रो पडी।

"मै कितने लोगो के विनाश का कारण बनी! मेरे यहाँ आते ही तुम्हे भी घाटा होने लगा।"

चेम्पन का मुँह खुला, "तब ?"

"अब क्या किया जाय ?"

"कुछ भी करो!"

गगादत्त अपने लिए ५०० रु. का जोर मार रहा था। पाप्पी ने उसे जन्म दिया था। उसकी माँग की पूर्ति करना वह आवश्यक समझती थी। लेकिन वह कैसे कर सकेगी,गगादत्त को यह जानना आवश्यक नही मालूम पडता था। उसका खयाल था कि यह रुपया देना चेम्पन का कर्तव्य है; क्योकि पाप्पी को उसने खरीदा है। माँ ने अपने को दूसरे के हाथ बेच दिया है। उसमे कण्डनकोरन का खून था। पाप्पी को कभी-कभी लगता था कि गगादत्त के भीतर से कण्डनकोरन ही बोल रहा है।

पाप्पी ने आदमी को भेजकर औसेप्प को बुलवाया। उसने औसेप्प को अपनी आवश्यकताएँ बतलाईं। औसेप्प ने रुपया देना मंजूर कर लिया। इसके लिए दोनो नावो को बन्धक रखने को कहा और यह भी कहा कि निश्चित समय पर रुपया नही लौटाया गया तो दोनो नाव और जाल उसके हो जायँगे।

चेम्पन ने कोई जवाब नही दिया। औसेप्प ने पूछा, "क्यो चेम्पन! तुम क्यो नही बोलते ?"

चेम्पन ने कहा, "क्या बोलना है? किसी भी तरह हमें रुपये चाहिएँ।"

दूसरे ही दिन औसेप्प करार-पत्र तैयार कर लाया। उसे बिना पढे ही चेम्पन ने उस पर दस्तखत कर दिए। औसेप्प ने ७९५ रु गिनकर दे दिये। पाँच रुपये का कुछ खर्च बतलाया। चेम्पन ने रुपये लेकर अपने बक्से मे बन्द कर दिए।

इसके बाद उसका मौन-भाव थोडा दूर हो गया। नावो की मरम्मत और समय पर लौटने आदि के बारे मे वह कुछ-कुछ बोलने लगा। उसने कहा कि समय पर रुपया नही लौटाया जायगा तो मुश्किल मे पड जायँगे; क्योकि औसेप्प एक हृदय-शून्य आदमी है। पाप्पी ने अपनी ओर से इसके लिए कोशिश करने की बात कही।

रुपया घर मे आने की बात जानकर या बिना जाने ही गंगादत्त ने माँ को रुपये के लिए बहुत तग किया। उसने कहा कि वह वहाँ एक मिनट भी अधिक नही ठहर सकता। उसे तुरन्त जाने दिया जाय। पाप्पी ने उसके पैर पकड़ लिए। उसने कहा कि नावे मरम्मत हो जाने पर समुद्र मे जाने लगेगी तब किसी भी तरह वह रुपया निकालकर दे देगी।

गगादत्त ने अपना निश्चित जवाब दिया, "नही, मै नही ठहर सकता!"

पाप्पी को गुस्सा आया। उसने कहा, "नही ठहर सकते तो नही सही। मै क्या करूँ?"

"तब तुम्हे यह भी समझ लेना होगा कि मेरे-जैसा तुम्हारा कोई पुत्र नही है।"

पाप्पी दृढता पूर्वक कोई जवाब नही दे सकी। वह उसकी माँ थी। उसीने उसको जन्म दिया था। वह अपने पति को भुलाकर चेम्पन के साथ चली आई थी। उसने निस्सहाय भाव से कहा, "इस आदमी से कैसे माँगू बेटा?"

"किसी भी तरह तुम मुझे छुट्टी दे दो!"

वह मानने वाला नही था। उसका यही मतलब न था कि उसे विदा करके माँ सिर्फ चेम्पन की होकर रहे। पाप्पी ने कहा, "बेटा, तेरे भविष्य के बारे मे भी सोचकर मै यहाँ आई थी।"

"तब भी अब मुझे विदा दे दो!"

यह झझट चेम्पन के सामने रखने की हिम्मत पाप्पी की नही हुई। झझट बढ़ता ही गया।

पाप्पी को जरा भी शान्ति नही रही। चेम्पन के बारे मे उसें डर था कि उसका सब-कुछ समाप्त हो गया। एक ओर यह चिन्ता दूसरी ओर गंगादत्त का हठ।

उसे लगा कि यह दूसरी शादी नही करनी चाहिए थी। तब तो सिर्फ जीवन-निर्वाह का ही प्रश्न सामने रहता। उसने नही सोचा था कि शादी करने से वह ऐसी उलझनो मे फँस जायगी। ..... शादी न की होती तो शायद गगादत्त इस तरह हठ भी न करता; और चेम्पन की तकलीफ भी न देखनी पडती। यह नया जीवन शुरू करना ही एक भारी गलती थी। एक साधारण मल्लाहिन रहती तो आज सिर पर बोझा उठाकर मछली बेचती और गुजारा करती। दो नाव के मालिक-जैसे एक ऐश्वर्य-शाली व्यक्ति के साथ जीवन गुजारने की बात सोची थी। अब क्या होगा ?

उस तीक्ष्ण द्वन्द्व मे माँ के हृदय ने ही विजय पाई। उसीका विजय पाना स्वाभाविक भी था। वह भूखी रहने को तैयार थी। भीख भी माँग सकती थी। आखिर यही नतीजा तो हो सकता था। यह सब भोगने के लिए वह तैयार थी। उस घर से उसका क्या सम्बन्ध था ?—सोचा जाय तो कुछ नही। ..... चेम्पन का सब-कुछ नष्ट हो जाय तो ?

आखिर उसे भी भूखी रहना ही पडेगा।—कुछ रुपयो के साथ गगादत्त चला जाय और अपने काम मे उन्नति कर ले तो माँ का भी जीवन बन जायगा। और माँ का जीवन बन जाय तो चेम्पन का भी बन जायगा। इस तरह माँ की ममता की जीत हुई।

एक दिन चेम्पन जब कही बाहर गया हुआ था तब अवसर पाकर पाप्पी ने उसका बक्सा खोला। उस समय पचमी वहाँ नही थी। औसेप्प से लेकर जो रुपये रखे थे उनमे से सौ-सौ के दो नोट निकालकर उसने बक्सा बन्द कर दिया।

उस रात को पचमी ने माँ-बेटे को घर के पश्चिम की तरफ खडे-खडे आपस मे गुप्त बाते करते देखा। उसने एक नारियल के पेड की आड मे खडी होकर सुनने की कोशिश की। बात कुछ-कुछ उसकी समझ में

आ गई। अभी दो ही सौ से काम चलाने के लिए माँ ने कहा था और बाकी का इन्तजाम पीछे करने की बात कही थी।

माँ का आशीर्वाद लेकर बेटा चला गया। माँ बेटे को देखती रही। उसकी आँखें भर आईं। आँख पोछकर वह घर मे चली आई।

पंचमी को एक अच्छा हथियार मिल गया। उसका उपयोग करने का उसने निश्चय किया। छोटी माँ ने बेटे को रुपये दिये है। उसे मालूम नही था कि वह बप्पा के बक्से से निकाले गए थे। फिर भी उसे यह तो निश्चय था कि छोटी माँ ने बप्पा को जरूर धोखा दिया है। रुपये के लिए परेशान होकर जब बप्पा ने नाव-जाल बन्धक रख दिया तब इनके पास कुछ रुपया हो गया। अब उसे ही छिपाकर इन्होने बेटे को दिया है। ऐसा ही पचमी ने सोचा। यह भेद उसने बप्पा से कहने का निश्चय किया।

दूसरे दिन जब चेम्पन समुद्र-तट की ओर चला तब पचमी भी उसके साथ हो ली। थोडी देर के बाद चेम्पन पागल की तरह घर लौट आया। उसने बक्सा खोलकर देखा, बक्से मे ५०० रु ही थे। उसके बाद उसका एक गर्जन ही सुनाई पडा, "अरी, इस बक्से से रुपये निकाले है तूने ?"

चेम्पन गरज पड़ा, "मेरे घर से निकल जा !"

पाप्पी ने कबूल किया।

पाप्पी बिना कुछ कहे ही बाहर जाने लगी। पचमी को यह अच्छा लगा। चेम्पन फिर चिल्लाया, "चली जा यहाँ से !"

पाप्पी समुद्र-तट की ओर जाने लगी। चेम्पन ने घर का दरवाजा बन्द कर दिया और कहा, "अब इस घर मे पैर नही रखने दूँगा।"

पाप्पी ने कोई जवाब नही दिया। उसके बाद वह उस तट पर अकेली इधर-उधर घूमती दिखाई पडी।

चेम्पन को फिर एक जोश आया, जो कुछ समय से खो-सा गया था। लगता था कि वह पहले का जोश अब नही रहा।

चेम्पन ने पाप्पी को मार भगाया है, यह खबर सारे समुद्र-तट पर फैल गई और वह लोगों के बीच बातचीत का विषय बन गई। पाप्पी

एक नारियल के पेड के नीचे बैठी थी। उसे और कोई जगह नही थी, जहाँ जाती। चेम्पन का दिल नही पिघला। लोगो ने इस बात को इस तरह छोड देना ठीक नही समझा। एक स्त्री अनाथ होकर समुद्र-तट पर घूमती रहे, यह कहाँ तक ठीक था?

कुछ लोग मिलकर घटवार के पास गये। पोन्नानी घाट के घटवार के परिवार की एक स्त्री, कण्डन कोरन की पत्नी, चेम्पन के साथ चली आई, यह बात घटवार को पसन्द नही थी। उसे लगा कि यह सब घटवारो के लिए लज्जाजनक बात है। ऐसी स्थिति मे घटवार ने जवाब दिया कि अपनी मर्यादा का उल्लघन करके निकलने वाली के बारे मे वह कुछ सुनने के लिए तैयार नही है। घटवार बहुत नाराज था। लेकिन बूढे लोगों ने बात नही छोडी। शाम के समय आश्रय के अभाव मे एक औरत तट पर इस तरह घूमती रहे, यह कैसे ठीक कहा जा सकता है?

घटवार ने कहा, "जरूरी हो तो दोनो मे से किसी को मारकर समुद्र मे फेक दो!"

अच्चन ने विनीत भाव से पूछा, "हे मालिक! यह कैसे ठीक होगा?"

"तब मै क्या करूँ?"

"आप चेम्पन को बुलाकर कहिये!"

"मुझसे यह नही होगा। उससे मै क्या कहूँगा?"

"तब फिर हम लोग क्या करे?"

"इस पर आपके सिवाय दूसरा कौन विचार कर सकता है?" घाट के मल्लाहो के इस प्रश्न के सामने घटवार को झुकना पड़ा। कुछ किये बिना काम नही चलता। आखिर उसने एक घटवार के परिवार में ही जन्म लिया था न! घटवार ने कहा, "अपनी मर्यादा छोडने का ही यह फल होता है। वह यदि एक घटवार के घर मे रहती तो क्या ऐसी स्थिति होती?"

सबने घटवार की बात से सहमति प्रकट की। घर में जो माँ की जगह लेने आई थी, वह निकल गई। मानो घर की जो नौकरानी थी

वह चली गई। पचमी अपने बाप को छोड़ती ही नही थी। उसे एक काम करना था। उसके लिए वह मौका देख रही थी।

पचमी का काम ?—घर मे कोई नही था; इसलिए दिदिया को बुला लाना था। यह हो जाय तो उसका घर पहले-जैसा बन सकता है। माँ नही होगी—यही एक कमी रहेगी। लेकिन पचमी को उपयुक्त मौका नही मिल रहा था। चेम्पन एक मिनट शात नही बैठता था। हमेशा गम्भीर बना रहता था। आदमी ही बदल गया है—ऐसा दीखता था। वह फिर से पहले का चेम्पन बनने के विचार मे था। हमेशा दूसरो को दोषी ठहराता था। पाप्पी सारी तबाही का कारण थी, उसके नाते ही घर मे घटती-ही-घटती होने लगी। उसने उससे शादी करने का निश्चय किया, उसीका उसे दु ख था। वह कहता, "मुझे मालूम नही, कैसे मेरी मति भ्रष्ट हो गई! उसका रग, डील-डौल और बाल आदि देखकर ही मति-भ्रम हो गया होगा।"

करुत्तम्मा के बारे मे भी वह बोला करता कि वह एक मुसलमान के साथ घूमती रही, और जब एक मल्लाह आया तब सब-कुछ छोडकर उसके पीछे चली गई। अब वह करुत्तम्मा को अपनी बेटी नही समझता। वह सोचता ही नहीं कि उसकी कभी ऐसी एक बेटी थी।

कभी-कभी वह पंचमी से पूछता, "तू क्या करने जा रही है री?" उस पर भी चेम्पन का विश्वास नही था।

उसने एक नया जीवन शुरू करने का निश्चय किया। बीच मे जो घटना हुई उसे उसने अपनी मूर्खता का फल समझा।

नल्लम्मा ने पाप्पी को बुलाकर अपने यहाँ रखा। पचमी को इससे दु.ख हुआ। और कोई ऐसा करती तो पचमी को उतना दु ख नही होता। माँ ने उसे मौसी के हाथ सौपा था। अब मौसी क्यो ऐसा कर रही है? चेम्पन को भी इससे गुस्सा हुआ। लेकिन उसने सोचा कि अच्चन को हमेशा उससे ईर्ष्या रही है और अब उसे नीचा दिखाने के लिए ऐसा कर रहा है।

पचमी को लगा कि कोई समझौता हो जायगा, उसके पहले ही उसने अपनी दिदिया को बुलवा लेना चाहा। देखते-देखते आखिर मौका पाकर उसने कहा, "ब्प्पा, दिदिया को बुलवा लो तो क्या बुरा होगा ? दिदिया अच्छी है। लोग जो कहते है सब झूठ है।"

चेम्पन क्रोधित हो गया और उसने पूछा, "किसको बुलवाने की बात कहती है री ?"

(पचमी डर गई।)

"उस मुसलमान की झोंपडी टूट गई है। फिर भी वह यही जमा हुआ है। अरी, उस नालायक के लिए मेरे घर मे जगह नही है।"

पचमी चुप रही। चेम्पन ने पूछा, "तू भी क्या वही पाठ सीखने का विचार रखती है ? तब तो तू भी अभी से चली जा !"

चेम्पन का गुस्सा बढता ही गया, अपने को भूलकर वह गरज पड़ा, "जा री, चली जा !" ऐसा लगा कि वह पचमी को मार भगायगा।

इसके बाद चेम्पन ने पाप्पी के बारे मे बोलना छोड दिया, करुत्तम्मा और पचमी के बारे मे ही बोलता रहा। पंचमी भी करुत्तम्मा की तरह ही निकलेगी।

पाप्पी के बारे मे विचार करने के लिए घटवार आ गया, उसने घाट के मुख्य-मुख्य मल्लाहो को और चेम्पन तथा पाप्पी को बुलवाया। वह उस तट की एक बड़ी घटना थी। बहुत लोग जमा हो गए। 'कोई समझौता न हो जाय', इसके लिए हृदय से सिर्फ एक ने ही प्रार्थना की। वह थी पचमी। पचमी ने माँ का और समुद्र-माता का नाम लेकर प्रार्थना की कि कोई समझ.ता न होवे।

घटवार को अनेक शिकायते थी, दूसरी शादी की तो घटवार को खबर ही नही दी गई, इसका चेम्पन क्या जवाब देता ! यह एक भारी गलती थी। घटवार को तम्बाकू देकर शादी के लिए अनुमति लेनी चाहिए थी। ऐसा चेम्पन ने नही किया था। चेम्पन इस सवाल का क्या जवाब देगा, यह सुनने के लिए सब उत्सुक खड़े थे। अच्चन

आदि कुछ लोग इससे सीधे सम्बन्धित थे। उन्हें भी जवाब देना था। कुछ लोग धीरे से सामने की पक्ति से पीछ चले गए। घटवार ने अधिकार के स्वर में पूछा, "क्या कहते हो चेम्पन ?"

चेम्पन तनकर सीधा खडा था। लगता था कि वह और भी ऊँचा तथा मोटा हो गया है। उसे कुछ परवाह नही है, ऐसा नही मालूम होता था। उसके चेहरे पर एक अजीब तरह के गौरव का भाव था। इस रूप मे चेम्पन को किसी ने कभी नही देखा था।

घटवार ने अपना सवाल दुहराया। चेम्पन का उत्तर एकाएक गूँज उठा, "मैने शादी नही की।"

इस अप्रतीक्षित जवाब से सब चकित हो गए। घटवार भी साँस रोक-कर बैठ गया। तनातनी का क्षण बीत जाने पर घटवार ने सवाल किया, "तब यह औरत यहाँ कैसे आई ?"

"मैने काम करने के लिए एक नौकरानी के रूप में इसे रखा था, इसमें क्या गलती है ?"

घटवार हार गया। उसका पहला आरोप निराधार होकर गिर गया। आगे आने वाले आरोप भी ऐसे ही गिर जायँगे।

घटवार ने मर्यादा को भग करने वाली पाप्पी को बुलाकर उसे ऊपर से नीचे तक ध्यान से देखा, तब उसने पूछा, "क्या यह सच है री ?"

सबने सोचा कि वह चेम्पन का कहना झूठ साबित करेगी। चेम्पन के भाव में अब भी कोई फर्क नही पड़ा। उसे इसकी परवाह नहीं थी कि पाप्पी उसका कहना झूठ बतायगी या क्या करेगी। उसके भाव से यह लगता था कि वह सबकी अवहेलना करने को तैयार है और किसी भी बात मे वह नही झुकेगा।

घटवार ने पाप्पी से अपना सवाल दुहराया। उसका जवाब आया, "हाँ।"

सुनकर सब लोग स्तम्भित हो गए। घटवार ने पूछा, "चेम्पन ने तुझसे शादी नही की ?"

"नही !"

"तुम चेम्पन के यहाँ नौकरानी थी ?"

"हाँ।" ,

न्यायपाल घटवार थोडी देर मौन होकर बैठा रहा। चेम्पन को भी उम्मीद नही थी कि पाप्पी का ऐसा जवाब होगा। अपनी ही भलाई के द्वार बन्द करने वाली, अपने कुल को बदनाम करने वाली पाप्पी की ओर घृणा भरी दृष्टि से देखकर घटवार ने कहा, "तेरी ऐसी गति होनी ही चाहिए। नही तो एक अच्छे पुरुष के साथ रहकर ......"

घटवार ने वाक्य पूरा नही किया। उसने सोचा कि चेम्पन को इस तरह जीतने नही देना चाहिए। उसने चेम्पन से पूछा, "नौकरानी ही सही ! एक औरत को बिना कारण इस तरह बाहर निकाल देना चाहिए रे ?"

उसका भी तुरन्त जवाब आया, "उसने चोरी की है।"

घटवार के पास अब कोई तर्क नही रहा। बात ने ऐसा ही रुख पकड़ा। लेकिन वास्तव मे बात ऐसी थी नही; यह सबको मालूम था। चेम्पन विधि पूर्वक कपडा[1] देकर पाप्पी को अपने घर लाया था।

घटवार ने एक दूसरा तरीका निकाला। चेम्पन को उसने धमकाया, "अजी, तुम बहुत बढ गए हो। यह आज की बात नही है, तुम हमेशा से ऐसा ही करते आये हो। इसका क्या नतीजा होगा मालूम है तुम्हे ?"

होठ ज़रा टेढा करके व्यग के स्वर मे चेम्पन ने पूछा, "क्या मालूम करना है। और क्या मालूम कराइयेगा ? चेम्पन के लिए सामने समुद्र है और ऊपर आसमान।"

उसने आगे कहा, "कुछ भी नही मालूम करना है। सब खत्म हो गया। मैं किसी को भी मानने के लिए तैयार नही हूँ। मालिक बुरा न मानिये। मै आगे किसी को भी मानने के लिए तैयार नही हूँ।

---

१. मलयालियों में विवाह-कृत्य के समय एक मुख्य काम वर द्वारा वधू को वस्त्र भेंट करना होता है।

उहँ, क्यो ? जेब मे कुछ होगा तभी न रास्ते मे डर लगेगा।"

घटवार ने डराया, "घाट वालो के साथ तुम मत खेलो !"

घटवार का वाक्य खत्म होने के पहले ही चेम्पन काँपते हुए शरीर से बोला, "इज्जत बचानी है तो चुप रहिये !"

घटवार के सामने आज तक किसी ने ऐसा व्यवहार नही किया था। वह भी घटवार के लोगो के सामने ! इसका मतलब सिर्फ एक ही व्यक्ति का अपमान नही, पूरे घाट का अपमान था।

चेम्पन क्या सोचता है। क्या उसकी मति मारी गई है ? क्या उसे कल की चिन्ता नही है। किसी की समझ मे कुछ नही आया।

इसके बाद चेम्पन एक शब्द भी बोले बिना वहाँ से चला गया।

घटवार अपमानित हुआ। घाट वाले सब एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। पाप्पी भी चेम्पन के पीछे-पीछे चली गई।

पचमी की अभिलाषा व्यर्थ हो गई ? पाप्पी को उसने चेम्पन के पीछे जाते देखा।

चेम्पन ने पाप्पी को मना नही किया।

१६

दूसरे दिन पंचमी वहाँ दिखाई नही पड़ी । वह कहाँ गई होगी ? घर मे शान्ति न रहने से बेचारी भाग गई ! उसे क्या वास्तव मे भगा दिया गया है ! इस तरह औरते आपस में बाते करने लगी ।

पाप्पी के बारे मे भी औरतों मे एक मत था । उसने चेम्पन को छोडा नही है । क्या दूसरी होती तो ऐसा करती ? पाप्पी मे अनेक गुण थे, इसमे आश्चर्य ही क्या ? वह एक अच्छे चाल-चलन और पौरुष आदि गुण वाले पति के साथ रह चुकी थी । उसमे अच्छाइयो का होना स्वाभाविक ही था ।

घटवार का अपमान करने वाले चेम्पन की क्या गति होती है, यह देखने के लिए सब उत्सुक थे । घटवार का गुस्सा क्या रूप धारण करेगा, कौन जाने ? दोनो नावे तो औसेप्प की हो ही जायँगी । उसके बाद वह कैसे जियेगा ? वह समुद्र मे आगे काम कर सकेगा, इसकी आशा करना व्यर्थ है । आगे उससे यह नही हो सकेगा ।

बातचीत का विषय न बनने पर भी जिसका जीवन उस तट पर टूटता जा रहा था, वह नीर्क्कुन्नम तट की एक अविभाज्य कडी परी था ।

उस तट पर नावे है, झोपडियाँ है, मल्लाह और मल्लाहिने सब है । परी भी है । कभी-कभी वह ऊपर खीचकर रखी हुई नाव के तख्ते पर बैठकर गाता है । गाते-गाते उस गाने का एक खास तर्ज बन गया था । वह परी का विशेष अपना तर्ज था । उस गाने को दूसरा कोई उस ढंग से नही गाता था । जिसने वह गाना रचा था, क्या उसने कभी सोचा होगा

कि उसका गाना परी के द्वारा उस ढंग से गाया जायगा? परी ने उसे अपना बना लिया था। मानो वह उसीके लिए बनाया गया हो। वह तर्ज उसके साथ-साथ खत्म भी हो जायगा। दूसरा कोई भी उसका अनुकरण नही कर सकेगा।

परी की झोपड़ी गिर गई। उस तट पर झोपड़ियाँ बनी है और गिरी भी है। लेकिन गिरी हुई झोपड़ियो के भीतर रहने वालो मे से किसी को भी, उसके गिरने के बाद, उस तट पर नही देखा गया। लेकिन परी उसी तट पर था। क्या उसके जाने के लिए और कोई जगह नही थी ? हो सकता है, न हो।

वह शाम के समय सिर नीचा किये समुद्र-तट पर घूमा करता था, देखने से लगता था कि वह बालू-राशि में कोई खोई हुई चीज ढूँढता है। ठीक ही था। एक जीवन ही उस बालू मे बिखर गया था। उसे ढूँढ कर समेटने की ज़रूरत थी।

उन दिनो जब करुत्तम्मा के विषय में अपख्याति उठ खड़ी हुई थी, तब एकाध बार परी बातचीत का विषय बन गया था। पर वह चर्चा तुरन्त बन्द हो गई, कितने लोगो की ऐसी कहानी हुई होगी ! जब कोई घटना घटती है तब वह चर्चा का विषय बन ही जाती है। और वह चर्चा तुरन्त खत्म भी हो जाती है। कोई उस सम्बन्ध को महत्त्व नही देता। व्यापार के लिए तट पर डेरा डालकर रहने वाले मुसलमान लोग मल्लाहिनो से प्रेम कर सकते है ? नही कर सकते है, ऐसा नही कहा जा सकता। लेकिन ऐसा रिवाज नही है।

परी के भग्न प्रेम की कहानी किसी को मालूम नही हुई थी। आज भी जब नावे किनारे लगती है तब परी वहाँ पहुँच जाता है। व्यापार भी करता है। गुज़ारे के लिए कभी-कभी कुछ कमा भी लेता है, इस तरह उसका समय व्यतीत हो रहा था।

चेम्पन की नाव के पास भी, जो ऊपर रखी रहती थी, कभी-कभी जाकर वह खडा-खड़ा उसे देखता था, बीते दिनो की याद आती ही होगी।

वह नाव कैसे आई, यह भी वह सोचता होगा। आज ऐसे ही जब वह खड़ा-खडा देख रहा था, तब एकाएक चेम्पन वहाँ आया। परी ने चेम्पन को आते नहीं देखा।

बहुत दिनो से परी चेम्पन के सामने नही आता था। दूर से चेम्पन को आते देखता तो मुडकर दूसरी ओर चला जाता। वास्तव में चेम्पन के प्रति परी ने कोई अपराध नही किया था; फिर भी मालूम नही किस अपराध-बोध से वह ऐसा करता था।

एकाएक चेम्पन जब पास आ गया तब परी जरा घबरा गया। उसने सामने जिसे देखा वह पहले वाला चेम्पन नही था, न वह चेम्पन का प्रेत ही था। एक ही नजर मे मालूम हो सकता था कि चेम्पन की बुद्धि कुछ भ्रान्त हो गई है। चेम्पन भी क्या पहले के ही परी को देख रहा था ?

एक क्षण दोनो एक-दूसरे को देखते रहे। तब चेम्पन ने परी से पूछा, "तुमको मुझसे कितने रुपये मिलने हैं ?"

परी ने कभी हिसाब नही जोडा था, न उसे याद ही था। उसे मालूम नही था। चेम्पन ने फिर पूछा, "कितने हैं ?"

परी ने समझा कि क्या जवाब दे, उसे कुछ मिलना नही है, चेम्पन को कुछ देना नही है, आदि क्या-क्या वह कहना चाहता था। लेकिन कुछ कहने मे उसे डर लगा। उस समय उसकी स्थिति ठीक कर्ज लेने वाले की तरह थी, देने वाले की तरह नही। ऐसा लगता था मानो कर्ज देने वाला पैसे लौटाने के लिए उसे तग कर रहा है।

उस लेन-देन का वास्तविक रूप क्या था ? परी करुत्तम्मा से स्नेह करता था और करुत्तम्मा परी से। ठीक है, वह स्नेह-बन्धन निष्कलक था। जब उस स्नेह ने प्रेम का रूप धारण किया, उसी समय चेम्पन और चक्की के साथ लेन-देन हुआ। देते समय ही उसने वापिस न लेने की बात मन मे तय कर ली थी। तो क्या उसका उद्देश्य पैसे से माँ-बाप को आभारी बनाकर अपने प्रेम-मार्ग को सुगम बनाना था ? बेटो को पाने

के लिए माँ को घूस देना चाहता था ? नही उसका उद्देश्य ऐसा नही हो सकता था। परी ने करुत्तम्मा को अपने वश मे करने की कभी कोशिश नही की थी, न उसके लिए उसने कभी माँग ही पेश की, अगर ऐसे उद्देश्य से रुपया दिया होता तो करुत्तम्मा की शादी जब ही हुई और एक दूसरे व्यक्ति ने उसको अपना बना लिया, उसी समय उसे रुपया लौटा देने को कहना चाहिए था। लेकिन उसने ऐसा नही किया। क्या करुत्तम्ना ने माँगा था इसलिए दिया था ? यदि हाँ, तो उसने गुप्त रूप मे रुपया नही दिया था।

रुपया देने के कारण उसका अर्थिक विनाश हो गया। आर्थिक विनाश यहाँ तक कि उसके तन पर का सिर्फ पहनने का कपड़ा ही बच रहा। उसका घर-द्वार सब दूसरो के हाथ बिक गया। परी के जीवन मे अब कुछ नही रहा। कोई लक्ष्य भी नही रहा।

क्या वह अब भी एक नई झोपडी खड़ी करके नये सिरे से जीवन का कुछ कार्यक्रम शुरू नही कर सकता ? आदमी को मरते दम तक कुछ सहारा चाहिए न ! अब करुत्तम्मा उसकी नही हो सकती थी, जीवन का वह अध्याय उसे भूल ही जाना चाहिए। ऐसी बदली हुई परिस्थिति मे कोई भी बदल जायगा न ! लेकिन परी आज भी वही पुराना निराश प्रेमी बना रहा।

चेम्पन ने जेब से एक पुलिन्दा निकाला और फिर पूछा, "कितना था रे ?"

कोई जबाब नही , अपराधी की तरह परी खड़ा था। चेम्पन ने आगे कहा, "मैंने तुझे भला आदमी समझा था। लेकिन तू वैसा नही है।"

उसने वास्तव मे क्या अपराध किया था ? क्या उसने करुत्तम्मा को धोखा दिया था ? क्या शादी के बाद भी उसके जीवन मे प्रवेश करके कुछ गड़बडी पैदा की थी ? आखिर उसने क्या गलती की थी ?

उसने प्रेम किया, वह भी जान-बूझकर नही। करुत्तम्मा को या उसके

परिवार वालो को कुछ हानि पहुँचाने की नीयत से नही। एक पुरुष होकर उसने जन्म लिया था और एक स्त्री से प्रेम किया था। फिर भी उसके जीवन से अलग-अलग ही रहा।

तब भी एक अपराधी की तरह वह खड़ा था। चेम्पन ने कहा, "तुमने मेरी बेटी को देखकर ही न उस दिन रुपया दिया था ?"

"नही," यह जवाब परी के कण्ठ तक आकर रुक गया, बाहर नही आया। चेम्पन का आरोप उसे अस्वीकार करना चाहिए था ! लेकिन उसने ऐसा नही किया। चेम्पन कहता गया, "माँगते ही, पास मे जो था सब उठाकर दे दिया। जरा भी नही हिचका, मैंने सोचा कि तू एक अच्छा आदमी है, इसलिए तूने ऐसा किया। लेकिन बात बिलकुल दूसरी ही थी। तेरे मन मे कुछ और ही था।"

पुलिन्दा खोलकर रुपया गिनते-गिनते उसने कहा, "तूने कैसा उत्पात मचाया है, यह तुझे मालूम है ?"

परी एक पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा रहा, निर्विकार, निश्चिन्त ! चेम्पन की आँखे सजल हो गईं, उसने कहा, "तुझे नही मालूम, नही मालूम। कैसे मालूम होता। तू सचमुच एक शैतान है।"

तब भी परी चुप रहा। चेम्पन ने आगे कहा, "तूने एक कुटुम्ब को बरबाद कर दिया। मेरा जीवन नष्ट हो गया। कितने लोगो को तूने बरबाद किया है यह तुझे मालूम है ?"

उस परिवार के पूरे इतिहास पर एक नज़र दौड़ाने की बात थी। एक नाव और जाल खरीदने की इच्छा की पूर्ति के लिए चक्की की सिर पर मछली की टोकरी लेकर बेचने जाने की बात से लेकर पूरी कहानी को देखने पर ऐसा लगता है न कि चेम्पन के शब्दो मे कुछ तथ्य था !

काँपती हुई आवाज मे चेम्पन ने कहा, "इस तट पर चक्की की तरह ही खेलती-फिरती थी मेरी करुत्तम्मा। तुमने उसे पथ-भ्रष्ट किया। तभी से यह दुर्दशा शुरू हुई।"

यह ठीक है। अगर परी करुत्तम्मा से प्रेम नही करता तो यह सब

नही होता। एक स्पष्ट उद्देश्य को लेकर जीवन-यापन करने वाला एक साधारण मल्लाह परिवार वहाँ उत्तरोत्तर उन्नति करता जाता। अपने विशिष्ट तत्त्व-ज्ञान के अनुसार, प्रकृति ने निरतर सघर्ष करते हुए जीवन बिताने वाले एक मल्लाह का सारा जीवन मिथ्या नही हुआ होता! चेम्पन के लिए अब क्या था? पत्नी गई, बच्चे नही रहे, जीवन-भर मेहनत करके जो नाव और जाल खरीदा था, सो भी चला गया। कुछ भी शेष नही रहा। जितने प्रिय सम्बन्ध थे, सब टूट गए। चेम्पन ने गिन-कर देखा कि कुल ५९५ रु. उसके पास थे। पति-पत्नी ने मिलकर जीवन-पर्यन्त जो कमाया, उसमे से यही बचा था! और चुकाने के लिए एक पुराना कर्ज बाकी था।

एक निकृष्ट कीट की तरह परी ने उस परिवार के इतिहास मे प्रवेश किया और उसका अकुर ही खत्म कर डाला। चेम्पन का सवाल ठीक ही था न? जिस दिन परी अपने बप्पा के हाथ पकडे पहले-पहल वहाँ आया उस दिन को ही उसे (करुत्तम्मा को), यदि वह समझदार है तो, घृणा की दृष्टि से देखना चाहिए। उसी दिन से चेम्पन के परिवार की शनि-दशा का आरम्भ हुआ। . . . . . लेकिन उस दिन नाव के नीचे से जो बच्ची ऊपा (मछली) बटोरने के लिए आई थी वह उसे निर्निमेष एकटक देखती रही। उसने जो लाल रग का शख वहाँ उठा लिया था उसे उस लडके ने माँगा था।

"यह शख मुझे दोगी?"

लडकी ने शख दे दिया। शख क्या दिया, उसके साथ अपना हृदय भी न दे दिया!

लेकिन इसमे परी का कोई दोष नही था। उसने जान-बूझकर चेम्पन के पारिवारिक जीवन मे प्रवेश नही किया था। बिना जाने ही वह उस परिवार की अन्तर-शिखा मे अपने-आप विलीन हो गया। कोई भी उसे अपराधी ठहरावे, एक अपराधी के रूप मे वह भले ही खड़ा होवे, लेकिन उसकी वास्तविकता कौन जानता है। इसका पता कसे लगता?

जानने वाली सिर्फ एक ही है। और वह है करुत्तम्मा। करुत्तम्मा भी उस सत्य को क्या महत्त्व देती! उसे देखते ही, उसके बारे मे सोचते ही वह घबरा नही जाती! हाँ, परी से वह डरती थी।

चेम्पन ने कहा "मेरे ऊपर अब एक ही जिम्मेदारी है । वह है तेरा ऋण। मुझे बरबाद करने के लिए, मेरी बच्ची को पथ-भ्रष्ट करने के उद्देश्य से, तूने जो पैसा दिया था, ले, वह वापिस ले!"

चेम्पन ने रुपया आगे बढाया। परी चुपचाप खड़ा रहा। चेम्पन ने फिर कहा, "ले, इसे ले। ऊँ! ! ! "

वह 'ऊँ' एक उग्र आदेश के रूप मे था। परी ने एक यत्र की तरह हाथ बढा दिया। चेम्पन ने उस हाथ मे रुपये रखते हुए कहा, "इतना ही मेरे पास है। मुझे हिसाब नही मालूम। हिसाब तो मेरी चक्की को ही याद था। कम हो तो क्या किया जाय ?"

चेम्पन चला गया। परी हाथ मे रुपये लिये ज्यो-का-त्यों बहुत देर तक खडा रहा। वह चेतना-शून्य ही खडा रहा। 'हाथ मे रुपये हैं' यह भी उसे मालूम है। ऐसा नही लगता था।

उन रुपयो की क्या आवश्यकता थी ?—आवश्यकता क्यो नही थी ?— उसने कितने रुपये डुबोये है ? उस दिन के भोजन के लायक भी उसके पास पैसा नही था। सारा जीवन सामने है। तब वे रुपये, सहारा बन सकते हैं न! एक पुराने कर्ज का ही रुपया वसूल हुआ था न!

परी ने अपने हाथ की ओर देखा। हाथ ने रुपयों को पकड रखा था। करेन्सी नोटो के छोर हवा मे हिल रहे थे। उसे लगा कि 'ये रुपये मेरे पास क्यो है ?' उसे उसने कभी भी अपना नही समझा था। जब अपना नही समझा था तब वह उसका कैसे हो सकता है ? तब वह किसका है ?

इतने मे बहुत जोर से किसी के ठठाकर हँसने की आवाज़ सुनकर परी चौक पडा। थोडी दूर पर चेम्पन की नाव, जिसे उसने कण्डनकोरन से खरीदा था, रखी थी। कई दिनों से वह वहाँ पड़ी थी। उसके सामने

का छोर नीचे की ओर झुका हुआ था और पतवार वाला छोर ऊपर की ओर उठा हुआ था। ऐसा लगता था कि नाव उठे हुए छोर से सामने समुद्र के उस पार क्षितिज की ओर गौर से देख रही है। उस पार से कोई चीज मानो उसे इशारे से बुला रही थी। उसके लिए तो दूर समुद्र बहुत परिचित ही था न! उसे समुद्र मे ही रहना चाहिए था। समुद्र के लिए ही वह बनाई गई थी। फिर भी कितने दिनो से वह समुद्र मे जाने के लिए तरसती हुई पडी थी। ऐसा लगता था कि उसे छू देना काफी होगा। वह तुरन्त तरगो को काटती हुई तेजी से आगे बढ जायगी।

उसे देखने से लगता था कि वह दयनीय पुकार मचा रही है कि 'जरा मेरी ओर तो देखो, यह शरीर कितना कृश हो गया है, धूप से कितनी जगह फट गई हूँ, कृपा करके मुझे इस लवण-जल मे उतार दो!' समुद्र से आने वाली हवा ने उसे शायद थोडी ठडक पहुँचाई होगी। पल्लिवकुन्नम 'जाल-वाले' कण्डनकोरन की वह नाव थी। चेम्पन ने उसे खरीदा था। वह बडी ऐश्वर्यशालिनी थी और समुद्र मे पक्षी-जैसे वेग से चलती थी।

नाव का दूसरा छोर नीचे झुक गया था। मानो वह कह रहा था, 'मै जा रहा हूँ।'

उसी नाव के नीचे से वह ज़ोर की हँसी आई थी। प्रेत के अट्टहास जैसी वह हँसी थी। चेम्पन वहाँ से ठठाकर हँस रहा था।

पचमी और करुत्तम्मा दोनो एक गाढ आलिङ्गन मे आबद्ध हो गई। कितनी देर तक वे दोनो उस तरह खडी रही, यह उन्हे नही मालूम हुआ। दोनो रो रही थी, बाप की अवज्ञा करके और माँ को मृत्यु-शय्या पर गिरते देखकर भी करुत्तम्मा चली आई थी। आते समय उसने बहुत दूर तक पंचमी को 'दिदिया, हे दिदिया' कहकर पुकारते भी सुना था। वह पुकार बार-बार उसके कानो मे गूँजतीर ही है। उसके बाद माँ मर गई और सौतेली माँ आई। अब दोनो बहनें आपस मे मिल रही हैं।

अपनी योजना मे असफल होकर पंचमी तृक्कुन्नपुषा के लिए चल पड़ी

थी। ओर कहाँ जाती ? तृक्कुन्नपुषा मे उसका आना अप्रतीक्षित था। पलनी दोनो बहनो को आलिङ्गन मे आबद्ध खडी-खडी आँसू बहाते देखता रहा। उसकी गोद मे जो बच्ची थी वह खिल-खिलाकर हँस रही थी। वह अपनी बोली मे कुछ-कुछ बोल भी रही थी। उसे अच्छा लग रहा था।

पलनी ने पूछा, "कौन है ? पचमी ? तुम यहाँ कैसे आई ?"

करुत्तम्मा ने बच्ची को अपने हाथ मे ले लिया और कहा, "यह मेरी बिटिया रानी की मौसी है।"

पचमी ने बच्ची को चूम-चूमकर प्यार किया। उसने उसे सपने मे देखा था।

पलनी ने नीर्कुन्नम का कोई समाचार नही पूछा। उसे कुछ नही पूछना था। वहाँ से उसका कोई सम्बन्ध ही नही रहा था।

करुत्तम्मा को बहुत-कुछ पूछना था। पचमी को भी बहुत-कुछ कहना और सुनना था। करुत्तम्मा को किस-किसके बारे मे क्या-क्या पूछना था, उनमे से एक भी पलनी को पसन्द नही था। उस जगह का नाम भी उसे पसन्द नही था। शायद पचमी से वह घृणा नही करता होगा। वह उस बेचारी निरपराध बच्ची से क्यो घृणा करता ? लेकिन वह आई कहाँ से ? किस-किसके बारे मे समाचार लाई है ? पलनी की दृष्टि मे पचमी सिर्फ एक अनाथ बच्ची ही नही है, वरन् वह जिसे नापसन्द करता है, जिस-जिससे घृणा करता है उन सबकी ओर करुत्तम्मा का ध्यान खीच ले जाने वाली एक काली छाया थी। पचमी को देखकर करुत्तम्मा क्या-क्या सोचेगी, क्या-क्या पूछेगी और किस-किसके बारे मे जानने की इच्छा प्रकट करेगी !

पलनी उदास हो गया। उस घर मे फिर एक काली छाया आ गई। घर का वातावरण गम्भीर हो गया। उस छोटी बच्ची की तोतली बोली और हँसी ने बादलो के बीच क्षण-भर के लिए बिजली की तरह प्रकाश फैला दिया। बच्ची को रोने की आदत नही थी। उसे रोने नही दिया जाता

था। लेकिन अब वह रोने लगी। तब पचमी ने कहा, "दीदी, बच्ची को न रुलाओ!" करुत्तम्मा उसे चुप कराने लगी। बच्ची मौसी से तुरन्त हिल-मिल गई।

कुछ भी पूछना-सुनना मुश्किल था। पलनी जब न रहता तभी तो कुछ बाते हो सकती थीं। करुत्तम्मा को दम घुटने-जैसा लगता था। बाते करने का मौका ही नही मिल रहा था। वह क्या-क्या पूछती है, यह जानने की इच्छा पलनी को हुई होगी।

अगर वैसी इच्छा हुई भी हो तो उसमे पलनी का क्या दोष था? वह पति था, पिता था। करुत्तम्मा ने कसम भी खाई थी। फिर भी उसका हृदय एक बार अपहृत हो चुका था न! वह मुसलमान लडका अब वहाँ नही रहता होगा, इसका क्या निश्चय है। ऐसे भी एक पति को अपनी पत्नी के बारे मे सन्देह होना स्वाभाविक है न! परी के बारे में करुत्तम्मा क्या पूछेगी?

उस घर मे करुत्तम्मा को अविचारित ही सब बातो से खीझ होने लगी। पति भी झुँझलाया हुआ था। पति-पत्नी मे झगडने का भाव पैदा हो गया।

दोनो के मन में एक प्रकार का द्वन्द्व शुरू हो गया।

एक बार पचमी ने धीरे से कहा, "दीदी, तुम बडी निष्ठुर हो!"

करुत्तम्मा ने कहा, "चुप, चुप! जीजा सुन लेगा!"

पलनी ने कहा कि शाम को वह और रोज़ से जरा पहले ही काँटा डालने के लिए जायगा। उसने काँटो मे चारा लगाकर उन्हे ठीक करके रख दिया। करुत्तम्मा ने खाना भी तैयार कर दिया। उसे एक बड़ी तसल्ली हुई।

माँ, बेटी को लेकर शाम के समय पलनी को नाव के साथ समुद्र में जाते देख रही थी। बच्ची ने अपना हाथ हिलाते हुए उठाया। ऐसा करने की उसकी आदत हो गई थी। नाव पर से बाप भी हाथ उठाकर विदा लिया करता था। लेकिन आज उसने ऐसा नही किया। नाव आगे

बढ गई। बच्ची रोने लगी।

घर पर दोनो बहने अकेली थीं। पंचमी सब बाते सुनने लगी। माँ की मृत्यु, माँ का उसे नल्लम्मा के जिम्मे लगा जाना, बप्पा को दूसरी शादी के लिए माँ का सलाह देना आदि-आदि बाते सुनाते-सुनाते उसने कहा, "दिदिया, परी मोतलाली एक दिन माँ से मिलने आया था।"

करुत्तम्मा ने विषय बदल दिया। उसका दिल धडकने लगा।

"क्यो दीदी! उसके बारे मे कुछ सुनना नहीं चाहती क्या?"

करुत्तम्मा ने मानो सुना ही नही, ऐसा भाव प्रकट करते हुए पूछा, "माँ मर गई तो मुझे खबर क्यो नही दी गई?"

"सबने खबर न देने की बात ही कही थी।"

"सबने?"

"हाँ, सब कह रहे थे कि तुम बुरी हो। तुमने भी अन्याय ही किया था न! ऐसे भी तुममे ममता नहीं है। तुम बहुत निष्ठुर हो!"

इसके बाद पचमी ने छोटी माँ के बारे मे बाते सुनाईं। साथ ही उसे एक खास बात कहनी थी "हमारे नाव-जाल अब हमारे नही रह गए। उन्हें औसेप्प चाचा के यहाँ बन्धक रखकर रुपया लिया गया। उस रुपये को छोटी माँ ने अपने बेटे को दे दिया।"

पचमी ने सब बाते विस्तार से सुनाई।

करुत्तम्मा के मन की आँखो के सामने उसके बप्पा का पतवार थामे समुद्र मे पक्षी-वेग से आगे-आगे नाव चलाने का दृश्य उपस्थित होगया।

माँ और बाप के जीवन-भर की कमाई का वह फल था। वह नाव अब दूसरो के हाथ मे चली गई! उसमे उन लोगो का अब कोई हक नही रहा। करुत्तम्मा को रुलाई आ गई। रोते-रोते उसने पूछा, "अब बप्पा का काम कैसे चलेगा री?"

"कौन जाने?"

उस खबर से करुत्तम्मा का कलेजा टूक-टूक हो गया। पंचमी का उदासीन भाव से ऐसा कहना उसे सबसे ज्यादा दुखदायी लगा। बप्पा का

काम कैसे चलेगा, इसकी पचमी को कोई फिक्र ही नही थी। उसके लिए वह एक बहुत गौण बात थी। अपने को भूलकर करुत्तम्मा कह गई, "वाह री कृतघ्न!"

"ऊँ, क्यो ?"—पचमी ने पूछा।

"बप्पा अब क्या करेगा यह बिना जाने, बिना उससे कहे तुम कैसे चली आईं ? बप्पा का अब कौन है री ?"

"ओहो!! क्या कहना था ? तुमने क्या किया ?"

ठीक ही था। पचमी को क्यो दोष दे ? दोनो मे एक ही फर्क था। वह लाचारीवश माँ-बाप को छोड आई थी। लेकिन पचमी के बारे मे ऐसी बात नही थी। पचमी ने कहा, "दिदिया, तुम उस समय न आई होती तो यह सब न हुआ होता। माँ की तरह घर सँभालकर रहती होती तो कितना अच्छा होता ?"

करुत्तम्मा सोचती बैठी रह गई। ऐसा होता तो क्या सब ठीक होता ? बेचारी बच्ची! उसे कुछ नही मालूम है। रह जाती तो क्या हुआ होता! दिदिया ही खत्म हो जाती!! बेचारी यह नही जानती थी।

ज्यादा बोलने की आदी पचमी ने आगे कहा, "एक मल्लाह मिल गया और तुम सब-कुछ भूलकर उसके पीछे दौड पडी।"

"बाप रे! यह बात नही थी"—यह वाक्य उसके दर्द-भरे हृदय से उसकी जिह्वा तक आकर रुक गया। रुलाई के बीच दो-तीन अस्पष्ट शब्द उसके मुँह से निकले। उसे मल्लाह के लिए जो प्रेम था, उसके कारण, वह नही आई थी, किसी की परवाह न करके यही उसको कहना था! पलनी के घर मे बैठकर, वह परिश्रम करके जो कमा लाता है उसे खाकर ऐसा कहना उचित होता ? बेचारा समुद्र मे गया हुआ था। वास्तव मे वह अपने ही बचाव के लिए चली आई थी। वह माँ-बाप को प्यार करती थी या पति के प्रति कर्तव्य-बोध से चली आई, यह भी वह नही कह सकती थी। पचमी के कहे मुताबिक वह मल्लाह के पीछे नही

आई थी।

बाते सुनाते समय पचमी ने चेम्पन के पागल हो जाने की बात भी कही। उसने बड़े गुस्से से कहा, "उस मोटकी ने यह भी कहा कि तुम एक मुसलमान के साथ घूमती फिरती थी और तुमने तट का सर्वनाश कर दिया।"

बडे दुख से उसने आगे कहा, "बेचारा बप्पा पागल हो गया।"

करुत्तम्मा बिना कुछ कहे बैठी रही। उसके कान भारी हो गए। आँखो के आगे अँधेरा छा गया। पचमी ने और भी सुनाया।"

"वह बात इस समय भी तट पर दुहराई जाती है! आज भी लोग उसका जिक्र करते हैं। उसका अभिमानी बप्पा भी बात जान गया। बप्पा उसे क्षमा करेगा?"

पचमी फिर परी की बात पर आ गई। उसकी दारुण स्थिति का वर्णन किया। उसने कहा, "उसके पास कुछ भी नही है दिदिया! समुद्र-तट पर भूखा घूमता रहता है। देखने मे पागल-जैसा लगता है। उसकी हालत बहुत खराब हो गई है।"

करुत्तम्मा ने यह सब सुनाने के लिए नही कहा था। न मना ही किया था। सुनने की इच्छा तो उसमे थी ही। दूसरी स्थिति मे रहती तो वह परी के बारे मे जरूर प्रश्न करती।

उसे, उस तट पर पीला कुर्ता और टोपी आदि पहनकर रेशमी रूमाल लटकाये अपने बाप के साथ आये हुए बच्चे की स्मृति जागृत हो आई होगी। उसने उसको वह शख जो दिया था। इस तरह उसके प्रेम-नाटक के सब दृश्य उसकी आँखो के सामने से गुज़रे होगे।

एक मूल्यवान जीवन बरबाद हो गया! बरबाद हो गया नही, बरबाद कर दिया गया। अपने को भूलकर उसने पचमी से पूछा, "छोटे मोतलाली अब भी नाव पर बैठकर गाया करते है क्या?"

पचमी ने उत्तर दिया, "हाँ, कभी-कभी गाता है।"

उस गाने का अर्थ पचमी को मालूम था ? नही।

करुत्तम्मा ने पूछा, "तुमसे मिलता था ?"

"कभी-कभी उसे देखती थी।"

"तब दीदी की बात तुमसे पूछता था ?" करुत्तम्मा की आवाज काँप रही थी।

पचमी ने कहा, "मुझे देखता तो मुस्कुरा देता था।"

"नही।–पूछता था।"–एक अस्पष्ट ध्वनि मे यह वाक्य सुनाई पड़ा और उसके साथ ही दोनो के सामने पलनी आकर खडा हो गया।

करुत्तम्मा और पंचमी दोनो खड़ी हो गईं। करुत्तम्मा का रहस्य पकड़ा गया।

२०

करुत्तम्मा मे अब एक मजबूती आ गई, जिसका अब तक उसमें अभाव था। उसमे एक विशेष युक्ति-बोध आ गया और उसके सामने जीवन की एक अस्पष्ट योजना भी बन गई। उसके जीवन की धारा और घटनाओ ने उसको यहाँ तक पहुँचा दिया था। आज तक वह डरते-डरते जी रही थी, सबसे डरती थी और उसे सब तरह का डर बना रहता था। उसमें अपनी कोई इच्छा-शक्ति नही थी। शायद वह किसी भी तरह जीना चाहती थी, इसीलिए ऐसा होता था।

लेकिन अचानक एक परिवर्तन हो गया। पचमी का आ जाना इसका एक कारण हो सकता है। जब उसका रहस्य प्रकट हो गया, उस समय पचमी के रूप मे उसे एक साथी मिल गया। अब छिपाने के लिए क्या था? डरने के लिए क्या था? जीवन की सुरक्षा का बोध, अपने को सुरक्षित बनाये रखने का विचार—दोनो एक साथ समाप्त हो गए। सुरक्षित मार्ग पर उसके साथ जाने के लिए अब पचमी उसके पास थी।

उस दिन भी उसने पति से अपनी पुरानी प्रतिज्ञा दुहराई। उसने अपनी सारी बाते खोलकर उसे बता दी। पलनी ने परी के बारे में यह पूछा कि बचपन का साथी होने के अलावा उसका उससे क्या सम्बन्ध रहा। जवाब मे करुत्तम्मा ने कहा कि वह पतित नही हुई है। पलनी ने पूछा, "तुम उससे प्रेम करती थी?"

करुत्तम्मा ने जीवन मे सब-कुछ खोकर समुद्र-तट पर पागल की तरह गाना गाते हुए घूमने वाले परी को अपने मन की आँखों के सामने देखा। पंचमी ने थोड़ी देर पहले उसकी जो करुण कहानी सुनाई थी। उस कहानी

ने उसकी एक मूर्ति उसके सामने खडी कर दी थी। उसके—ये शब्द 'मै रोज यह गाना गाऊँगा', 'तृक्कुन्नपुषा-तट पर सुनाने के लिए यह गाता रहूँगा', 'नाव और जाल जब हो जायँगे तब मछली मेरे हाथ बेचोगी ?' करुत्तम्मा के कानो मे गूँज रहे थे।

जवाब देने मे क्षण-भर की देर हुई तो पलनी ने अपना सवाल दुहराया। करुत्तम्मा को लगा कि उसके भीतर से कोई डाटकर पूछ रहा है कि अब क्या छिपाना है, तुम्हारी कोई गलती नही थी, शादी के पहले तुमने किसी से प्रेम किया, इसमे क्या गलती थी ?

करुत्तम्मा ने जवाब दिया, "हाँ, करती थी।"

सारी कोठरी मे एक गहरी निस्तब्धता छा गई। उसे कौन भंग करता ? आखिर पलनी ने पूछा, "क्या आते समय तुम उससे विदा लेकर आई थी ?"

करुत्तम्मा ने 'हाँ' या 'ना' कुछ नही कहा।

पलनी ने एक और सवाल पूछा, "फिर कब मिलने की बात कही है ?"

"ऐसी कोई बात नही कही।"

बच्ची जागकर रोने लगी। करुत्तम्मा ने उसे उठाकर दूध पिलाया।

उस दिन करुत्तम्मा ने पलनी का हृदय जीतने की कोशिश नही की। लेकिन बार-बार अपनी प्रतिज्ञा दुहराती रही। विवाहिता होने के नाते जो मूक प्रतिज्ञाएँ की जाती है, उन्हे ही उसने दुहराया। इसके सिवा और क्या कर सकती है, ऐसा प्रश्न उसके मन मे उठता था।

खूब भोर मे ही पलनी उठकर बिना कुछ कहे ही कही चला गया। पंचमी ने पूछा, "क्या जीजा रूठ गया है ?"

करुत्तम्मा ने जवाब दिया, "अब दुनिया मे हम दोनो का कोई नही है।"

पचमी ने कहा, "दिदिया, तुम्हारा तो घर है। मेरा ही दुनिया में कोई नही है।"

"नही नन्ही, हम दोनो की एक स्थिति है। हम साथ-साथ ही अपना गुजारा करेगी।"

थोडी देर के बाद करुत्तम्मा ने आगे कहा, "हम दोनो बुद्धिमान चेम्पन की सन्तान है।"

उस दिन दोपहर को जब पलनी आया तब करुत्तम्मा ने कहा, "मुझे जरा नीर्क्कुन्नम जाना है।"

पलनी ने कोई जवाब नही दिया। करुत्तम्मा ने चेम्पन की उस स्थिति के बारे मे सुनाया। उसके बाद उसने कहा, "बप्पा का अब कोई नही रहा।"

इस पर पलनी ने कोई जवाब नही दिया।

उस दिन भी रोज की तरह पलनी ने काँटो मे चारा लगाकर उन्हे ठीक किया। करुत्तम्मा ने एक बरतन मे रात का खाना रखकर निकाला। पलनी काँटा और डाँड लेकर आगे-आगे और करुत्तम्मा एक हाथ मे उसका खाना और दूसरे हाथ मे बच्ची को लेकर, पीछे-पीछे,—इस तरह दोनो समुद्र-तट पर गये।

उस दिन भी बच्ची ने हाथ उठाकर विदा दी। पलनी ने तरगों को पार करके आगे जाने के बाद मुडकर देखा। बच्ची हाथ उठाये हुए थी।

करुत्तम्मा तट पर थोडी देर खडी रही। शाम हो चली थी। पश्चिम दिशा मे आकाश तपाये गए सोने के समान लाल दिखाई दे रहा था। कैसा गहरा रग था। समुद्र का नीला जल और आकाश की स्वर्णिम आभा— दोनो के बीच एक काली रेखा खिची-जैसी मालूम हो रही थी। उस रेखा के उस पार क्या है, यह एक रहस्य है। एक बड़ा भारी रहस्य।

पलनी की नाव उस अनन्त जल-राशि मे दक्खिन की ओर बढी। वह खडा होकर डाँड चला रहा था। तेजी के साथ जब वह नाव से पानी मार-मारकर फेक देता था तब फिर थोड़ा पानी आ जाता था।

नाव मे इस तरह खडे होकर नाव चलाते कितने दिन हो गए! ऐसा लगता था कि मानो उसकी सोई हुई शक्तियाँ जाग उठी है, उसका शरीर

उन शक्तियो को सँभाल नही सकता, उसके हाथ मे जो डाँड है वह काफी नही है और नाव बहुत छोटी हो गई है ! ! वह नाव मे पानी के भरने की ओर ध्यान न देकर उस काली रेखा को लक्ष्य करके नाव खेने लगा।

उस जागृत शक्ति की हुकार और गर्जना वहाँ की विशालता मे किसी ने नही सुनी। लगता था कि पलनी की नाव आकाश मे उड़ी जा रही है।

किसी ने उस शक्ति को जगाया होगा ? उसे अब शान्त करने की शक्ति किसमे है ? मालूम नही होता। लगता था कि असीम शक्ति अनियत्रित छोड दी गई है। पलनी चला जा रहा था।

समुद्री हाथियों का एक झुण्ड उस नाव के चारो ओर गोता लगाते हुए निकल गया। उनमे से एक ने नाव को अपनी पीठ पर थोडा उठा लिया, नाव पानी के ऊपर उठ गई। सम्भव था कि वह दूसरे ही क्षण उलट जाती। लगता था कि पलनी की आँखो से चिनगारियाँ निकल रही है, दाँतो से होठ काटते हुए वह जोर से चिघाडा। उसने उठी हुई नाव मे से एक डाँड चलाया। एक ही क्षण मे यह सब हो गया। नाव उलटी नही। समुद्री हाथी शायद रीढ टूट जाने से पानी मे डूब गया। पलनी डाँड चलाता रहा। वह दूर पश्चिम की ओर—कहाँ जा रहा था ? इस पश्चिम की कोई सीमा नही है।

समुद्र के किनारे बच्ची बिना कारण ही रो पड़ी। शायद निष्कलक बच्ची ने अपने बाप को पागल की तरह आवेश मे जाते देखा होगा। बेचारी पिता को अनन्त की ओर जाते देखकर रोई होगी। पलनी ने बच्ची की रुलाई नही सुनी। हवा की गति पूरब की ओर थी। समुद्री हाथी से लडते समय की पलनी की चीख को हवा ने तट पर पहुँचा दिया। करुतम्मा ने उसे सुना ?—नही। उसके कान मे वह आवाज़ नही जा सकी। इतनी पवित्रता उसमे नही थी।

पलनी रहस्य की खोज मे जा रहा था। समुद्र से ही चन्द्रमा का उदय होते उसने देखा है। वह एक नई दुनिया मे पहुँच गया। ऐसा लग रहा

था, मानो चारो ओर नीले जल मे चाँदी उँडेल दी गई हो। ऐसा दृश्य था। पलनी चारो ओर क्षितिज से घिरे एक नये लोक मे था। उसे एक डर मालूम हुआ। अब तेजी से नाव चलाकर सीमा पार करनी थी।

समुद्री साँप उसकी नाव पर चढ गए। चारो ओर की चाँदनी की चमक मे उसने साँपो को लौटते देखा। कुछ साँप नाव के छोर पर पूँछ टिकाये, सिर उठाकर नाचते और फिर नाव में गिर जाते थे। दो साँप नाव मे एक-दूसरे से लिपटकर खेल रहे थे।

दूर पश्चिम से एक उत्तुग तरग क्षितिज के दृश्य को ढकती हुई उठी और उमडती हुई आती दिखाई पडी। पलनी के मन मे उस तरग के नीचे से गोता लगाकर उस पार निकल जाने की इच्छा हुई। ..... लेकिन ?

उस तरग ने हँसी के बुलबुले फैलाते हुए, नाव को ऊपर उठाकर पीछे की ओर फेक दिया। उस पार समुद्र शान्त था। लेकिन एक काला रग फैला हुआ था। दक्खिन-पच्छिम कोने से एक लबा प्राणी समुद्र की तह से निकलकर बढता-जैसा मालूम हुआ। वहाँ की शान्ति मे एक विशेषता थी। नाव को इच्छानुसार नहा ले जाया जा सकता था। वहाँ एक अन्तर-वाहिनी धारा का खिचाव था। लगता था कि उधर कही एक भँवर है। उसकी वजह से समुद्र की तह का कीचड़ भी खिच रहा था।

पलनी ने उस खिंचाव का सामना करना चाहा। कही उसकी नाव ही खिच जाय तो ? पलनी ने खिचाव के विरुद्ध खेना शुरू किया, दूर से एक प्रकाश फैलता नजर आया। उसी ओर, न मालूम क्यो,पलनी ने अपनी नाव चला दी, पानी मे छोटी-छोटी लहरो के बीच समुद्री बगुलो का एक झुण्ड डोलता हुआ नीद ले रहा था। एकाएक सब बगुले प्राण-भय से चीखते हुए ऊपर की ओर उड गए। वे नाव देखकर नही डरे थे। समुद्र मे एक चीख की आवाज उठी। एक शार्क ने एक बगुले को पकड लिया था। पलनी ने काँटा डाला। एक कुशल मल्लाह होशियारी से यही काम करता है।

बहुत देर तक करुत्तम्मा और पंचमी बातें करती रही। माँ और

परी आदि के बारे मे तो बातें खत्म हो चुकी थी। चेम्पन एक समस्या हो गया था। चेम्पन की अभागी लडकियाँ भी समस्या बन गईं। बाते करते-करते पचमी सो गई।

करुत्तम्मा को नीद नही आई। उस दिन अजीब ढग से एक ही गति से हवा बहती रही। करुत्तम्मा को लगा कि उस हवा मे पहले कभी न सुना गया एक दीन स्वर है। उसके कान खडे हो गए। उसने बार-बार उस आवाज को पहचानने की कोशिश की। इस तरह वह अपने जीवन के परी की ओर बह गई।

उसका मल्लाह अकेला समुद्र मे गया था। वह दूर समुद्र मे काँटा डाल रहा था। उस समय करुत्तम्मा को प्रथम मल्लाहिन की तरह तट पर खडी होकर एकाग्र चित्त से तपस्या करनी चाहिए थी। पर वह पड़ी-पडी परी के बारे मे सोच रही थी, लेकिन पूर्ण चेतना के साथ नही। वह जगी नही थी। सोई भी नही थी। परी बेचारा अच्छा आदमी था। करुत्तम्मा भी उसे प्यार करती थी। यह सब बाते स्पष्ट हो गईं। करुत्तम्मा जीवन-भर परी को नही भुला सकती थी। परी उसका था और वह परी की थी।

अन्दर से कोई विरोध नही था। वहाँ कोई पीडा नही थी। उस अर्ध चेतनावस्था मे करुत्तम्मा धीरे-धीरे कुछ बोलती जाती थी।

उसे लगा कि वह प्रतीक्षा मे जाग गई है कि परी फिर आयगा और बुलायगा। उसे जवाब देना है। उसीके लिए वह जग पडी है।

"करुत्तम्मा!"

करुत्तम्मा को फिर दूर से उसका नाम पुकारने की आवाज़ जैसी लगी। वह सोचने लगी कि वह उसकी अर्ध सुषुप्तावस्था का भ्रम था या सचमुच दरवाज़े पर कोई बुला रहा था!

फिर पुकारने की आवाज़ आई "करुत्तम्मा!"

एक ही आदमी इस तरह रात के समय आकर दरवाज़ा खटखटाकर उसे बुलाता है। वह तो रोज पुकारा करता है। पत्नी ही समुद्र से आकर

उसे पुकारता है। समय करीब-करीब उसके लौटने का हो गया था।

"करुत्तम्मा !"

फिर आवाज आई और करुत्तम्मा को सन्देह हुआ कि यह पलनी की आवाज है क्या? उसने जवाब दिया, "हाँ !"

दरवाजा खोलने के लिए नही कहा गया। यद्यपि पलनी कहा करता था। फिर भी करुत्तम्मा दरवाजा खोलकर बाहर आ गई। खूब जोर से हवा चल रही थी। उस हवा मे एक तरह की तीक्ष्णता थी। स्वच्छ चाँदनी चारों ओर फैली हुई थी। बाहर उसने किसी को भी नही देखा। वह घर के पश्चिम मे समुद्र की तरफ देखने गई। वहाँ उस चाँदनी मे एक आदमी खडा था। वह परी था।

करुत्तम्मा डरी नही। चिल्लाई नही। ऐसा लगा, मानो उसकी पुकार सुनकर वह दरवाजा खोलकर आई है। परी धीरे-धीरे उसके पास आ गया।

करुत्तम्मा ने परी की ओर ध्यान से देखा। वह उसके पहले के परी-जैसा नही था। बहुत दुबला हो गया था।

परी पास मे आया। करुत्तम्मा को डर नही लगा। नही, अब उसे किसी प्रकार का डर नही था। उसे एक माँ का गौरव प्राप्त था। . . . फिर भी जब पलनी समुद्र मे गया है तब रात्रि के समय किसी पर-पुरुष के साथ उसे बाते करते रहना चाहिए क्या?—लेकिन उसे किसी बात का डर नही था। इसके पहले भी वह रात मे परी से अकेली मिल चुकी है न! ......इससे भी बढकर, जिसका जीवन निराशा मे बरबाद हो गया है उसे क्षण-भर के मिलन से थोड़ी सान्त्वना दे सके तो देनी चाहिए न!

थोडी देर तक दोनो एक-दूसरे को देखते रहे। करुत्तम्मा को लगा कि सामने जो परी खड़ा है उसके सर्वनाश का कारण वही है। परी हमेशा से प्रेम करता रहा है, यह करुत्तम्मा को मालूम है। कुछ भी हो जाय, कही भी रहे और कभी भी हो, वह उससे प्रेम करता रहेगा। हमेशा

उसे माफ करता रहेगा। वह उसके प्रति कुछ भी करे, परी सब सहता रहेगा।

कुछ ही क्षण मे करुत्तम्मा अपने जीवन की सब विफलताएँ भूल गई। उसकी हार नही हुई। उसके पास एक बडा धन है। वह धन, जो दूसरो के पास नही है। वह एक बलिष्ठ आदमी के सरक्षण में है। उसका जीवन उसके साथ सुरक्षित है। जीवन-सम्बन्धी उसकी चेतना बिलकुल दुरुस्त है। उसे कभी भूखी नही रहना पडेगा। बाहर से किसी प्रकार का आघात उसे नही हो सकता, उसके पलनी मे इतनी ताकत है। उसे इसका विश्वास था। इसी प्रकार उसकी आत्मा मे भी अब एक विश्वास उत्पन्न हुआ। एक आदमी उससे प्रेम करता है और हमेशा करता रहेगा। और वह आदमी उसके सामने खडा था।

परी के बढाये हुए हाथो के बीच से वह उसकी छाती से जा लगी। दोनों के अधर मिल गए। परी ने उसके कान मे कहा, "मेरी करुत्तम्मा!"

"हुँ।"

परी करुत्तम्मा की पीठ पर हाथ फेरने लगा। परी ने फिर पुकारा, "करुत्तम्मा!"

"ऊँ।"—अर्धचेतनावस्था मे करुत्तम्मा ने फिर जवाब दिया।

"मै तेरा कौन हूँ?"

परी के कपोलो को अपने दोनो हाथो से पकड़ती हुई और अर्ध-निमीलित नेत्रो से उसे देखती हुई करुत्तम्मा ने कहा, "कौन? मेरे रत्न-भण्डार!"

दोनों फिर एक हो गए। उस आनन्दानुभूति मे वह परी के कान मे कुछ-कुछ कहती रही।

उस गाढ आलिंगन से अलग होने की शक्ति उसमे नही थी।

बहुत दूर समुद्र मे एक शार्क ने चारे वाले काँटे को मुँह से पकड़ लिया। अब तक पलनी या किसी दूसरे के काँटे मे इतना बड़ा शार्क नही फँसा था।

चारा पकडते ही शार्क ने अपनी पूँछ से नाव को जोर से मारा। उस जगह समुद्र के पानी मे हलचल मच गई। उस मार के जोर से बहुत ऊपर तक पानी के छींटे उठे। पूँछ से मारने के बाद शार्क आगे कूदा। पलनी ने उसे देखा। उसके मुँह से काँटे की रस्सी लगी दीख रही थी।

उस तट पर इतना बडा मच्छ पहले-पहल उसीने पकडा था। पलनी खुशी के मारे चिल्ला उठा।

तुरन्त उसे एक बात तय करनी थी। रस्सी खीचकर शार्क को रोके या उसे इच्छानुसार भागने दे, काँटा यदि ठीक उसके कण्ठ मे अटक गया होगा तब तो रस्सी को जरा-सा खीच देने से ही वह रुक जायगा। लेकिन यह भी सम्भव था कि वह उसी क्षण नाव को मारकर तोड दे। अगर उसे आगे अपनी गति से जाने दे तो नाव को भी खीच ले जायगा। उस तरह वह उसे कहाँ और कितनी दूर खीच ले जायगा?

तट का पता नही था। एक हाथ से काँटे की रस्सी पकड़े और दूसरे हाथ से डाँड सँभालते हुए पलनी ने दिशा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आकाश की ओर देखा। लेकिन वह जिस नक्षत्र को देखना चाहता था वह दिखाई नही पड़ा। आकाश बादलो से आच्छादित हो गया था।

अचिन्त्य द्रुत गति से पानी को चीरती हुई उसकी नाव चली जा रही थी। समुद्र शान्त था। लेकिन उसका रग भयानक रूप से काला हो गया। पानी का बहाव किस ओर है, यह जानने के लिए पलनी ने पानी की ओर देखा। ध्यान से देखने पर भी कुछ पता नही चला।

शार्क नाव को खीचता हुआ चला जा रहा था। वह कहाँ की यात्रा थी? कितनी दूर खीच ले जायगा?

दाँत पीसता हुआ पलनी चिल्ला उठा, "अरे ठहर! मुझे समुद्र-माता के महल मे खींच ले जाने का समय अभी नही आया है।"

पलनी ने रस्सी को जरा खीच दिया। नाव एकाएक रुक गई। पलनी ठठाकर हँसा, "हा! ह-हा हा!!! हा!!! ठहर जा रे, वही ठहर जा!"

थोड़ी दूर पर असह्य प्राण-वेदना से शार्क पूँछ पटक-पटककर छटपटा रहा था। पलनी ने खुशी-खुशी रस्सी को और जोर से खीचा। वह समुद्री मच्छ ऊपर की ओर उछला और नीचे गिर गया।

नाव निश्चल थी। लेकिन वह चक्कर काटती-सी मालूम होने लगी। वह एक बहाव मे पडकर गोलाई मे चक्कर काट रही थी। पलनी ने ध्यान से देखा। उसे डर लगा कि वह एक बडी भँवर मे फँस गया है। फिर एक बडी गोलाई का बहाव नज़र आया। उस समय भी वह काँटे की रस्सी को कसकर पकडे हुए था।

पलनी ने आसमान की ओर देखा। एक भी तारा नही दिखाई पडा। चारो ओर बादल छाये हुए थे। बादलो के छा जाने से सब तारे अदृश्य हो गए थे।

नाव पर से पलनी ने चारो तरफ देखा। एक क्षण पहले तक चारो ओर जल-राशि शान्त दिखाई पडती थी। लेकिन अब वह दृश्य बदल गया। उसे लगा कि वह चारो ओर से एक पहाड से घिर गया है और वह एक अगाध गढे मे है।

बीच समुद्र की तह मे ही समुद्र-माता का महल है; जहाँ देवी समुद्र-माता निवास करती है, पलनी उस महल का वर्णन कई बार सुन चुका था। वहाँ पहुँचने का रास्ता एक बडी भँवर से है। एक ऐसी भँवर, जिसके चक्कर मे सारा समुद्र सिमट जाता है।

पलनी को लगा कि चारो ओर पहाड़ की ऊँचाई बढ रही है। उसने रस्सी थोड़ी ढीली कर दी। नाव फिर द्रुत गति से भागने लगी।

पलनी उस भँवर से बाहर निकला। उस पहाड़ को पार किया ?

कही से एक भयानक आवाज़ सुनाई पड़ी। इतनी भयंकर आवाज़ पलनी ने पहले नही सुनी थी। वह एक तूफान की आवाज़ थी।

पहाड-जैसी उत्तुग तरगे उठी। वैसी तरगे भी उसने पहले कभी नही देखी थी। तरगे लम्बी-लम्बी लपेटो मे आगे नही बढ़ी, वरन् उसके चारो ओर मिलकर एक वृताकार मे बढ़ा।

पलनी ने एक क्षण के लिए समुद्र की उस क्षुब्ध स्थिति पर विचार किया। उसे तरगो के ऊपर से नाव चलाना आता था। आँधी और तूफान से भी उसने लडना सीखा था। घनघोर अन्धकार मे भी उसने नाव चलाई थी।

जोर से बिजली चमकी। मेघ का भयानक गर्जन हुआ। पलनी ने रस्सी को पूरी तरह ढीला कर दिया। रस्सी कसने से नाव के रुक जाने और शार्क की मार से टूट जाने की सम्भावना थी। इसलिए शार्क को अपनी इच्छानुसार जाने देने का ही उसने निश्चय किया।

ऊँची तरगों पर जब नाव चढती थी तब नाव का भार कम करने के लिए वह डॉड पकडे ऊपर उछल जाता था और तरगों की चोटी पर आते-आते वह नाव मे गिर जाता था। चोटी पर से उतरते ही दूसरी तरगे उसे नाव सहित निगल जाने की तैयारी मे मुँह खोले खडी मिलती।

समुद्र उस बेचारे मल्लाह पर मानो क्रुद्ध होकर गरज रहा था। उस गर्जन से आँधी अपनी श्रुति मिला रही थी और मेघ ताल दे रहे थे। कैसा पैशाचिक ताण्डव हो रहा था। वह एक छोटा-सा निस्सार मानव-प्राणी था। उसका सर्वनाश करने के लिए समुद्र-माता को इतनी भयकर शक्तियों को लगा देना चाहिए? वह चाहती तो कितनी जल्दी उसे अपने उदर के अन्दर खीच ले जा सकती थी।

शायद यह तरगे सुदूर तट पर भी चढ गई होंगी। वहाँ की झोपड़ियों के ऊपर भी बही होगी। जमीन पर इस समय जहरीले सांप भी लोटते होगे।

दूर पर कोई चीज ऊँचाई पर दीख रही है। क्या कोई असाधारण तरग उठी है, जिसका शिखर दिखाई पड रहा है? या कोई भयानक जल-जन्तु सिर उठाकर अपना गुफानुमा मुँह खोले खडा है?

क्या पलनी की अजेय शक्ति समाप्त हो गई? एक तरग के आते ही उसने ऊपर उठने की कोशिश की। लेकिन उसका शरीर उठा नही। वह मुँह खोले बढने वाली तरग उसके और उसकी नाव के ऊपर से उन्हें

लपेटती हुई निकल गई।

जोर से बिजली कड़की। भयानक मेघ-गर्जन हुआ। ऐसा लगा मानो आसमान ही टूट पडा। ऐसा मालूम होता था कि समुद्र का सारा पानी सिमटकर एक ही जगह जमा हो रहा है। आँधी और तूफान का ऐसा रग-ढग था कि मानो सर्वनाश करके ही दम लेगा।

बिजली की चमक मे एक तरग के ऊपर पलनी की नाव का छोर दिखाई पडा। उस तरंग के नीचे आ जाने पर नाव से चिपटा पलनी भी दिखाई पड़ा, वह नाव को मजबूती से पकडे हुए था। एक क्षण के लिए साँस रोकते हुए वह चिल्लाया, "करुत्तम्मा!"

पलनी की पुकार उस तूफान के गर्जन से भी बढकर ऊँची आवाज़ मे सुनाई पडी।

उसने करुत्तम्मा को क्यों पुकारा? उसमे कोई उद्देश्य था न? समुद्र मे जाने वाले मल्लाह की रक्षा करने वाली देवी घर मे बैठी मल्लाहिन ही है न? उसने करुत्तम्मा से उस आदि मल्लाहिन की तरह तपस्या करने की माँग की। वह प्रथम मल्लाह आँधी-पानी मे फँस जाने पर भी, अपनी मल्लाहिन की तपस्या के फलस्वरूप बचकर घर लौट सका था न। पलनी को भी उसी प्रकार रक्षा पाने का विश्वास था। उसको भी मल्लाहिन थी। उसने पिछले दिन भी तो प्रतिज्ञा की थी। वह जरूर तपस्या करती होगी।

आँधी ने जोर पकडा। पलनी अपनी शक्ति-भर आँधी से लडा। आँधी तरगो से मिल गई, एक उत्तुग तरग की लपेट आगे बढी।

पलनी के मुँह से फिर 'करु ..' शब्द निकला, तब तक वह तरग उसके ऊपर से निकल गई।

अब कुछ नही दीख रहा है। आँधी, तूफान, बिजली, मेघ-गर्जन सब मिल गए। सब शक्तियो के योग से संहार का काम पूरा हो रहा है।

पानी आसमान तक उठा। सारा समुद्र एक गुफा-जैसा हो गया।

तूफान भी नजर आने वाली चीज बन गई।

बहुत दूर पर एक तरंग की चोटी पर वह नाव उलटी हुई दिखाई पड़ी। उसे पकड़े पेट के बल पडा हुआ पलनी भी दीख पडा। इस समय भी वह नाव को पकड़े हुए था। लेकिन क्या उसका सिर फिर उठेगा ?

क्या उस दारुण सहार का काम समाप्त हो गया ?

एक भँवर में पडकर वह नाव खडी-खडी नीचे की ओर खिच गई।

एक नक्षत्र चमक उठा। वह था मछुआरो को दिशा का ज्ञान कराने वाला नक्षत्र। मछुआरो का अरुन्धती ! किन्तु उसका तेज मन्द पड़ गया-सा लगता था।

दूसरे दिन सुबह समुद्र का दृश्य बिलकुल शान्त था। मानो कुछ हुआ ही नही।

दूर समुद्र मे अच्छा 'बटोर' हुआ, ऐसा रात को जागने वाले कुछ मछुआरो का कहना था। तरगे कुछ घरो के आँगन तक चढ़ आई थीं। तट की बालुका-राशि पर समुद्री साँप भी देखे गए।

पचमी तट पर उस बच्ची को गोद मे लिये खड़ो-खड़ो रो रही थी और बच्ची माँ और बाप के लिए चीख-पुकार मचाये हुई थी।

पचमी रोते-रोते बच्ची को भी चुप करा रही थी।

दो दिन के बाद आलिगनबद्ध एक स्त्री और पुरुष के शरीर वहाँ किनारे लग गए। वे करुत्तम्मा और परी के शरीर थे।

चेरियषिक्कल-तट पर काँटा निगला हुआ एक शार्क भी किनारे लगा था।